

✓

ग्रन्थमाला सम्पादक

डॉ० हीरालाल जैन, एम० ए०, डी० लिट्०

डॉ० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, एम० ए०, डी० लिट्०

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

प्रथम आवृत्ति १००० प्रति  
मूल्य सात रुपये

मुद्रक

सन्मति मुद्रणालय  
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

## अनुक्रमणिका

प्रधान सम्पादकीय	५-८
प्राक्कथन	९-१०
संकेत-सूची	११
प्रस्तावना	१-३३
१ लेखोका साधारण परिचय	१-२
२ जैन संघका परिचय	२-१६
(अ) यापनीय सघ	२-४
(आ) मूलसंघ	४-१४
(इ) गौड सघ	१४
(ई) द्राविड संघ	१५
(उ) माथुर सघ	१५
(ऊ) पंचस्तूप निकाय	१५
(ऋ) जम्बूखंडगण	१५
(ॠ) सिंहचूरगण	१५
(ऌ) जैनसघके विषयमे साधारण विचार	१५-१६
३ राजवंशोका आश्रय	१६-३२
(अ) उत्तर भारतके राजवंश	१६-१६

## जैनशिलालेख-संग्रह

(आ) दक्षिण भारतके राजवंश	१९-३२
(इ) राजाश्रयके विषयमे साधारण विचार	३२
४ जैन सधकी दुरवस्था	३२-३३
५ उपसहार	३३
<b>मूल लेख ( तिथिक्रमसे )</b>	<b>१-३८४</b>
<b>परिशिष्ट</b>	
१ श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना	३८५-३८८
२ जैनैतर लेखोंमें जैन व्यक्ति आदिकें उल्लेख	३८९-३९२
३ नागपुर प्रतिमा लेख संग्रह	३९३-४२९
<b>मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण</b>	<b>४३०-४५४</b>
<b>नामसूची—</b>	<b>४५५</b>

## प्रधान-सम्पादकीय

प्राचीन कालकी मानवीय प्रवृत्तियोंका विधिवत् वर्णन व विश्लेषण ही इतिहास है। ऐसे इतिहासके लिए आधारभूत सामग्री प्राप्त होती है मानवकी निर्मितियोंके भग्नावशेषों अर्थात् गुफाओं, चैत्यों, स्तूपों, समाधियों, गृहों, मन्दिरादि धर्मायतनों व मूर्तियों जैसे स्थापत्यके भग्नावशेषोंसे, चित्रोंसे व साहित्यिक रचनाओंसे। किन्तु इनसे भी अधिक प्रामाणिक और यथावत् वृत्तान्त उन लेखोंसे मिलता है जो राजाओं व अन्य धनिकोंके दानकी तथा उनके द्वारा निर्माण कराये गये मन्दिरादिकी स्मृति-रक्षणार्थ पाषाणखण्डों व ताम्रपटों आदि पर उत्कीर्ण कराये गये पाये जाते हैं। ऐसे प्राचीनतम लेखोंकी लिपि बहुधा वही ब्राह्मी है जिससे आजकी नागरी लिपि विकसित हुई है, तथापि उसका प्राचीनतम रूप इतना भिन्न था कि उसे पढ़ना बहुत कठिन सिद्ध हुआ। बड़े परिश्रमके पश्चात् उस लिपिकी कुंजी हाथ लगी, जिससे लगभग गत अठ्ठाई सहस्र वर्षोंके शिलालेख पढ़े और समझे जा सके। किन्तु चालीस-पचास वर्ष पूर्व सिन्धु घाटीसे ऐसे भी मुद्रालेख प्राप्त हुए हैं, जिन्हें पढ़ने और समझनेका अभी प्रयास ही चल रहा है, कोई सफलता प्राप्त नहीं हो सकी।

जो प्राचीन शिलालेख पढ़े गये और प्रकाशित हुए वे पुरातत्त्व विभागके बहुमूल्य व दुर्लभ ग्रन्थमालाओं व पत्रिकाओंमें समाविष्ट पाये जाते हैं। इनमें जैन धर्म सम्बन्धी शिलालेखोंका विवरण भी यत्र-तत्र बिखरा पाया जाता है। इन लेखोंका ऐतिहासिक महत्त्व तब प्रकट हुआ जब सन् १८८९ में मैसूरके पुरातत्त्व विभागकी ओरसे श्रवणबेलगोलके १४४ शिलालेखोंका अलगसे संग्रह एक विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना सहित प्रकाशित हुआ। सन् १९२२में इसका सशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशमें आया



जिसमें शिलालेखोंकी संख्या ५०० हो गयी। इसी बीच सन् १९०८ में फ्रांसीसी विद्वान गैरीनोकी एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने तब तक प्रकाशित हुए आठ सौ पचास जैन शिलालेखोंका परिचय कराया। इस सब सामग्रोके सम्मुख आनेपर कुछ जैन विद्वानोंकी आँखें खुली, और उन्हें अनुभव हुआ कि जब तक इस सामग्रोका उपयोग करते हुए धर्म व साहित्य मन्वन्धी लेख नहीं लिखे जायेंगे तबतक जैनधर्मका प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। स्वभावतः उम समय जो विद्वान् जैन साहित्य और इतिहासके संगोघनमें तल्लीन थे उन्हें इस आवश्यकताका विशेष रूपसे बोध हुआ। इनमें माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके मस्थापक व प्रधान सम्पादक स्वर्गीय प० नाथूरामजी प्रेमीकी याद आती है। उन्होने ही अपनी प्रेरणा-द्वारा जैनशिलालेख संग्रहका प्रथम भाग तैयार कराकर प्रस्तुत ग्रन्थमालाके २८वें पुष्पके रूपमें प्रकाशित किया, जिसमें श्रवण-वेल्गोलके उपर्युक्त पाँच सौ शिलालेख नागरी लिपिमें हिन्दी सारांश तथा विस्तृत भूमिका व अनुक्रमणिकाओं सहित जिज्ञासुओं व लेखकोंको अति सुलभ हो गये। इसका तुरन्त ही हमारे साहित्य व इतिहास मन्गोघन कार्यपर महत्त्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। तद्विषयक लेखोंमें इनके उपयोग द्वारा बड़ी वाञ्छनीय प्रामाणिकता आने लगी जिसके लिए प्रेमीजी-जैसे विद्वान् बहुत आतुर थे। अब उन्हें अन्य शिलालेखों को भी इसी रूपमें सुलभ पानेकी अभिलाषा तीव्र हुई जिसके फलस्वरूप उक्त गैरीनो महोदयकी रिपोर्टके आधार शिलालेख संग्रह भाग २ और ३ में ( न० ४५-४६ सन् १९५२, १९५७ ) आठ सौ पचास लेखोंका पाठ व परिचय हमारे सम्मुख आ गया।

आगेका लेख-संग्रह कार्य बड़ा कठिन प्रतीत हुआ, क्योंकि इसके लिए कोई व्यवस्थित सूत्रियाँ उपलब्ध नहीं थीं। किन्तु इस कार्यको पूरा कराना हमने अपना विशेष कर्तव्य समझा। सौभाग्यसे डॉक्टर विद्याधर जोहरापुर-करने यह कार्य-भार अपने ऊपर लेकर विशेष प्रयासों द्वारा यह छह सौ

चीवन लेखोका परिचय करानेवाला चीथा सग्रह प्रस्तुत कर दिया। प्रस्तावनामें उन्होने लेखोंका काल, प्रदेश, भाषा, प्रयोजन, मुनिसध, राज-वंश आदि दृष्टियोंसे जो विश्लेषण व अध्ययन किया है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है इसके लिए हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं। हमें दुःख है कि पण्डित नाथूरामजी प्रेमी आज हमारे बीच नहीं रहें। कितना हर्ष होता उन्हें इस नये लेख संग्रहको देखकर।

शिलालेख-सग्रहके इन भागोंमें सकलित सामग्रीके जैन साहित्य और इतिहासके सशोधन कार्यमें विशेष उपयोग हो रहा है, और होगा इसमें सन्देह नहीं। किन्तु इस विषयमें अब तकके अनुभवके आधारसे कुछ सूचनाएँ कर देना हम अपना कर्तव्य समझते हैं—

१. लेखोका जो मूल पाठ यहाँ प्रस्तुत किया गया है, वह सावधानी पूर्वक तो अवग्य लिया गया था, तथापि उसे अन्त-प्रमाण होनेका दावा नहीं किया जा सकता। कन्ड लेखोको यहाँ जो देवनागरीमें लिखा गया है उसमें भी लिपिभेदसे अशुद्धियाँ हो जाना सम्भव है। आगे-पीछे विशिष्ट विद्वानों-द्वारा पाठ व अर्थ-मशोधन सम्बन्धी लेख लिखे ही गये होंगे। अतएव विशेष महत्त्वपूर्ण मौलिक स्थापनाओंके लिए सशोधकोको मूलस्रोतो का भी अवलोकन कर लेना चाहिए।

२ इधर कुछ कालसे ऐसी प्रवृत्ति दिखाई देती है कि जहाँ दो आचार्योंमें नाम-साम्य दिखाई दिया वहाँ उन्हें एक ही मान लिया गया। किन्तु यह बात भ्रामक है। एक ही नामके अनेक आचार्य विविध कालोंमें भी हुए हैं और सम-सामयिक भी। अतएव उन्हें एक सिद्ध करनेके लिए नाममात्रके अतिरिक्त अन्य प्रमाणोंकी भी खोज करना चाहिए।

३ इन प्रकाशित शिलालेखोंसे यह अपेक्षा नहीं करना चाहिए कि उनमें समस्त प्राचीन आचार्योंका उल्लेख आ ही गया है अतएव इनमें किसी आचार्यके नामका अभाव किसी विशिष्ट अनुमान व तर्कका आधार

नहीं बनाया जा सकता । ये लेख जैन मुनियोंकी पूरी गणनाका लेखा नहीं समझना चाहिए ।

४. कन्नड लेखोका जो सार हिन्दीमें दिया गया है उसीके आधार मात्रसे कोई नयी कल्पनाएँ नहीं करना चाहिए । उसके लिए मूल पाठ और उसके शब्दश अनुवादका अवश्य अवलोकन करना चाहिए ।

यथार्थत ये लेख-संग्रह सामान्य जिज्ञासुओंके लिए तो पर्याप्त हैं । किन्तु विशेष सशोधकोके लिए तो ये मूल सामग्रियोंकी ओर दिग्निर्देश मात्र ही करते हैं ।

इस ग्रन्थमालाको अपनी गोदमें लेकर श्री गान्तिप्रसादजी व श्रीमती रमारानीजीने न केवल समाजके एक अग्रणी हितैषी सेठ माणिकेचन्द्रजीकी स्मृतिकी रक्षा की है व ग्रन्थमालाके जन्मदाता प० नाथूरामजी प्रेमीकी भावनाको सम्मान दिया है किन्तु जैन साहित्यकी रक्षा व जैन इतिहासके नवनिर्माण कार्यमें बड़ी महत्त्वपूर्ण सेवा की है जिसके लिए समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा ।

— ही ला. जैन  
— आ ने उपाध्ये  
( प्रधान सम्पादक )

## प्राक्कथन

प्रस्तुत संग्रहका प्रथम भाग डॉ० हीरालालजी जैन-द्वारा संपादित होकर सन् १९२८ में प्रकाशित हुआ था । उसमें श्रवणवेलगोल तथा निकटवर्ती स्थानोंके ५०० लेख सकलित हुए थे । इसका दूसरा तथा तीसरा भाग श्री विजयमूर्ति शास्त्री-द्वारा सकलित हुआ । इन दो भागोंमें फ्रेन्च विद्वान् डॉ० गेरिनो-द्वारा संपादित पुस्तक 'रिपोर्टर द एपिग्राफी जैन'के आधारसे ८५० लेख दिये हैं । डॉ० गेरिनोकी पुस्तक पैरिससे सन् १९०८ में प्रकाशित हुई थी । अतः इन दो भागोंमें सन् १९०८ तक प्रकाशित हुए लेख ही आ सके हैं । इन ८५० लेखोंमेंसे १४० लेख प्रथम भागमें आ चुके हैं तथा १७५ लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं अतः इनकी सूचना-भर दी गयी है — शेष ५३५ लेखोंका पूरा विवरण दिया गया है । इस तरह पहले तीन भागोंमें कुल १०३५ लेखोंका संग्रह हुआ है ।

सन् १९५७ में इस संग्रहके तीसरे भागके प्रकाशित होनेपर श्रीमान् डॉ० उपाध्येजीने हमें प्रस्तुत चौथे भागके संपादनके लिए प्रेरित किया । तबसे कोई चार वर्ष तक अवकाशके समयका उपयोग कर यह कार्य हमने किया । इसे कुछ विस्तृत रूप देनेके लिए हमने सन् १९६१ की गर्मियोंकी छुट्टियोंमें दो सप्ताह तक उटकमड स्थित प्राचीनलिपिविद्-कार्यालयमें भी अध्ययन किया । इसके फलस्वरूप सन् १९०८ के बाद प्रकाशित हुए कोई ६५४ लेखोंका संग्रह प्रस्तुत भागमें प्रकाशित हो रहा है ।

यद्यपि ये सब लेख पुरातत्त्वविभागके प्रकाशनोमें पहले प्रकाशित हो चुके हैं तथापि साधारण अभ्यासके लिए वे सुलभ नहीं हैं — उनका संपादन अँगरेजीमें हुआ है तथा उनका मूल्य भी बहुत अधिक है । अतः इस संग्रहमें उनका पुनः प्रकाशन उपयोगी होगा

इसमें सन्देह नहीं है ।

यह कहना तो सभव नहीं है कि इन भागोंमें अवतक प्रकाशित सब लेख मंगूहीत हो चुके हैं - तथापि अधिकान लेखोंका संग्रह करनेकी हमने कोशिश की है ।

यह स्पष्ट ही है कि इन प्रकाशित लेखोंके अतिरिक्त अभी सैकड़ों लेख अप्रकाशित भी हैं - विशेषकर मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा उत्तरप्रदेशके सैकड़ों मूर्तियों तथा मन्दिरों आदिके लेखोंका अध्ययन अभी बहुत कम हुआ है । परिशिष्टमें दिष्टे हुए नागपुर मूर्तिलेख संग्रहसे इस कार्यके विस्तारकी कल्पना हो सकती है । हमें आशा है कि इन लेखोंका संग्रह भी प्रस्तुत मालाके अगले भागोंमें प्रकाशित हो सकेगा ।

माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके प्रारम्भसे ही इसका कार्य स्व० नाथू-रामजी प्रेमीने बहुत श्रद्धा तथा उत्साहसे सँभाला था । हमें जैन इतिहासके अध्ययनमें उनमें बहुत प्रोत्साहन मिला है । खेद है कि इस पुस्तकके सम्पादनके पूर्ण होनेसे पहले ही उनका स्वर्गवास हो गया । हम उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धाजलि अर्पित करते हैं ।

प्रस्तुत संग्रहकी प्रेरणाके लिए हम आदरणीय डॉ० उपाध्येजीके भी ऋणी हैं । उत्कमंडके प्राचीन लिपिविद् कार्यालयके प्रमुख डॉ० दिनेशचन्द्र सरकारसे वहाँके पुस्तकालयमें अध्ययनकी सुविधा मिली तथा वहाँके अन्य अधिकारी डॉ० गै एव श्री० रितीसे अच्छा सहयोग मिला एतदर्थ हम उनके ऋणी हैं । उन सब विद्वानोंका ऋण तो स्पष्ट ही है जिन्होंने इन लेखोंका पहले सम्पादन किया था तथा विभिन्न पत्रिकाओंमें उन्हें प्रकाशित किया था ।

अन्तमें कन्नड भाषा अथवा इतिहासके अज्ञानवश जो त्रुटियाँ रही हो उनके लिए हम पाठकोंसे क्षमा चाहते हैं ।

जावरा - दिसम्बर १९६१

- वि० जोहरापुरकर

## संकेत-सूची

### (अ) पूर्णतः उपयुक्त पत्रिकाएँ -

ए० इ०	एपिग्राफिया इण्डिका
रि० इ० ए०	एन्युअल रिपोर्ट ऑन इण्डियन एपिग्राफी
रि० सा० ए०	एन्युअल रिपोर्ट ऑन साउथ इण्डियन एपिग्राफी
इ० म०	इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि मद्रास प्रेसिडेन्सी
इ० पु०	इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि पुदुकोट्टै स्टेट
ए० रि० मै०	एन्युअल रिपोर्ट ऑफ दि मैसोर आर्किऑलॉजिकल डिपार्टमेण्ट
रि० आ० स०	एन्युअल रिपोर्ट ऑफ दि आर्किऑलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया

### (आ) अंशतः उपयुक्त पत्रिकाएँ -

सा० इ० इ०	साउथ इण्डियन इन्स्क्रिप्शन्स
इ० ए०	इण्डियन एण्टिक्वेरी
मे० आ० स०	मेमॉयर्स ऑफ दि आर्किऑलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया
इ० हि० का०	इण्डियन हिस्टॉरिकल काँग्रेस-रिपोर्ट
इ० ओ० का०	इण्डियन ओरिएण्टल काँफरन्स-रिपोर्ट



## प्रस्तावना

### १. लेखोंका साधारण परिचय—

जैन शिलालेख सग्रहके प्रस्तुत चौथे भागमें कुल ६५४ लेख सगृहीत हैं। इन्हे समयके क्रमसे प्रस्तुत किया है। इसमें सन्पूर्व चौथी सदीका १ (क्र० १) सन्पूर्व तीसरी सदीका १ (क्र० २), सन्पूर्व पहली सदीके ११ (क्र० ३ से १३,) सन् पहली सदीका १ (क्र० १४), दूसरी सदीके ४ (क्र० १५ से १८), पाँचवी सदीका १ (क्र० १९), छठी सदीके दो (क्र० २० व २१), सातवी सदी के २२ (क्र० २२ से ४३) आठवी सदीके १० (क्र० ४४ से ५३), नौवी सदीके २० (क्र० ५४ से ७३), दसवी सदीके ४२ (क्र० ७४ से ११५), ग्यारहवी सदीके ६७ (क्र० ११६ से १८२), बारहवी सदीके १३४ (क्र० १८३ से ३१६,) तेरहवी सदीके ७३ (क्र० ३१७ से ३८९), चौदहवी सदीके ३० (क्र० ३९० से ४१९), पन्द्रहवी सदीके ३५ (क्र० ४२० से ४५४) सोलहवी सदीके ४७ (क्र० ४५५ से ५०१), सत्रहवी सदीके १५ (क्र० ५०२ से ५१६), अठारहवी सदीके ११ (क्र० ५१७ से ५२७), तथा उन्नीसवी सदीके ८ (क्र० ५२८ से ५३५) लेख हैं। शेष ११९ लेखोंका समय अनिश्चित है।

इन ६५४ लेखोंमें राजस्थानके २१, उत्तरप्रदेशके ९, बिहारके ४, वगालका १, गुजरातके ३, मध्यप्रदेशके १५, उड़ीसाके १६, महाराष्ट्रके ७, आन्ध्रके ४६, मद्रासके ८२, केरलका १ एव मैसूर प्रदेशके ४४७ लेख हैं।

भाषाकी दृष्टिसे इन लेखोंका विभाजन इस प्रकार है — प्राकृतके १८, संस्कृतके ८८, हिन्दीके ३, तेलुगुके ८, तमिलके ७७ एव कन्नडके ४६०।



प्रयोजनकी दृष्टिमें ये लेख मुख्यतः चार भागोंमें बाँटे जा सकते हैं— ८७ लेखोंमें जिनमन्दिरोंके निर्माण अथवा जीर्णोद्धारका वर्णन है, १२६ लेखोंमें जिनमूर्तियोंकी स्थापनाका वर्णन है, २०८ लेखोंमें मन्दिरों तथा मुनियोंको गाँव, जमीन, सुवर्ण, करोकी आय आदिके दानका वर्णन है, तथा १६४ लेखोंमें मुनियों, गृहस्थों तथा महिलाओंके समाधिमरणका उल्लेख है। इसके अतिरिक्त १३ लेखोंमें गुहा-निर्माणका, ४ लेखोंमें (क्र० ४८६, ४८७, ४८९ तथा ५७६) मठोंके आर्थिक व्यवहारोंका, ३ लेखोंमें (क्र० ४२५, ४७१ तथा ४७२) साम्प्रदायिक समझौतोंका एवं एक लेख (क्र० ५०७) में सामाजिक कुरहडिके निवारणका वर्णन है।

लेखोंके इस स्थूल परिचयके बाद हम इनसे प्राप्त ऐतिहासिक तथ्योंका कुछ विस्तारसे अवलोकन करेंगे— पहले जैनसंघके बारेमें तथा बादमें राज-वशों आदिके विषयमें।

## २. जैनसंघका परिचय—

(अ) यापनीय संघ—प्रस्तुत संग्रहमें यापनीय संघका उल्लेख कोई १७ लेखोंमें हुआ है। इनमें सबसे प्राचीन लेख गग राजा अविनीतका ताम्रपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है (ले० २०)<sup>१</sup>। इसमें 'यावनिक' संघ-द्वारा अनुष्ठित एक मन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

इस संघके कुमिलि अथवा कुमुदि गणका उल्लेख चार लेखोंमें है<sup>२</sup> (क्र० ७०, १३१, ६११ एवं ६१२)। इनमें पहले लेख (क्र० ७०) में नाँवी नदीमें इस गणके महावीर गुरुके शिष्य अमरमुदल गुरुका वर्णन है। इन्होंने कीरैप्पाक्कम् ग्रामके उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका निर्माण

१. पहले संग्रहके क्र० ९९, १०० तथा १०५ लेखोंमें ५वीं सदीके उत्तरार्धमें भी यापनीय संघका उल्लेख है।

२. पहले संग्रहमें इस गणका कोई उल्लेख नहीं है।

कराया था। दूसरे लेख ( क्र० १३१ ) में सन् १०४५ में इस गणके कुछ आचार्योंका वर्णन है। इस समय चावुण्ड नामक अधिकारीने मुगुन्द ग्राममें एक जिनालय बनवाया था। अन्य दो लेख ( क्र० ६११ तथा ६१२ ) अनिश्चित समयके निषिद्धि लेख हैं। इनमें पहला लेख इस गणके शान्त-वीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है।

यापनीय संघका दूसरा गण पुन्नागवृक्षमूल गण चार लेखोंसे ज्ञात होता है ( क्र० १३०, २५९, १६८, ६०७ )। पहले लेखमें सन् १०४४ में इस गणके बालचन्द्र आचार्यको पूल नगरके नवनिर्मित जिनालयके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी लेखके उत्तरार्धमें सन् ११४५ में इस गणके रामचन्द्र आचार्यको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस गणका अगला उल्लेख ( क्र० २५९ ) सन् ११६५ का है। इसमें इस गणकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है — मुनिचन्द्र — विजयकीर्ति — कुमारकीर्ति त्रैविद्य — विजयकीर्ति ( द्वितीय )। शिलाहार राजा विजयादित्यके सेनापति कालणने एकसम्बुगे नगरमें एक जिनालय बनवाकर उसके लिए विजयकीर्ति ( द्वितीय ) को कुछ दान दिया था। एक लेखमें ( क्र० १६८ ) वृक्षमूलगणके मुनिचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है — यह सन् १०९६ का लेख है। एक अनिश्चित समयके लेख ( क्र० ६०७ ) में भी वृक्षमूलगणके एक मन्दिर कुसुमजिनालयका उल्लेख है। हमारा अनुमान है कि इन दो लेखोंका वृक्षमूलगण पुन्नागवृक्षमूलगणसे भिन्न नहीं होगा।

यापनीय संघके कण्डूर गणका उल्लेख तीन लेखोंमें है ( क्र० २०७, ३६८, ३८६ ) इनमें पहला लेख १२वीं सदीके पूर्वार्धका है तथा इसमें

१. पहले संग्रहमें पुन्नागवृक्षमूलगणके दो उल्लेख सन् ८१२ तथा सन् ११०८ के हैं ( क्र० १२४, २५० )।

इस गणके वाहुवली, शुभचन्द्र, मौनिदेव एवं माघनन्दि इन चार आचार्यों का वर्णन है — इनमें परस्पर सम्बन्ध बतलाया नहीं है। दूसरे लेखमें १३वीं सदीमें इस गणके एक मन्दिरका उल्लेख है तथा तीसरे लेखमें इसी समयकी एक जिनमूर्तिका उल्लेख है।<sup>१</sup>

इसी सघके कारेयगणका उल्लेख १२वीं सदीके पूर्वार्धके एक लेख (क्र० २०९) में है। मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरि ये इस गणके आचार्य थे।<sup>२</sup>

पाँच लेखोंमें यापनीय सघका उल्लेख किसी गण या गच्छके बिना ही प्राप्त होता है (क्र० १४३, २९८-३००, ३८४)। इनमें पहला लेख सन् १०६० का है तथा इससे जयकीर्ति — नागचन्द्र — कनकशक्ति इस गुणपरम्पराका पता चलता है। अगले दो लेख १२वीं सदीके हैं तथा इनमें मुनिचन्द्र एवं उनके शिष्य पाल्यकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है। अन्तिम लेखमें १३वीं सदीमें त्रैकीर्ति आचार्यका उल्लेख है।

इन तरह प्रस्तुत संग्रहसे यापनीय सघका अस्तित्व छठी सदीसे तेरहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।<sup>३</sup>

(धा) मूलसंघ—प्रस्तुत संग्रहमें मूलसघके अन्तर्गत सेनगण, देशी गण, सूरस्थगण, बलगारगण (बलात्कार गण) क्राणूरगण तथा निगमा-

१. पहले संग्रहमें इस गणका उल्लेख सन् ६८० में हुआ है (क्र० १६०)।

२. पहले संग्रहमें इस गणके दो लेख सन् ८७५ तथा दसवीं सदी-पूर्वार्धके हैं (क्र० १३०, १८२)।

३. पहले संग्रहमें यापनीय सघके तीन और गणोंका उल्लेख है — कनकोपलम्भभूत वृक्षमूल गण, श्रीमूलमूलगण तथा कोटिमहुव गण- (तीसरा भाग-प्रस्तावना पृ० २७-२९)।

न्वय इन छह परम्पराओंके उल्लेख विस्तारसे मिलते हैं।<sup>१</sup> इनका अव क्रमग विवरण प्रस्तुत करेंगे।

(आ १) सेनगण—इसका प्राचीनतम उल्लेख सन् ८२१ का है ( क्र० ५५ )। इस लेखमें इसे 'चतुष्टय मूलसंघका उदयान्वय सेनमघ' कहा है। इसकी आचार्यपरम्परा मल्लवादी-सुमति पूज्यपाद-अपराजित इस प्रकार थी। लेखके समय गुजरातके राष्ट्रकूट शासक कर्कराज मुवर्णवर्पने अपराजित गुरुको कुछ दान दिया था।<sup>२</sup>

सेनगणके तीन उपभेद थे — पोगरि अथवा होगरि गच्छ, पुस्तक गच्छ, एव चन्द्रकवाट अन्वय। पोगरि गच्छका पहला लेख ( क्र० ६१ ) सन् ८९३ का है तथा उसमें विनयसेनके शिष्य कनकसेनको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस लेखमें इसे मूलसंघ-सेनान्वयका पोगरियगण कहा है। दूसरा लेख ( क्र० १३४ ) सन् १०४७ का है तथा इसमें नागसेन पण्डितको सेनगण-होगरि गच्छके आचार्य कहा है। इन्हें चालुक्य राज्ञी अक्कादेवीने कुछ दान दिया था।<sup>३</sup>

चन्द्रकवाट अन्वयका पहला लेख ( क्र० १३८ ) सन् १०५३

- १ पहले संग्रहमें उल्लिखित देवगणका कोई लेख इस संग्रहमें नहीं है। पहले संग्रहमें मूलसंघके प्राचीन उल्लेख ( क्र० ६०, ९४ ) पाँचवीं सदीके हैं। तथा उनमें गण आदिका उल्लेख नहीं है।
- २ पहले संग्रहमें सेनगणका प्राचीनतम उल्लेख सन् ९०३ का है ( क्र० १३७ )। इसे देखकर डॉ० चौधरीने कल्पना की थी कि आदिपुराणकर्ता जिनसेन ही सेनगणके प्रवर्तक होंगे ( तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४४ ) किन्तु प्रस्तुत लेखसे जिनसेनके गुरु वीरसेनके समयमें ही सेनसंघकी परम्पराका अस्तित्व प्रमाणित होता है। वीरसेनने धवलाटीकाकी रचना सन् ८१६ में पूर्ण की थी।
३. पहले संग्रहमें पोगरिगच्छके चार उल्लेख सन् १०४५ से १२७१ तक के आय हैं। ( क्र० १८६, २१७, १८६, ५११ )

का है तथा इसमें अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन इस परम्पराका वर्णन है। लेखके समय सिन्द कुलके सरदार कंचरसने नयसेनको कुछ दान दिया था। नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन ( द्वितीय ) का उल्लेख सन् १०८१ के लेख ( क्र० १६५ ) में मिलता है। दोण नामक अधिकारी-द्वारा इन्हे कुछ दान दिया गया था। इन लेखोंमें नरेन्द्रसेन तथा नयसेनकी व्याकरण-शास्त्रमें निपुणताके लिए प्रशंसा की गयी है।<sup>१</sup>

एक लेख ( क्र० १४७ ) में चन्द्रकवाट वगके गान्तिनन्दि भट्टारकका मन् १०६६ में उल्लेख है। इसमें मूलसघका उल्लेख है किन्तु सेनगणका उल्लेख नहीं है।

सेनगणके तीसरे उपभेद पुस्तकगच्छका वर्णन १४वीं सदीके एक लेख ( क्र० ४१५ ) में है। इसमें ग्यारह आचार्योंकी परम्परा बतलायी है। इस परम्पराके प्रभाकरसेनके शिष्य लक्ष्मीसेनके समाधिमरणका प्रस्तुत लेखमें वर्णन है। लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनका समाधिमरण सन् १४०५ में हुआ था ( ले० ४२१ )।

प्रस्तुत, संग्रहके पाँच लेखोंमें सेनगणका उल्लेख किसी उपभेदके बिना हुआ है ( क्र० ४९२, ४९३, ५०४, ५०७, ६२६ )। पहले दो लेखोंमें सन् १५१७ में सोमसेन भट्टारक-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अगले दो लेखों ( ५०४, ५०७ ) में समन्तभद्र आचार्यका सन् १६२२ एवं १६३२ में उल्लेख है। सन् १६२२ में उन्होंने एक मन्दिरका जीर्णोद्धार किया था तथा सन् १६३२ में दीवालीका त्यौहार मनानेके ढंगमें कुछ नुस्खार किया था। अन्तिम लेख अनिश्चित समयका है तथा इसमें प्रसिद्ध वादी भायसेन त्रैविद्यचक्रवर्तीके समाधिमरणका उल्लेख है।<sup>२</sup>

१. परन्तु संग्रहमें चन्द्रकवाट ग्रन्थका कोई वर्णन नहीं है।

२. भायसेन कृत ससृष्ट ग्रन्थ विष्णुतत्त्वप्रकाश जीवराज ग्रन्थमाला ( शोलापुर ) द्वारा प्रकाशित हो रहा है। इसको प्रस्तावनामें हमने भायसेनका समय १३वीं सदीका उत्तरार्ध निश्चित किया है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहके १३ लेखोंमें सेनगणका अस्तित्व आठवीं सदीमें सप्तहवीं सदी तक प्रमाणित होता है ।<sup>१</sup>

(आ २) देशीगण—प्रस्तुत संग्रहमें देशीगणके पुस्तकगच्छ, आर्य-संग्रहकुल, चन्द्रकराचार्याम्नाय, तथा मैणदान्वय इन चार परम्पराओंका उल्लेख हुआ है ।

पुस्तकगच्छका एक उपभेद पनसोगे ( अथवा हनसोगे ) बलि था । इसका पहला उल्लेख ( क्र० ७४ ) दसवीं सदीके प्रारम्भका है<sup>२</sup> तथा इसमें श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है । इस बलिका दूसरा लेख ( क्र० २७२ ) सन् ११८० के आसपासका है तथा इसमें नयकीर्तिके शिष्य अध्यात्मी बालचन्द्र-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है । इस शाखाके चार लेख और हैं ( क्र० २९२, ३३५, ४१६ तथा ५३८ ) जो बारहवींसे चौदहवीं सदी तकके हैं । इनमें ललितकीर्ति, देवचन्द्र तथा नयकीर्ति आचार्योंका उल्लेख है । अन्तिम लेखमें 'घनशोकवली' इस प्रकार इस शाखाके नामका संस्कृतीकरण किया गया है ।

पुस्तकगच्छका दूसरा उपभेद इंगुलेश्वर बलि था । इसका उल्लेख सात लेखोंमें ( क्र० २९०, ३१०, ३६९, ३७८, ३८२, ६०६, ६४२ ) मिला है । ये सब लेख १२वीं - १३वीं सदीके हैं । तथा इनमें हरि-चन्द्र, श्रुतकीर्ति, भानुकीर्ति, माघनन्दि, नेमिदेव, चन्द्रकीर्ति तथा जयकीर्ति

१. सेनगणकी पुष्करगच्छ नामक शाखा कारजा ( विदर्भ ) में १५वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थी । इसका विस्तृत वृत्तान्त हमारे ग्रन्थ 'मठारक सम्प्रदाय' में दिया है । पुष्करगच्छ सम्भवतः पोगिरि गच्छका ही संस्कृत रूप है ।
२. यही हम संग्रहमें देशीगणका पहला उल्लेख है । पहले संग्रहमें देशीगणके उल्लेख सन् ८६० ( क्र० १२७ ) से मिले हैं तथा पन-सोगे शाखाके उल्लेख सन् १०८० ( क्र० २०३ ) से प्राप्त हुए हैं ।

इन आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं ।<sup>१</sup>

प्रस्तुत संग्रहमें पुस्तकगच्छके उल्लेख विना किसी उपभेदके भी कई लेखोंमें मिलते हैं । इनमें पहला लेख ( क्र० १६४ ) सन् १०८१ का है तथा इसमें सकलचन्द्र भट्टारकका उल्लेख है । इस प्रकारके अन्य लेख १७ हैं ( क्र० १७१, १७७-८, १९०, २०३, २३४, २५१, ३१८-९, ३६१-६, ४९०, ५६१ ) । ये लेख १६वीं सदी तकके हैं । इनसे कोई विस्तृत गुरु-परम्पराका पता नहीं चलता<sup>२</sup> ।

देशीगणके दूसरे उपभेद आर्यसघग्रहकुलका उल्लेख एक ही लेख ( क्र० ९४ ) में मिला है । यह लेख दसवीं सदीका है तथा इसमें कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख है । विशेष यह है कि यह लेख उड़ीसाके खण्डगिरिपर्वतपर मिला है जब कि देशीगणके अन्य उल्लेख मैसूर प्रदेशके हैं ।<sup>३</sup>

देशी गणका तीसरा उपभेद चन्द्रकराचार्याम्नाय भी एक ही लेखसे ज्ञात होता है ( क्र० २१७ ) तथा यह मध्यप्रदेशमें मिला है । इसमें प्रतिष्ठाचार्य सुभद्र-द्वारा १२वीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरकी प्रतिष्ठाका उल्लेख है ।<sup>४</sup>

देशी गणके चौथे उपभेद मैणदान्वयके शुभचन्द्र आचार्यका एक उल्लेख १३वीं सदीमें मिला है ( क्र० ३७२ ) ।<sup>५</sup>

१. पहले संग्रहमें इंगुलेश्वर बलिके उल्लेख सन् ११८३ ( क्र० ४११ ) से सन् १५४४ ( क्र० ६७३ ) तकके हैं ।

२. पहले संग्रहमें पुस्तक गच्छके उल्लेख सन् ८६० ( क्र० १२७ ) से सन् १८१३ ( क्र० ७५३ ) तक के हैं ।

३, ४ पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका कोई उल्लेख नहीं है ।

५. पहले संग्रहमें इन अन्वयका उल्लेख नहीं है इससे मिलता जुलता पुरु उपभेद त्राणद बलि है जो पुस्तकगच्छके अन्तर्गत था ( क्र० ४७८ ) इसका उल्लेख सन् १२३२ का है ।

किसी उपभेदके विना भी देशीगणके कई उल्लेख मिले हैं। इनमें दो लेखोमें ( क्र० ८३, १६९ ) सन् ९५० तथा १०९६ में गुणचन्द्र और रविचन्द्र आचार्योंका उल्लेख है। इन लेखोमें देशी गणके साथ सिर्फ कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण है। कोई १८ लेखोमें मूलमंघ — देशीगण इस प्रकार उल्लेख है। इनमें प्राचीनतर लेख ( क्र० १९३, २२९, २५६ ) बारहवी सदीके हैं। कोई ८ लेखोमें देशीगणके साथ अन्य कोई विशेषण नहीं है। ऐसे लेखोमें प्राचीनतर लेख ( क्र० १२६, १३९, १४० ) सन् १०३२ तथा १०५४ के हैं और इनमें अष्टोपवासी कनकनन्दि आचार्योंको कुछ दान देनेका वर्णन है।

( आ ३ ) कोण्डकुन्दान्वय—देशी गणके पुस्तक गच्छको प्राय कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण दिया गया है। कुछ लेखोमें किसी सघ या गणके विना सिर्फ कोण्डकुन्दान्वयका उल्लेख है। ऐसे लेखोमें प्राचीनतर लेख ( क्र० १८०, २२२ ) ग्यारहवी-त्रारहवी सदीके हैं। एक प्राचीन लेख ( क्र० ५४ ) में सन् ८०८ में कोण्डकुन्देय अन्वयके सिर्मलगेरू गणके कुमारनन्दि-एलवाचार्य-वर्धमानगुरु इस परम्पराका उल्लेख है। वर्धमानगुरुको राष्ट्रकूट राजा कम्भराजने एक ग्राम दान दिया था। इस लेखमें कोण्डकुन्देय अन्वय यह शब्द प्रयोग है जो स्पष्टत कोण्डकुन्दे स्थानका सूचक है।<sup>१</sup>

( आ ४ ) सूरस्थ गण — प्रस्तुत सग्रहमें इस गणका पहला उल्लेख सन् ९६२ का है ( क्र० ८५ )। इसमें प्रभाचन्द्र — कलनेलेदेव-रविचन्द्र-

१ पहले सग्रहमें कोण्डकुन्दान्वयका प्रथम उल्लेख सन् ७९७ में ( क्र० १२२ ) विना किसी गणके हुआ है। वहाँ सिर्मलगेरू गणका कोई उल्लेख नहीं है। कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण क्वचित् द्राविड संघ, सेनगण आदिके लिए भी प्रयुक्त हुआ है ( तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४५, ५१ )



रविनन्दि-एलाचार्य इस परम्पराका वर्णन है। गण राजा मारसिंह २ ने एलाचार्यको एक ग्राम अर्पण किया था।<sup>१</sup>

सूरस्थ गणके दो उपभेदोंका पता मन्त्र है - कौमर गच्छ तथा चित्रकूटान्वय।<sup>२</sup> कौमर गच्छका एक ही लेख है ( क्र० ११७ ) तथा इसमें सन् १००७ में अर्हणन्दि पण्डितका वर्णन है। चित्रकूटान्वय १० लेख है। पहले लेखमें ( क्र० १५३ ) सन् १०७१ में इस अन्वयके श्रीनन्दि पण्डितको एक गिण्याको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। श्रीनन्दिकी गुन्परम्परा इस प्रकार थी - वन्दनन्दि-दामनन्दि-सकलचन्द्र-कनकनन्दि-श्रीनन्दि। श्रीनन्दि तथा उनके गुरुवन्द् भान्करनन्दिके गमा-विलेख सन् १०७७-७८ के है ( क्र० १६० )। इस अन्वयका तीसरा लेख ( क्र० १५८ ) सन् १०७४ का है तथा इनमें अरुहणन्दिके शिष्य आर्य पण्डितको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अगले दो लेखोंमें ( क्र० २३७-३८ ) इस अन्वयकी एक परम्पराका पता चलता है जो इस प्रकार थी - वासुपूज्य-हरिणन्दि-नागचन्द्र। हरिणन्दि तथा नागचन्द्रको सन् ११४८ में कुछ दान मिला था। इस अन्वयके अन्य लेख अनिश्चित समयके हैं। इस प्रकार कोई १४ लेखोंमें सूरस्थ गणका अस्तित्व दसवीं सदीसे बारहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।<sup>३</sup>

( आ ५ ) बलगार-( बलात्कार )-गण - इस गणका पहला उल्लेख

१. सूरस्थ गणका प्राचीन लेख पहले संग्रहमें सन् १०५४ का है ( क्र० १८५ )।
२. पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका वर्णन नहीं है। वहाँ चित्र-कूटान्वयका सम्बन्ध बलगार गणसे भी पाया गया है ( क्र० २०८ )
३. कुछ लेखोंमें सेनगण और सूरस्थगणको ( जिसे कहीं-कहीं शूरस्थ भी कहा है ) अभिन्न माना है। इसका विवरण हमने 'मटारक सम्प्रदाय' के सेनगण विषयक प्रकरणमें दिया है।

सन् १०७१ का है ( क्र० १५४ ) ।<sup>१</sup> इसमें मूलसंघ-नन्दिसंघका बलगार गण ऐसा इसका नाम है तथा इसके ८ आचार्योंकी परम्परा दी है जो इस प्रकार है — वर्धमान-महावादी विद्यानन्द—उनके गुरुबन्धु ताकिकार्क माणिक्यनन्दि-गुणकीर्ति-विमलचन्द्र-गुणचन्द्र—गण्डविमुक्त—उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि । अगले लेख ( क्र० १५५ ) में इसी परम्पराके तीन और आचार्योंके नाम हैं—अभयनन्दि-सकलचन्द्र-गण्डविमुक्त २—त्रिभुवनचन्द्र । इन लेखोंमें गुणकीर्ति तथा त्रिभुवनचन्द्रको मिले हुए दानोका विवरण है । लेख १५७ में सन् १०७४ में पुनः त्रिभुवनचन्द्रका उल्लेख है । इस गणके अगले महत्त्वपूर्ण लेख ( क्र० ३४२, ३७६ ) तेरहवीं सदीके है । इनमें शास्त्रसारसमुच्चय आदि ग्रन्थोंके कर्ता माघनन्दि आचार्यका वर्णन है । इनकी गुरुपरम्परामें १९ आचार्योंके नाम दिये हैं किन्तु उनका क्रम व्यवस्थित प्रतीत नहीं होता ।

चौदहवीं सदीसे बलात्कारगणके साथ सरस्वतीगच्छका उल्लेख मिलता है । इसकी एक परम्पराके आचार्य अमरकीर्ति थे । इनके शिष्य माघनन्दिने सन् १३५५में एक मूर्ति स्थापित की थी ( क्र० ३९३ ) इसी परम्पराके तीन लेख और हैं । इनमें वर्धमान, धर्मभूषण तथा वर्धमान २ इन भट्टारकोका उल्लेख है । ये लेख सन् १३९५ तथा १४२४ के हैं ( क्र० ४०३,

१ इस लेखसे बलगार गणकी परम्पराका अस्तित्व सन् ९०० तक ज्ञात होता है । अतः डॉ० चौधरीकी यह कल्पना गलत प्रतीत होती है कि यह बलहारि गणका ही रूपान्तर है । बलहारि गणका उल्लेख पहले सग्रहमें सन् ६५० के लगभग मिला है ( तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० २६, ३० ) ।

२ हम परम्परामें माणिक्यनन्दिका नाम उल्लेखनीय है । हमारा अनुमान है कि परीक्षामुखके कर्ता माणिक्यनन्दि इनसे अभिन्न होंगे !

४०४, ४३४) ।<sup>१</sup>

बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छकी उत्तर भारतीय शाखाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं ( क्र० ४४८, ४६०, ४६८ ) ।<sup>२</sup> इनमें सन् १५०० में रत्न-कीर्तिका तथा सन् १५३१ में घर्मचन्द्रका उल्लेख है ।

( आ ६ ) क्राणूर गण — इस गणके उल्लेखोंमें पहला दसवीं सदीका है ( क्र० ९६ ) ।<sup>३</sup> इसमें एक विस्तृत गुरुपरम्पराका वर्णन है किन्तु लेखके बीच-बीचमें घिस जानेसे इस परम्पराका ठीक ज्ञान नहीं होता । इस लेखमें मुनिचन्द्र आचार्यके एक शिष्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है ।

क्राणूर गणके तीन उपभेदोंके उल्लेख मिले हैं — तिन्रिणी गच्छ, मेपपापाण गच्छ तथा पुस्तकगच्छ । तिन्रिणी गच्छके ६ लेख हैं ( क्र० २१२, २११, ३२३, ४७६, ५६५, ६१९ ) । पहले दो लेख बाहारवीं सदीके हैं<sup>४</sup> तथा इनमें मेघचन्द्र तथा पर्वतमुनि इन आचार्योंका वर्णन है । तीसरा लेख सन् १२०७ का है तथा इसमें अनन्तकीर्ति भट्टारकको कुछ दान मिलनेका वर्णन है । अनन्तकीर्तिके पूर्ववर्ती छह आचार्योंके नाम भी इस

१ इस परम्पराका वर्णन पहले संग्रहके क्र० ५७२ तथा ५८५ में भी है ।

२. पहले संग्रहमें ऐसे दो लेख हैं ( क्र० ६१७, ७०२ ) । क्र० ६१७ में इसे मद्रमरुद गच्छ पढ़ा गया है, यह 'श्रीमद्भारुद गच्छ'-अर्थात् सरस्वतीगच्छका ही रूपान्तर है । उत्तर भारतमें बलात्कार-गणकी दस शाखाएँ १२वीं सदीमें २०वीं सदी तक विद्यमान थीं । इनका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है ।

३. पहले संग्रहमें क्राणूरगणका प्राचीनतम लेख सन् १०७४ का ( क्र० २०७ ) है ।

४. पहले संग्रहमें तिन्रिणीगच्छका पहला लेख सन् १०७५ का ( क्र० २०९ ) है ।

लेखमें दिये हैं। इस गच्छके चौथे लेख ( क्र० ४७६ ) में सन् १५५६ में देवकीर्ति-मुनिचन्द्र-देवचन्द्र यह परम्परा दी है। लेखके समय देवचन्द्रको कुछ दान मिला था।

मेषपापाणगच्छके दो लेख हैं ( क्र० २१४, ६०३ )। पहले लेखमें सन् ११३० में प्रभाचन्द्र के शिष्य कुलचन्द्र आचार्यका वर्णन है। दूसरा लेख इस गच्छकी एक वसदिके बारेमें है।<sup>१</sup>

पुस्तक गच्छका एक लेख ( क्र० २४० ) सन् ११५० का है किन्तु यह बीच-बीचमें घिसा हुआ है अतः इसका तात्पर्य स्पष्ट नहीं है।<sup>२</sup>

बारहवी-तेरहवी सदीके चार लेखोंमें ( क्र० २०२, ३१२, ३२६, ३७३ ) क्राणूरगणके कनकचन्द्र, माधवचन्द्र तथा सकलचन्द्र आचार्योंका वर्णन है। इनका गच्छ नाम अज्ञात है।

इस तरह कोई १५ लेखोंसे क्राणूरगणका अस्तित्व दसवी सदीसे सोलहवी सदी तक प्रमाणित होता है।

(आ ७) निगमान्वय—मूलसध-निगमान्वयका एक लेख ( क्र० ३६० ) सन् १३१० का है। इसमें कृष्णदेव-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।<sup>३</sup>

उपर्युक्त विवरणसे मूलसधके भेद-प्रभेदोंका अच्छा परिचय मिलता है। कोई १५ लेखोंमें किसी भेदका उल्लेख किये बिना मूलसधका उल्लेख मिलता है। इनमें प्राचीनतर लेख ( क्र० ११२, १४५, २०४ ) दसवी-

१ पहले सग्रहमें मेषपापाणगच्छका पहला उल्लेख सन् १०७९ का है ( क्र० २१६ )

२ पहले सग्रहमें इस गच्छका कोई उल्लेख नहीं है ( देशीगण तथा सेनगणमें भी पुस्तकगच्छ थे उनका वर्णन पहले आ चुका है। )

३. पहले सग्रहमें इस अन्वयका कोई लेख नहीं है।

मालवाके परमार वंशके राजा भोजके समयका - ग्यारहवीं सदी (पूर्वार्व) का एक लेख (क्र० १३५) मिला है।<sup>१</sup> इसमें सामन्त यशोवर्मा-द्वारा कल्कलेश्वर तीर्थके मुनिमुव्रतमन्दिरके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी वंशके उदयादित्यके समयका एक मन्दिर ऊनमें है (क्र० १७४)।

गुजरातके चौलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) का एक लेख मिला है (क्र० १४६)। इसने सन् १०६६ में वायड अधिष्ठानको वसतिकाके लिए कुछ भूमि दान दी थी। इसी वंशके राजा भीमदेव (द्वितीय) के समय - बारहवीं सदीके अन्तका एक लेख (क्र० २८७) है। इसमें वेरावलके चन्द्रप्रभमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अणहिल्लपुरमें राजा-द्वारा नन्दिसघके आचार्य श्रीकीर्तिके सम्मानका भी इसमें उल्लेख है।<sup>२</sup>

बुन्देलखण्डके कलचुरि वंशका एक लेख मिला है (क्र० २१७)। इसमें राजा गयाकर्ण तथा उसके सामन्त गोलहणदेवके समय - बारहवीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>३</sup>

राजस्थानके चाहमान वंशके पांच लेख हैं (क्र० २१८, २३१-३२, २३५, २६५)।<sup>४</sup> पहले चार लेख नडोलके राजा रायपालके समयके सन् ११३३ से ११४६ तकके हैं। इनमें पहले लेखमें रानी मीनलदेवी-द्वारा यतियोंके लिए दानका तथा बादके लेखोंमें ठाकुर राजदेव-द्वारा मन्दिर

१ इस वंशका उल्लेख पहले संग्रहमें नहीं है। परमार वंशकी त्रिस-वाडा व चन्द्रावती शाखाके लेख वहाँ आये हैं। (क्र० ३०५, ४७१, ४७२)।

२ चौलुक्य कुमारपालका एक लेख (क्र० ३३२) पहले संग्रहमें है।

३ इस वंशके कोई लेख पहले संग्रहमें नहीं है।

४ पहले संग्रहमें नडोलके चाहमान वंशके दो (क्र० ३५७-५८) तथा जालोरके चाहमान वंशका एक (क्र० ५०७) लेख है।

और यतियोंके लिए कुछ दानका वर्णन है। पाँचवाँ लेख शाकम्भरीके चाहमान राजा सोमेश्वरके समयका सन् ११७० का है। इसमें बिजोलिया-के पार्श्वनाथ मन्दिरके लिए पृथ्वीराज २ तथा सोमेश्वर-द्वारा दो गाँव दान दिये जानेका वर्णन है। इस राजवंशके कोई ३० पीढ़ियोंका वर्णन इस लेखमें मिलता है।<sup>१</sup>

मुगल साम्राज्यके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४८१, ५०६, ५१२)। पहला लेख अकबरके समयका सन् १५७१ का है। इसमें महेश्वरके आदिनाथ मन्दिरका जीर्णोद्धार मण्डलोई सुजानराय-द्वारा होनेका वर्णन है। शाहजहाँके राज्यका एक लेख (क्र० ५०६) सन् १६२८ का है। इसमें भी एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १६६२ का — औरंगजेबके समयका है। इसमें राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>२</sup>

### (आ) दक्षिण भारतके राजवंश—

(आ १) गग राजवंश—इस वंशके १३ लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं। इनमें पहला (क्र० २०) राजा अविनीतका एक दानपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें यावनिक सघके जिनमन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० २४) सातवी सदीके अन्तका शिवकुमार पृथ्वीकोगुणिवृद्धराजके समयका है। इसमें राजा तथा कुछ अन्य सज्जनो-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। तीसरे लेखमें (क्र० ४८) आठवी सदीके अन्तमें राजा श्रीपुष्प तथा नवी सदीके प्रारम्भमें राजा शिवमारके समय कुछ अधिकारियों-द्वारा एक जिनमन्दिरके

- 
- १ पहले संग्रहमें इसके बाद गुजरातके वाघेल और ग्वालियरके तोमर वंशके कुछ लेख हैं।
  २. पहले संग्रहमें मुगल राज्यके कई लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं। एक लेख (क्र० ७०२) दिगम्बर सम्प्रदायका भी है।

ग्यारहवीं सदीके है। इस तरह प्रस्तुत मग्नमें कुल मिलाकर मूलग्रन्थके कोई १५० लेख आये हैं।

(इ) गौड सध—इस सधका एक लेख (क्र० ८४) मिला है। उनमें सोमदेवसूरि-द्वारा एक जिनालयके निर्माणका उल्लेख है।<sup>१</sup>

(ई) द्राविड संघ—इस सधके नन्दिगण-अरुंगल अन्वयका एक लेख ग्यारहवीं सदीका है (क्र० १७५)

इसमें शान्तिमुनि-वादिराज-वर्धमान यह परम्परा दी है। वर्धमानके समाधिमरणका स्मारक उनके गुरुबन्धु कमलदेवने स्थापित किया था। इस अन्वयका अगला लेख मन् ११९२ का है (क्र० २८२) तथा इसमें वासुपूज्यके शिष्य वज्रनन्दिका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परा काफी विस्तारसे दी है किन्तु उसमें आचार्योंका क्रम स्पष्ट नहीं है। चौदहवीं सदीके एक लेखसे (क्र० ३४४) इस अन्वयके श्रीपाल-पद्मप्रभ-धर्मसेन इस परम्पराका पता चलता है।

द्राविड सधके तीन लेखोंमें (क्र० २५२, ३५७, ४०९) अरुंगल अन्वयका उल्लेख नहीं है। ये लेख मन् ११५९, १२९५ तथा १४वीं सदीके है। अन्तिम दो लेखोंमें क्रमज गुणसेन तथा लोकाचार्यका नाम ज्ञात होता है। इस तरह प्रस्तुत मग्नहके कोई आठ लेखोंमें इसका अस्तित्व ११वीं सदीसे १४वीं सदी तक प्रमाणित होता है।<sup>२</sup>

१ गौडसधका पहले संग्रहमें या अन्यत्र माहिन्यमें कोई वर्णन नहीं है। सोमदेवसूरिके लिखित यशस्तिलकचम्पू तथा नीतिवाक्यामृत ये ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।

२. पहले संग्रहमें द्राविड संघके उल्लेख मन् ९९० (क्र० १६६) में मिले हैं। इन्ने कहीं-कहीं मूलसंघ-द्रविडान्वय और द्रविड सध-कोण्डकुन्दान्वय कहा है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ३५-४३)

(ड) माथुर सघ—इसका उल्लेख सन् ११७० के एक लेखमें (क्र० २६५) है। इस सघके महामुनि गुणभद्र-द्वारा इस लेखकी रचना की गयी थी। लेखमें लोलक श्रेष्ठी-द्वारा पार्श्वनाथमन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>१</sup>

(झ) पंचस्तूप निकाय—प्रस्तुत सग्रहके एक लेख (क्र० १९) में काशीके पंचस्तूप निकायके आचार्य गुहनन्दिका वर्णन है। इनके शिष्योंके लिए वटगोहाली ग्राममें एक विहार था जिसे ब्राह्मण नाथशर्मनि सन् ४७९ में कुछ दान दिया था।<sup>२</sup>

(ञ) जम्बूखण्डगण—इसका उल्लेख छठी-सातवी सदीके एक लेखमें (क्र० २२) हुआ है। इसके आचार्य आर्यणन्दिको सेन्द्रक राजा इन्द्रगणन्दने कुछ दान दिया था।

(ट) सिंहवूर गण—इसका एक लेख (क्र० ५६) मिला है। इसमें सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्ष-द्वारा इस गणके नागनन्दि आचार्यको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।<sup>३</sup>

(ड) जैन संघके त्रिषयमें साधारण विचार—अब तक जैन मुनियोंके विभिन्न सघोंका जो परिचय दिया गया है उससे स्पष्ट है कि इनमें व्यवहार-

१. माथुर संघ बादमें काण्ठासघका एक गच्छ बन गया था। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'मट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है।

२. धवलटाटीकाके कर्ता वीरसेन आचार्य पंचस्तूप अन्वयके ही थे (धवल-प्रशस्ति)। किन्तु उनके प्रशिष्य गुणभद्र उन्हें सेनान्वयका कहते हैं। हो सकता है कि पंचस्तूपान्वयको ही बादमें सेनान्वय नाम प्राप्त हुआ हो। किन्तु सेनान्वय सन् ७८० के लगभग अस्तित्वमें आ चुका था यह पहले स्पष्ट कर चुके हैं।

३. जम्बूखण्ड गण तथा सिंहवूर गणका वर्णन पहले संग्रहमें नहीं है।



की दृष्टिसे कोई खास भेद नहीं था। इन सभी नवोंके मुनि मठ-मन्दिर बनवाते थे, उनके लिए खेत, घर, वगीचे, गाँव आदिका दान ग्रहण करते थे, राजमहाजनोंमें वादविवाद करते थे, प्रसगानुकूल राजकार्यमें मदद देते थे तथा मन्त्रसाधना, ज्योतिष और वैद्यकका आश्रय लेकर जैन सघका प्रभाव बढ़ानेकी कोशिश करते थे। ये सब प्रवृत्तियाँ जैन साधुके मूलभूत उद्देश-वीतराग भावकी साधनाके कर्हातक अनुकूल हैं यह प्रश्न विचारणीय है। इन्हें रोकनेका ऐसा कोई व्यवस्थित प्रयत्न दिगम्बर सम्प्रदायमें हुआ हो ऐसा प्रमाण नहीं मिला है।<sup>१</sup>

यह तो नहीं कहा जा सकता कि दिगम्बर साधुसघके सभी मुनि इस प्रकारकी प्रवृत्तिप्रधान गतिविधियोंमें ही मग्न रहते थे — साधुसंघका एक दर्श अवश्य ही प्राचीन शास्त्रोक्तमार्गका निस्पृह भावमें अनुसरण करता रहा होगा। किन्तु लौकिक कार्योंमें दूर रहनेके कारण इन वीतराग साधुओंका शिलालेखों आदिमें वर्णन मिलना कठिन है।

### ३ राजवंशोंका आश्रय—

(अ) उत्तर भारतके राजवंश—प्रस्तुत संग्रहमें जैन सघका सम्मान करनेवाले जिन राजवंशोंका उल्लेख है उनमें कर्लिकके राजा खारवेलका वंश प्रथम व प्रमुख है। मनुपूर्व पहली सदीमें इस वंशके तीन राजपुरुषों-द्वारा जैन साधुओंके लिए खण्डगिरि पर्वतपर कई गुहाएँ बनवायी गयीं। खारवेलकी पटरानी, महाराज कुदेष्वरी तथा कुमार बडुख ये वे तीन राजपुरुष हैं ( ले० ३-५ )। यहीके एक लेख ( क्र० ९ ) में नगरके न्यायाधीश

१ श्वेताम्बर सम्प्रदायमें इन प्रवृत्तियोंको रोकनेके कुछ प्रयत्न होते रहे हैं। इस विषयमें प० नाथूरामजी प्रेमीका लेख 'चैत्यवासी और वनचामी' ( जैन साहित्य और इतिहास-द्वितीय संस्करण ) देखने योग्य है।

सुभूति-द्वारा निर्मित गुहाका भी उल्लेख है ।<sup>१</sup>

पाटलिपुत्रके गुप्त राजाओंके समयका एक लेख (क्र० १९) प्रस्तुत सग्रहमें है । यह सन् ४७९ का है तथा इसमें एक ब्राह्मण-द्वारा वटगोहालीके जैन विहारको कुछ दान मिलनेका वर्णन है ।<sup>२</sup>

हस्तिकुण्डी ( राजस्थान ) के राष्ट्रकूट वंशके राजा विदग्धराजका उल्लेख सन् ९४० के एक लेख (क्र० ८१) में मिला है । आचार्य वासुदेवके उपदेशसे इस राजाने ऋषभदेवका एक मन्दिर बनवाया था । इस मन्दिरके लिए राजाने अपनी सुवर्णतुला कराकर दान दिया था तथा नगरके व्यापारियोंसे कुछ करोकी आय भी अर्पित की थी । यह कार्य सन् ९१७ में हुआ था । विदग्धराजके पुत्र मम्मटने सन् ९४० में उक्त दानको पुनः सम्मति दी । मम्मटके पुत्र धवलकी वीरताका विस्तारसे वर्णन इस लेखमें मिलता है । धवलके पुत्र बालप्रसादके समय सन् ९९७ में उक्त मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ था ।<sup>३</sup>

उड़ीसाके राजा उद्योतकेसरीके समय - दसवीं सदीके दो लेख (क्र० ९३-९४) इस सग्रहमें हैं । इनमें खण्डगिरिके पुरातन मन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है ।

१. पहले सग्रहमें खारवेलके जीवनके विषयमें एक विस्तृत लेख (क्र० २) आ चुका है । उसके पहले मौर्य सम्राट् अशोकके लेखमें (क्र० १) 'निर्ग्रन्थो ( जैनों ) की देखभालका भी उल्लेख हुआ है ।
२. पहले संग्रहमें गुप्तकालके तीन लेख ( क्र० ९१-९३ ) आये हैं । उसके पहले शक और कुषाण राजाओंके कई लेख भी हैं ।
३. पहले सग्रहमें इस राजवंशका उल्लेख नहीं है । वहाँ इसके पहले गुर्जर प्रतिहार राजा भोजका एक लेख (क्र० १२८) है । इसी समयके कच्छपघात तथा चन्देल वंशोंके भी कुछ लेख पहले संग्रहमें आये हैं (क्र० १५३, २२८ आदि) ।

मालवाके परमार वंशके राजा भोजके समयका - वारहवीं सदी (पूर्वार्व) का एक लेख (क्र० १३५) मिला है।<sup>१</sup> इसमें सामन्त यशोवर्मा-द्वारा कल्कलेश्वर तीर्थके मुनिमुव्रतमन्दिरके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी वंशके उदयादित्यके समयका एक मन्दिर ऊनमें है (क्र० १७४)।

गुजरातके चौलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) का एक लेख मिला है (क्र० १४६)। इसने सन् १०६६ में वायड अधिष्ठानकी वसतिके लिए कुछ भूमि दान दी थी। इसी वंशके राजा भीमदेव (द्वितीय) के समय - वारहवीं सदीके अन्तका एक लेख (क्र० २८७) है। इसमें वेरावलके चन्द्रप्रभमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अणहिल्लपुरमें राजा-द्वारा नन्दि-सघके आचार्य श्रीकीर्तिके सम्मानका भी इसमें उल्लेख है।<sup>२</sup>

दुन्देलखण्डके कलचुरि वंशका एक लेख मिला है (क्र० २१७)। इसमें राजा गयाकर्ण तथा उसके सामन्त गोल्लुणदेवके समय - वारहवीं सदीके पूर्वार्वमें एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>३</sup>

राजस्थानके चाहमान वंशके पांच लेख हैं (क्र० २१८, २३१-३२, २३५, २६५)।<sup>४</sup> पहले चार लेख नडोलके राजा रायपालके समयके सन् ११३३ से ११४६ तकके हैं। इनमें पहले लेखमें रानी मीनलदेवी-द्वारा यतियोंके लिए दानका तथा बादके लेखोंमें ठाकुर राजदेव-द्वारा मन्दिर

- १ इस वंशका उल्लेख पहले संग्रहमें नहीं है। परमार वंशकी बाँस-वाढा व चन्द्रावती शाखाके लेख वहाँ आये हैं। (क्र० ३०५, ४७१, ४७२)।
- २ चौलुक्य कुमारपालका एक लेख (क्र० ३३२) पहले संग्रहमें है।
- ३ इस वंशके कोई लेख पहले संग्रहमें नहीं है।
- ४ पहले संग्रहमें नडोलके चाहमान वंशके दो (क्र० ३५७-५८) तथा जालोरके चाहमान वंशका एक (क्र० ५०७) लेख है।

और यतियोंके लिए कुछ दानका वर्णन है। पाँचवाँ लेख शाकम्भरीके चाहमान राजा सोमेश्वरके समयका सन् ११७० का है। इसमें बिजोलिया-के पार्श्वनाथ मन्दिरके लिए पृथ्वीराज २ तथा सोमेश्वर-द्वारा दो गाँव दान दिये जानेका वर्णन है। इस राजवशके कोई ३० पीढियोंका वर्णन इस लेखमें मिलता है।<sup>१</sup>

मुगल साम्राज्यके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४८१, ५०६, ५१२)। पहला लेख अकबरके समयका सन् १५७१ का है। इसमें महेश्वरके आदिनाथ मन्दिरका जीर्णोद्धार मण्डलोई सुजानराय-द्वारा होने-का वर्णन है। शाहजहाँके राज्यका एक लेख (क्र० ५०६) सन् १६२८ का है। इसमें भी एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १६६२ का — औरगजेबके समयका है। इसमें राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।<sup>२</sup>

### (आ) दक्षिण भारतके राजवंश—

(आ १) गग राजवंश—इस वंशके १३ लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं। इनमें पहला (क्र० २०) राजा अविनीतका एक दानपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें यावनिक सघके जिनमन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० २४) सातवी सदीके अन्तका शिवकुमार पृथ्वीकोगुणिवृद्धराजके समयका है। इसमें राजा तथा कुछ अन्य सज्जनो-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। तीसरे लेखमें (क्र० ४८) आठवी सदीके अन्तमें राजा श्रीपुष्प तथा नवी सदीके प्रारम्भमें राजा शिवमारके समय कुछ अधिकारियों-द्वारा एक जिनमन्दिरके

१ पहले संग्रहमें इसके बाद गुजरातके वाघेल और ग्वालियरके तोमर वंशके कुछ लेख हैं।

२. पहले संग्रहमें मुगल राज्यके कई लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं। एक लेख (क्र० ७०२) दिगम्बर सम्प्रदायका भी है।

लिए दो गाँवोंके दानका वर्णन है। चौथे लेखमें (क्र० ६३) राजा दुग्गमार-द्वारा नवी सदीमें एक मन्दिरको भूमिदान देनेका उल्लेख है। इसके बाद दसवी सदीके प्रारम्भके एक लेखमें (क्र० ७६) एरेय राजाके समय एक जैन आचार्यके समाधिमरणका वर्णन है। सन् ९५० के एक लेख (क्र० ८३) में राजा वूतुगकी रानी पद्मव्वरसि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ दानका वर्णन है। सन् ९६२ में राजा मारमिह २ ने अपनी माता-द्वारा निर्मित मन्दिरके लिए एलाचार्यको एक गाँव दान दिया था (क्र० ८५) इसी वर्षमें इस राजाने मुजार्थ नामक जैन ब्राह्मणको भी एक गाँव दान दिया था (क्र० ८६)। सन् ९७१ में इस राजाके समय शखजिनालयको कुछ दान मिलनेका वर्णन एक लेखमें (क्र० ८८) में है। दसवी सदीके अन्तके एक लेख (क्र० ९६) में राजा रक्कसगग तथा नन्नियगगके समय कुछ दानका वर्णन है। एक लेख (क्र० १५४) में वूतुग राजा तथा रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख है। इनकी स्मृतिमें गगकन्दर्प नामक जिनमन्दिर अण्णिगेरे नगरमें बनवाया गया था। एक अन्य लेखमें (क्र० २०७) पुन. रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख हुआ है। इस तरह गगवंशके राज्यकालमें जैनसंघकी स्थिति सदा ही प्रभावशाली रही थी।<sup>१</sup>

(आ २) कदम्ब वंश — इस वंशके स्वतन्त्र राज्यकालका एक लेख (क्र० २१) इस संग्रहमें है जो छठी सदीके राजा रविवर्मके समयका है। इस राजाने एक सिद्धायतनके लिए कुछ भूमि दान दी थी।<sup>२</sup> राष्ट्रकूट तथा चालुक्य साम्राज्यमें कदम्बवंशके कई सामन्त प्रादेशिक शासक थे। ऐसे सामन्तोंके कोई १५ लेख मिले हैं। सन् ८९० के एक

१. पहले संग्रहमें गंग वंशके कई लेख हैं, जिनमें सबसे प्राचीन लेख (क्र० ९०) पाँचवीं सदीके उत्तरार्धका है।
२. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जो पाँचवीं व छठी सदीके हैं (क्र० ९६-१०५)।

लेखमें कदम्ब महामामन्त अलियमरम-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका वर्णन है ( क्र० ६० ) । सन् १०४५ के एक लेखमें कोकण प्रदेशमें महामण्ड-लेश्वर चट्टय्यदेवके शासनका उल्लेख है ( क्र० १३१ ) तथा एक मन्दिर-को कुछ दान मिलनेका वर्णन है । सन् १०८१ के दो लेखोंमें कदम्ब राजा गोवलदेव तथा 'कादम्बचक्रवर्ति' वीरमके समय एक वसदिको दान मिलने-का तथा एक महिलाके समाधिमरणका वर्णन है ( क्र० १६३-४ ) । सन् १०९६ में कदम्ब कुलके सामन्त एरेयगकी रानी असवव्वरसिने एक मन्दिर बनवाया था ( क्र० १६९ ) । सन् ११२३ और ११३० के दो दानलेखोंमें ( क्र० २०२ व २१४ ) कदम्ब सामन्त तैलपदेव तथा मयूर-वमके शासनका उल्लेख है । तैलपदेवके शासनका उल्लेख सन् ११४८ के दो दानलेखोंमें भी है ( क्र० २३६-२३८ ) । सन् १२०७ के एक दानलेखमें कदम्ब सामन्त ब्रह्मका तथा सन् १२१८ में जयकेशीका उल्लेख मिला है ( क्र० ३२३ व ३२५ ) । सन् १५०४ में कदम्ब लक्ष्मणरसने चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्यको धर्माधिकार प्रदान किये थे ( क्र० ४५५ ) । एक अनिश्चित समयके लेख ( क्र० ६१४ ) में त्रिभुवनवीर नामक कदम्ब शासककी रानीके समाधिमरणका उल्लेख है ।

( आ ३ ) राष्ट्रकूट वंश — प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशके देज्ज महाराज-के सामन्त सेन्द्रक इन्द्रणन्दका एक लेख है ( क्र० २२ ) जो छठी-सातवी मदीका है । इन्द्रणन्दने आर्यनन्दि आचार्यको एक ग्राम दान दिया था ।<sup>१</sup> राष्ट्रकूट वंशकी प्रधान शाखाके कोई १३ लेख इस संग्रहमें हैं ।<sup>२</sup> इनमें पहला

१. देज्ज राजाका राष्ट्रकूटोंके प्रमुख वंशसे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है । सेन्द्रक वंशके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं — ( क्र० १०४, १०६, १०९ ) ।

२. पहले संग्रहमें इस शाखाके दस लेख हैं जिनमें पहला ( क्र० १२४ ) सन् ८०२ का है ।

लेख सन् ८०८ का है ( क्र० ५४ ) । इसमें सम्राट् गोविन्दराज जगत्संगके राज्यकालमें उनके ज्येष्ठ बन्धु रणावलोक कम्भराज-द्वारा वर्धमानगुरुको एक गाँवके दानका वर्णन है । हमारे लेख ( क्र० ५५ ) में सन् ८२१ में सम्राट् अमोघवर्षका तथा उनके चाचाके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्षका उल्लेख है । कर्कराजने अपराजितगुरुको एक खेत दान दिया था । सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्षने नागनन्दि आचार्यको भूमिदान दिया था ( क्र० ५६ ) । सन् ८६४ में इसी सम्राट्के राज्यकालमें एक समाधिनेत्र लिखता गया था ( क्र० ५७ ) । नवी-दसवी सदीके एक लेखमें नेमिचन्द्र आचार्यका वर्णन है जिसमें उन्हें राष्ट्रकूट वंशके लिए आनन्ददायी कहा है ( क्र० ७२ ) । सन् ९०२ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् कृष्ण २ अकालवर्षके शासनका तथा सन् ९२५ के एक मन्दिरलेखमें सम्राट् गोविन्द ४ नित्यवर्षके शासनका उल्लेख है ( क्र० ७७, ७८ ) । कृष्ण २ की रानी चन्द्रियब्बेने सन् ९३२ में एक जिनमन्दिर निर्माण कराया था ( क्र० ७९ ) । सन् ९५० के एक लेखमें कृष्ण ३ अकालवर्षके शासनका तथा इसके बादके एक लेखमें सम्राट् खोट्टिगका वर्णन है ( क्र० ८३, ८७ ) । इन्द्र ४ नित्यवर्षने एक जिनमूर्तिकी पादपीठ बनवाया था ( क्र० ८९ ) । सम्राट् इन्द्र ३ के सेनापति श्रीविजयकी प्रशंसामें एक स्तम्भलेख मिला है ( क्र० ९७ ) ।

बारहवी सदीके एक लेख ( क्र० २१७ ) में कलचुरि राजा गयाकर्णके अधीन राष्ट्रकूट कुलके सामन्त गोलहणदेवका उल्लेख है ।

( आ ४ ) पाण्ड्य वंश — इस वंशके पाँच लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं ।<sup>१</sup> इनमें पहला ( क्र० २३ ) सातवी सदीके राजा वरगुण विक्रमादित्यके समयका दानलेख है । आठवी सदीके एक लेखमें ( क्र० ५० ) सुन्दर पाण्ड्य राजा-द्वारा एक जिनमन्दिरकी जमीनको करमुक्त करनेका वर्णन है । सन् ८७० में राजा वरगुण २ के समय दो मूर्तियोंका जीर्णोद्धार हुआ

१. पहले संग्रहमें इस वंशका कोई लेख नहीं है ।

था ( क्र० ५८ ) । सित्तन्नवासलके गुहामन्दिरका जीर्णोद्धार नवी सदीमें राजा अविनिपशेखर श्रीवल्लभके समयमें हुआ था ( क्र० ६२ ) । इस वंशका अन्तिम लेख ( क्र० ३५६ ) सन् १२९० का एक दानलेख है तथा इसमें मारवर्मन् विक्रम पाण्ड्यके राज्यका उल्लेख है ।

( आ ५ ) पल्लववंश—इसका उल्लेख तीन लेखोंमें है । इनमें पहला लेख ( क्र० २० ) छठी सदीके पूर्वार्धका है । इसमें पल्लव राजा सिंहविष्णुकी माता-द्वारा निर्मित एक जिनमन्दिरका वर्णन है । दूसरे लेख ( क्र० ३९ ) में सातवी-आठवी सदीके शासक पल्लवादित्य वादिराजुलको अर्हत् भट्टारकका पादानुध्यात कहा है । तीसरा लेख ( क्र० ५३७ ) अनिश्चित समयका है तथा इसमें पेरुजिगदेव नामक पल्लव राजाके शासनका उल्लेख है ।<sup>१</sup>

( आ ६ ) चालुक्य वंश—ब्रदामीके चालुक्य राजाओंके दो लेख इस सग्रहमें हैं ।<sup>२</sup> पहला ( क्र० ४६ ) सन् ७०८ का है तथा इसमें राजा विजयादित्यकी रानी कुंकुमदेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है । दूसरे लेख ( क्र० ४६ ) में राजा कीर्तिवर्मा २के राज्यमें सन् ७५१ में एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है ।

वैंगीके चालुक्य राजाओंके तीन लेख इस सग्रहमें हैं ।<sup>३</sup> पहला ( क्र० ४४ ) लेख राजा जयसिंहवल्लभ २के राज्यका—आठवी सदीके प्रारम्भका है तथा इसमें रट्टगुडि वंशके सामन्त कल्याणवसन्त-द्वारा अर्हत् भट्टारकको कुछ दानका वर्णन है । दूसरा लेख ( क्र० ४९ ) आठवी सदीके उत्तरार्धमें राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके समयका है तथा इसमें सामन्त गोकथ्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए दानका वर्णन है । तीसरे ( क्र० १०० )

१. इस वंशका एक लेख पहले संग्रहमें है ( क्र० ११५ ) ।

२. इस शाखाके ६ लेख पहले संग्रहमें हैं ( क्र० १०६-८ तथा १११, ११३, ११४ ) ।

३. इस शाखाके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं ( क्र० १४३-१४४, २१० ) ।



में दसवी सदीके उत्तरार्धमें अम्मराज २-द्वारा विजयवाटकके जिनमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है ।

कल्याणीके चालुक्य राजाओंके लेख मख्यामें सर्वाधिक-५८ है । लेखोंकी अधिकताके कारण हम यहाँ उन लेखोंका ही उल्लेख करेंगे जिनमें इस वंशके सम्राटोंका जैन धर्मकार्योसि साक्षात् सम्बन्ध आया था — जिनमें सिर्फ उनके राज्यकालका उल्लेख है उनका निर्देश सूचीमें होगा ही । इस वंशके लेखोंमें पहला ( क्र० ११७ ) सन् १००७ का है तथा इसमें सामन्त नागदेवकी पत्नी-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है । यह लेख सम्राट् सत्याश्रय आहवमल्लके समयका है । सन् १०२७ के एक लेखमें ( क्र० १२४ ) सम्राट् जयसिंह २ की कन्या सोमलदेवी-द्वारा एक मन्दिरको कुछ दान मिला था ऐसा वर्णन है । सन् १०३२ के एक लेखमें सम्राट् जगदेकमल्ल-द्वारा एक मन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है ( क्र० १२६ ) । इस मन्दिरका नाम ही जगदेकमल्ल जिनालय था । जगदेकमल्लकी बहन अक्कादेवीने सन् १०४७ में गौणदवेडंगि जिनालयको कुछ दान दिया था ( क्र० १३४ ) । सन् १०५५ के एक लेखमें आचार्य इन्द्रकीर्तिको त्रैलोक्यमल्लकी सभाका आभूषण कहा है । ( क्र० १४१ ) । इस वंशका अन्तिम लेख ( क्र० २७४ ) सन् ११८५ का है तथा इसमें सोमेश्वर ४ के राज्यकालमें एक मन्दिरको कुछ दानका वर्णन है ।<sup>१</sup>

( आ ७ ) चोल वंश—इस वंशका उल्लेख कोई २५ लेखोंमें है ।<sup>२</sup> इनमें पहला ( क्र० ८२ ) सन् ९४५ का है तथा इसमें राजा परान्तक १ के समय एक कूपके निर्माणका वर्णन है । सन् ९९९ के एक लेखमें

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला ( क्र० १६६ ) सन् ९६० के आसपासका है ।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख ( क्र० १६७, १७१, १७४ ) हैं ।

(क्र०९२) राजराज १ के समय कुछ जैन आचार्योंका उल्लेख है। दसवी सदीके उत्तरार्धके एक दानलेखमें ( क्र० ९८ ) गण्डरादित्य मुम्मूडि चोल राजाका उल्लेख है। सन् १००९ के एक लेखमें ( क्र० ११९ ) राजराज १ की आज्ञाका वर्णन है जो ब्राह्मणों तथा जैनोको नियमित रूपसे कर देनेके लिए दी गयी थी। दो दानलेखोंमें ( क्र० १२१, १२९ ) ग्यारहवी सदी-पूर्वार्धमें राजेन्द्र १ चोलके शासनका उल्लेख है। सन् १०६८ के दो दानलेख राजेन्द्र २ के शासनकालके हैं ( क्र० १५०-५१ )। कुलोत्तुग १ के शासनके पाँच लेख हैं ( क्र० १६७, १७३, १९४, १९५, १९८ )। जो सन् १०८६ से १११८ तकके दानलेख हैं। विक्रमचोलके शासनके दो दानलेख सन् ११३१ तथा ११३४ के हैं ( क्र० २१५, २१९ ) कुलोत्तुग २ के राज्यकालके तीन लेख हैं जिनमें एक सन् ११३७ का है ( क्र० २२३, २२४, २२६ )। राजराज २ के शासनके तीन लेख सन् ११५६-५७ के हैं। (क्र० २४८-२५०)। कुलोत्तुग ३ के समयके दो लेख हैं (क्र० ३२४, ३८०) इनमें पहला सन् १२१६ का तथा दूसरा अनिश्चित समयका है। इस दूसरे लेखके अनुमार कुलोत्तुग राजाने नल्लूर नामक गाव एक देवमन्दिरको अर्पण किया था।

इस तरह हम देखते हैं कि चोल राजाओंके प्रायः सब लेख राजपुरुषोंसे साक्षात् सम्बन्ध नहीं रखते।

युद्धके दिनोंमें चोल सेना-द्वारा जिनमन्दिरोंका विध्वंस होनेका वर्णन सन् १०७१-७२ के एक लेखमें ( क्र० १५४ ) हुआ है।

( आ ८ ) होयसल वंश—इस वंशके कोई ३० लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।<sup>१</sup> इनमें सबसे पहला लेख ( क्र० १४५ ) सन् १०६२ का है तथा

---

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला ( क्र० २०० ) सन् १०६२ का ही है।

इसमें राजा विनयादित्य-द्वारा अभयचन्द्र पण्डितको दान दिये जानेका वर्णन है। सन् १०६९ के एक लेखमें विनयादित्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है। ग्रामीण लोग गरीबीके कारण यह कार्य नहीं कर सके थे अतः राजाने सहायता देकर यह मन्दिर बनवाया था ( क्र० १५२ ) ग्यारहवीं सदी-अन्तिम चरणके एक लेखमें ( क्र० १७५ ) वर्धमान आचार्यको होयसल राज्यके कार्यकर्ता यह विशेषण दिया है। राजा वल्लाल १ के सेनापति मरियानेने वारहवीं सदीके प्रारम्भमें एक मूर्ति स्थापित की थी ( क्र० १८३ )। वारहवीं सदी - प्रथम चरणके दो लेखोंमें राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी तथा उसके वन्धु द्रुमल्ल-द्वारा जिनमन्दिरको दान देनेका वर्णन है ( क्र० १८८-८९ )। इस समयके चार लेखोंमें ( क्र० २००, २०१, २१२, २१३ ) विष्णुवर्धनके चार सेनापतियों— गंगराज, उसका पुत्र वोप्प, पुणिसमथ्य तथा मरियानेके धर्मकार्यों का — मन्दिर निर्माण, दान आदिका वर्णन है। राजा नरसिंह १ ने सन् ११५९में एक मन्दिरको कुछ दान दिया था ( क्र० २५२ ) तथा उसके सेनापति भरतिमथ्य एव माचियणने सन् ११४५ तथा ११५३ में इसी प्रकारके दान दिये थे ( क्र० २३३, २४६ )। सन् ११७६ तथा ११९२ के लेखोंमें ( क्र० २७१, २८२ ) राजा वीरवल्लाल २ द्वारा जिनमन्दिरको दान देनेका वर्णन है तथा सन् ११७३ एव ११९० के लेखोंमें इसी राजाके अधीन अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानोका उल्लेख है ( क्र० २६८, २८१ )। इसी राजाके समयके तीन दानलेख और हैं ( क्र० २८५, २८६, ३२३ ) जो सन् ११९९ से १२०७ तक के हैं तथा दो समाधिलेख हैं ( क्र० ३२०-३२२ )। राजा नरसिंह ३ ने सन् १२६५में एक जिनमन्दिरको दान दिया था ( क्र० ३४२ ) तथा उसके अधीन अधिकारियोंने सन् १२५७, १२७१ तथा १२८५ में ऐसे ही धर्मकार्य किये थे ( क्र० ३३५, ३४५, ३५१ )। एक लेखमें राजा रामनाथ-द्वारा पार्श्वनाथ मन्दिरको दान देनेका वर्णन है ( क्र० ३६० ) तथा एक अन्य लेखमें राजा वीरवल्लाल ३ के समय सन्

१३१९में कुछ स्थानीय अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानका उल्लेख मिलता है ( क्र० ३९१ ) ।

( आ ९ ) कलचुर्य वंश—प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशका उल्लेख सात लेखोंमें है ।<sup>१</sup> इनमें पहला लेख सन् ११५९ का है तथा इसमें किसी सेना-पति-द्वारा एक जैन आचार्यको दान मिलनेका वर्णन है ( क्र० २५१ ) । यह लेख राजा विज्जलके समयका है । इस राजाका उल्लेख चार अन्य लेखोंमें है ( क्र० २५६, २६०-२६२ ) । ये लेख सन् ११६१ से ११६८ तक के हैं तथा इनमें स्थानीय अधिकारियों-द्वारा जैन आचार्योंको मिले हुए दानोका वर्णन है । इस वंशके अन्तिम दो लेख राजा सोविदेवके राज्यके सन् ११७३ तथा ११७५ के हैं ( क्र० २६७, २७० ) तथा इनमें भी स्थानीय व्यक्तियोंके दानोका उल्लेख है ।

( आ १० ) यादव वंश—देवगिरिके यादवोंका उल्लेख प्रस्तुत संग्रह-के १५ लेखोंमें है ।<sup>२</sup> इनमें पहला लेख ( क्र० ३२६ ) राजा सिंहणके समय सन् १२३० में लिखा गया था तथा एक मन्दिरके लिए कुछ दानका इसमें वर्णन है । इस राजाके समयके तीन अन्य लेखोंमें ( क्र० ३२८, ३२९, ३३० ) तीन महाप्रधानों — प्रभाकरदेव, मल्ल तथा वीचिराज-द्वारा जिन-मन्दिरोंके लिए दानोका वर्णन है । ये लेख सन् १२४५ तथा १२४७ के हैं । राजा कन्हरदेवके राज्यके चार लेख हैं ( क्र० ३३४, ३३६, ३३७, ३३९ ) । ये लेख सन् १२५७ से १२६२ तकके हैं इनमें तीन दानलेख हैं तथा एक समाधिलेख है । राजा महादेवके समयके तीन लेख हैं ( क्र० ३४०, ३४१, ३४४ ), ये सन् १२६५ तथा १२६९ के हैं तथा तीनों समाधिमरणके स्मारक हैं । राजा रामचन्द्रके समयके चार लेख हैं ( क्र० ३५२, ३५४, ३५५, ३५९ ), ये सन्

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं ( क्र० ४०८, ४३५, ४३६ ) ।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके ९ लेख हैं, जिनमें पहला ( क्र० ३१७ )

सन् ११४२ का है ।

१२८५ से १२९७ तक के हैं। पहले लेखमें सर्वाधिकारी मायदेव-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है, दूसरा एक ममाधिलेख है, तीसरेमें एक मन्दिरके लिए दानोका वर्णन है तथा चौथेमें महामण्डलेश्वर तिकमदेव-के मन्त्रीके पुत्र-द्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है।

( आ ११ ) विजयनगरके राजवश—विजयनगर राज्यके कोई २० लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं।<sup>१</sup> इनमें पहला ( क्र० ३९३ ) सन् १३५५ का है तथा हरिहर राजाके समय एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। बुक्क राजाके समयके दो लेख हैं ( क्र० ३९४, ३९६ ), ये सन् १३५७ तथा १३७६ के हैं। पहला लेख एक जिनमन्दिरके अवगोपोमें है तथा सेनापति वैचयका इसमें उल्लेख है। दूसरा एक समाधिलेख है। राजा हरिहर २ के सेनापति इरुगने एक जिनमन्दिर बनवाया था (क्र० ४०३)। तथा इस राजाके अधीन गोवाके शासक माधवके सेनापति नेमण्णने पार्श्वनाथ-मन्दिरको सन् १३९५ में कुछ दान दिया था (क्र० ४०२)। सन् १३९५ के ही एक लेखमें वैचय दण्डनायकके पुत्र इम्मडि बुक्कमन्त्रीश्वर-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है ( क्र० ४०४ )। राजा बुक्क २के समयके दो लेख हैं ( क्र० ४०६, ४१५ ) इनमें एक शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका स्मारक है तथा दूसरेमें लक्ष्मीसेन भट्टारकके ममाधिमरणका उल्लेख है। राजा देवरायके समयके दो लेख हैं ( क्र० ४२५, ४३४ )—पहला सन् १४१२ का है तथा दो मन्दिरोंकी सीमाओंके वारेमें एक समझौतेका इसमें वर्णन है। दूसरा सन् १४२४ का है तथा इसमें राजा-द्वारा नेमिनाथ-मन्दिरके लिए वराग ग्रामके दानका वर्णन है। राजा मल्लिकार्जुनके समय सन् १४५० में एक मन्दिरको मिले हुए दानोका वर्णन एक लेखमें है ( क्र० ४४० )। कृष्णदेव महारायके समयके एक लेखमें ( क्र० ४५६ )

१. पहले संग्रहमें इस वशके कई लेख हैं जिनमें पहला सन् १३५३ का है ( क्र० ५५८ )।

मन्दिरोंकी भूमियोंको करमुक्त करनेका वर्णन है, यह लेख सन् १५०९ का है। वराग ग्रामकी मन्दिरकी ज़मोनको खेतीयोग्य बनानेका वर्णन सन् १५१५ के एक लेखमें है (क्र० ४५८)। राजा अच्युतदेवने सन् १५३० में एक जिनमूर्तिको पूजाके लिए कुछ करोंकी आय दान दी थी (क्र० ४६७)। राजा सदाशिवके समय रामराजने सन् १५४५ में एक जिनमन्दिरको कुछ भूमि दान दी थी (क्र० ४७३)। इसी राजाके समयका एक दानलेख सन् १५५६ का है (क्र० ४७६)। राजा रामदेवके समय सन् १६१९ में एक जैन विद्वान्को कुछ दान दिया गया था (क्र० ५०३)। इस राज्यका अन्तिम लेख सन् १७५७ का है (क्र० ५२०) तथा इसमें सदाशिव रायके अधीन शासक अरसप्पोडेय-द्वारा चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

(आ १२) दक्षिण भारतके छोटे राजवश—अब हम उन राजवशोंके उल्लेखोंका विवरण देखेंगे जिन्होंने राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल या यादव राज्योंमें सामन्तोंके रूपमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया था। ऐसे वशोंमें नोलम्बवश प्रथम है जिसके चार लेख मिले हैं (क्र० ५९, ६१, १२३, १३९)।<sup>१</sup>

इनमें पहले दो लेख राजा महेन्द्रके समयके हैं। एकमें राजा-द्वारा सन् ८७८ में एक जिनमन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है तथा दूसरेमें सन् ८९३ में आचार्य कनकसेनके लिए कुछ दानका उल्लेख है। नोलम्ब घटेयककारने एक जिनमन्दिरको सन् १०२४ में भूमिदान दिया था (क्र० १२३)। नोलम्ब ब्रह्माधिराजके समय सन् १०५४ में अष्टोपवासी मुनिको कुछ दान मिले थे (क्र० १३९)।

हुम्मचके सान्तर वशके चार लेख मिले हैं (क्र० १३७, २५८, ४२२-

१ पहले संग्रहमें नोलम्बवाहिके कई उल्लेख हैं किन्तु नोलम्ब राजाओंका कोई लेख नहीं है।

४६१)।<sup>१</sup> इनमें पहला लेख सन् १०५३ का है तथा इसमें राजा वीर सान्तर-द्वारा उसके जैन मन्त्री नकुलरसको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। दूसरे लेखमें राजा तैलपदेवक जैन सेनापति गोगिकी मृत्युके बाद राजा-द्वारा उसके कुटुम्बियोंको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। यह लेख सन् ११६२ का है। तीसरे लेखमें राजा पाण्ड्यभूपाल-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। यह लेख सन् १४१० का है। चौथा लेख सन् १५२२ का है तथा इसमें इम्मडि भैरवरस राजा-द्वारा वरागके नेमिनाथमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

सिन्द कुलके सामन्तोंके चार उल्लेख मिले हैं (क्र० १३८, १६६, २६१, २६४)।<sup>२</sup> इनमें पहला सन् १०५३ का है तथा इसमें सिन्द कचरस-द्वारा नयसेन आचार्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है। दूसरा लेख सन् १०८५ का है तथा यह सिन्द वर्मदेवरसके समयका दानलेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६७ में सिन्द होलरस-द्वारा एक बसदिको दान दिये जानेका वर्णन है। अन्तिम लेखमें सन् ११७० में सिन्द चावुण्डरस-द्वारा जैन शालाको भूमिदान मिलनेका वर्णन है।

रट्ट कुलके उल्लेख छह लेखोंमें हैं (क्र० १७६, १८६, २५९, ३१७, ३१८, ३१९)।<sup>३</sup> इनमें पहला लेख ११वीं सदीका राजा कार्तवीर्य २ के समयका है, इसका विवरण अचूरा है। दूसरा लेख सन् ११०८ का है तथा इसमें राजा लक्ष्मीदेव-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६५ में राजा कार्तवीर्य ३-द्वारा एकसम्बुगके जिनमन्दिरके

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला ( क्र० १४६ ) सन् ६१० के आमपासका है।
२. पहले संग्रहमें सिन्द राजाओंके लेख नहीं हैं।
३. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १३०) सन् ८७५ का है।

दर्शनका वर्णन है। अन्तिम तीन लेख कार्तवीर्य ४ के राज्यके सन् १२०१ तथा १२०४ के है। इनमें राजा-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है।

शिलाहार वंशके चार लेख मिले हैं (क्र० १९२, २२१, २२२, २५९)।<sup>१</sup> इनमें पहला सन् १११५ का है तथा इसमें राजा गण्डरादित्य-द्वारा उनके जैन सामन्त नोलम्बको दो गाँवोंके दानका वर्णन है। अगले दो लेखोंमें गण्डरादित्यके जैन सामन्त निम्बका वर्णन है। इसने सन् ११३५ में एक जिनमन्दिरका निर्माण कराया था। अन्तिम लेखमें गण्डरादित्यके जैन सेनापति जिन्नण तथा विजयादित्यके सेनापति कालणका उल्लेख है। कालणने सन् ११६५ में एक मन्दिर बनवाया था।

काकतीय वंशका एक लेख सन् १११७ का मिला है (क्र० १९७)।<sup>२</sup> इसमें राजा प्रोलके मन्त्री बेतकी पत्नी-द्वारा अन्मकोण्डमें पद्मावती देवीका मन्दिर बनवानेका वर्णन है।

गुप्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यने सन् ११६२ में पार्श्वनाथ-मन्दिरके लिए कुछ दान दिया था (क्र० २५७)।<sup>३</sup>

कोगाल्व वंशके शासक वीरकोगाल्वने सन् १११५ के आसपास सत्यवाक्यजिनालय नामक मन्दिर बनवाया था (क्र० १९३)।<sup>४</sup>

मैसूरके राजा चामराजकी रानी देवीरम्मणिने मैसूरके शान्तिनाथ-मन्दिरमें दीपस्तम्भ तथा कलश दान दिये थे (क्र ५२४-५२५)। इनका

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० २५०, ३२०, ३३४)।

२ ३ पहले संग्रहमें इन दो वंशोंका उल्लेख नहीं है।

४ पहले संग्रहमें इस वंशके छह लेख हैं जिनमें पहला सन् १०५८ का है (क्र० १८६)।



समय १८वीं सदीका अन्तिम चरण है ।<sup>१</sup>

(इ) राजाश्रयके विषयमें साधारण विचार - उपर्युक्त विवरणसे यह स्पष्ट होता है कि जैन मठको प्रायः सभी राजवंशोंके समय-विशेषकर दक्षिण भारतीय राजवंशोंके समय-अपने धर्मकार्योंमें अच्छी सहायता मिली है । इस सम्बन्धमें एक बातका ध्यान रखना चाहिए कि इनमेंसे अधिकांश राजाओंका कुलधर्म जैनधर्म नहीं था - वे विष्णु, शिव, सूर्य या लक्ष्मीके उपासक थे । तथापि उनकी प्रजामें जैन आचार्योंका अच्छा प्रभाव रहा होगा अतः जैन मठके विषयमें उनकी नीति महानुभूतिपूर्ण रही है ।<sup>२</sup>

४ जैन मठकी दुस्वस्था - वारहवीं सदीसे दक्षिण भारतमें वीरगैव तथा श्रीवैष्णव सम्प्रदायोंका प्रभाव बढ़ता गया तथा इनके आक्रामक रुखका परिणाम जैन आचार्यों तथा मठ-मन्दिरोंको सहना पड़ा । इसके प्रत्यक्ष उल्लेख पहले संग्रहके दो लेखोंमें हैं ।<sup>३</sup> इम संग्रहके कई लेखोंसे अप्रत्यक्ष रूपसे यही बात स्पष्ट होती है - ये लेख विष्णुमन्दिरों तथा शिवमन्दिरोंमें लगे पाये गये हैं । स्पष्ट है कि जैन मन्दिरोंके ध्वंसावशेषोंसे ही ये पत्थर

१. पहले संग्रहमें मैसूरके राजाश्रयके कई लेख हैं ।

२. जिन्हें हम 'जैन' राजा कह सकते हैं ऐसे राजाश्रयोंकी संख्या सीमित ही है - कर्लिंगके खारवेळ, नवीं सदीसे दसवीं सदी तकके गंग राजा, दसवीं-ग्यारवीं सदीके होयसल राजा तथा कुछ सामन्त ये जैन राजा कहे जा सकते हैं । आठवीं सदी तकके गंग राजा तथा वारहवीं सदीके तथा बादके होयसल राजा भी विष्णु, शिव आदिके उपासक थे ।

३. यहाँ उल्लिखित राजवंशोंके राजनीतिक प्रभाव, राज्यविस्तार आदिके बारेमें तीसरे भागकी प्रस्तावनामें डॉ० चौधरीने विस्तारसे लिखा है अतः वे बातें यहाँ दुहरायी नहीं हैं ।

४. लेख क्र० ४३५-३६ ।

विष्णु या शिवके मन्दिरमे ले जाये गये है । इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण कोल्हापुरका महालक्ष्मी मन्दिर है जहाँके कुछ स्तम्भोपर पार्श्वनाथमन्दिर मम्बन्धी लेख मौजूद है ( क्र० २२२) । आन्ध्र प्रदेशमे अन्मकोण्ड पहाडी-पर देवी पद्मावतीका मन्दिर था जो बादमें पूरी तरह ब्राह्मणोके अधिकारमे चला गया ( क्र० १९७ ) । इस तरहके अन्य उदाहरण भी है ।

५ समारोप—जैनधर्म, साहित्य तथा समाजके इतिहासके लिए शिलालेखोका महत्त्व सर्वमान्य है । अबतक इस सग्रहके लेखोसे प्राप्त तथ्योका जो विवरण दिया है उससे यह बात अतिस्पष्ट होगी । इस ऐतिहासिक जानकारीका उपयोग कर जैन साहित्य तथा कथाओकी प्रामाणिकता परखना आवश्यक है । साहित्यिक तथा शिलालेखीय दोनो साधनोके समन्वित उपयोगसे ही तथ्यपूर्ण इतिहासका निर्माण सम्भव है ।

इस सग्रहके अन्तमे तीन परिशिष्ट दिये है । पहले परिशिष्टमे इस सग्रहकी तैयारीके समय जो श्वेताम्बर लेख हमारे अवलोकनमें आये उनकी सूची दी है । दूसरे परिशिष्टमें उन जैनेतर लेखोकी सक्षिप्त जानकारी दी है जिनमें जैन व्यक्तियोसे संबद्ध कुछ उल्लेख है । तीसरे परिशिष्टमे नागपुरके समस्त मूर्तिलेखोका सग्रह है । यह सग्रह आजसे कोई २५ वर्ष पहले श्रीमान् शान्तिकुमारजी ठवलीने तैयार किया था जो कई कारणोसे अबतक प्रकाशित नही हो सका । इस पुस्तकमे प्रस्तुत सग्रहको अन्तर्भूत करनेकी अनुमतिके लिए हम श्रीठवलीजीके आभारी है । हमें आशा है कि इन तीन परिशिष्टोसे प्रस्तुत सग्रह अम्यासकोके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा ।



# जैन शिलालेख संग्रह

- [ मूल लेख तथा सारांश ]



# मूल लेख तथा सारांश

१

वारली ( जि० अजमेर ) ( राजस्थान म्युजियम )

वारलीसे एक मील दूर मिलोत माताके मन्दिरमें ।

प्राकृत, ब्राह्मी—सन्पूर्व ४थी सदी

१ वीराय मगध ( ते )

२ चतुरामिति व ( मे )

३ ये मा ( लि ) मालिनि

४ रं नि ( वि ) ठ माक्षिके

[ इस लेखमें भगवान् वीरका निर्देश है जिससे प्रतीत होता है कि यह किसी जैन मन्दिरका लेख होगा । इसकी लिपि सम्राट् अशोकके लेखोकी लिपिसे प्राचीन है । इसमें अनुमान होता है कि इसमें जो ८४वें वर्षका निर्देश है वह महावीरके निर्वाणके बादका ८४वाँ वर्ष होगा । इसकी अन्तिम पंक्तिमें माध्यमिका नगरीका उल्लेख है । लेख टूटा है अतः इसका उद्देश्य ज्ञात नहीं होता । ]

[ इ० ए० ५८ ( १९२९ ) पृ० २२९ ]

२

मालकोण्ड ( नेलोर, आन्ध्र )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व ३री सदी

[ यह लेख स्थानीय पहाडीकी एक गुहाके अग्रभागमें है । यह गुहा अरुवाहि कुलके नन्दसेठिके पुत्र विरिसेठिने अपित की ऐसा लेखमें कहा है ।

लिपि सन्पूर्व ३री सदीकी है। ये गुहाएँ श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थी। ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५३१ पृ० ५९ ]

## ३

खण्डगिरि ( ओरिसा )— ( मंचपुरी गुहा—ऊपरका भाग )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ अरहंतपसादाय कालिगा ( नं ) ( सम ) नान लेणं कारितं  
राजिनो लालाक ( स )

२ हथिसाहस-पपोतस धु ( तु ) ना कर्लिगच ( कवतिनो सिरिखा )-  
रवेलस

३ अगमहिसि ( ना ) कारि ( तं )

[ अरहतोकी कृपासे कर्लिग प्रदेशके श्रमणोंके लिए यह गुहा कर्लिग-चक्रवर्ती खारवेलकी महारानीने बनवायी। यह हस्तिसाहसके प्रपीत्र लालाककी कन्या थी ]

[ ए० इं० १३ पृ० १५९ ]

## ४

खण्डगिरि—( मंचपुरी गुहा—नीचेका भाग )

प्राकृत—ब्राह्मी सन्पूर्व पहली सदी

१ खरस महाराजस कर्लिगाधिपतिनो महा ( मेघ ) वाह ( नस )  
कुट्टेपसिरिनो लेण

[ कर्लिगके अधिपति महाराज खर महामेघवाहन कुट्टेपश्रीने यह गुहा बनवायी। ]

[ ए० इं० १३ पृ० १६० ]

५

खण्डगिरि—( मचपुरी गुहा—नीचेका भाग )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

कुमारो बहुखस लेण

[ यह गुहा कुमार बहुखने बनवायी । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६१ ]

६

खण्डगिरि ( सर्पगुहा )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

चूलकमस कोठाजेया च

[ चूलकम्म ( क्षुद्रकर्म अथवा चूडाकर्म ) का कक्ष । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६२ ]

७

खण्डगिरि ( सर्पगुहा )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ कमस हलखि-

२ णय च पसादो

[ कर्म तथा हलखिण ( सल्लक्षण ) का बनवाया प्रासाद । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६२ ]

८

खण्डगिरि ( हरिदास गुहा )

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

[ यह लेख सर्पगुहाके पहले लेखके समान ही है । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६२ ]



६

खण्डगिरि ( वाघ गुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ नगर अखडंम

२ सभूतिनो लेणं

[ नगरके न्यायाधीश सुभूतिकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६३ ]

१०

खण्डगिरि ( जम्बेश्वर गुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

महामदास वारियाय नाकियस लेणं

[ महामदकी पत्नी नाकियाकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६३ ]

११

खण्डगिरि ( छोटा हाथीगुंफा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

अगिख.....स लेणं

[ अगिख... की गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६४ ]

१२

खण्डगिरि ( तत्वगुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

पादमुलिकस कुसुमास लेणं फि ..

[ पदमूलिकके कुसुमकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६४ ]

१३

खण्डगिरि ( अनन्तगुहा )

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहला सदी

दोहद समणन लेणं

[ दोहदके श्रमणोकी गुहा ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६४ ]

१४

खण्डगिरि ( तत्त्वगुहा )

ब्राह्मी, पहली सदी

१ . . . घ

२ . ण त थ द ध न . . .

३ . ण त थ द ध न . . . श ष स .

४ ण त थ द ध न प फ व श ष स ह .

५ . . . त थ द ध न प फ व श ष स ह . . .

६ थ . . .

[ यह वर्णमाला चित्रित की गयी है जो सम्भवत किसी नवदीक्षित साधुका कार्य है । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १६५ ]

१५

मथुरा ( उत्तर प्रदेश )

प्राकृत-ब्राह्मी, वर्ष ८४ ( दूसरी सदी )

१ ओ सिद्ध स ८० ४ व ३ दि २० ५ एतस्मि पूर्वय दमिन्नस्य  
धितु ओख-

२ रिंकाये कुटुभिणिये दताये दान वर्धमानप्रतिमा प्रतिथपिता

३ गणतो कोट्टियतो...सत्यसेनस्य .. धरवृधिस्य नि....

[ वर्ष ८४ मे वर्षा ऋतुके तीसरे महीनेके २५वे दिन दमित्रकी पुत्री तथा ओखरिककी पत्नी दत्ता ( दत्ता ) ने यह मूर्ति स्थापित की । कोट्टिय गणके .. सत्यसेन...धरवृद्धि । ] [ यदि लेखका वर्ष शककालका हो तो वह सन् १६२ होगा । ]

[ ए० इ० १९ पृ० ६७ ]

१६

मथुरा

प्राकृत-ब्राह्मी, पहली-२ री सदी ( खण्डित जैनमूर्तिके पादपीठपर )  
( शा ) खातो वाच ( कस्य ) आर्य ऋ ( षि ) दासस्य निर्वर्तना ...  
रकस्य भट्टिदामस्य' ..

[ ...शाखाके वाचक आर्य ऋषिदासने यह वनवायी ।...रक भट्टिदामकी ]

[ रि० आ० स० १९११-१२ पृ० १७ ]

१७-१८

मथुरा

प्राकृत-ब्राह्मी, २री सदी

[ यह लेख २री सदीकी लिपिमें है । अरहतके प्रणामसे इसका प्रारम्भ होता है तथा लाघकके पुत्रका इसमें उल्लेख है । एक अन्य पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें वर्धमानको प्रणाम किया है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२८-२९ पृ० ७७ ]

१६

पहाड़पुर ताम्रपत्र ( जि० राजशाही, बंगाल )

गुप्त वर्ष १५९ = सन् ४७९ संस्कृत

अगला भाग

- १ स्वस्ति पुण्ड्र ( वर्ध ) नादायुक्तका आर्यनगरश्रेष्ठिपुरोगाञ्चाधिष्ठा  
नाधिकरणं दक्षिणांशकवीथेयनागिरट्ट-
- २ माण्डलिकपलाशाट्टपाश्चिक - वटगोहालीजम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपो-  
त्तक-गोषाटपुञ्जक-मूलनागिरट्टप्रावेश्य-
- ३ नित्वगोहालीषु ब्राह्मणोत्तरान् महत्तरादिकुटुम्बिन कुशलमनुव-  
र्णानुबोधयन्ति । विज्ञापयत्यस्मान् ब्राह्मणनाथ-
- ४ शर्मा एतद्भार्या रामी च युष्माकमिहाधिष्ठितानाधिकरणे द्विदी-  
नारिक्वकुत्स्यवापेन शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवीसमुदयवाह्या-
- ५ प्रतिकरखिलक्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तदहंथानेनैव क्रमेणावयो  
सकाशाद् दीनारत्रयमुपसगृह्यावयो. स्वपुण्याप्या-
- ६ यनाय वटगोहाल्यामवास्यान् काशिक-पंचस्तूपनिकायिकनिर्ग्रन्थ-  
श्रमणाचार्य-गुहनन्दि-शिष्यप्रशिष्याधिष्ठितविहारे
- ७ भगवतामर्हतां गन्धधूपसुमनोदीपाद्यर्थन्तलवटकनिमित्त च  
अ ( त ) एव वटगोहालीतो वास्तुद्रोणवापमध्यर्धं ज-
- ८ म्बूदेवप्रावेश्य-पृष्ठिमपोत्तकेत् क्षेत्रं द्रोणवापचतुष्टय गोषाटपुंजाद्  
द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्ट-
- ९ प्रावेश्यानित्वगोहालीतः अर्धत्रिकद्रोणवापानित्येवमध्यर्धं क्षेत्र-  
कुत्स्यवापमक्षयनीव्या दातुमि ( त्यत्र ) यतः प्रथम-
- १० पुस्तपालदिवाकरनंदि-पुस्तपालघृतिविष्णु - विरोचनरामदास-हरि-  
दास-शशिनन्दिषु प्रथमनु' मवधारण-
- ११ यावधृतमस्त्यस्मदधिष्ठितानाधिकरणे द्विदीनारिक्वकुत्स्यवापेन  
शश्वत्कालोपभोग्याक्षयनीवीसमु ( दयवा ) ह्याप्रतिकर-
- १२ ( खिल ) क्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तद् यद् युष्मान् ब्राह्मणनाथ-  
शर्मा एतद्भार्या रामी च पलाशाट्टपाश्चिकवटगोहालीस्थ-

## पिछला भाग

- १३ . . . . . कपञ्चस्तूपनिकायिकाचार्यनिर्ग्रन्थ-गुहनन्दि- शिष्यप्रशिष्या-  
धिष्ठितसद्विहारे अर्हतां गन्ध ( धूपा ) द्युपयोगाय
- १४ ( तलवा ) टकनिमित्तं च तत्रैव वटगोहाल्यां वास्तुद्रोणवाप-  
मध्यर्धं क्षेत्रं जम्बूद्वेवप्रावेश्यपृष्ठिमपोत्तके द्रोणवापचतुष्टयं
- १५ गोषाटपुञ्जाद् द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्टप्रावेश्यनित्वगोहालीतो  
द्रोणवापद्वयमाढवा ( पट्ट ) याधिकमित्येवम-
- १६ मध्यर्धं क्षेत्रंकुल्यवापं प्रार्थयतेत्र न कश्चिद् विरोधः गुणस्तु यत्  
परमभट्टारकपादानामर्थोपचयो धर्मषड्भागाप्याय-
- १७ नं च भवति तदेवं क्रियतामित्यनेनावधारणाक्रमेणास्माद् ब्राह्म-  
णनाथशर्मत एतद्भार्यारामियाश्च दीनारत्र-
- १८ यमायीकृत्यैताभ्यां विज्ञापितकक्रमोपयोगायोपरिनिर्दिष्टग्रामगो-  
हालीकेषु तलवाटकवास्तुना सह क्षेत्रं
- १९ कुल्यवाप अध्यर्धोक्षयनीवीधर्मेण दत्तः कु १ द्रो ४ तद् युष्मामिः  
स्वकर्मणाविरोधिस्थाने षट्कनडैरप-
- २० विच्छेद्य दातव्योक्षयनीवीधर्मेण च शश्वदाचन्द्रार्कतारककालमनु-  
पालयित्तव्य इति स १०० ( + ) ५० ( + ) ९
- २१ माघ दि ७ उक्तं च भगवता व्यासेन । स्वदत्तां परदत्तां वा यो  
हरेत वसुन्धरां ।
- २२ स विष्टायां कृमिर्मूत्वा पितृभिः सह पच्यते ॥ षष्टिवर्षसह-  
स्राणि स्वर्गं वसति भूमिदः ।
- २३ आक्षेप्ता चानुमन्ता च तान्येव नरकं वसेत् ॥ राजभिर्वहुभिर्दत्ता  
दीयते च पुनः पुनः । यस्य यस्य
- २४ यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो  
यत्नाद् रक्ष युधिष्ठिर । मही महिमतां श्रेष्ठ

२५ दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥ विन्ध्याटवीष्वनम्भःसु शुष्ककोटर-  
वासिनः । कृष्णाहिनो हि जायन्ते देवदाय हरन्ति ये ॥

[ यह ताम्रपत्र गुप्तवर्ष १५९ के माघ मासके ७वे दिन लिखा गया था । ब्राह्मण नाथशर्मा तथा उसकी पत्नी रामीने पुण्ड्रवर्धनके राजकोषमे तीन दीनार देकर डेढ कुल्यवाप जमीन प्राप्त की । इसमे ४ द्रोणवाप जमीन पृष्ठिमपोत्तक गाँवमे, ४ द्रो० गोषाटपुजक गाँवमे, २ $\frac{३}{४}$  द्रो० नित्व-गोहालीमें और १ $\frac{३}{४}$  द्रो० वटगोहालीमे थी । काशीके पञ्चस्तूपनिकायके निर्ग्रन्थ क्षमणोंके आचार्य गुहनन्दिके शिष्य-प्रशिष्योका एक विहार वट-गोहालीमे था । वहाँ भगवान् अर्हत्की पूजाके लिए गन्ध, धूप, फूल, दीप आदिकी व्यवस्थाके लिए यह जमीन नाथशर्मा तथा रामीने दान दी । इस ताम्रपत्रमें परमभट्टारक पदसे किसी सम्राट्का उल्लेख किया है । ये सम्भवत गुप्तवशीय सम्राट् बुधगुप्त थे । पहाडपुरके समीपका गोआलभिटा गाँव ही सम्भवत प्राचीन वटगोहाली है । यहाँके एक बड़े मन्दिरके उत्खननमें कई जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण अवशेष मिले हैं । ]

[ ए० इ० २० पृ० ५९ ]

२०

होसकोटे ( मैसूर )

६वीं सदी पूर्वार्ध संस्कृत

पहला पत्र

१ स्वस्ति जित भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह-  
वेयकुलामलव्यो-

२ मावमासनमास्करस्य स्वभुजजवजयजनितसुजनजनपदस्य  
दारुणारिगण-

३ विदारणरणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्री-

४ मत्कौंगणिवर्मधर्ममहाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागतगुणयुक्तस्य

५. विद्याविहितविनयस्य सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्य-  
प्रयोजनस्य

द्वितीयपत्र : पहला भाग

६. विद्वत्कविकांचननिकषोपलभूतस्य विशेषतोप्यनवशेषस्य नीति-  
शास्त्रस्य वक्तृप्र-  
७. योक्तृकुशलस्य सुविभक्तभक्तभृत्यजनस्य दत्तकसूत्रवृत्ते. प्रणेतुः  
श्रीमन्माधववर्मन-  
८. हाधिराजस्य पुत्रस्य पैतृपितामहगुणयुक्तस्य अनेकचतुर्दन्त-  
युद्धावाप्त-  
९. चतुरुदधिसलिलास्वादितयशसः समदद्विरदतुरगारोहणातिशयो-  
त्पन्नतेजसो धनुर-  
१०. भियोगजनितसम्पादितसम्पद्विशेषस्य श्रीमद्धरिवर्ममहाधिराजस्य  
पुत्रस्य

द्वितीय पत्र : पिछला भाग

११. गुरुगोब्राह्मणपूजकस्य नारायणचरणानुध्यातस्य श्रीमद्विष्णु-  
गोपमहाधि-  
१२. राजस्य पुत्रस्य त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरज.पवित्रीकृतोत्तमांगस्य  
न्यायामोद्वृत्तपीन-  
१३. कठिनभुजद्वयस्य स्वभुजवलपराक्रमक्रयक्रोतराज्यस्य चिरप्रनष्ट-  
ब्रह्मदे-  
१४. यवहुसहस्रविसर्गाग्रयणकारिण. क्षुत्क्षामोष्ठपिशिताशनप्रीतिकर-  
निशितधा-  
१५. रासेः कलियुगमलपंकावसन्नधर्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धस्य श्रीमाधव-  
महाधिराज-

तृतीय पत्र : अगला भाग

- १६ स्य पुत्रेण जननीदेवतापर्यंकतलसमधिगतराज्येन निजप्रभाव-  
खडित-
- १७ रिपुनृपतिमंडलेनाखडलविलंविबिभवविक्रमेण करितुरगवरा-  
हणसौष्ठ-
- १८ वजनितगुणविशेषेण स्वदानकुसुममंजरीसुरमितसमंतदिगांत-  
राभिग-
- १९ तब्रुधमधुकरसमुदयेन वरांगनापांगशरविक्षेपलक्षांगेन प्रजापरिरक्ष-  
२० गैकदीक्षाक्षपितकल्मषेणापरिणतवयसापि परिणतमतिसत्त्व-  
सम्पदा परम-

तृतीय पत्र : पिछला भाग

- २१ धार्मिकेण श्रीमता कोगण्यधिराजेनात्मनः प्रवर्धमानविजयैश्वर्ये  
द्वादशे सवत्स-
- २२ रे कार्तिके मासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्यां शासनाधिकृतस्य  
सकलमंत्रतत्रांतर्ग-
- २३ तस्य विविधागमजलप्रक्षालितविशुद्धबुद्धेः सिंहविष्णुपहलवाधि-  
राजस्य
- २४ जनन्या मर्तृकुलकीर्तिजनन्यार्थं चात्मनश्च धर्मप्रवर्धनार्थं च  
प्रतिष्ठापिताय अर्हद्दे-
- २५ वतायतनाय यावनिकसघानुष्ठिताय कोरिकुन्दभागे पुल्लिऊर्  
नाम ग्रामे

चतुर्थ पत्र : अगला भाग

- २६ महातटाकस्याधस्तात् मूलाभ्यांशे श्रमणकेदारसहितसप्तकण्डुका-  
वापमात्र
- २७ क्षेत्रं मध्यभागे पंचकण्डुकावापमात्र क्षेत्रे इक्षुनिष्पादनक्षमसे-
- २८ कन्तोदक्षेत्रे आस दक्षिणेन कण्डुकावापमात्र पट्टं उत्तरेण च द्वा-



- २९ दशकण्डुकावापमान्नमारण्यक्षेत्रं च देवतायतनसन्निकृष्टमेकं वेदम च  
 ३० एतत् सर्वं सर्वपरिहारपरिगृहीतं पानीयपातपुरस्तरं दत्तं योस्य  
 चतुर्थपत्र : पिच्छला भाग  
 ३१ लोमात् प्रमादाद् वापि हर्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति  
 अपि चास्मिन्न-  
 ३२ र्थे मनुगीता( न् ) श्लोकानुदाहरन्ति ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो  
 हरेत वसुन्धराम्  
 ३३-३८ ( नित्यके शापात्मक श्लोक )  
 ३६ कुवलालत्वष्टकारस्य इदम्पटुवस्य पुत्रेण पेरेरन्नामलिखिताम्भट्टिका ॥  
 शिवमस्तु

[ यह ताम्रपत्र गंगवशीय राजा माधव ( द्वितीय ) के पुत्र कोगण्य-  
 धिराज ( अविनीत ) द्वारा राज्यवर्ष १२ के कार्तिक शु० १५ को दिया  
 गया था । इसमें यावनिक संघ-द्वारा अनुष्ठित एक अर्हद्देवतायतन ( जिन-  
 मन्दिर ) के लिए पुल्लिऊर ग्रामकी कुछ भूमि और एक घर दान दिये जाने-  
 का उल्लेख है । यह मन्दिर पल्लव राजा सिंहविष्णुकी माता-द्वारा निर्माण  
 किया गया था । ताम्रपत्रको इदम्पटुवके पुत्र पेरेरने लिखा था । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० ८० ]

२१

कोरमंग ( मैसूर )

६वीं सदी, संस्कृत

प्रथम पत्र

- १ सूर्यांशुद्युतिपरिषिक्तपंकजानां शोभां यद् वहति सदास्य पाद-  
 पद्मम् ।

## सिद्धम्

- २ देवानां मकुटमणिप्रभाभिषिक्तं सर्वज्ञः स जयति सर्व-  
लोकनाथः (॥१)
- ३ कीर्त्या दिगन्तरव्यापी रघुरासीन्नराधिपः (१) काकुस्थतुह्य काकु-  
स्थो यवायांस्तस्य भूपतिः (॥२)
- ४ तस्याभूत् तनयः श्रीमान् शान्तिवर्मा महीपतिः (१) मृगेशस्तस्य  
तनयो मृगेश्वरपराक्रमः (॥३)
- ५ कदम्बामलवंशाद्रे मौलितामागतो रविः (१) उदयाद्रिमकुटटेप  
( टाटोप ) दीप्रांशुरिवांशुमान् (॥४)
- ६ नृपश्चलनकी विष्णुर्देत्यजिष्णुरय स्वयं (१) हिरण्मयचलन्मालं  
त्यक्त्वा चक्रं विभावित (॥५)
- ७ सान्नाज्ये नन्दमानोपि न माद्यति परंतप (१) श्रीरेषा मदयत्य-  
न्यानतिपीतेव वारुणी (॥६)
- द्वितीय पत्र
- ८ नर्मदं त मही प्रीत्या यमाश्रित्याभिनन्दति (१) कौस्तुभामारुण-  
च्छाय वक्षो लक्ष्मीर्हरैरिव (॥७)
- ९ रवावधि जयन्तीय सुरेन्द्रनगरी श्रिया (१) वैजयन्ती चलच्चित्रं  
वैजयन्ती विराजते (॥८)
- १० रवेर्भुजंगदासीव चदनप्रीतमानसा (१) तथा श्रीर्नाभवत् प्रीता  
सुरारैरपि वक्षसि (॥९)
- ११ विश्वा वसुमती नाथन्नाथते नयकोविदम् (१) द्यौरिवेन्द्र ज्वलद्व-  
ज्रदापित्कोरकितांगदम् (॥१०)
- १२ यस्य मूर्ध्नि स्वयं लक्ष्मी हेमकुम्भोदरच्युतै (१) राज्यामिपेकम-  
करोदम्भोजशवलैर्जलैः (॥११)
- १३ रघुणालम्बितामीली ( मौलौ ) कुण्डो गिरिरधारयत् (१) रवेराज्ञां  
वहत्यद्य मालामिव महीश्वर (॥१२)

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

- ११ अतिमानवरतपूजार्थं शिक्षकग्लानवृद्धानां च तपस्विनां वै-  
 १२ यावृत्यार्थं ग्रामस्योत्तरतः पूर्वीणग्रामविरेयसीमकं द-  
 १३ क्षिणेन मुञ्जजलमागंपर्यन्त अपरतः एन्दावीस्तस-  
 १४ हितवल्मीक तस्मादुत्तरत. पुष्करणी ततश्च यावत् पूर्वविरेय-  
 १५ कं राजमानेन पचागन्नवर्तनप्रमाणक्षेत्रन्द-

तीसरा पत्र

- १६ त्तवानेतद् यो हरति स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च  
 १७-२० बहुभिर्वसुधा भुक्ता-( नित्यके शापात्मक श्लोक )

[ यह ताम्रपत्र सेन्द्रक वंशके अधिराज विजयानन्दके पुत्र इन्द्रणन्द-द्वारा जम्बूखण्डगणके आचार्य आर्यणन्दिको दिया गया था । अर्हतप्रतिमाकी पूजाके लिए तथा तपस्वियोंकी सेवाके लिए जलार ग्रामके पासकी कुछ भूमि उन्हें दी गयी थी । राजा इन्द्रणन्द राष्ट्रकूट वंशके देज्ज महाराजका सामन्त था । इस ताम्रपत्रका काल आगुप्तायिक राजाओका ८४५वाँ वर्ष इस प्रकार कहा है । किन्तु इसमें कौन-सी कालगणना अभिप्रेत है यह स्पष्ट नहीं क्योंकि लिपिकी दृष्टिसे यह ताम्रपत्र छठी या सातवी सदीका प्रतीत होता है । ]

[ ए० इ० २१ पृ० २८९ ]

२३

चित्तरल ( केरल )

७वीं सदी, तमिल

भगवती मन्दिरके लिए प्रसिद्ध तिरुच्छाणत्तुमलै पहाड़ीपर

[ इस लेखमें अरिष्टनेमि भटारके शिष्य गुणन्दागि कुरट्टिगल-द्वारा देवीके लिए कुछ सोनेके आभूषण दान देनेका निर्देश है । यह लेख विक्रमादित्य वरगुणके २८ वें वर्षका है । ]

[ इ० म० तिरुवाकुर २ ]

२४

कुलगाण ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, ७वीं सदी

पहला पत्र

- १ स्वस्ति श्री जितं भगवता श्रीमज्जान्हवेय
- २ श्रमणाचार्यसाधित स्वखड्गैक
- ३ राक्रमैक्यशस दारुणारिगणविदार "
- ४ ण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्कौगणिवर्मध

दूसरा पत्र

- ५ युक्तस्य श्रीमन्माधवमहाधिराजस्य प्रियोरसस्य श्रीविष्णुवर्म-  
गोपमहाधिराजस्य अने-
- ६ कचतुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशस पुत्रस्य श्री-  
मन्माधवमहाधिराज-
- ७ जस्य पुत्रस्य श्रीमत्कृष्णवर्ममहाधिराजस्य भागिनेयस्य श्रीमत्-  
कौगणिवृद्धराजस्या-
- ८ विनीतनाम्नः पुत्रस्य श्रीदुर्विनीतनामधेयस्य समस्तपाणाटपुञ्जा-  
टाधिपतेरात्मजस्य श्री-

दूसरा पत्र ( ब )

- ९ मत्कौगणिवृद्धराजस्य प्रथितमुष्करद्वितीयनामधेयस्य सर्वविद्या-  
पारगस्य सूतोः श्रीम-
- १० त्पृथिवीकौगणिवृद्धराजस्य श्रीविक्रमद्वितीयनामधेयस्य सर्व-  
विद्यानिकषोपलभूतस्य प्र-
- ११ योगनिपुणनरस्य श्रीविक्रमोपाजितानेकजनपदस्य प्रतापोपनत-  
सकलसामन्तस्य

- १४ धर्मायं हरिदत्तेन सोय विज्ञापितो नृप. (1) स्मितज्योत्स्नाभिषि-  
क्तेन वचसा प्रत्यभाषत (॥१३)
- द्वितीय पत्र : दूसरा भाग
- १५ चतुस्त्रिंशत्तमे श्रीमद्राज्यवृद्धिसमासमा (1) मधुर्मासस्तिथि  
पुण्या शुक्लपक्षश्च रोहिणी (॥ १४)
- १६ यदा तदा महाबाहुरासद्यामपराजितः (1) सिद्धायत्नपूजार्थं  
मंघस्य परिवृद्धये (॥१५)
- १७ सेतोरुपलकस्यापि कोरमंगाश्रितां महीम् (1) अविकान्निवर्त-  
नान्येव दत्तवां स्वामरिन्दमः (॥१६)
- १८ ग्रामन्दी दक्षिणस्याथ सेतोः कंदारमाश्रितम् (1) राजमानेन  
मानेन क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (॥१७)
- १९ समणे सेतुबंधस्य क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (1) तच्चापि राजमानेन  
वेदिकौटेन्निवर्तनम् (॥१८)
- २० उच्छादिपरिहर्तव्ये समाधिसहितं हितम् (1) दत्तवांश्रीमहाराज-  
स्सर्वसामन्तसंनिधौ (॥१९)
- २१ ज्ञात्वा च पुण्यसमिपालयितुर्विशाल तद्भंगकारणमितस्य च  
दोषवत्ताम्  
तीसरा पत्र :
- २२ ... श्रमस्खलितसयमनैकचित्ताः संरक्षणेस्य जगतीपतयः  
प्रमाणं (॥२०)
- २३ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजमिस्मगरादिभिः (1) यस्य यस्य यदा  
भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं (॥२१)
- २४ अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्मुक्त सद्भिश्च परिपालितम् (1) एतानि न निवर्त-  
न्ते पूर्वराजकृतानि च (॥२२)

२५ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरत वसुंधरां (१) षष्टिर्वर्षसहस्राणि  
नरके पच्यते तु सः (॥२३)

[ यह ताम्रपत्र कदम्बवशीय राजा मृगेशके पुत्र रविवर्मा-द्वारा दिया गया था । हरिदत्तके निवेदनपर राजाने सिद्धायतनकी पूजा तथा सघ-की वृद्धिके लिए कोरमग ग्रामकी कुछ जमीन दान दी ऐसा इसमें निर्देश है । दानकी तिथि राज्यवर्ष ३४ के चैत्र शुक्ल पक्षकी पुण्यतिथि कही गयी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३३ पृ० १०९ ]

२२

गोकाक ताम्रपत्र ( जि० वेल्गांव, मैसूर )

६-७वीं सदी, संस्कृत-नागरी

- १ स्वस्ति ॥ वर्धतां वर्धमानेन्दोर्वर्धमानगणोदधे । शासन नाशित-
- २ रिपोर्मासुरं मोहशासनं ॥ ( १ ) इहास्यामवसर्पिण्यान्तीर्थ-
- ३ करणां चतुर्विंशतितमस्य सन्मनेः श्रीवर्धमानस्य वर्धमा-
- ४ नायां तीर्थसन्ततावागुत्सायिकानां राज्ञामष्टसु वर्षशते-
- ५ पु पंचचत्वारिंशदग्रेषु गतेषु राष्ट्रकूटान्वयजातश्रीदे-

दूसरा पत्र : पहला भाग

- ६ जमहाराजस्यामिमतः श्रीसेन्द्रकामलकुलांवरोदितदी-
- ७ प्रदिवाकरो विजयानन्दमध्यराजात्मजः श्रीमानिन्द्रगण्डाधि-
- ८ राजः स्ववश्यानामात्मनश्च धर्मवृद्धये कप्माण्डीविषये
- ९ पर्वतप्रत्यासन्नजलारग्रामे जम्बूवण्डगणस्थाय ज्ञान-
- १० दर्शनतपस्सम्पन्नाय आर्यगन्धाचार्याय भगवद्दर्ह-

१२ वनविनीतस्थान्मजे श्रीमत्पृथिवीकोंगणिवृद्धराजे प्रणितानेक-  
राजस्य मकुटमणिस-

तीसरा पत्र

१३ यूखपुजपिंजरितांगुष्टे वरयुवतिमनोनयनसुमगे रिपुनृपतिगजाश्व-  
रथनरोरुवन-

१४ लोकसमदद्विस्दतुरगागेहणोपभीसमाननिरतिशयनिजशरीरश्री-  
वल्लभे सकल-

१५ पाणाटपुन्नाटाद्यनेकजनपदाधिपता मनोविनीतस्य भ्राता शिव-  
कुमारः श्रीमत्पृथिवी-

१६ कोंगणिवृद्धराजः स्थिरविनीतः अवनिमहेन्द्रविख्यातः पाणाटपु-  
न्नाटाद्यनेकजनपदाधि-

तीसरा पत्र (व)

१७ पाति पृथिवी परिपालयति कोडुगून्नाडा केल्लिपुसूरा चेदिभक्के  
कर्गुलप्योल तदुवल्लु-

१८ वेरेडं वसदिगालुमेरडु कलनिडं तोट्टुं मनेत्तानमुं पृथिवीकोंगणि  
मुत्तरसरनुमतदो-

१९ ल पल्लवेलारमर् पोय्दार् कोकन्दियु मयिल्लरगयुं मेल्पालु  
जादिगालु कोलिगकेरेक्कालु ओन्दुतोट्टुमुमा-

२० रु कलनिड पृथिवीकोंगणि मुत्तरसरनुमतदोल गंजेनाडर् कण्णमन्  
पोय्दार् चन्त ( न्द्र ) सेनाच्चा-

चौथा पत्र

२१ यर् कर्तागराग अट्के म्माक्षि केल्लिपुसूर् पत्तिर्वरु अय्सामन्तहं  
नालत्ताण्डं द्दा-

२२ नलिदोन् पंचमहापातगनप्पोन् श्री बहुमिर्वसुधा भुक्ता राजमि-  
स्सक (ग)-

२३ रादिमि यस्य यस्य यदा भूमि (.) तस्य तस्य तदा फलं ॥  
देवस्वं तु विष घो-

२४ र न विष विषमुच्यते विषमेकाकिन हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रक ॥  
स्वदत्तां परदत्तां वा

चौथा पत्र (त्र)

२५ यो हरेति वसुन्वरा षष्टि वर्षसहस्राणि घोरे तमसि वर्तते ।  
मारगो-

२६ द्वैरोन्दु तोट्टं पोय्दार् देवरा पसु गोट्टोन्दु तोट्टं कोण्डत्तु गंजे-  
नादर

२७ कण्णम्मन् कोडुगूर्नाडाल ओरकल्वाय्गरुं सीम्पाल्वाय्गरुमिर्वरुं  
तुप्पूरालअरसरान-

२८ नुमतप्पडिसि पोय्ददु तुल् टिल् काल् किलिप्पुसूर् चेदियक्क

पाँचवाँ पत्र

२९ से ३२ तक पक्तियाँ १३ से १६ तक के समान हैं ।

३३ पाणाटपुन्नाटाद्यनेकजनपदाधिपतिः पृथिवी परिपालयति कं डुगूर्-  
विषये

३४ केल्लिप्पुसूर् नाम ग्रामे जिनालयाय वसदिकालुं जातिकालुं  
मेलपालु कोलि-

३५ गन्केरकालु कगुलदापोल तट्टुवल्लुवेरेउं एलुक्कलनिउ नाल्गु-  
तोट्टमु म-

३६ नेत्तानमु चन्द्रसेनाचार्यके उदपूर्वं कोट्टरदके साक्षी कोट्टेरु  
कारेअरुक्कु



[ इम ताम्रपत्रके प्रारम्भमे गग वशके राजाओकी वशावली इस प्रकार बतलायी है - कोगणिवर्मा माधव - विष्णुवर्मगोप - माधव - अविनीत कोगणिवृद्धराज - दुर्विनीत - मुष्कर कोगणिवृद्धराज - श्रीविक्रम पृथिवीकोगणिवृद्धराज - श्रीवल्लभ पृथिवीकोगणिवृद्धराज । श्रीवल्लभके बन्धु शिवकुमार अवनिमहेन्द्र पृथिवीकोगणिवृद्धराजके गासनकालमे यह लेख लिखा गया था । पल्लवेल अरसने राजाकी अनुमतिसे केल्लिपुसूर ग्रामका एक खेत, बगीचा और कुछ जमीन एक जिनमन्दिरको दान दी उमका इम लेखमे निर्देश है । इसी समय गजेनाड निवासी कण्णम्मन्ने भी कुछ खेत इस मन्दिरको अर्पण किये । मारुगोट्टेरने एक बगीचा तथा ओरकल्वाय्गर् और सीम्पाल्वाय्गर्ने कुछ खेत दान दिये । राजाने भी कुछ खेत दान दिये थे । इस जिनमन्दिरके अधिष्ठाता चन्द्रसेनाचार्य थे । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९० ]

२५-२६-२७

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

७वीं सदी, कन्नड

[ ये तीन लेख रनामिद्धुलगुट्टु नामक पहाडीपर पाषाणोपर खुदे है । इनमे निम्नलिखित नाम उत्कीर्ण है -

- १ मिंगानन्दिबन्दितान्
- २ श्रीउरिगपमिण्ड
- ३ श्रीमूलाओमरन्

इनको त्रिपि ७वीं सदीकी है । ]

[ नि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५४-५५-५६ पृ० १२६ ]

२८

रत्नगिरि ( कटक, उडीसा )

संस्कृत, ७वीं सदी

[ इस लेखमे ७वी सदीकी लिपिमे एक जिनालयका उल्लेख है । लेख खण्डित है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४४८ पृ० ६७ ]

२९

पेनिकेलपाडु ( कडप्पा, आन्ध्र )

संस्कृत-तेलुगु, ७वीं सदी

[ इस लेखमे वृषभ नामक जैन आचार्यकी प्रशंसा की गयी है । उन्हे भग्यरूपी फसलके लिए मेघके समान तथा वाद-विवादमें पर्वतके समान दृढ कहा है । इस स्थानको अब सन्यासिगुण्डु कहा जाता है । लिपि ७वी सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४०१ पृ० १२० ]

३०

कोंगरपुलियंगुलम् ( मद्रास )

वट्टेल्लुत्तुलिपि, ७वी सदी

( एक जैनमूर्तिके नीचे - ) श्रीभज्जणन्दि

[ यहाँसे ३८वे लेख तक ९ लेखोका समय लिपिके आधारपर कहा है । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ५४ ]

३१

मुत्तुप्पट्टि ( मद्रास )

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[ ( जैनमूर्तिके नीचे - ) यह मूर्ति वेणुनाडुके कुरण्डि अट्टुपवासि भटारके शिष्य गुणसेनदेवके शिष्य कनकवीरपेरियडिगल्-द्वारा बनवायी गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६१ ]

३२

मुत्तुप्पट्टि ( मद्रास )

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[ यह मूर्ति कुरण्डि अष्टोपवासिके शिष्य माघनन्दि-द्वारा बनवायी गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६२ ]

३३-३८

कीलक्कुडि ( मद्रास )

वट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं सदी

[ यहाँ जैन मूर्तियोंके समीप निम्न नाम खुदे हैं - कनकनन्दि भटारके शिष्य अभिनन्दन भटारके शिष्य अरिमण्डल भटारके शिष्य अभिनन्दन भटार ( २ ) ।

अज्जणन्दिकी माता गुणमतियार् ।

गुणसेनदेवके शिष्य अनत्तवन् मासेनन्का भतीजा आच्चन् श्रीपालन् ।

गुणसेनदेवके शिष्य कण्डन् पोर्पट्टन् । वेणुनाडुके तिरु कुरण्डिके सेवक कनकनन्दि । गुणसेनदेवके शिष्य अरैयगाविदि, पल्लिके प्रमुख । ]

[ रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ६३-६९ ]

३६

## नलजनम्पाडु ( आन्ध्र )

तेलुगु, ७वीं-८वी सदी

## अगला भाग

- |                            |                           |
|----------------------------|---------------------------|
| १ स्वस्ति म-               | २ गवदहंत ( प )-           |
| ३ रमभट्टारकस्य पा-         | ४ दानुध्यात परममा-        |
| ५ हेइश्वर पर(मे) श्वर प-   | ६ ल्लवादित्य श्रीबादि-    |
| ७ राजुल अन्दु पल्ले-       | ८ यरि कोडुकु वादि (रा)-   |
| ९ जेन्वानूरु राजमा (नं)-   | १० बु मूनूरु बुट्टु आर्ल- |
| ११ पट्टु श्रेत्रंबु प(रि)- | १२ सि पल्लेयारि (दा)-     |
| १३ यनंबुनाकु इच्चे         | १४ दीनि रक्षिचिनवानि (कि) |

## पिल्ला भाग

- |                    |                 |
|--------------------|-----------------|
| १५ अहुगडु-         | १६ गश्वमेधवुना  |
| १७ पलंबगु          | १८ दीनि लच्चिन- |
| १९ वानिकि एकलु     | २० श्रीपर्वतबु  |
| २१ लच्चिन पाप-     | २२ वगु वाच्चो-  |
| २३ लाल कोडुकु      | २४ पल्लवाचा-    |
| २५ ज्यंस्य लिक्कि- | २६ तम् (॥)      |

[ इस लेखमे परमेश्वर पल्लवादित्य वादिराजुल नामक शासक-द्वारा ३ पुट्टि जमीन किसी ग्राममुख्यको दिये जानेका उल्लेख है । वादिराजुलको अर्हतभट्टारक तथा महेश्वर दोनोका भक्त कहा गया है । लेखकी लिपि ७वीं-८वी सदीकी है । ]

[ ए० इ० २७ पृ० २०३ ]

४०-४३

सातानिकोट ( कुर्नूल, आन्ध्र )

कन्नड, ७वीं-८वीं सदी

[ यहाँ एक खेतमें पापाणोपर निम्न नाम खुदे हैं -

१ श्री कोपा ( शि ) की निसिवि

२ संसारमीत

३ श्रीविमलचन्द्रन्

४ गणिगे महाव्रति

इनकी लिपि ७वी-८वी सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ३३०, ३३२,  
३३७, ३३९ पृ० ४१-४२ ]

४४

माचेल्ल ( कृष्णा, आन्ध्र )

तेलुगु, ८वीं सदी, पूर्वार्ध

[ यह लेख पूर्वोक्त चालुक्य राजा सकललोकाश्रय जयसिंहवल्लभ ( द्वितीय ) के राज्यवर्ष ८ में लिखा गया था । दयावसन्त पृथिवीदेशरट्ट-गुडिके प्रपौत्र तथा वन्यवसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके पुत्र कल्याणवसन्तुलु-द्वारा अरहन्तभटारको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इस दानकी रक्षा कोठूरुके रट्टगुडि वंशके शासक करेंगे ऐसा लेखमें कहा है । ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १८ पृ० १३१ ]

४५

शिग्गांव ( धारवाड, मैसूर )

शक ६३० = सन् ७०८

सस्कृत-नागरी

[ यह ताम्रपत्र चालुक्य राजा विजयादित्यके ११वे राज्यवर्ष शक ६३० में आषाढ पौर्णिमाके दिन दिया गया था । किमुवोललके राजस्कन्धा-वारसे राजाने पुरिगेरे नगरमे कुंकुमादेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए गुड्डिगेरे ग्राम दान दिया ऐसा इसमे उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ ए० क्र० ४९ ]

४६

अण्णगेरि स्तम्भलेख ( जि० धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ६ = सन् ७५१-५२, कन्नड

- |                                 |                               |
|---------------------------------|-------------------------------|
| १ स्वस्ति कीर्तिवर्म(सत्या)श्रय | २ श्रीपृथु(वीवल्लभ) महाराजा   |
| ३ धिराज परमेश्वर भटारर          | ४ राज्य ओन्दुत्तरममिवृद्धि स- |
| ५ ले आरनेया वर्ष प्रव-          | ६ र्दमानमागे जे-              |
| ७ वुलगेरिगे कलि-                | ८ यम्म गामुण्डुगेयदी          |
| ९ चेदियमान्माहिसिद्रोद्         | १० इदर मुन्डे कोण्डि-         |
| ११ शुलरकुप्प कीर्तिवर्म-        | १२ गोसासिय निरिसिदा           |
| १३ कीर्तन । टीशापालस्य लि-      | १४ खितं । प्रभुनामन् ।        |

[ यह लेख बदामीके चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वितीयके राज्यके छठे वर्षका अर्थात् सन् ७५१-५२ का है । इसमे जेवुलगेरिके ग्रामाधिकारी कलिमय्य-द्वारा एक चेदिय अर्थात् जिनमन्दिर बनवाये जानेका निर्देश है । ]

[ ए० इ० २१ पृ० २०४ ]

यक्षिणियोकी है और इनके शिरोभागमें जिनमूर्तियाँ खुदी हैं । अक्षरोंकी लिपि तथा मूर्तिशिल्प ८वी-९वी सदीके है । ]

[ Medieval Indian Sculpture in the  
British Museum P. 41-42 ]

५४

वदनगुप्ते ( मंसूर )

संस्कृत-कन्नड, शक ७३० = सन् ८०८

[ इस ताम्रपत्रके पाँच पत्रोंमें-से पहले तीन पत्र द्वितीय भागके लेख क्र० १२३ के समान हैं जिनमें राष्ट्रकूट राजाओका वंशवर्णन गोविन्द-राज३ तक किया गया है । ]

चतुर्थ पत्र : पहली ओर

- ५१ धारावर्षश्रीवल्लभमहाराजाधिराजस्य पुत्र. शौचाचारप्रभुगुण-  
गणप्रण-
- ५२ मितसमस्तलोक. परोपकारकरुणापर. परमेश्वरचरणारविन्दवन्द-  
नाभिनन्दन. २-
- ५३ णावलोकश्रीकम्भराज. पुन्नाड एडेनाडुविषये वदनोगुप्ते नाम  
ग्राम तलव-
- ५४ ननगर अधिवसति विजयस्कन्धावारे । त्रिशदुत्तरेष्वतीतेषु शक-  
वर्षेषु कातिक-
- ५५ मास-पौर्णमास्यां रोहिणीनक्षत्रे सोमवारे कोण्डकुन्देयान्वय  
सिर्मलगे-
- ५६ गुरुगण कुमारणन्दिभट्टारकस्य शिष्य एलवाचार्यगुरु तस्य  
शिष्यो वर्धमा-
- ५७ नगुरु (१) सर्वप्राणिहित. साक्षात् सिद्धान्तानुगमोद्धतः (१)  
शान्त. सर्वज्ञकल्पोय नयोन्न-

- ५८ तगुणोन्नतः (॥) तस्मै त ग्राम अदात् स्वपुत्रश्रीशकरगण  
विज्ञापनेन श्रीकम्भदेव श्रीविजय-  
५९ वसतये तलवननगरे प्रतिष्ठितायै । तस्य सीमान्तराणि वडगण  
दिरं पोन्नर्पु-

चतुर्थ पत्र . दूसरी ओर

- ६० लि वडगण पडुवण कोनेदु पोसत्तिगल्लु पडुवणसीमे कदम्ब-  
गेरेय पेवं-  
६१ ग पडुवण तेकण कोनेदु पोंगुल्लत्तिय तेन्नोल्वे तेंकण सीमे  
बेलक्काल तेन्नो-  
६२ ल्वे तेंकण मूडण कोनेदु मुदुवलि कोरल्लु मूडणसीमे कल्लि-  
वेट्टिन मूडण पोरे-  
६३ ये मरू वेट्टु ओलगु मूडण वडगण कान्नेडु वडनिट्टिय वडगण  
ओल्वे  
६४ अस्य दानस्य साक्षिण षण्णवतिसहस्रविषय. प्रकृतय.  
६५ योस्यापहर्ता लोमान्मोहात् प्रमादेन च स पचमिर्महट्मि.  
पातकै ( ) सयुक्तो  
६६ भवति यो रक्षति स पुण्यमाग् भवति अपि चात्र मनुगीता (°)  
श्लोका ( ) स्वदत्तां परदत्तां  
६७ वा यो हरेत वसुन्धरां (।) षष्टि वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते  
क्रिमि. (॥) स्व दातु  
६८ सुमहच्छक्य दु ख अन्यस्य पालन (।) दान वा पालनं वेत  
दानाच्छेयोनुपा-

पाँचवॉ पत्र . पहली ओर

- ६९ लन (॥) बहुमिवसुधा भुक्ता राजभिस्मगरादिभि. (।) यस्य  
यस्य यदा भूमि ( ) तस्य



४७

कुडलूर ( मैसूर )

कन्नड, ८वीं सदी

श्रीयम्मं तोरेय तडिय ताण्टडोल् तम्म भागमं देवर्गे कोट्टर् अय्यप्प  
राउण्ड पक्कदतोण्टमं कोण्डु तोरेय तडिय तम्म भागड ताण्टमं मूडण-  
वसदिगे कोट्टर् रणपाकरसर् आले काण्डु तोट्टर् ॥

[ इस लेखमें रणपाकरसके राज्यकालमें श्रीयम्म तथा अय्यप्प-द्वारा  
किसी नदीतीरपर स्थित पूर्वोक्तवसदिके लिए कुछ उद्यान आदिके दानका  
उल्लेख है । लिपि ८वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९०९ पृ० १४ ]

४८

नरसिंहराजपुर ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, ८वीं-९वीं सदी

[ यह ताम्रपत्र गंग राजा श्रीपुरुष-द्वारा दिया गया था । इस राजाके  
'अनुकूलवर्ती' पमिण्डि गंग कुलके नागवर्मा तथा कदम्बकुलके तुलुअडिने  
तगरे प्रदेशके तोल्लग्राममें स्थित चैत्यालयके लिए मल्लवल्लि ग्राम दान  
दिया था । इसी प्रकार कोशिक वंशके मणलि मनेओडियोन्ने कुछ भूमि  
दान थी । इसी ताम्रपत्रके अन्तिम भागमें गंग राजा शिवमारके राज्यमें  
सिन्दनाडु ८००० के ग्रामक विट्टरस-द्वारा तोल्लरके चैत्यके लिए करिमानी  
ग्रामके दानका भी उल्लेख है । तदनन्तर इसी चैत्यके लिए राजा शिवमारके  
मामा विजयशक्ति अरम-द्वारा ६ खड्डुगभूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२० पृ० २७ ]

४६

## मुनुगोडु ( गुण्टूर, आन्ध्र )

तेलुगु, ८वीं सदी

[ यह लेख पूर्वीय चालुक्य राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके राज्यवर्ष ३७ का है। इस समय महामण्डलेश्वर गोकय्यने मुनुगोडुके जिनालयके लिए कुछ भूमि दान दी थी। यहीके एक अन्य लेखमे गोकके सेवक बोयुगट्ट-द्वारा इस जिनालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है जिसका निर्माण अगोति-द्वारा मुनिसुव्रतके तीर्थमे किया गया था। ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १७-१८ पृ० ६ ]

५०

## तिरुगोकर्णम् ( मद्रास )

तमिल, ८वीं सदी

[ यह लेख शडैयापारै नामक पहाडीपर एक जिनमूर्तिके पास है। पाण्ड्य राजा कोणेरिण्मैकोण्डान् सुन्दरपाण्ड्यदेवके २४वें वर्षकी एक राजाज्ञाका इसमे उल्लेख है। तदनुसार तेकविणाडुके निवासियोंसे कहा गया था कि कल्लारुप्पल्लिके पेरुनकिलि चोलप्पेरुम्पल्लि आल्वारके पूजादि-के लिए स्थानीय पल्लि ( जिनमन्दिर ) के व्यवस्थापको-द्वारा अर्पित जमीनोको करमुक्त किया गया। ]

[ इ० पु० क्र० ५३० पृ० ८५ ]

५१-५३

## ब्रिटिश म्यूजियम ( लन्दन )

८वीं-९वीं सदी, सस्कृत-नागरी

१ अनन्तवीर्य २ सुलोचना ३ धृति

[ ये नाम तीन मूर्तियोंके पादपीठोपर खुदे है। ये मूर्तियाँ यक्ष तथा

७० तस्य तटा फल (॥) देवस्व तु विष वोरं न विषं विषमुच्यते  
(१) विषमंकाकिनं हन्ति

७१ देवस्वं पुत्रपौत्रिकं (॥) विश्वकर्माचार्येण लिखितं (॥)

[ यह ताम्रपत्र राष्ट्रकूट समाट् गोविन्दराज ( तृतीय ) के राज्यकालमें सम्राट् ( ध्रुव निरुपम ) द्वारावर्षके पुत्र रणावलोक कम्भराज-द्वारा कार्तिक शु० १५ शक ७३०, सोमवारके दिन दिया गया था । कोण्डकुन्देय अन्वय-सिर्मलगेगुरु गणके कुमारणदि भट्टारकके प्रशिष्य तथा एलवाचार्यके शिष्य वर्धमानगुरुको वदनोगुप्ते ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । यह दान तलवननगरकी श्रीविजयवसतिके लिए दिया गया था । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ११२ ]

५५

सूरत ताम्रपत्र ( गुजरात )

शक ७४३ = सन् ८२१, मस्कृत-नागरी

१ श्रौं । श्रिय. पठ नित्यमशेषगोचर नयप्रमाण प्रतिपिद्दुष्पथं ।  
जनस्य मव्यत्वसमाहितात्मनो जयत्यनुग्राहि जिनेन्द्रशासन ॥

( १ ) स चो-

२ व्याद् वेधसा धाम यज्ञभिकमल कृतं । हरश्च यस्य कान्तेन्दु-  
कलया कमलकृतं ॥ ( २ ) आसीद् द्विपत्तिमिरसुद्यतमण्डलाग्रो  
ध्वस्तिन्नय-

३ नमिमुखो रणशर्वरीपु । भूपश्शुचिर्विधुरिवास्तदिगन्तकीर्ति-  
गोविन्दराज इति राजसु राजसिंह. ॥ ( ३ ) दृष्ट्वा चमूसमि-

४ सुखीं सुमदादृहासामुन्नामितं सपदि येन रणेषु नित्य । दद्याधरेण  
दधता भ्रुकुटिं ललाटे खड्गं कुल च हृद(यं)-

५ च निजं च सत्व ॥ ( ४ ) खड्गं कराग्रान्मुखतश्च शोभां मानो  
मनस्तस्सममेव यस्य । महाहवे नाम निशम्य सद्यस्त्र-

- ६ थं रिपूणां विगलत्यकाण्डे ॥ (५) तस्यात्मजो जगति विश्रुत-  
दोर्वकीर्तारार्तिहारिहरिविक्रमधामधारी । भूप-
- ७ त्रिविष्टपनृपानुकृति कृतज्ञ श्रीकर्कराज इति गोत्रमणिवंभूत्र ॥  
(६) तस्य प्रभिन्नकरटाच्युतदानद-
- ८ न्तिदन्तप्रहाररुचिरोद्विलिखिनांमपीठ । क्षमाप क्षितौ क्षपितशत्रु-  
रभूत्तनूजः सद्राष्ट्रकृतकनकाद्रिरेन्दुराजः ॥ (७) तस्योपा-
- ९ जितमहसस्तनयश्चतुस्रदधिवलयमालिन्या । भोक्ता भुवश्शत-  
क्रतुसदृशः श्रीदन्तिदुर्गराजोभूत् ॥ (८) काञ्चीशकेर-
- १० लनराधिपचोलपाण्ड्यश्रीमौर्यवज्रटविभेदविधानदक्षं । कर्णाटकं  
वलमचिन्त्यमजेयमन्यैर्भृत्यैः कियद्भिर-
- ११ पि यस्महसा जिगाय ॥ (९) अभ्रूविभगमगृहीतनिशातशस्त्र-  
मश्रान्तमप्रतिहृत्ताञ्जमपेतयत्नं । यो बल्लम सपदि दण्ड-
- १२ बलेन जित्वा राजाधिराजपरमेश्वरतामवाप ॥ (१०) भासेतो-  
विपुलोपलात्रलिलमल्लोलोर्भिमालाजलाढाप्रालेयक-
- १३ लकितामलशिलाजालात्तुषाराचलादा पूर्वापरवारिराशिपुलिन-  
प्रान्तप्रसिद्धावधेयैनेद जगती स्वविक्रमबलेनेका-
- १४ तपञ्चीकृता ॥ (११) तस्मिन् दिव प्रयाने बल्लमराजे क्षतप्रजा-  
बाधः । श्रीकर्कराजसूनुर्महोपतिः कृष्णराजोभूत् ॥ (१२) यस्य  
स्वभुजप-
- १५ राक्रमनिश्शेषोत्माद्रितारिडिक्चक्र । कृष्णस्येवाकृष्ण) चरितं  
श्रीकृष्णराजस्य ॥ (१४) शुभतुगतुगतुरगप्रवृद्धरेणूद्धरुद्धरवि-  
किरणं । श्रीष्मेपि नमो निखिल
- १६ प्रावृट्कालायने स्पष्ट ॥ (१४) वीनानाथप्रणयिषु यथेष्टचेष्टं  
समीहितमजस्र । तत्क्षणमकालत्रपे वर्षति सर्वार्थिनिर्वण ॥  
(१५) राहृष्पमा-

- १७ त्मभुजजातवलावलेपमार्जा विजित्य निशितासिलताप्रहारै ।  
पालिध्वजावलिशुभामचिरंण यो हि राजाविराजपरमेश्वरतां  
१८ ततान ॥ (१६) क्रोधाद्दुत्पातसद्ग प्रसूतरिपुभयैर्मासमानं  
समन्तादाजादुद्दृत्तवैरिप्रकटगजघटाटोपसंक्षोभदक्ष । सौर्यं  
त्यक्त्वारि-

दूसरा पत्र पहला भाग

- १९ वर्गा भयचकितवपु क्वापि दृष्टैव सद्यो त्रयोध्मातारिचक्रभय-  
करमगमद्यम्य टोटर्णरूप ॥ (१७) पाता यश्चतुरंबुरागिरसनाल-  
कारभाजा भु-  
२० वस्त्रय्याश्वापि कृतद्विजामरगुस्त्राज्याज्यपूजादरो । दाता मानभृद्-  
ग्रणीर्गुणवता योसौ श्रियो वल्लभो भोक्तुं स्वर्गफलानि भूरितपसा  
२१ स्थान जगामामरं ॥ (१८) येन श्वेनातपत्रप्रहतरविक्रत्रात-  
तापात्सलील जग्मे नासारधूलीव्रवलितवपुषा वल्लभाख्यस्स-  
दाजौ । श्रीमद्गोविन्दगजो जि-  
२२ तजगदहितस्त्रैणवैधव्यहंतुस्तस्यासीत् सूनुरेक लिताराति(म)  
त्तेमकुम्भ. ॥ (१९) तस्यानुज. श्रीध्रुवराजनामा महानुभावः  
प्रथितप्रताप ।  
२३ प्रसाधिताशेषनरेन्द्रच(क्र) क्रमंण वालार्कवपुर्वभूव ॥ (२०) जाते  
यत्र च राष्ट्रकूटनिलके सद्मूतचूडामणौ गुर्वां तुष्टिरथासिलस्य  
जगत. सुस्वामिनि प्रत्यह । ( सत्य ) सत्यमिति प्रसा-  
२४ सति सति क्षामामनुद्रान्तिकाभासीद् धर्मपद् गुणामृतनिधौ  
सत्यव्रताधिष्ठिते । (२१) शशवरकिरणनिकरनिम यस्य यज्ञः  
सुरनगाग्रसानुस्थैः । परिगी-  
२५ यतेनुरक्तैर्विद्याधरसुन्दरीनिवहै ॥ (२२) हृष्टेन्वहं योर्थिजनाय  
नित्यं सर्वस्वमानन्दितबन्धुवर्ग प्रादात् प्रष्टो हरति स्मवेगात्  
प्राणान् यमस्यापि नितान्त-

- २६ वीर्यं ॥ (२३) रक्षता येन निश्शेष चतुरम्मोधिर्मयुतं । राज्यं धर्मेण लोकानां कृता हृष्टि परा हृदि ॥ (२४) योसौ प्रसाधित-  
(समुन्नत) सारदुर्गो गागौघसन्ततिनिरोध-
- २७ विवृद्धकीर्तिं । आत्मीकृतोज्ञतवृषांरुविभूतिरूच्चैर्व्यक्तं ततान परमेश्वरतामिहैकं ॥ (२५) तस्यात्मजो जगति सत्प्रथितोरु-  
कीर्तिर्गोविन्दराज इ-
- २८ ति गोत्रललामभूत् त्यागी पराक्रमधनः प्रकटप्रताप सन्तापि-  
ताहितजनो जनवल्लभोभूत् ॥ (२६) पृथ्वीवल्लभ इति च प्रथितं यस्या-
- २९ पर ज(ग)ति नाम । यश्चतुर्दधिसीमामेको वसुधां वशे चक्रे ॥  
(२७) एकोप्यनेकरूपो यो ददृशे भेदवादिमिरिवात्मा । परवल-  
जलधिमपारं
- ३० तरन् स्वदोभ्यां रणे रिपुभि ॥ (२८) एको निर्हेतिरहं गृहीतशस्त्रा  
मे परे बहवो । यो नैवंविधमकरोच्चित्त स्वप्नेपि किमुताजौ ॥  
(२९) राज्याभिषेकलशैरभि-
- ३१ पिच्य दत्तां राजाधिराजपरमेश्वरतां स्वपित्रा । अन्यैर्महानृपति-  
मिर्वहुभिस्समेत्य स्तम्मादिभिर्भुजबलादवलुप्यमानां ॥ (३०)  
एकोनेकनरेन्द्रवृन्द्रसहिता-
- ३२ न्यस्तान् समस्तानपि प्रोत्खा(त्ता)सिलताप्रहारविधुरां बध्वा  
महासयुगे । लक्ष्मी(म)प्यचलां चकार विलसत्सन्ध्यामराहिणी  
ससीददगुरुविप्रसज्जनसुहृद्वं-
- ३३ धूपमोनया भुवि ॥ (३१) तत्पुत्रोत्र गते नाकमाकम्पितरिपुप्रजे ।  
श्रीमहाराजसर्वाख्य ख्यातो राजाभवद् गुणै ॥ (३२) अर्थिषु  
यथार्थतां यस्सममिष्टफलाप्तिलब्धतो-
- ३४ पेपु । वृद्धिज्ञिनाय परमामभोववर्षाभिधानस्य ॥ (३३) राजा-

मूत् तत्पितृव्यो रिपुमवविभवोद्भूत्यमावैकहेतुर्लक्ष्मीवानिन्द्रराजो  
गुणिजननिकरान्तश्चमत्का-

३५ रकारी । रागादन्यान् व्युदस्य प्रकटितविनया यं नृपं सेवमाना  
राजश्रीरेव चक्रे स(कल)कविजनोद्गीततथ्यस्वभावं ॥ (३४)  
निर्वाणावाप्तिवानासहितहितजनो -

३६ पास्यमाना सुवृत्तं वृत्तं जित्वान्यराज्ञां चरितमुदयवान् सर्वतो  
द्विसकेभ्य । एकाकी दृप्तवैरिस्खलनकृतिसहप्रातिराज्येशशंकु-  
र्लाटीय मण्डलं

३७ यस्तपन इव निजस्वामिदत्तं ररक्ष ॥ (३५) यस्यांगमात्रजयिनः  
प्रियसाहसस्य क्षमापालवेषफलमेव वमू(व) सैन्यं । मुक्त्वा च  
सर्वभुवनेश्वरमादिदे -

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

३८ वं नावन्दतान्यममरेष्वपि यो मनस्वो ॥ (३६) श्रीकर्कराज इति  
रक्षितराज्यमारस्मार कुलस्य तनयो नयशालिशौर्यः । तस्या -

३९ भवद् विम(व)नन्दितवन्धुसार्थं पार्थः सदैव धनुषि प्रथम-  
श्शुचीनां ॥ (३७) दानेन मानेन सदाज्ञया वा शौर्येण वीर्येण च  
कोपि मू० । एतेन साम्योस्ति

४० न वेति कीर्तिस्सकौतुका भ्राम्यति यस्य लोके ॥ (३८) स्वेच्छा-  
गृहीतविषया(न्)दृढसघमाज प्रोद्बृत्तदृष्टतरशौल्कितराष्ट्रकृतान् ।  
उरखातखड्गनिज -

४१ बाहुवलेन जित्वा योमोघवर्षमचिरात् स्वपदे व्यधत् ॥ (३९)  
तेनेद्रमनिलविद्युच्चंचलमालोक्य जीवितमसारं । क्षितिदानपरम-  
पुण्य प्रवर्तितो ध -

४२ संदायोयम् ॥ (४०) स च ममविगतशेषमहाशब्दमहासामन्ता-

धिपति. सुवर्णवर्षश्री(क)र्कराजदेव कुशली स्वर्निव यथासंबध्य-  
मानान् राष्ट्रपति -

४३ विषयग्रामपतिग्रामकूटयुक्त नियुक्तवासावकाधिकारिकमहत्तरादि-  
कान् समनुदर्शयत्यस्तु वस्सविदित यथा मया श्रीवक्त्रिकाट -

४४ स्थावासितविजयस्कन्धावारस्थितेन मातापित्रोरात्मनश्चैहिका-  
मुष्मिकपुण्ययशोभिवृद्धये श्रीनागसारिकास्वतलसन्निविष्टार्हचैत्या-  
ल(या)यतननि(वद्ध) -

४५ सम्बपुराभ्यमण्डितवसतिकाया. खण्डस्फुटितनवकर्मचरुवलिदान-  
पूजार्थं तथा तथानिवध्यमानचातुष्टयमूलसघोदयान्वयसेन -

४६ सेनसंघमलवादिगुरोर्शिष्यश्रीसुमतिपूज्यपादः तच्छिष्य-श्रीमद-  
पराजितगुरो श्रीनागसारिकाप्रतिबद्ध अस्वापाटकग्रामस्य  
उत्तरदिशि

४७ हिरण्ययोगाभिधानां ढाणुवापी यस्याघाटनानि पूर्वतः श्रीधर-  
वापिका दक्षिणतो वहः अपरत पूरावी महानदी उत्तरत-  
स्सम्बपुर -

४८ वापिका । एवमियं चतुराघाटोपलक्षिता सधान्यहिरण्यादेया  
अचाटमटप्रवेश्यस्सर्वराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीय आच -

४९ न्द्रार्कार्णवक्षितिसरिर्त्पर्वतसमकालीन शिष्यप्रशिष्यान्वयक्रमोप-  
भोग्य शकनृपकालातीतसवत्सरशतेषु सप्तसु त्रिचत्वारिंशद -

५० धिक्रेष्वतीतेषु वैशाखपर्णमास्यां स्नात्वोदकातिसर्गेण प्रतिपादि-  
तोस्योचितया आचार्यस्थित्या भुजतो भोजयत कर्षत. कर्षयत.  
प्रतिदि -

५१ शतो वा न केनचित् परिपन्थिना करणीया ॥ तथागामिनृपति-  
भिरस्मद्वद्वैरन्यैर्वा सामान्यं भूमिदानफलमवेत्य विद्युल्लोला-  
न्यनित्यान्यैश्च -



६ टाववियुमोरडिगलुक्कु शोराग-अमैत्त पो-

७ ण् ऐन्नरैन्दु काणम् ॥

[ यह लेख पाण्ड्य राजा वरगुण २ के राज्यवर्ष ८, शक ७९२ का है । इस समय गुणवीरके गिष्य शान्तिवीरने तिरुवयिरै स्थित पार्वनाथ मूर्ति तथा यक्षीमूर्तिका जीर्णोद्धार किया था । इसके लिए उन्हे ५०२ काणम् ( सुवर्णमुद्रा)दान मिला था । ]

[ ए० इ० ३२ पृ० ३३७ ]

५६

धर्मपुरी ( सालेम, मद्रास )

शक ८०० = सन् ८७८, कन्नड

किलेमं मारियम्मन देवालयके आगे पढ़े हुए स्तम्भपर

[ इस लेखमे पल्लव महेन्द्र नोलम्ब-द्वारा किसी जैन मन्दिरके लिए दान दिये जानेका निर्देश है । इस लेखका समय शक ८००, विलम्बि सवत्सर था । ]

[ इ० म० सालेम ८१ ]

६०

कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )

कन्नड, शक ८११ = सन् ८९०

[ इस लेखकी तिथि कार्तिक पूर्णिमा, शक ८११, शोभन सवत्सर ऐसी है । इस समय दण्डनायक अम्मरसने कुपण तीर्थकी यात्रा की तथा महासामन्त कदम्बवर्गीय अलियमरस-द्वारा निर्मित वसदिके लिए कुछ दान दिया था । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १५९ पृ० ४१ ]

६१

धर्मपुरी ( सालेम, मद्रास )

शक ८१८ = सन् ८९३, कन्नड

मल्लिकार्जुन मन्दिरके आगे एक स्तम्भपर

[ राजा महेन्द्राधिराज नोलम्बके समय शक ८१५ मे यह लेख लिखा गया । इसमें निवियण्ण और चण्डियण्ण-द्वारा मूलसव, सेनान्वय, पोगरिय-गणके आचार्य विनयसेन सिद्धान्तभटारके शिष्य कनकसेन सिद्धान्तभटारको मूलपल्लि ग्राम दान देनेका उल्लेख है । ]

[ इ० म० सालेम ७४ ]

६२

सित्तन्नवासल ( पुट्टुकोट्टै, मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ यह लेख पाण्ड्य राजा अविनिपशेखर श्रीवल्लभके समयका है । इलंगौतमन् ( इसीका नाम मदिरे आशिरियन् भी था ) द्वारा अन्तर्मण्डपका जीर्णोद्धार तथा बाह्य मण्डपका निर्माण किये जानेका इसमे उल्लेख है । इस मन्दिरको अरिवन् कोयिल् ( अर्हन्मन्दिर ) कहा गया है । इस गुहामन्दिरके बाहरी भागपर कई यात्रियोंके नाम खुदे हैं जिनकी लिपि ७वीं सदीकी है । ]

[ रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १६७-१६९ रि० सा० ए०

१९४०-४१ क्र० २१५ पृ० ९९ ]

६३

हेव्वलगुप्पे ( मैसूर )

९वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्तिश्रीनरसीगेरे अण्पोर् दुग्गमार

२ कोयिल्वसदिगे अरुगण्डुगव्वेदे मण् कोट्टर्

- ५२ र्याणि तृणाग्रलग्नचचलविन्दुचंचलं च जीवितमाकलय्य स्वदाय-  
निर्विशेषोयमनुमन्तव्यः परिपालयितव्यश्च । यश्चाज्ञानतिमिर-  
पटलावृत -
- ५३ मतिराच्छिन्द्यादाच्छिद्यमानक वानुमादेत स पं(च)भिर्महापात-  
कैरुपातकैश्च सयुक्तस्स्वादित्युक्त च भग(व)ता वेदव्यासेन  
व्यासेन ॥
- ५४-५८ [ नित्यके शापात्मक श्लोक - षष्टिं वर्षसहस्राणि आदि ]
- ५९ यथा चैतदेवं तथा शासनदाता लिपिज्ञस्त्वहस्तेन स्वमतमारोप-  
यति ॥ स्वहस्तोयं मम श्रीकर्कराजस्य श्रीमदि -
- ६० न्द्रराजसुतस्य ॥ लिखित चैतन्मया महासन्धिविग्रहाधिपतिना  
नारायणेन कुलपुत्रकश्रीदुर्गभट्टसूनुना ॥ जीयाद्दुरितविद्वेषि  
शासनं जि -
- ६१ नशासन । यदन्यमतशैलानां भेदने कुलिशायते ॥ (४९)  
जयति जिनोक्तो धर्मषडर्जावनिक्वायवत्सलो नित्यं । चूडामणि-  
रिव लो(के)
- ६२ त्रिभाति यस्सर्ववर्माणाम् ॥ (५०)

[ यह ताम्रपत्र अंक ७४३ मे वैशाख पूर्णिमाको दिया गया था । इसमे पहले राष्ट्रकूट मन्नाटोकी वशावली अमोघवर्ष ( प्रथम ) तक दी गयी है । तदनन्तर अमोघवर्षके पितृव्य(चाचा)इन्द्रराजके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्षका उल्लेख है जो गुजरातमे शासन कर रहा था । अमोघवर्षके राज्यारोहणके बाद कई सामन्तोंने विद्रोह किया था उनपर विजय प्राप्त करनेमे कर्कराजकी ही मदद उपयोगी सिद्ध हुई थी । कर्कराजने उक्त वर्षमें मूलसंघसेनमघके मल्लवादिगुरुके शिष्य सुमतिपूज्यपादके शिष्य अपराजितगुप्तको नागसारिकाके जिनमन्दिरके लिए हिरण्ययोगा नामक खेत दान दिया था । ]

५६

राणिवेण्णूर ( धारवाड, मैसूर )

शक ७८१ = सन् ८६०, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष ( प्रथम ) के समयका है । नागुल पोल्लव्वे द्वारा स्थापित नागुलवसदिके लिए शक ७८१ मे कुछ भूमि दान दिये जानेका इममें निर्देश है । यह दान सिंहवूरगणके नागनन्द्या-चार्यको दिया गया था । ]

[ रि० आ० सं १९३०-३४ पृ० २०९ ]

५७

वेंदूर ( मैसूर )

शक ७८५ = सन् ८६४, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष १ के समय शक ७८५, तारण संवत्सरमें लिखा गया था । चिकण्ण नामक अधिकारीको कुछ भूमि दिये जानेका इसमें उल्लेख है । व्रतोका पालन और सन्यसन इनका भी उल्लेख हुआ है । अत यह समाधिमरणका स्मारक प्रतीत होता है । ]

( मूल कन्नडमें मुद्रित )

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ६ ]

५८

ऐवरमलै ( मदुरा, मद्रास )

शक ७९२ = सन् ८७०, तमिल

- १ शकर याण्डुपुलु-नूर्त्तोण्णूरिरिण्डु
- २ पोन्दणवरगुणकुं याण्डु पट्टु गुणवीरक्कु-
- ३ रवडिगल् माणाक्क(र)कालत्तु शान्तिवीरक्कु-
- ४ कुरवर् तिरुवयिरै पोरिश्च (पार्श्व)प(म)टाररैयुमिय-
- ५ किक अन्वैगलैयु पुट्टुक्कि इरण्डुक्कुमुद-

- ३ अरमण्डमेगालुमगोकेमोगेयु ओड्डिपा-
- ४ द्वियुं गोयियन्दम्मगलरुगण्डुग वेदेन्नेल् मण्कोट्टर्
- ५ इटानलित्तु केडिसिदोनोक्कल् केडुग पंचम-
- ६ हापातकनक्कवन् मक्कलु साग-
- ७ वसदियान्केय्दोन् नारायण पे-
- ८ रुन्तच्चन्

[ यह लेख ९वीं सदीकी लिपिमें है । नरसीगेरे अप्पोर् दुग्गमार ( जो गगवशका राजपुत्र था ) द्वारा एक जिनमन्दिर ( कोयिल्वसदि ) को ६ खण्डुग भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इतनी ही भूमि अरमण्डमेगलु, अगोकेमोगे, ओड्डिपाडि इन ग्रामोके निवासियो-द्वारा तथा गोयिन्दम्म-द्वारा दान दी गयी थी । श्रेष्ठ शिल्पकार नारायणने इस वसदिका निर्माणकार्य किया था । ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० २४० ]

६४

**मोटे वेन्नूर ( धारवाड, मैसूर )**

९वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख ९ वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें किसी वसदिके लिए चन्द्रनन्दि भट्टारको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । इस लेखकी स्थापना इन्दर पिट्टम्मके सेनवीव कुण्डमय्य-द्वारा की गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १११ पृ० १२९ ]

६५

**कल्लकत्ता ( नाहर म्युजियम )**

९वीं सदी, कन्नड

- १ श्री जिनवल्लभन सज्जन
- २ भागियवेय माडिसिद
- ३ प्रतिमे

[ यह लेख पीतलकी चौबीसतीर्थकरमूर्तिके पादपीठपर है । लिपि ९वीं सदीकी है । यह मूर्ति जिनवल्लभको स्वजन ( पत्नी ) भागियवे-द्वारा स्थापित की गयी थी । लिपिसे स्पष्ट होता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमे निर्मित हुई थी । ]

[ ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५० ]

६६-६७

तिरुनिडकोण्डै ( मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमे कहा है कि तिरुनरुगोण्डैके किलैप्पल्लि ( जैन मन्दिर ) का चतुर्भुगतिरुक्कोयिल् ( चतुर्मुख वसति ) तथा पूर्वका सभामण्डप, तलक्कूडि निवासी विशैयनल्लूलान् कुमरन् देवन्ने वनवाया था । लेखकी लिपि ९वी सदीकी है । यहीके अन्य दो भागोमें इसी समयकी लिपिमे वाणकोवरैयर् तथा आरुलगपेरुमान्का उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०६-७ पृ० ६६ ]

६८-६९

तिरुनिडकोण्डै ( मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमे नारियप्पाडि निवासी शिंगणार् पेरियवडुगणार्-द्वारा दो जैन पल्लियो ( मन्दिरों ) के लिए १० पोण् ( मुद्राएँ ) दान दिये जानेका निर्देश है । यहीके एक अन्य लेखमे नारियप्पाडि निवासी पेरियन-क्कनार्के पुत्र ( नाम लुप्त ) द्वारा भी कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है लिपि ९वी सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०८-९ पृ० ६६ ]

७०

कीरप्पाक्कम् ( चिंगलपेट, मद्रास )

९वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमे कीरैपाक्कम्के उत्तरमें देशवल्लभ जिनालयका उल्लेख है। इसका निर्माण यापनीय सघ कुमिलिगणके महावीरगुरुके शिष्य अमरमुदलगुरु-द्वारा किया गया था। लिपि ९वी सदीकी है। ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० २२ पृ० १० ]

७१

वेगूर ( वगलोर, मैसूर )

९वीं सदी, कन्नड

[ इस निसिधिलेखमे मोन भट्टारके शिष्य न्दिभटारके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि ९वी सदीकी है। यह लेख नागेश्वर मन्दिरमे लगा है। ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ४६ ]

७२

वेलगाँव ( मैसूर )

९वीं-१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख नेमिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना 'राष्ट्रकूट वशरुपी समुद्रके लिए चन्द्रके ममान' मणिचन्द्रके गुरु नेमिनाथ ( नेमिचन्द्र ? ) द्वारा की गयी थी। ]

[ रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२५ ]

७३

अलगरमलै ( मदुरा, मद्रास )

वट्टेलुत्तु लिपि-९वी-१०वीं सदी

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके समीप खुदा है ]

( मूल- ) १ श्री अच्चर्ण - २ डि शेयल्

[ आर्यनन्दि आचार्यका यह नामोल्लेख है । लिपि ९वी-१०वी सदीकी है ।

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ३९६ पृ० ६२ ]

७४-७५

चिक्कहनसोगे ( मैसूर )

१०वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[ इस निसिधिलेखमे मूलसघ-देसिगण-पनसोगे शाखाके श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है । यह लेख १०वी सदीके प्रारम्भका है तथा इस समय रामेश्वर मन्दिरमे लगा है ।

यहीके एक अन्य निसिधिलेखमे नागकुमारकी पत्नी जविकयब्बेके समाधिमरणका उल्लेख है । समय १०वी सदीके प्रारम्भका है । ]

[ ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८ ]

७६

चिक्कहनसोगे ( मैसूर )

१०वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

- |                      |                             |
|----------------------|-----------------------------|
| १ पुरेय समु-         | २ द्रवेष्टितधरात-           |
| ३ लम प्रतिपालिसु     | ४ तुमित्तेरेग म-            |
| ५ हारिमण्डलिक-       | ६ रिं बेसकेय्ये विला-       |
| ७ सयेल्गेय मे-       | ८ रेवकरुरनेन्दे-            |
| ९ निसल आलिपोरी       | १० स्तितसन्ध्यरिन्दु वन्दे- |
| ११ रग समन्तु क-      | १२ हनेलेयदेवर               |
| १३ पाटपयोरुह-        | १४ गलोल् ॥ स्थावरज-         |
| १५ गमतीर्थ भावि-     | १६ सि पेल्दागलोर्दे गो-     |
| १७ म्मटदेवर् स्थावर- | १८ तीर्थ कलनेलेदेव-         |
| १९ र् भूवल्लयदोलगे   | २० जगमतीर्थ ॥               |



- २ नामत्करोलो(प)शोमित । सुजे(खर) लौ मूर्ध्नि रूढो मही-  
भृतां ॥३ अभिविभ्रद् रुचिं काना सावित्रीं चतुराननं । हरिवर्मा  
वसूवात्र भूविभुर्भुवनाधिक ॥(४) मरुल्लोकविलोकनपकजस्फुर-  
दनबुदवालद्विवाकरः । रिपुवधूवदनंदुहृतद्युति
- ३ समुद्रपादि त्रिदग्धनृप(स्तत ) ॥(७) स्वाचार्यैर्गो रुचिरवच(नैर्वा)-  
सुदेवामिधानैर्वोध नातो दिनकरकरैर्नारजन्माकरो व । पूर्व जैनं  
निजमिव यगो (कारयद् ह-)स्तिकुब्धा रम्य हर्म्यं गुरुहिमगिरे-  
श्रृगश्रृंगारहारि ॥६ दानेन तुलितवलिना तुलादिदानस्य येन  
देवाय । भाग(द्वय)व्यतीर्यत भागश्चा -
- ४ (चार्यव)र्याय ॥(७) तस्माद्भू(च्छुद्ध)सत्त्वां समटाख्यो महीपतिः ।  
समुद्रविजयो श्लाघ्यतरवारि. सद्मिकः ॥८ तस्माद्ममः सम-  
जनि (समस्त)जनजनितलोचनानंदः । ध(व)लो वसुधान्यापी  
चद्रादिव चद्रिकानिकर ॥(९) भक्त्वाघाटं वटामि प्रकटमिव मद  
मेदघाटे मदानां जन्ये राजन्य -
- ५ जन्ये जनयति जनताज रण मुंजराजे । (श्री)-माणे (प्र)णष्टे हरिण  
इव मिया गूर्जेशो विनष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिरिव शरणे य-  
सुराणां वभूव ॥(१०) श्रीमद्दुर्लभराजभूभुजि भुजैमुंजत्यसंगां  
भुव ददैर्भण्डनशौण्डचंडसुमटेस्तस्याभिभूत विभु. । यो दैत्य-  
रिव तारक -
- ६ प्रभृतिमि श्रीमान् महेन्द्र पुरा सेनानारिव नात्तिपौरुषपरोनैषीत्  
परां निवृत्तिं ॥(११) य मूलादुदमूलयद् गुत्त्रल श्रीमूलराजो  
नृपो द्रुपाधो धरणीवराहनृपतिं यद्वद् द्विपः पादप । आयात भुवि  
कादिर्शाकममिको यस्त शरण्यो दधौ दृष्टायामिव रूढमूढमहिमा  
कोलो महीमडल ॥१२
- ७ इत्थं पृथ्वीमर्तुमिर्नाथमानै सा सुस्थितैरास्थितो यः । पाथोनाथो  
वा त्रिपक्षात् स्वप(क्ष)रक्षाकाक्षै रक्षणे वदकक्षः ॥(१३) दिवा-

करस्येव करैः कठोरैः करालिता नृपकण्ठकस्य । अशिथ्रियतापहतो-  
रूताप यमुन्नत पादपवज्जनौघाः ॥ (१४) धनुर्धरशिरोमणेरमलधर्म-  
मभ्यस्यतो जगा -

८ म जलधेर्गुणो (गु)रुसुप्य पार पर । समीयुरपि नमुखा सुमुख  
मार्गणाना गणा सता चरितमद्भुत सकलमेव लोकोत्तर ॥ (१५)  
यात्रासु यस्य त्रियदौर्णविपुर्विशेषात् वलगत्तुरगखुरखातमहीरजांसि ।  
तेजोमिरूर्जितमनेन विनिर्जितत्वाद् भास्वान् विलज्जित इवातितरा  
तिरोभूत् ॥ १६

९ न कामनां मनो धीमान् ध लनां दधौ । अनन्योद्धार्यसत्कार्य-  
मारधुर्योर्थतोपि यः ॥ (१७) यस्तेजोभिरहस्कर करुणया शौद्धो-  
दनि शुद्धया भीष्मो वचनवचितेन वचसा धर्मेण धर्मात्मजः ।  
प्राणेन प्रलयानिलो बलमिदो मन्त्रेण मन्त्री परो रूपेण प्रमदाप्रियेण

१० मदनो दानेन क(र्णो)भवत् ॥ (१८) सुनयतनय राज्ये बालप्रसाद-  
मतिष्ठिपत परिणतवया नि मगो यो वभूव सुधी स्वय कृतयुग-  
कृत कृत्वा कृत्य कृतात्मचमत्कृतीरकृत सुकृती नो कालुष्य  
करोति कलिः सतां ॥ (१९) काले कलावपि क्लामलमेतदीय  
लोका विलोक्य कलनातिगत गुणौ -

११ घ । (पार्थी)दिपार्थिव(गुणा)न् गणयतु सत्यानेक व्यभाद् गुण-  
निर्वि अमितीव वेभाः ॥ २० गोचरयति न वाचो तच्चरित चद्र-  
चन्द्रिकारुचिर । वाचस्पतेर्वचस्वी को वान्यो वर्णयेत् पूर्ण ॥ (२१)  
राजधानी भुवो मर्तुस्तस्यास्ते हस्तिकुण्डका । श्रलका धनदस्येव  
धनाढ्यजनसेविता ॥ (२२) नीहारहारहरहास(हि)—

१२ (मां) शुहारि (जा) त्कार(र) वारि (भु)वि राजविनिर्जराणा ।  
वास्तव्यभव्यजनचित्तसम (म)मनात् मतापसपट्टपहारपर परेषा ॥  
(२३) धौतकलधौतकलशाभिरासरामास्तना इव न यस्यां ।

२१ वेल्देवं वरेदं

२२ डल्वेडे मल्लाचा-

२३ रि ॥

[ इस लेखमें ( गग राजा ) एरेयके समय एलाचार्यके समाधिमरणका तथा उनके शिष्य कलनेलेदेव-द्वारा उनकी निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । गोम्मटदेवको रथावरतीर्थ तथा कलनेलेदेवको जगमतीर्थ कहकर उनकी प्रशंसा की है । लेख १०वीं सदीके प्रारम्भका है । ]

[ ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८ ]

७७

वन्दलिके ( मैसूर )

शक ८२४ = सन् ९०२, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट राजा कृष्ण २ अकालवर्षके समयका है । महा-सामन्त वकेयरसके पुत्र लोकटेयरसके अधीन पेगडे विट्टय्य-द्वारा शक ८२४ में वन्दलिकेमें एक वसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है । लोकटेयरसने इस वसदिके लिए नागर खण्ड ७० विभागका दण्डिपल्लि ग्राम विट्टय्यको दान दिया था । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ३८ ]

७८

असुण्डि ( मैसूर )

शक ८४७ = सन् ९२५, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्द ( चतुर्थ ) नित्यवर्षके समय शक ८४७, पार्थिव सवत्सरमें लिखा गया था । इसमें नागय्य द्वारा एक जिनालयका निर्माण तथा उसके लिए कुछ भूमिदान किये जानेका उल्लेख है । यह दान वकापुरके घोरजिनालयके प्रमुख चन्द्रप्रभ भटारके शासनकालमें दिया गया था । ]

( मूल कन्नडमें मुद्रित )

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २० ]

७६

## हलहरवि ( वेल्लारी, मैसूर )

शक ८५४ = सन् ९३२, कन्नड

[ यह लेख शक ८५४ पार्थिव सवत्सर ( यह वर्षनाम गलत है ) का है । इसमें राजा नित्यवर्षके राज्यकालमें कन्नरदेवकी रानी चन्दियब्बे द्वारा नन्दवरमें एक जैन वसदिका निर्माण तथा उसके लिए कुछ करोका उत्पन्न पद्मनन्दि आचार्यको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५४० पृ० ५२ ]

८०

## कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )

शक ८६२ = सन् ९४०, कन्नड

[ यह लेख जिनशासनकी प्रशमासे शुरू होता है । तिथि शक ८६२, विकारि संवत्सर ऐसी दी है । अन्य विवरण प्राप्त नहीं । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९६ पृ० ३७ ]

८१

## विजापुर ( उदयपुरके समीप, राजस्थान )

संवत् ९९६ = सन् ९४० तथा संवत् १०५३ = सन् ९९७

संस्कृत-नागरी

१ जवस्तव० । परिशासतु ना परा(र्थख्या)पना जिना ॥१  
ते च पातु(जिना)विनामसम(ये यत्पा)दपन्नोन्मुखप्रेखासंख्य-  
मयूख(शे)खरनरश्रेणीषु विम्बोदयात् । प्रायैकादशमिर्गुण दश-  
शती शक्रस्य शुभदृशा कस्य स्याद् गुणकारको न यदि वा  
स्वच्छात्मनां सगम ॥२

सत्यपरेप्यपहारा सदा सदाचारजनतायां ॥ (२४) समदमदना  
लीलालापा प—

१३ नाकुला कुवलयदशां सदृश्यते दृशस्तरला पर । मलिनितमुखा  
यत्रोद्भृत्ताः परं कठिना कुचा निविद्धरचना नी(वौ) व्रंधा. परं  
कुटिला कचाः ॥ (२५) गाढोत्तुगानि सार्धं शुचिकुचकलशै  
कार्मनीनां मनोजैविंस्तीर्णानि प्रकाय सह घनजघनेर्देवतामदि-  
राणि । भ्राजते दभ्रशुभ्राण्य—

१४ तिश्यसुभगं नेत्रपात्रै. पवित्रै सत्रं चित्राणि धात्रीजनहृतहृदयै-  
विभ्रमैर्यत्र सत्रं ॥ ( २६ ) मधुरा घनपर्वाणो हृद्यरूपा रसा-  
धिका । यत्रेक्षुवाटा लोकेभ्यो नालिकत्वाद् मिदेलिमा ॥  
( २७ ) अस्यां सूरि सुराणां गुरुरिव गु(रु)मिगौरवार्यो गुणौघै-  
भूषाना त्रिलोकोवलयविल—

१५ सितानतरानतर्कति । नाम्ना श्रीशांतिमद्रोभवदमिभवितु मास-  
(या)वात्समाना कामं कामं सम(र्था) जनितजनमन संमदा यस्य  
मृतिः ॥ (२८) मन्येमुना मुनीद्रेण (म)नोभू रूपनिर्जित ।  
स्वप्नेपि न स्वरूपेण समगस्तातिलज्जित ॥ (२९) प्रोद्यत्पद्मा-  
करस्य प्रकटितविकटाशेषमात्र—

१६ स्य सूरैः सूर्यस्येवामृतांशु स्फुरितशुमरुचिं वासुदेवामिधस्य ।  
अध्यासीन पदव्यां यममलविलसज्ज्ञानमालोक्य लोको लोका-  
लोकावलोक सकलमचकलत् केवल संमयीति ॥ (३०) धर्माभ्या-  
सरत्स्यास्य संगतो गुणनग्रह. । अभग्नमार्गणेच्छस्य चित्रं  
निर्वाणवाळना ॥ (३१)

१७ कमपि सर्वगुणानुगतं जन विधिरय त्रिदधाति न दुर्विध । इति  
कलकनिराकृतये कृती यमकृतेव कृताखिलसद्गुणं ॥ (३२)  
तदीयवचनान्निजं धनकलत्रपुत्रादिक विलोक्य सकल चल दल-

मिवानिलांदो(लि)तं । गरिष्ठगुणगोण्ड्यद. समुददीधरद् धीरधीरु-  
दारमतिसुंदर प्रथम—

१८ तीर्थकृन्मदिरं ॥ (३३) ( रक्तं ) वा रम्यरामाणां मणितारा-  
वराजित । इदं मुखमिवाभाति भासमानवरालक ॥ (३४)  
चतुरस्र (पट्टज) नघा(हु)निक शुभशुक्तिकरोटकयुक्तमिद बहु-  
भाजनराजि जिनायतन प्रविराजति भोजनधामसम ॥ (३५)  
विदग्धनृपकारिते जिनगृहे—

१९ तिजोर्णे पुनः सम कृतसमुद्धृताविह भवांबुधिरात्मनः । अति-  
ष्टिपत सोप्यथ प्रथमतीर्थनाथाकृतिं स्वकोर्तिमिव मूर्ततामुपगतं  
सितांशुद्युतिं ॥ (३६) शात्याचार्यैस्त्रिपन्चाशे सहस्रे शरदामियं  
मावशुक्लत्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥ (३७) विदग्धनृपति  
पुरा यदतुलं तुलादे—

२० दंतौ सुदानमवदानधीरिदमपीपलन्नाहृतं । यतो धवलभूपति-  
जिनपतेः स्वय सात्म (जो) रघट्टमय पिप्पलोपप (दक्क) पकं  
प्रादिशत् ॥ (३८) यावच्छेषशिरस्थमेकरजतस्थूणास्थिताभ्युल्ल-  
मत्पातालातुलमंडपामलतुलामालंबते भूतल । तावत्ता—

२१ रवामिरामरमणी(ग)धर्वधीरध्वनिधर्मान्यत्र धिनोतु भार्मिकधिय -  
(स)द्भूपवेलावि(भौ) ॥ (३९) सालकारा समधिकरसा साधु-  
सभानबंधा श्लाघ्यश्लेषा ललितविलसत्तद्धिताख्यातनामा । सद्-  
वृत्ताढ्या रुचिरविरतिर्धुर्यमाधुर्यवर्या सूर्याचार्यैर्व्यरचिरमणीवा—

२२ ति(रम्या) प्रशस्ति. ॥ (४०) संवत् १०५३ माघशुक्ल १३  
रविदिने पुष्यनक्षत्रे श्रीकृष्णमनाथदेवस्य प्रतिष्ठा कृता महाध्वज-  
श्रारोपित ॥ मूलनायक ॥ नाहकजिदजसशपूरभद्रनागपोचि-  
(स्थ)श्रावकगोष्ठिकैशेषकर्मक्षयार्थं स्वसंतानमवाब्धितर—

२३ (णार्थ) च न्यायोपार्जितवित्तेन कारितः ॥वृ॥ परवादिदर्पमथन

हेतुनयसहस्रमगकाकीर्णं । मन्व्यजनदुरितशमनं जिनेन्द्रवरशासनं  
जयति ॥ (१) आसीद् धोधनसंमतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापो-  
ज्वलो विस्पष्टप्रतिमः प्रभावकलितो मूपोत्तमांगार्चितः ।  
योपित्पी—

२४ नपयोधरातरसुखाभिष्वंगसलालितो यः श्रीमान् हरिवर्म उत्तम-  
मणि सद्दशहारे गुरौ ॥ (२) तस्माद् बभूव भुवि भूरिगुणोपपेतो  
मूपप्रभूतमुकुटार्चिनपादपीठः । श्रीराष्ट्रकूटकुलकाननकल्पवृक्षः श्री-  
मान् विदग्धनृपतिः प्रकटप्रतापः ॥ (३) तस्माद् मूप—

२५ गणा "तमा' (कीर्ते.) पर माजन समूतः सुतनु सुतोतिमतिमान्  
श्रीममटो विश्रुतः । येनास्मिन् निजराजवशगगने चन्द्रायित  
चारुणा तेनेद पितृशासनं समधिक कृत्वा पुनः पाल्यते ॥ (४)  
श्रीवलमद्राचार्यं विदग्धनृपपूजितं समभ्यर्च्यं । आचद्रार्कं यावद्-  
दत्तं भवते मया—

२६ ॥ (५) (श्रीहस्ति)कुण्डिकायां चैत्यगृहं जनमनोहरं भक्त्या ।  
श्रीमद्वलमद्रगुरोर्यद्विहितं श्रीविदग्धेन ॥ (६) तस्मिन् लोकान्  
समाहूय नानादेशसमागतांन् । आचद्रार्कस्थितिं यावच्छासनं  
दत्तमक्षय ॥ (७) (रूपक) एको देयो वहतामिह विंशतेः प्रवह-  
णानां । धर्म—

२७ "क्रयविक्रये च तथा ॥ (८) सभृतगत्र्या देयस्तथा वहत्याश्च  
रूपकः श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्षो देयः सर्वेण परिपाट्या ॥ (९)  
श्री(मष्ट)लोकदत्ता पत्राणां चोल्लिका त्रयोदशिका । पेल्लकपेल्लक-  
मेतद् द्यूतक(रैः) शासने देयं ॥ (१०) देय पलाशपाटकमर्यादा-  
वर्तिक—

२८ । प्रत्यरव(दं) धान्याढक तु गोधूमयवपूर्णं ॥ (११) पेड्डा च  
पचपल्लिका धर्मस्य विशोपकस्तथा भारे । शासनमेतत्पूर्वं त्रिदग्ध-

राजेन सदत्तं ॥ (१२) (कर्पा)सकांस्यकुकुमा(पुर)मांजिष्ठादिसर्व-  
मांडस्य । (द)श दश पलानि भारं देयानि विक—

२९ ॥ (१३) आढानादेतस्माद् भागद्वयमर्हत् कृत गुरुणा ।  
शेषस्तृतीयभागो विद्याधनमात्मनो विहित ॥ (१४) राज्ञा  
तत्पुत्रर्पात्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च । गुरुदेवधन रक्ष्य नोपे(क्ष्य  
हितमीप्सुमि ) ॥ (१५) दत्ते दाने फल दानात् पालिते पालनात्  
फल । (सक्षितो)पेक्षिते पाप गुरुदे—

३० (वधने)धिकं ॥ (१६) गोधूममुद्गयवलवणराल(का)देस्तु मेयजा-  
तस्य । द्राणं प्रति माणकमेकमत्र सर्वेण दातव्य ॥ (१७) बहु-  
मिर्वसुधा भुक्ता राजभि. सगरादिभि । यस्य यस्य यदा भूमि-  
स्तस्य तस्य तदा फल ॥ (१८) रामगिरिनदकलिते विक्रमकाले  
गते तु शुचिमा(से) ।

३१ (श्रोम)द्वलमद्रगुरोर्विद्वग्धराजेन दत्तमिद ॥ (१९) नवसु शतेषु  
गतेषु तु षण्णवतीसमधिकेषु माघस्य । कृष्णैकादश्याभिह सम-  
र्थित ममटनृपेण ॥ (२०) यावद् भूधरभूमिमानुभरतं भागीरथी  
भारती आम्ब(द्व)मा)नि भुजगराजमत्र(नं) आजद्भवांसोधय ।  
नि(ष्ठ)—

३२ त्यत्र सुरासुरेन्द्रमहितं (जै)न च सच्छासनं श्रोमत्केशवसूरि-  
सततिकृते तावत् प्रभूयादिद ॥ (२१) इदं चाक्षयधर्मसाधन  
शासन श्रीविद्वग्धराज्ञा दत्त ॥ सवत् ९७३ श्रीममट(राज्ञा  
ममर्थ)त सवत् ९९६ । सूत्रधारोद्भव(शत)योगेश्वरेण उत्कीर्णय  
प्रशस्तिरिति ।

[ इस वृहत् शिलालेखके दो भाग हैं । दूसरा भाग जो २३वीं पंक्तिसे शुरू होता है समयकी दृष्टिसे पहलका है । इसमें राष्ट्रकूट कुलके राजा हरिवर्माके पुत्र विद्वग्धराजका वर्णन किया है । आचार्य



वासुदेवके उपदेशसे विदग्धराजने राजधानी हस्तिकुण्डिकामें ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया था। इसने अपनी सुवर्णतुलाका दो तिहाई भाग इस मन्दिरके लिए तथा एकतिहाई भाग गुरुके लिए दान दिया था। विदग्धराजने इसी मन्दिरके लिए हस्तिकुण्डीके व्यापारियोंके कर्डे करोका उत्पन्न बलभद्र गुरुको दान दिया था। इस दानकी तिथि आपाढ, सवत् ९७३ थी। विदग्धराजका पुत्र ममट हुआ। इसने उक्त दानको माघ कृष्ण ११, सवत् ९९६को पुन सम्मति दी। ममटका पुत्र धवल हुआ। इसकी वीरताका विस्तृत वर्णन लेखमें किया है। जब मुजराजने मेदपाटकी राजधानी आघाटकी नष्ट किया तब वहाँके राजाको धवलने आश्रय दिया था। दुर्लभराजके आक्रमणसे महेन्द्रका रक्षण इसीने किया तथा मूलराजके द्वारा पराजित भरणीवराहको भी आश्रय दिया। वृद्धावस्थामे धवलने अपने पुत्र बाल प्रसादको सिंहासनपर स्थापित किया। इसके समय सवत् १०५३ में नासुदेवके शिष्य ज्ञान्तिभद्रसूरिके उपदेशसे हस्तिकुण्डीकी गोष्ठी (व्यापारियोंके समूह) ने विदग्धराज-द्वारा निर्मित मन्दिरका जीर्णोद्धार किया। गोष्ठीके सदस्योंके नाम पक्ति २२में गिनाये हैं। लेखके पहले भागमें जो ४० श्लोकोंकी प्रशक्ति है वह सूर्याचार्यने लिखी थी। लेखके अन्तमें केगवसूरिका उल्लेख है ]

[ ए० इ० १० पृ० १७ ]

८२

**वित्तप्पक्रम** ( जि. उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् ९८५, तमिल

नागनाथेश्वर मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलापर

[ यह लेख चोल राजा मदिरैकोण्ड परकेसरिवर्मन् ( परान्तक १ ) के राज्यके ३८ वें वर्षमें लिखा गया था। तिरुप्पान्मलैके आचार्य अरिष्टनेमिकी एक शिष्याके द्वारा एक कुर्भा वनवानेका इसमें उल्लेख है। ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट २१६ ]

८३

## नरेगल ( मैसूर )

शक ८७३ = सन् ९५०, कन्नड

[ यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अकालवर्ष कृष्णराजदेव ( तृतीय ) के सामन्त गगवंशीय वृत्थ्य पेमाडिके समयका है । इसकी रानी पद्मव्वरसि-द्वारा निर्मित बसदिके दानशालाके लिए नमयर मारसिंघय्यने एक तालाव अर्पित किया था । यह दान कोण्डकुन्दान्वय देसिग गणके महेन्द्र पण्डितके प्रशिष्य तथा वीरणन्दि पण्डितके शिष्य गुणचन्द्र पण्डितको सौंपा गया था । दानकी तिथि पौष शु० १० रविवार, उत्तरायण सक्रान्ति, शक ८७३ साधारणसंवत्सर ऐसी दी है । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २३ ]

८४

## वेमुलवाड ( करीमनगर, आन्ध्र )

१० वीं सदी—उत्तरार्ध ( लगभग सन् ९६० )

संस्कृत—कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें चालुक्य राजा वद्देग-द्वारा गौडसघके आचार्य सोमदेव-सूरिके लिए एक जिनालय बनवाये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५८ ]

८५

## धारवाड ( मैसूर )

शक ८८४ = सन् ९६२, कन्नड

[ यह ताम्रपत्र गग राजा मारसिंह ( द्वितीय ) के समय पौष कृष्ण ९ मंगलवार, शक ८८४, दुन्दुभि संवत्सर, उत्तरायण सक्रान्तिके दिन दिया गया था । इसमें राजा-द्वारा मेलपाडिके स्कन्धावारसे कोगल देशमें

स्थित कादलूरु ग्राम एलाचार्यको अर्पण किये जानेका उल्लेख है। उसकी माता कल्लव्वे-द्वारा निर्मित जिनालयके लिए यह दान दिया गया था। एलाचार्यकी गुरुपरम्परामे निम्न नाम दिये हैं—सूरस्थ गणके प्रभाचन्द्र योगीश—कल्लेलेदेव—रविचन्द्रमुनीश्वर—रविनन्दिदेव—एलाचार्य । ] [ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ए० २३ पृ० ७ ]

८६

### कुडलूर ( मैसूर )

शक ८८४ = सन् ९६२, सस्कृत-कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमे गग राजा मारसिंह-द्वारा मुंजार्य अपर नाम वादिघघल भट्टको चैत्र शु० ५ शक ८८४, रुविरोद्गारि संवत्सरके दिन गुरुदक्षिणाके रूपमें पूनाट्टु प्रदेशका वागियूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। मुंजार्य पराशर गोत्रका ब्राह्मण था तथा 'स्याद्वादोदयशैल-भास्कर-स्याद्वादरूपी उदयपर्वतके लिए सूर्यके समान था । ]

[ ए० रि० मै० १९२१ पृ० १८ ]

८७

### कोकिवाड ( धारवाड, मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख जिनशासनकी प्रशंसासे प्रारम्भ होता है। राष्ट्रकूट राजा खोट्टिंग तथा उनके सामन्त गगवंशीय सत्यवाक्य कोगुणिवर्म धर्म-महाराजका इसमे उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ८९ पृ० ३५ ]

८८

### लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक ८९३ = सन् ९७१, कन्नड

[ यह लेख बहुत घिस गया है। गग राजा मारसिंहदेवके समय

कार्तिक शु० (?) शक ८९३, प्रजापति संवत्सरके दिन शंखजिनालयको कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३० पृ० १६३ ]

८६

दालबुलपाडु ( जि० कडप्पा, आन्ध्र )

१०वीं सदी ( लगभग सन् ६७२ ), संस्कृत—कन्नड

भग्न जैन मन्दिरमें स्थित मूर्तिके पादपीठपर

[ इस लेखमें राष्ट्रकूट सम्राट् नित्यवर्ष ( इन्द्र ४ )-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेकके लिए यह पादपीठ बनवानेका निर्देश है । ]

[ इ० म० कडप्पा १४८ ]

६०

विंडिगनवले ( मैसूर )

शक ८९७ = सन् ९७५, कन्नड

पहली ओर

१ मद्रमस्तु जि-

२ नशासना-

३ य श्रीमत्

४ सकवर्ष ८-

५. ९७य यु-

६ वसंवत्सर-

७ द आपाड-

८ मामट जु-

९ द्द दशमियु

१० सोमवार

११ यु स्वातिन-

दूसरी ओर

१२ क्षत्रमुमा

१३ ने अमृत्त-

१४ व्वे कन्तिय

१५ रुरदु नोन्तु

१६ समाधि

१७ वि (मुडिपि)

१८ दरवर म-

१९ ककलनिमि-

२० तपरोप-

२१ कारिगल् प-

२२ धनन्दिमट्टा-

तीसरी ओर

२३ रकरवर्ग

२४ नेय

२५ ....

२६ निलिसिदर

[ यह लेख एक स्तम्भके तीन वाजुओपर खुदा है । इसमें अमृतब्जे-कन्ति नामक महिलाके समाधि-मरणका तथा उसके पुत्र पद्मनन्दिभट्टारक-द्वारा इस स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है । तिथि आषाढ शु० १०, सोम-वार, शक ८९७, युवसवत्सर, इस प्रकार दी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १९२ ]

९१

बेह्लट्टि ( धारवाड, मैसूर )

( शक ) ९११ = सन् ९९०, कन्नड

[ जोगीवण्डि नामक पाषाणपर यह लेख है । अज्जरय्यके पेगंडे आयतवर्मा-द्वारा निर्मित बसदिका इसमें उल्लेख है । वर्ष ९११ दिया है जो सम्भवतः शकवर्षका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २०४ पृ० ३८ ]

६२

वेडल ( जि० उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् ९९९, तमिल

आण्डारू मडम् नामक पहाड़ीकी एक गुहाके आगे

[ यह लेख चोल राजा राजकेसरिवर्मन्के १४ वें वर्षका है । इसमें गुणकीर्तिभट्टारके शिष्य कनकवीर कुरट्टिका तथा मादेवी अरिन्दमगलम्का उल्लेख है । ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट ७४४ ]

६३

खण्डगिरि—ललतेंदुकेसरि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत-नागरी

१ ओं श्री उद्योतकेसरिविजयराज्यसवत् ५

- २ श्री कुमारपर्वतस्थाने जिर्णवापि जिर्ण इसण
- ३ उद्योतित तस्मिन् थाने चतुर्विन्सति तीर्थकर
- ४ स्थापित प्रतिष्ठा (का) ले ह (रि) भोष जसनदिक
- ५ ..... श्रीपारस्यनाथस्य कर्मख्यः

[ यह लेख राजा उद्योतकेमरीके ५वें वर्षका है । कुमारपर्वतकी वापी तथा मन्दिरका जोर्णोद्धार करके चौबीस तीर्थकरोकी मूर्तियोंकी स्थापना-का इसमें उल्लेख है । कुमारपर्वत खण्डगिरिका पुराना नाम है । अन्तिम भागमें जसनदि ( यशोवन्दि )का उल्लेख हुआ है । ]

[ ए० ड० १३ पृ० १६६ ]

६४

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, सस्कृत—नागरी

- १ ओं श्रीमद्द्योतकेसरिदेवस्य प्रवर्धमाने विजयराज्ये संवत् १८
- २ श्रीआर्यसवप्रतिवद्धग्रहकुलविनिर्गतदेशीगणाचार्य श्रीकुलचन्द्र-
- ३ भट्टारकस्य तस्य शिष्यशुभचन्द्रस्य

[ इसका साराग जै० शि० स० भाग २में क्रमांक २४५में दिया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था । इसमें राजा उद्योतकेसरी-के १८वें वर्षमें देशीगणके आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख किया है । ]

[ ए० ड० १३ पृ० १६५ ]

६५

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, सस्कृत—नागरी

- १ ओं श्रीआचार्यकुलचन्द्रस्य तस्य
- २ शिष्य खल्लशुभचन्द्रस्य
- ३ छात्र विजो

- ३७ तलप्रहारदोले ॥ नूं गुटद्विन्दे मीण्डुवं 'कवुंगु  
 ३८ धर्ममहाराजाधिराजपरमेश्वरं । कोलालपुरवरेश्वरं । नन्दगिरिनाभं  
 मदगजेन्द्र'....  
 ३९ मण्डलिकडेवेन्द्र ढर्पोद्धतारातिवनजनवेदण्डं ॥  
 ४० देव माडिसिद' ' तीर्थठ वसदियं ' .  
 ४१ ' ' चन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यर् सुख्यवागि विद्व दन्ति ॥  
 ४२ नन्नियगंगदेवनुं पट्टमहादेवि ॥  
 ४३ काणिकेयं नाडूरगलोलु पणवं कोट्टरा

[ इस विस्तृत लेखकी पहली कुछ पक्तियाँ टूट गयी हैं तथा अन्य पक्तियोंके बहुत-से अक्षर घिसे हैं । गगवशके राजा रक्कसगंग तथा नन्निय-गगके समय यह लेख लिखा गया था । इनके द्वारा तट्टिकेरे ग्रामको कुछ भूमि ' चन्द्रसिद्धान्तदेवको दान दी गयी थी । लेखमें क्राणूर्गणकी आचार्य-परम्परा इस प्रकार बतलायी है — ... नन्दिभट्टारक, बालचन्द्रभट्टारक, मेघचन्द्रत्रैविद्यदेव, गुणनन्दि शब्दब्रह्म, अकलंक, प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेव, माघनन्दिसिद्धान्तदेव, प्रभाचन्द्र ( द्वितीय ), उनके गुरुबन्धु श्रुतकीर्ति, — (यहाँ कुछ नाम घिस गये हैं) । अन्तमें मुनिचन्द्र सिद्धान्तदेवके एक शिष्य-का उल्लेख है । राजा नन्नियगगकी वंशावलीमें वूतुग पेर्माडि, एरेयप्प, राचमल्ल, एरेयग सैगोट्ट तथा राचमल्ल इनका उल्लेख किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२३ पृ० ११४ ]

६७

दानबुलपाडु स्तंभलेख (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी, संस्कृत-कन्नड़

पहला भाग

१ पत्तिय वेसदिट्ट-

२ महितरनतिकोप-

३ दिनिकि गेल्दु परिपा-

४ लि(मि)दं । चतुरुदधि-

५ वलयमेल्लमन-	६ तिरथनी दण्ड(ना)य-
७ क श्रीविजय ॥(१)	८ तुरगधलगल-
९ नोड्दिद करिघटे-	१० यं पिरियनेर-
११ (वि)यं वल्लणिय ।	१२ धुरदेडे(योळि)रि-
१३ दु गेल्लु करद(सि)	१४ करमरिदु रण-
१५ डोलनुपमकविय ॥(२)	१६ कुपितवति श्रीवि-
१७ जये वल्लिकुलनि-	१८ लकं नरेन्द्रदण्डाधि-
१९ पतौ । गिरिरगि(रि)र्वन-	२० मवन जलमज-
२१ ल रिपुम(मू)हव-	२२ लमवल ॥(३)

## दूसरा भाग

२३ वसुमतियोल-	२४ गिल्लेण्टु (वे)सेगल
२५ कुसुकुसुमनेय्दि	२६ माणडे मत्त । (बिस)-
२७ रुहगर्माण्डक्क प-	२८ सरिसिदुदु (की)तिं ने-
२९ हननुपमकधिय ॥(४)	३० आश्रितजनकल्पत-
३१ रुर्विश्रुतरि(पु)नृप-	३२ तिनृणदवानलमूर्ति ।
३३ श्रीवनितास्मरपाश	३४ पातुस्तव वाहु मे-
३५ दिनी श्रीविजय ॥(५)	३६ चतुरुदधिवलय-
३७ वलयितवसुन्ध-	३८ रामिन्द्रशासनात् सं-
३९ रक्ष(नू) । श्रीविजय	४० दण्डनायक (जी)व
४१ चिरं दानधर्मनि-	४२ रतमनस्क ॥(६)
४३ मगल साहाश्री ॥	

## तीसरा भाग

४४ मद्रमस्तु भगवते (जि)नशासना(य) ॥	
४५ अट्टविधकर्ममेल्लमनट्टु-	४६ बरिगोण्डु कोडिपे(नें)बुडे वगेयि ।



[ इस लेखमे आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य गुभचन्द्रके शिष्य विजो (?) का निर्देश है । ] [ ए० इ० १३ पृ० १६६ ]

६६

ईचवाडि ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

- १ वृतुग पेर्माडि तडपत्यण् पुरेयपं तत्सुत वीर
- २ "राचमल्लनहितरमल्ल । अन्ता राचमल्लनिन्देरंयगनातन मगं
- ३ नातन पुत्रं सैगोट्टे राचमल्ल
- ४ " मिडुकटिरलेड्ड कड्योल् मडमातगमने पिडिडु निलिसिद ।
- ५ " क्काणूरुगणद आचार्यावितारमेन्तेन्दोडे । दक्षिणदेशनिवासि । गगमहीमण्डलिक "
- ६ " नन्दिमट्टारकरु वालचन्द्रमट्टारकरुं मेवचन्द्र त्रैविद्यदेवरुं "
- ७ पेम्पं तलेद गुणनन्दिदेव शब्दब्रह्म । अवरिं बलिकं अकलंक सिंहामनम "
- ८ " "मडमातगरु वौद्धवादिमिरपत्तगरुं सांख्यवादिकुलाद्रिवज्र-धरुं नैयायिका "
- ९ सिद्धान्तवार्धिवर्धनसुधाकरुं । सकलसाहित्यप्रवीणरुं । मनोभव-भयरहितरुं
- १० श्रीमतु प्रमाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु अनवद्याचार्यर माघनन्दि-सिद्धान्त
- ११ अवर शिष्यरु । चतुरास्यं चतुरोक्तिर्यि प्रभुतेयिन्दीशं गुणव्याप-कस्थितियं विष्णु सुबुद्धि वि—
- १२ सिद्धान्तविभूषणगेनिसिदं श्रीमत्प्रमाचन्द्रमं । अवर सधर्मरु । नुतसिद्धान्त—

- १३ मप्रतिम तानेने पेम्पुवेत्तु मुदितोदात्तर् जगद्वन्धर् ऊर्जितरु-  
द्योतित—
- १४ मनोभवविशालहरनिटिलाक्षं वादिमदरदनिविदुवं भेदिपमृग-  
राज जयतु श्रुतकीर्तिबुधं ।
- १५ वादिराजं दलेनिसिद योलु । अवर सधर्मरु । चारिन्नचक्रि  
सम्यमधारि क्राणूर्गणा \*\*
- १६ शिष्यरु । वरशास्त्राम्बुधिवर्धनहरिणांकं . . वादिमद . . निरुतं  
तानेनलेसेदं—
- १७ वारणवागि कीर्ति नर्तिसुबुदु पेम्पुवेत्त 'नतिमेरुगे' दलागेसेबुदु  
सद्गुण\*\*\*
- १८ नीडि पिरिदु निस्तेजमैदिर्द नोडदे\*\*\*\*प्रभुतेयं ताल्दिर्प .  
कर \*\*\*
- १९ नुडिगलु सत्यसुवर्णभूषणगण . सुरलगल करण्डकं तनुतप\*\*\*
- २० धेनुन्नतिरूपम तलेदुदो मूजातवी धरयोलु तापस .
- २१ मुनिप \*\*\*रत्नाकर । इन्तेनिसि नेगल्दाचार्य\*\*\*\*तिलकरु जिन-  
सद्य .
- २२ वारिधिशीतरोचि स्तुत्यं जिनपटाब्जद्वयभृग भुजवलगगं .
- २३ तम्म गंगान्वयदवर् पडिसलिसुत्तु मरवेस नागि माडिसि .
- २४ दत्ति तट्टिकेरे सर्ववाधापरिहारा केरेय केलगे तलवृत्ति\*\*\*\*
- २५ मारसिगननुज सन्द नन्नियगगक्षितिपालक तदनुज .
- २६ वल्लि येम्बूरुमं वमदि मूडलुगद्दे \*\*
- २७ गुड्डु नन्नियगगदेव एम्बूरुमं\*\*\*\*आगद्देयि तें .
- २८ सिद्धान्तदेवर गुड्डुं रक्कसगगं नन्नियगग सीमेयि तेंक .
- २९ मूडणदेसे नट्ट कल्लुगलु
- ३० मुनिचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डु । भुजवलदिं शत्रुमहीभुज  
( ३१ से ३६ तक पक्तियाँ विस गयी हैं ) ।

- ४७ (पु)द्विदनुवात्तमत्वं नेट्टने विवु ४८ धेन्द्रवन्धनरिर्विगोजम् ॥७॥  
 ४९ तानरिदु तो(र)दु नेट्टने मानि- ५० सवालावुदेंदु मंन्यामनडोल् ।  
 ५१ मानमिके गिडदे काणडो(न)नून- ५२ सुखास्पदमनलत्तियोल्  
 श्रीविजय ॥८॥  
 ५३ निर्गतमय नीनर(स)नर्ग- ५४ स नानोल्लेनेन्दु पेसि विवु-  
 ५५ वं । सर्गद मांगमनुण्डपत्र- ५६ गंक्कडियिट्टोनरिदोननुप-  
 ५७ मकवियं ॥९॥दण्डिन माम ५८ त्रिगे परमण्डलमल्लाडे  
 ५९ (स)र्वविक्रमतुंग । दण्डिन वी- ६० रश्रीगोल्मण्डं श्रीदण्डनायकं  
 ६१ श्रीविजयं ॥१०॥ (च)ण्डपराक्र ६२ मनुरदरिमण्डलिकरनट्टि पि-  
 ६३ डिदु पतिगोप्पिमुवोल्गण्ड प्रच-६४ ण्डनीभूमण्डलडोल् दण्डनायकं  
 ६५ श्रीविजय ॥११॥ अनुपम- ६६ कविय सेनवोवं गु-  
 ६७ णवमं वरेद ॥

[ यह शिलालेख दण्डनायक श्रीविजयकी प्रगंसामे लिखा गया है । अरिर्विगोज, अनुपमकवि तथा सर्वविक्रमतुंग ये इसके विरुद्ध थे । यह वलिकुलमें उत्पन्न हुआ था तथा इन्द्रराजकी मेनाका पराक्रमी सेनापति था । इन्द्रराज ( तृतीय ) ही सम्भवतः यहाँ उल्लिखित है जिसका राज्य सन् ९१४ से ९२२ तक था । लेखके तीसरे भागमें कहा है कि श्रीविजयने ममस्त वैभव छोडकर संन्यास वारण किया था । यह लेख श्रीविजयके सेवक गुणवर्माने लिखा था । ]

[ ए० इ० १० पृ० १४७ ]

६८-६९

चोलवाण्डिपुरम् ( दक्षिण अर्काट, मद्रास )

१०वीं सदी, तमिल

[ यह लेख राजा गण्डरादित्य मुम्मुडि चोलके दूसरे वर्षका है । इसमें चेदि सिद्धवडवन् नामक गासककी प्रशंसा है । उसे कोवलका स्वामी तथा

मलयकुलोद्भव कहा है । स्थानीय पहाड़ीपर उत्कीर्ण मूर्तियोंकी पूजाके लिए उसने कुछ दान दिया था । कुरण्डिके गुणवीर भटारका भी इसमें उल्लेख है । उत्कीर्ण मूर्तियाँ महावीर, पार्वनाथ, गोम्मटदेव तथा पद्मावती की हैं । यहीके एक अन्य लेखमें १०वीं सदीकी लिपिमें कहा है कि इन मूर्तियों ( तेवारम् ) का निर्माण वैलि कोंगरैयरू पुत्तडिगलूने किया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० २५१-५२ पृ० ३४ ]

१००

### मसुलिपट्टम ताम्रपत्र ( आन्ध्र )

१०वीं सदी, संस्कृत-नेलुगु

- १ व्याकृष्टरत्नखचितायतशांर्गचापो यस्सेन्द्रकामुं कविनीलपथोद-  
वृन्दम् । निर्भर्त्सयन्निव विभा—
- २ ति स कृष्णकान्तिर्विष्णुश्शिवन्दिशतु वोवधृतत्रिलोक ॥ ( १ )  
स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसस्तूयमानमा—
- ३ नव्यसगोत्राणा हारीतिपुत्राणा कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्याना-  
ममातृगणपरिपालिताना स्वामि—
- ४ महासेनपादानुध्याताना मगवन्नारायणप्रसादसभासादितवरवराह-  
लांछनेक्ष—
- ५ णवशीकृतारतिमण्डलानामश्वमेभावभृथस्नानपवित्रीकृतवपुषां  
चालुक्यानां कु—
- ६ लमलकरिष्णोस्सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्धननृप-  
तिरष्टादशवर्षाणि—
- ७ वेंगीदेशमपालयत् । तदात्मजो जयसिहस्त्रयस्त्रिंशत् । तनुजे-  
न्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्धनो न—
- ८ व । तत्सूनुर्मंगियुवराजः पचविंशतिम् । तत्पुत्रो जयसिहस्त्रयो-  
दश । तदवर—

९ ज. कोकिलिष्पणमासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्धनस्तमुच्चाव्य  
सप्तत्रिंशत्तम् । तत्पुत्रो — वि

दूसरा पत्र पहला भाग

१० जयादित्यमद्वारकोष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्धनष्पट्त्रिंशत्तम् ।  
नरेंद्रमृगराजा ( ख्यो ) मृ—

११ गराज ( पराक्रम. । ) विजयादित्य ( भूपाल. ) श्रुत्वारिं ( शत्समा )-  
॥ ( २ ) तत्पुत्र कलिविष्णुवर्ध—

१२ नो ( ध्यवर्धवर्षम् । तत्सु ) तो गुणगविजयादित्यश्चतुश्चत्वारिंशत्तम् ।  
तद्भ्रातुर्यौवराज्योन्नतमहि—

१३ ( मभृतो ) विक्रमादित्यभूपालात्श्रालुक्यभीमस्सकलनृपगु ( णो-  
त्कृ ) श्रुत्वारिंशत्तम् । दानी

१४ \* \* \* रसकर. सार्वभौमप्रतापो राज्यं कृत्वा प्र ( या ) तः त्रिंश-  
त्तपतिपदं

१५ ( त्रिंशदब्दप्रमा ) ण ॥ ( ३ ) तत्पुत्रः कलियत्तिगण्डविजयादित्य-  
ष्पणमासान् । तत्सुनुरम्मराजस्स—

१६ ( ष ) वर्षाणि । तत्सुतं विजयादित्यं कण्ठिकाक्रमायात्पट्टामि-  
षेकं वालमुच्चाव्य तालराजो राज्यम्मास—

१७ ( मे ) कं । चालुक्यभीमसुतो विक्रमादित्यस्तं हत्वा एकादश-  
मासान् । विजयादित्यो वेंगीनाथ कलियत्ति—

१८ गण्डनामा धोमा ( न् । ) तस्य सर्ता मेलंवा तज्जश्रीराजभीम-  
नृपतिरजेय ॥ ( ४ ) सत्यत्यागाभिमानाद्यस्मि—

दूसरा पत्र दूसरा भाग

१९ ऋगुणयुतो राजमार्ताण्डमाजौ । जित्त्वोग्रम्मल्लपाख्यं ससुतमधि-  
वल द्रौहि ( णो ) प्यन्तकामो । द्विद्भीमो राष्ट्र

२० कूटप्रवल्बलतमस्सहरो द्वादशाब्दं । राज्यं कृत्वागमत्स प्रणिहित  
( सुयशो ) धर्मसन्तानवर्ग ॥ ( ५ ) त्रि—

- २१ ण्णोः पद्मेव शभोरिव गिरितनया यस्य देवी सपट्टा । संशुद्धा  
 ( हैह ) नाञ्जिजकु ( लवि ) षये पुण्यला ( व )—
- २२ ष्यगण्या । लोकांवातत्सुतोभूद् विजितपरबलो वेंगिनायोम्मराजो ।  
 राजद्राजाधिराजो ( जितरिपु ) म—
- २३ कुटोद्घृष्टपादारविन्द ॥ (६) वेंगी ( राज्याभिषिक्तो ) निजरिपु-  
 विजयादित्यमुद्यत्समर्थ । जित्वा ( नेकाजिरंग )—
- २४ प्रजितपरबल ( कण्ठिकादामकण्ठ । ) दायादद्रोहिबर्गानपि सकर-  
 बलः क्षत्रि ( या ) दित्यदे—
- २५ वो । ध्वस्तारिध्वान्तराशिर्विलसितकमलस्सप्रतापो विभाति ॥  
 (७) यन्निर्मातुन्निमित्त कृतमिदमखिल विष्टप हि
- २६ त्रिमूर्तेरात्मान चात्मनास्मादिह सकलगुणै ( राजमी )-मोद्वहो-  
 भूत् तेजोराशि. प्रजाना पतिरधिकव—
- २७ ( ल ) स्सप्रतापोष्टमूर्तिस्सोयन्देवोम्मराजो जनगुणजनकोन ( न्य )  
 राजाप्रचिन्हः ॥ (८) स्वर्थाता. पूर्व—

तीसरा पत्र पहला भाग

- २८ नाथा नलनहुषहरिश्चन्द्ररामाढ्योपि प्रत्यक्षास्ते यशोभिर्गुणवपुर-  
 चला स्वैरिदानी—
- २९ मट्टा । यस्योच्चै कीर्तिरा ( शिर्म ) गण इव जगत्यद्वितीयो-  
 दयोस्मिन् । राजद्राजाधिराजस्स ज—
- ३० यति विजयादित्यदेवोम्मराज ॥ (९) गद्यम् । स जगतीपतिरम्म-  
 राजो राजमहेन्द्र भोगीन्द्र सह—
- ३१ स्रभोगोपहासिदीर्घदक्षिणैरुवाहुसान्द्रितविश्वविश्वंभराभार. ।  
 नारायण
- ३२ इव निरन्तरानन्तभोगास्पद । विधुरिव सुखविराजित । पिता-  
 मह इव कम—

- ३३ लासनः । गिरिविग्रह इव धराधरसुताराधितः । रत्नाकर इव  
समस्त—
- ३४ शरणागतभूभृदाश्रयः । सुवर्णाचल इव सुवर्णोत्तुंगोदयः ।  
हिमाचल
- ३५ इव सिंहासनोच्छासितचमरीवालव्यजनविराजमानलीलः ॥ स  
सम—
- ३६ स्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरम—

तीसरा पत्र : दूसरा भाग

- ३७ महारक । वेलनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बि-  
नस्ममस्त—
- ३८ सामन्ता(न्त):पुरमहामात्रपुरोहितामात्यश्रेष्ठिसेनापतिश्रीकरण -  
धर्माध्यक्ष—
- ३९ द्वादशस्थानाधिपतीन् समाहूयेत्यमाज्ञापयति विदितमस्तु व' ।  
श्रीमानुदपा—
- ४० दि महान्निर्णयनकुलसाधु.....श्रेव्याख्यो । गोत्र सिंहासनतो
- ४१ विदितो नरवाहनश्चलुक्ये(शानाम् ॥ १० ) श्रीकरणगुर्गुरुखिव  
त्रिवुधगुरु—
- ४२ स्स(क)लरा(जसिद्धान्तज्ञ ) । नरवाहन इत्यासीन्न्यक्कृतनरवाह-  
(नः)प्रकाशित—
- ४३ यशसा ॥(११) यस्याग्रसुतो गुणवान् मेलपराजो गुणप्रधानो  
दानी । मानी मा—
- ४४ नवचरितो मानवदेवो जिनेन्द्रपदपद्मालिः ॥(१२) तस्य सती  
मेण्ढांवा सीतेव पति—
- ४५ व्रना जिनव्रतचरिता । सत्यवती (वि)नयवती सतताहारप्रदायिनी  
धृतधर्मा ॥ (१३)तज्जाँ

## चौथा पत्र · पहला भाग

- ४६ (सु)तौ प्रसिद्धौ बुद्धिपरौ सकलशास्त्रशस्त्रविवेकौ । भीमनरवाह-  
नाम्ब्यौ विख्यातौ रा—
- ४७ मलक्ष्मणाविव लोके ॥(१४) यौ भीमार्जुनसदृशौ बलयुतबलदेव-  
वासुदेव(समा)नौ । (न)—
- ४८ कुलसहदेवतुल्यौ तौ जातौ जैनधर्मनिरतचरित्रौ ॥(१५) श्रीमत्-  
चालुक्यभीम(क्षितिपतिकृप)—
- ४९ या लब्धसामन्तचिन्हौ श्रोद्धारौर्वरष्टोवनपटविलस(च्चा)मरच्छत्र-  
(लीलौ) ।
- ५० · रिकस्थौ शिखिरुहपटलच्छाद्यसत्कर्करीकौ जातौ चालुक्य-  
(चूलौ)
- ५१ · करिहयौ काहलाद्यभ्युपेतौ ॥(१६)जैनाचार्यौ यदीयौ गुरुरखि-  
-
- ५२ लगुणश्चन्द्रसेनाख्यशिष्यो शास्त्रज्ञो नाथसेनो मुनिनुतजयसेनो  
मुनिर्दक्षितात्मा । सि—
- ५३ द्दान्तज्ञः कलाज्ञः परसमयपटुः सन्नतोत्कृष्टवृत्तस्सत्पात्रः श्रावकाणां  
क्षणकसु(ज)—
- ५४ नक्षुलकार्यार्जकाना ॥(१७) तस्मै ताभ्यां राजभीमनरवाहनाभ्यां  
विजयवाटिकायां

## चौथा पत्र : दूसरा भाग

- ५५ जिनमवनयुगन्निर्मितमेतद्धर्मार्थमस्माभिस्सर्वकरपरिहार देव-  
मोगी—
- ५६ कृत्य पेद्दगालिडिपर्णं नाम ग्रामो दत्त । अस्यावधयः । पूर्वत  
मपह्य—
- ५७ रिपोलगरुसुन थिसु कट्टलचेरुवुन नडिमि दूव । भाग्नेयतः आल-  
पर्तियु जूँ डरि—



- ५८ युं मुस्यल्कुट्ट (न) वूरुव पडुव । दक्षिणतः चूट्टरि प्रान्त(पतिं)  
युत्तरंठुन कुण्डि—
- ५९ विड्डिगुण्ठ । नैऋत्यत. चूट्टरियम्मपोटयव्वगुडि । ( पश्चिमत. )  
रेटि(प)डुमट्टिरि । वा—
- ६० यव्यत. वलिवेगिपोलगरुसुन गारलगुण्ठ । उत्तरत. तप्पराल  
प(डु)व । ई—
- ६१ शानतः कोडगालिडिपतिंयु ( वलिवेरियुं सु )य्यल्कुट्टुन नडुपनि-  
गुण्ठ ॥ तस्य (स्थे)यादल—
- ६२ ध्यं सुचिरमुरुतर (शास)न राजक्रोक्त । सत्कीर्तेवैगिपस्य प्रकट-  
गुणनिधेरम्मराजस्य पूज्यं ।
- ६३ तत्रेद शा(स)न (पालित)जिननिगमं शौर्यमीतान्यनाथव्रातो(च्चै)-  
मौलिमालामणिकमकरिकोमलि—

### पाँचवाँ पत्र

- ६४ कोल्लासितांग्रे ॥ (१७) अस्योपरि न केनचिद्वाधा कर्तव्या य  
करोति स पचमहापातकसं—
- ६५-६९ युक्तो भवति । तथा चोक्तं व्यासेन ॥ ( नित्यके शापात्मक  
श्लोक )
- ७० श्राज्ञसि कटकराज जयन्ताचा—
- ७१ येण लिखितम् ॥

[इस ताम्रपत्रमें मदनूर तथा कलचुम्बूर लेखोके समान पूर्वीय चालुक्यो-  
की वंशावली कुब्ज विष्णुवर्धनसे प्रारम्भ कर अम्मराज ( द्वितीय ) विजया-  
दित्य तक दी गयी है । अम्मराजके पिता चालुक्य भीम ( द्वितीय ) का एक  
सामन्त नरवाहन था जो त्रिनयनकुलमे उत्पन्न हुआ था तथा जैनधर्मीय  
था । उसका पुत्र मेलपराज था । इसकी पत्नी मेण्डावाको दो पुत्र हुए —  
राजभीम तथा नरवाहन ( द्वितीय ) । जैनाचार्य चन्द्रसेनके शिष्य नाथसेन

( जयसेनके गुरु ) इन दोनोंके गुरु थे । इनने विजयवाटिकामे दो जिनमन्दिर बनवाये थे । उनके लिए अस्मराजने बेलनाण्डु प्रदेशका पेद्दगालिडिपर्ह नामक ग्राम दान दिया था । ] [ ए० इ० २४ पृ० २६८ ]

१०१

वरुण ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

१ श्री 'श्रीमत्पर' 'थि राजगुरु—

२ मण्डलाचार्य विथमकरर् अत्रिगोत्र परशुराम आचन चामुण्डरनु आ—

३ मठरकर वारुणद सांथिनाथस्वामिय माडिसिदरु आवर प्रिय दुणदुचल—

४ दाचार्य मकलु विजय-अण वमण मडिदरु—

[ इस लेखमें आचन चामुण्डर भट्टारक-द्वारा वरुण ग्राममें शान्तिनाथ-मूर्ति अर्पण किये जानेका निर्देश है । यह मूर्ति विजयण्ण और वमण्ण-द्वारा बनायी गयी थी । लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १७१ ]

१०२

मण्णे ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें देवेन्द्रपण्डित भट्टारकी शिष्या मारव्वेकन्तिके समाधि-मरणका तथा कलिगव्वे कन्ति-द्वारा इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १०वीं सदीकी है । ] [ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९ ]

१०३

उम्मत्तूर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें विमलचन्द्रके शिष्य सोत्तियूरके शासक मारम्मयके पुत्र सिन्दय्यके समाधिमरणका उल्लेख है । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९ ]

१०४

वूचनहस्ति ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इस मूर्तिकी स्थापना वालचन्द्र सिद्धान्तभट्टारके शिष्य क(म)लभद्रगुरु द्वारा की गयी थी । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१ ]

१०५

अंकनाथपुर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख अंकनाथेश्वर मन्दिरके छतमें लगा है । प्रभाचन्द्र सिद्धान्त-भट्टारकी शिष्या देवियव्वेके समाधिमरणका यह स्मारक है । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१ ]

१०६-१०७

अंकनाथपुर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यहाँके सुब्रह्मण्यमन्दिरके छतमें दो निसिधि लेख लगे हैं । एकमें दडिगसेट्टि तथा देवरदासय्यकी माता चामकव्वेका उल्लेख है । दूसरेमें

महानायक रेचय्यके पुत्र अटवसामिका उल्लेख है जो चातुर्वर्ण श्रमणसंघका सहायक था । लिपि १०वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१ ]

१०८

### होलेनरसीपुर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें मुनिमुख्य महेन्द्रकीर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१ ]

१०९

### अंकनाथपुर ( मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें कदम्ब वशीय वासवेके पुत्र राचयके समाधिमरणका उल्लेख है । यह लेख बलदेवने स्थापित किया था । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३२ ]

११०

### कोडिहल्लि ( माण्ड्या, मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

१ " म-

२ व्य सन्य-

३ सनं गेटदु

४ पुरड नों-

५ तु मुडिपि-

६ दन् आतन

७ मगलप

८ विडक्क कल्ल

९ निऋसिद्(ळ)

[ इस निसिधि-लेखमें किसी मय्यके समाधिमरणका निर्देश है । उसकी पुत्री विडक्कने यह समाधि स्थापित की थी । लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १६० ]

१११

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाड़ीपर एक पापाणपर खुदा है । यह श्रीनागसेनदेवका निसिदिलेख है । इसकी लिपि १०वी सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५१ पृ० १२६ ]

११२

मथुरा

१०वीं सदी, सस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें १०वी सदीकी लिपिमें मूलसधके किसी आचार्यका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२७ पृ० ७७ ]

११३

कीलक्कुडि ( जि० मदुरा, मद्रास )

१०वीं सदी, तमिल

समणरमलै पहाड़ीपर जैन मूर्तियोंके उत्तरकी ओर चट्टानपर

[ इस लेखमें गुणभद्रदेव तथा चन्द्रप्रभका निर्देश है । लिपिके अनुसार यह लेख १०वी सदीका होगा । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० २४२ ]

११४

चैखर ( मन्दसौर, मध्यप्रदेश )

१०वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें नन्दियडसधके जैन आचार्य शुभकीर्ति तथा विमलकीर्तिका उल्लेख है । लिपि १०वी सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २०३ पृ० ४५ ]

११५

कमलापुरम् ( वेल्लारी, मैसूर )

१०वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १०वीं सदीको लिपिमे है । इसमें गुणचन्द्रमुनि, इन्द्रनन्दि-  
मुनि तथा एक महिलाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० २२२ पृ० ४८ ]

११६

काशिवल ( विजनोर, उत्तरप्रदेश )

संवत् १०६(१) = सन् १००५, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख एक जैन मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें भरतका उल्लेख  
है तथा संवत् १०६ यह तिथि दी है । सम्भवतः संवत्का अन्तिम अंक लुप्त  
हुआ है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४३६ पृ० ७१ ]

११७

लक्कुण्डि ( मैसूर )

शक ९२९ = सन् १००७, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल ( जो यहाँ सत्पाश्र्वका  
उपनाम होना चाहिए ) के सामन्त वाजिकुलके नागदेवके समयका है ।  
इसकी पत्नी अत्तियव्वेने लोक्किगुण्डिमें एक जिनालय बनवाकर उसे कुछ  
भूमि दान दी थी । यह दान उसके गुरु सूरस्थगण-कौरुरगच्छके अर्हणन्दि  
पण्डितको दिया गया था । दानकी तिथि फाल्गुन शु० ८, शक ९२९,  
प्लवग संवत्सर ऐसी दी है । उस समय अत्तियव्वेका पुत्र पड्डेवल तैल  
मासवाडि प्रदेशका प्रमुख था । ]

[ मूल कन्नडमे मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ३९ ]

११८

कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )

राज्यवर्ष ५ = सन् १००८, कन्नड,

[ यह लेख चालुक्य राजा विक्रमादित्य ५के राज्यवर्ष १का है । इसमें सिंहनन्दि आचार्यके इगिनीमरणका तथा उनकी स्मृतिमें कल्याणकीर्ति-द्वारा एक जिनेन्द्र चैत्यालयके निर्माणका उल्लेख है । ]

[ रि० ड० ए० १९५५-५६ क्र० १९९ पृ० ३७ ]

११९

उक्काल ( जि० उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् १००९, तमिल

पेरुमाल मन्दिरके एक मण्डपकी उत्तरी दीवालपर

[ यह लेख चोल राजा राजराजकेसरिवर्मन् ( राजराज १ ) के २४वें वर्षका है । जो ब्राह्मण, वैखानस और जैन चोल, पाण्डल तथा तोण्ड-मण्डलके गाँवोंके अधिकारी हैं वे यदि भूमिकर दो वर्ष तक न दें तो उनकी ज़मीन ज़ब्त करानेका इसमें आदेश दिया है । ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट ३०८ ]

१२०

वेचारक वोमलापुर ( मैसूर )

शक ९३५ = सन् १०१३, कन्नड

- |                |                 |                 |
|----------------|-----------------|-----------------|
| १ सकवर्ष ९३५   | २ नेय प्रमादीच  | ३ संवत्सरद आ-   |
| ४ षाढ सु ढसमि  | ५ सोमवारदोल्    | ६ माकब्बेगंतिय  |
| ७ मांडवट वीचग- | ८ बुड परोक्षवि- | ९ नयं निसिधिगे- |
| १० य कल्लनिरि- | ११ सिदं         |                 |

[ यह लेख माकब्बेगन्ति नामक महिलाके नमाविमरणका स्मारक है ]

जो वीचगवुडने स्थापित किया था । तिथि आषाढ शु० १०, सोमवार, शक ९३५, प्रमादी सवत्सर ऐसी दी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० २०७ ]

## १२१

तोण्डूर ( द० अर्काट, मद्रास )

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[ यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् ( सम्भवत राजेन्द्र १ ) के राज्यवर्ष ३का है । विण्णकोवरैयन् वयिरि मलैयन् नामक शासक-द्वारा वज्रसिंग इलपेरुमानडिगल् नामक जैन आचार्यको गुणनेरिमगलम् अपरनाम वलुवामोलि आरान्दमगलम् नामक ग्राम तथा तोण्डूर ग्रामके कुछ उद्यान आदि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ८३ पृ० १६ ]

## १२२

उदयपुर ( राजस्थान )

सवत् १०७६ = सन् १०१९, संस्कृत-नागरी

[ उदयपुरके वासुपूज्यमन्दिरकी एक मूर्ति । यह मूर्ति सवत् १०७६ मे बाहिल सोडक-द्वारा स्थापित की गयी थी ऐसा इस लेखमें कहा है । ]

[ रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२६ ]

## १२३

मरोल ( मैसूर )

शक ९४६ = सन् १०२४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (प्रथम) के समय शक ९४६, रवताक्षि सवत्सरके उत्तरायण-संक्रमणके अवसरपर लिखा गया था । इसमें



नोलम्बवाडि तथा करिविडि प्रदेशके सामन्त नोलम्बवशीय घटेयंककार-द्वारा मरवोलल्की वसदिके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम उस समय सत्तिग ( सत्याश्रय ) की पुत्री महादेवीके शासनमें था। जैन आचार्य अनन्तवीर्य, गुणकीर्ति सिद्धान्तभट्टारक तथा उनके शिष्य देवकीर्तिपण्डितका भी इसमें उल्लेख है। ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ५० ]

१२४

हैदरावाद म्युज़ियम ( आन्ध्र )

शक ९४९ = सन् १०२७, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा जयसिंह २ के राज्यकालका है। इस राजाकी कन्या सोमलदेवी-द्वारा पिरियमोसगिके वसदिके लिए कुछ दानका इसमें उल्लेख है। तिथि शक ९४९ प्रभव सवत्सर ऐसी दी है। ]

[ एन्शाण्ट इण्डिया १९४९ पृ० ४५ ]

१२५

होसूर ( मैसूर )

शक ९५० = सन् १०२८, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (१) के समय शक ९५०, विभव सवत्सरकी उत्तरायणसक्रान्तिके दिन पौष शु० १३, रविवारको लिखा गया था। केशवरसका पुत्र दण्डनायक वावणरस तथा उसका बन्धु महासामन्ताधिपति श्रीपादरस इनके शासनका इसमें उल्लेख है। वावणरसकी पत्नी रेवकव्वरसिके अधीन सिन्दरस पोसवूर नगरपर शासन कर रहा था। उस समय आय्चगानुण्डने पोसवूरमें अपनी पत्नी कचिकव्वेके स्मरणार्थ एक वसदि बनायी और उसे कुछ भूमि तथा एक उद्यान अर्पण किया। आय्चगानुण्डके पुत्र एरकके पुत्र पोलेगने यह लेख स्थापित किया था। ये मोरक कुलमें उत्पन्न हुए थे। ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ५५ ]

१२६

मस्की ( रायचूर, मैसूर )

शक ९५३ = सन् १०३२, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके राज्यकालमें फाल्गुन शु० ९, सोमवार, शक ९५३, प्रजापति सवत्सरके दिन लिखा गया था । इसमें देसिगणके जगदेकमल्लजिनालयके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमि आदिके दानका उल्लेख है । अष्टोपवासि कनकनन्दिभट्टारके निवेदनपर वह दान दिया गया था । स्थान राजवानि पिरियमोसगि यह था । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २४७ पृ० ४२ ]

१२७

कागिनेल्लि ( धारवाड, मैसूर )

(शक ९)५४ = सन् १०३२, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यमें ५४ ( शक ९५४ ) वर्षमें लिखा गया था । इसमें जिनधर्मके भक्त कामदेवके एक पुत्र तथा आयतवर्माका उल्लेख है । इन्होंने एक मन्दिरके लिए कुछ सुवर्ण आदि दान दिया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २३ पृ० १२० ]

१२८

रायवारा ( मैसूर )

शक ९६३ = सन् १०४१, कन्नड

[ यह लेख आदिनाथमन्दिरके मण्डपमें लगा है । तिथि चैत्र व० १४, शक ९६३, शुक्रवार, विक्रम सवत्सर ऐसी दी है । अन्य विवरण प्राप्त नहीं है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५४ पृ० ३४ ]

१२६

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[ इस लेखका कुछ भाग दीवालमे दबा है । इनके प्रारम्भमे राजेन्द्र-चोल प्रथमकी ऐतिहासिक प्रशस्ति है । तिरुमणजेरि निवासी कलिमानन् विजयालयमल्लन्-द्वारा देवमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए ९६ भेदों दान दी जानेका इसमें उल्लेख है । यह लेख चन्द्रनाथमन्दिरके वरामदेके वाजूमे खुदा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०० पृ० ६५ ]

१३०

ह्वलि ( जि० वेलगांव, म्हैसूर )

शक ९६६ तथा १०६७ = सन् १०४४ तथा ११४५, कन्नड

१-२ श्रीमत्परमगर्भारस्याद्वाढामोवलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशासनं ॥ (१)

३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-  
मेश्वर परममद्वार-

४ क सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्यामरणं श्रीमदाहवमल्लदेवर  
विजयराज्य-

५ मुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचद्रार्कतार सलुत्तमिरे ॥ तत्पाद-  
पद्मोपजीवि ॥ मेले-

६ र्द पगेवरं निर्मूलिसि जससं निमिचिं दिग्भित्तिवर कालडिय  
बोलगडि तले पालिसिद तोवता-

७ रुम भुजवलदि ॥ (२) आतन पुत्रं विनयोपेतं पायिम्म-नृपति-  
गोप्पुव सति

- ८ विख्यातियुते हम्मिकव्वेगे सीतेगे सरि मागेणव्वे लच्छलेयोगे-  
दरु ॥ (३) इष्टज-
- ९ नक्के चट्टसमयक्के महाजनमोजनक्केयुत्कृष्टतपोधनगंयलिदायव-
- १० नक्के सकन्यकालिकाग्निष्टगेगेय्दे नात्कुसमयक्कुरुरागदे वेगविं-
- ११ तु संतुष्टते लच्छियव्वरसिगार् सरियर् सचराचरोर्वियोलु ॥ (४)
- १२ सकलधरित्रियोल् नेगर्द वदिजन सले रूपिनेल्गेयं प्रकटतेवेत्त दा-
- १३ नगुणम कुलट्टुनतिय जिनांघ्रिगल्गकुटिलचित्तम पोगलुतिर्पुं-
- १४ टु कूडिय लिंकडकपालकन कुलोत्तमागनेयनयिये लच्छलदेविय
- १५ जग ॥ (५) शरनिधिमेखलावृत्तवसुधरेयंब विलासिनीमुखांबुरुह-  
दवोलविराजि-
- १६ सुव बेल्वलनाल्के पोदल्द शोभेगागरमेनि(सि)र्पं पूलि तिलका-  
कृतिरिंसेदिर्पुंटा पुरं सुरपु-
- १७ रमं कुवेरनलकापुरम नगुगु विलासदिं ॥ (६) अलि ॥ सकल-  
न्याकरणार्थशा-
- १८ स्रचयदोलु कान्यंगलोलु सद नाटकदोलु वर्णकवित्त्वदोल्नेगर्द  
वेदांतगलोलु
- १९ पारमार्थि(क)दोलु लौकि(क)दोलु समस्तकलेयोलु वागीशनिदं  
यशोधि-
- २० करादर् पोगल्वलिगारलवे पेलु सासिर्वर ख्यातिय ॥ (७) स्वस्ति  
शकनृपकालातीतसवरसर-
- २१ शतगलु ९६६ नेम तारणसंवत्सरद पुट्य सुद्ध १० आदिवार-  
मुत्तरायण-
- २२ संक्रान्तियंठु ॥ यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहपट्कर्म-  
निरतरं श्री-
- २३ (म)चालुक्यचक्रवर्तिव्रह्मपुरिस्थानपितृपितामहमहिमास्वरक्षणा-

- २४ थकोविदहं विदग्धकविगमकवादिवाग्मित्वरुमतिथियभ्यागत-  
विशिष्ट-
- २५ जनपूजनप्रियरुं हिरण्यगर्भब्रह्ममुखकमलविनिर्गतऋग्यजु-
- २६ स्सामार्थवर्णसमस्तवेदवेदागोपमांगानेकशास्त्राष्टादशस्मृतिपुराण-
- २७ काव्यनाटकधर्मागमप्रव्राणहं सप्तसोमसंस्थावभृथावगाहन-  
पवित्रीकृ-
- २८ तगात्रहं कांचनक(ल)शसितघट्टत्रचामरपंचमहाशब्दघटिकाभेरी-  
रवनि-
- २९ नादितरुमाश्रि(तजन)कल्पवृक्षरुमहितकालांतकरुमेकवाक्यरुं
- ३० शरणागतवज्रपंज(रुं च)तुस्तमयसमुद्धरणरुं श्रीकेशवादित्यदेव-
- ३१ लब्धवरप्रसादरुमप्य श्रीमन्महाग्रहारं पुलियूरोडेयप्रमु-
- ३२ ख सासिर्वर्महाजनंगल दिव्यश्रीपादपद्मंगलं (ल)च्छियव्वरसि-  
यरु स-
- ३३ हिरण्यपूर्वकमाराधिसि भूमियं पडेदु वसदियं माडिसि खं-
- ३४ इस्फु(टि)तजीणोद्धरणक्के पडुवण पोलदलु शिवेयगेरियारुमत्तर्व-
- ३५ सुगेयं मत्तरिगड्डुचिन्नलेक्कदिदरुवणमं मूरु पणमं तेत्तुवं-
- ३६ तागि श्रीयापनीयसंवद पुन्नागवृक्षमूलगणद श्रीबालचंद्रम-
- ३७ टारकदेवर कालं कर्चि विट्टलु ॥ स्वास्त समस्तभुवनाश्रय  
श्रीपृथ्वीवल्लभ महा-
- ३८ राजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालु-  
क्याभरणं
- ३९ श्रीमत्प्रतापचक्रवर्ति जगदेकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्त-
- ४० रामिवृद्धिप्रवर्धमानचंद्रार्कतारंवरं सलुत्तमिरे । शकव-
- ४१ पं १०६७ नेय क्रोधनसंवत्सरदुत्तरायणसंक्रान्तियंदु यमनि-
- ४२ यमस्वाध्यायध्यानधारणमौनानुष्ठानजपसमाधिशीलसंपन्नरूप

- ४३ श्रीमन्महाग्रहारं पूलियूरोडेयप्रमुख सासिर्वर्माहाजनंग(ल)  
 ४४ दिव्यश्रीपादपद्मगलं पेर्गडे नेमणं सहिरण्यपूर्वकमाराधिसि(धा)  
 ४५ (रा)पूर्वकं माडिसि को(डु) तम्म सुत्तव्वे लच्छियव्वरसियरु  
 माडिसिद बस-  
 ४६ दियलिर्पं ऋषियराहारदाननिमित्तमल्लियाचार्यरु रामचंद्र-  
 ४७ देवर कालं कर्चियवरु मुन्नवांलुव पडुवणपोलद शिवेयगेरियारुमत्त-  
 ४८ वंसुगेरियं पडु(व)ण (मा)गदलु कलशवल्लिगेरिय स्था(न)दोल-  
 गारु मत्तकय्यं  
 ४९ मत्तरिगडुच्चिन्न(लेक्कदिंदरु)वणमं मूरु पणमं तेत्तुवंतागि विट्टरु ॥  
 ५० पत्तिमक्ते धेमा 'सति पायिम्मरसनग्रसुते सकलजनस्तुते भा-  
 ५१ गियव्वेराणिगे सुत्त ...दी (नेम)य्यनौदार्यगुणं ॥ (८) जिनदेवं  
 तनगासन-  
 ५२ (थिं)जनताकल्पद्रुमं 'य्यने तम्मय्यननूनदानि कलिदेवं साक्षरा-  
 ५३ ग्रेसरं तनगण्णं गुणरत्नभूषणने-संदिदं नेमंगेनलकनवद्याच(रणं)-  
 ५४ गे भूवल्लयदोलु पेल्' ॥ (९)

[ इस लेखके दो भाग हैं । पहला भाग चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल सोमेश्वर प्रथमके राज्यमें शक ९६६ की उत्तरायण सक्रान्तिके समयका है । इनका सामन्त कालडिय वोलगडि था । इसका पुत्र पायिम्म था जिसने हम्मिकव्वेसे विवाह किया । उसे भागिणव्वे तथा लच्छियव्वे ये दो कन्याएँ हुईं । लच्छियव्वेका विवाह कूडि प्रदेशके शासकसे हुआ था । इसने पूलि नगरमें — जहाँ एक हजार घर्मनिष्ठ ब्राह्मण रहते थे — कुछ जमीन खरीदकर एक जैन मन्दिर बनवाया और उसके लिए यापनीय सघ-पुत्रागवृक्षमूल गणके बालचन्द्रभट्टारकको कुछ दान दिया ।

दूसरा भाग चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल ( द्वितीय ) के राज्यमें शक १०६७ की उत्तरायणसक्रान्तिके समयका है । इसमें नेमण नामक

स्थानीय अधिकारीका उल्लेख है जिसने पूल नगरमे कुछ और जमीन खरीदकर उक्त मन्दिरको दान दी । उस समय रामचन्द्र वहाँके भट्टारक थे । यह नेमण उपर्युक्त लच्छियञ्जेका प्रपौत्र था । ]

[ ए ३० १८ पृ० १७२ ]

१३१

मुगद ( मैसूर )

शक ९६६ = सन १०४५, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल ( सोमेश्वर १ ) के समय शक ९६६, पार्थिव संवत्सर, चैत्र शु० ५, रविवारके दिन लिखा गया था । इसमे नार्गावुण्ड चावुण्ड-द्वारा मुगुन्द ग्राममें स्वनिर्मित सम्यक्त्वरत्नाकर चैत्यालयके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है । चावुण्डके पौत्र महासामन्त मार्तण्डय्य-द्वारा इस मन्दिरको एक नाटकशाला अर्पण किये जानेका भी इसमे उल्लेख है । उस समय पलसिगे तथा कोकण प्रदेशपर कदम्ब कुलके महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवका शासन चल रहा था । लेखमें कुमुदि गणके जैन आचार्योंकी विस्तृत परम्परा भी बतलायी है । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० ३० ३० ११ पृ० ६८ ]

१३२

जोन्नगिरि ( कुर्नूल, आन्ध्र )

११ वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके समय वेगडे सोवरस तथा मल्लिसेट्टिका उल्लेख है । इन्होंने जोन्नगिरिकी वसदिके लिए कुछ भूमि दान दी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ६१७ पृ० ६० ]

१३३

तिंगकूर ( कोइम्बतूर-मद्रास )

शक ९६७ = सन् १०४५, तमिल

- |                       |                              |
|-----------------------|------------------------------|
| १ स्वस्तिश्री         | २ को नाट्टन् वि-             |
| ३ विक्रमशोल-          | ४ देवकुं शे-                 |
| ५ ल्लानिण्ड-          | ६ याण्डु ना-                 |
| ७ र्पदावदु            | ८ अरत्तुला-                  |
| ९ ण्देवन्             | १० पेरन् आण ना-              |
| ११ ण् कणित मा-        | १२ णिक्कच्चेट्               |
| १३ टि चन्द्रिवश-      | १४ तियिल् मुक-               |
| १५ मण्डगम्            | १६ एट्टुपित्ते-              |
| १७ न् (॥) शकर या      | १८ ण्डु ९ १०० (६) (१०) ७ (॥) |
| १९ शिंगला ( न्तक ) न् | २० एण् पुदु मुक-             |
| २१ मण्डगम् (॥)        |                              |

[ यह लेख शक ९६७ का है । इस वर्षको नाट्टन् विक्रमचोल राजाके ४०वें वर्षमें चन्द्रवसतिके मुखमण्डपके निर्माणका इसमें उल्लेख है । यह कार्य अरत्तुलान् देवन्के पौत्र कणित माणिकक सेट्टि-द्वारा किया गया था । ]

[ ए० इ० ३० पृ० २४३ ]

१३४

अरसोवीडि ( जि० विजापुर, म्हैसूर )

शक ९६९ = सन् १०४७, कन्नड

- ५ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज-  
परमेश्वर प-



- २ रममट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्यामरण श्रीमत्रैलोक्यम-
- ३ ल्लडेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचद्रार्कता-
- ४ रंवरं सलुत्तमिरे । स्वस्ति अरिन्पमकुटघटितचरणारविंदेयर्  
गंगास्तान-
- ५ पवित्रेयर् दीनानाथचिन्तामणिगलेकवाक्यर् गुणद वेडंगियरप्प  
श्रीमद-
- ६ क्कादेवि ( य ) र् गोकागेय कोटेय सुत्तिर्द वीडिनलु विक्रमपुरद  
गोणदवेडंगिय
- ७ जिनालयक्के खण्डस्फुटितसुधाकर्मक्कं गन्धधूपदीपक्कं सरुगिगं  
मूलसंव-
- ८ व ( र ) सेनगणद होगरिय गच्छद नागसेनपण्डितगं अल्लिर्प  
ऋपियगं अजिय-
- ९ गं आहारदानक्कं अजियर कप्पढक्कं कडुव भूमि सकवष ९६९ नेय
- १० सर्वजित् सवत्सरद चैत्रदमास्ये आदित्यवारदंदिन सूर्यग्र-
- ११ हणनिमित्तं धारापूर्वकं माडि नगरदनुभवने मुख्यमागि किस्-
- १२ काडेप्पत्तर वलिय सर्वनमस्यमागि विट्ट वाडं गाणद हाल्लरौदु
- १३ तिक्रमपुरद यीशान्यद देसेयि तौटं मत्तरोदु ऊरिं तेक मुस्वदिन पा-
- १४ ल नैरियद देसेयि पण्डितनागदेवगे सर्वनमस्य मत्तर् पनेरडु  
अल्लि तेंक
- १५ परंकार केत्तोजगे सर्वनमस्य मत्तरिपत्तनात्कु ऊरिं वडग रायगट्टेयि
- १६ मूठ परंकार केत्तोजगे तौट मत्तरोदु अल्लि पडुव कल्कुटिग  
मूत्तोजगे म-
- १७ चंनमस्य मत्तर् पनेरदु तौट मत्तरोदु दडिगरसन कय्यलु  
मारुत्तोदु देवगे कोट्ट

१८ भूमि कप्पडिय केरैयि तेंक मन्नेयचोददलु सर्वनमस्य  
मत्तरु ५० ॥

१९ ई धर्मम स्वधर्मदिं रक्षिसिदवर् चारणासियलु ओन्दु कोटि  
कविलेयु-

२० मं वेदपालनपं ब्राह्मणरिगे कोट्ट फ ( ल ) मं पडेवर् ई धर्ममन-  
लिदव

२१ रा स्थानदोलनितु कविलेयुमननिपे ( तु ) ब्राह्मणर—

२२ सा ॥ सामा—

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल ( सोमेश्वर प्रथम ) के राज्यकालमें शक ९६९ की चैत्र अमावास्याके दिन लिखा गया था । इस समय अक्कादेवी गोकाग किलेके समीप शिविरमें थी । उसने विक्रमपुरके गोणद वेडगि जिनमन्दिरके लिए मूलसघ-सेनगण-होगरि गच्छके नागसेन पण्डितको कुछ दान दिया था । ]

[ ए० इ० १७ पृ० १२१ ]

## १३५

### नन्दवाडिगे ( मैसूर )

११वीं सदी-मध्य, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेवके समयका है । उनकी रानी मैल्लदेवी थी । उनके एक सामन्त भावनगन्धवारणने कई मठ, मन्दिर, तालाव आदि बनवाये थे जो निम्न स्थानोपर थे — कल्याण, अण्णिगेरे, मुलुगुन्द, ( कोल्वु ) गे, नन्दापुर, कोहल्लि, मण्डलिगेरे, वेल्गलि, वनवासेपुर, करिविडि, नविले, नन्दवाडिगे, पेरूरु । उसने पोन्नुगुन्दका त्रिभुवनतिलक जिनालय, महाश्रीमन्त वसदि, पुरगूरका वीरजिनालय, कुन्दरगेका जिनालय आदिका जीर्णोद्धार किया था । उसके द्वारा दिये गये

कई दानोका उल्लेख लेखमें किया है । इसका समय उत्तरायण सक्रान्ति कहा है । वर्ष निश्चित नहीं है । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ९९ ]

१३६

कल्याण ( नासिक, महाराष्ट्र )

११वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

[ यह ताम्रपत्र परमारवशोय महाराज भोजके सामन्त यशोवर्मन्-द्वारा दिया गया है । श्वेतपद देशमें स्थित कल्कलेश्वर तीर्थके महीशबुद्धिके स्थानके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ जमीन, तेलघानियाँ, दूकानें, और १४ द्रम्म दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । ]

[ रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११८ ]

१३७

हेब्बैलु ( मैसूर )

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

- १ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वी-
- २ वल्लभ महाराजाधिराज परमे-
- ३ श्वर परममहारक सत्याश्रयकुल-
- ४ तिलक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रैलोक्य-
- ५ मल्लदेवर विजयराज्यमुत्त-
- ६ रोत्तरामिवृद्धिप्रवर्धमानमाच-
- ७ द्राकतारं सलुत्तमिरे स्वस्ति स-
- ८ मधिगतपंचमहाशब्द महाम-
- ९ षडलेश्वर पट्टिपोम्बुचपुरवरेश्वरं पद्मा-

- १० चतीलब्धवरप्रसादं मृगमदामोद  
 ११ कन्दुकाचार्यं मन्दरधैर्यं सुमटसंस्तु-  
 १२ त्य सान्तरादित्य रिपुकरीड्रकंठीरव रण-  
 १३ रंगभैरवं कीर्तिनारायणं सौर्यपा-  
 १४ रायणं रिपुमंडलिकगोत्रगोत्राचलवज्र-  
 १५ दण्ड विरुद्रभेरुड महोग्रान्वयनमस्त-  
 १६ लगभस्तिमालियतुलवलसौर्य-  
 १७ शालि वन्दिसन्दोहानन्दीकृतसुन्दरकल्पल-  
 १८ तांकुरनरिमंडलिकपतंगदीपांकु-  
 १९ रं विसिसनविजयत्रिपुलीकृतकृत-  
 २० प्रतिज्ञं विरुद्रसर्वज्ञ नामाद्यनेकां-  
 २१ कमालासमलकृत् श्रीमत्  
 दूसरी ओर  
 २२ वीरसान्तरदेवर् सान्तल्लिगे-  
 २४ गि प्रतिपालिसि सुखसंक-  
 २६ मिरे तत्पादपद्मोपजीवि  
 २८ तीमकुमस्यलीविदारुणदा-  
 ३० पलमालालकार वोरनारीम-  
 ३२ तमहावाहिनीमहीधरव-  
 ३४ निजगोत्रनिस्तार धर्मरत्ना-  
 ३६ हितांजनैथं सौर्यगां-  
 ३८ ट्टं वैरिकोटिघरट्टं रण-  
 ४० वरेल्देयसूल ढलदिं  
 ४२ रेव सुकविकोकिलसह-  
 ४४ धाधरं धैर्यमहीधरन्  
 ४६ रायणं वीरुगनगरुड-  
 २३ सासिरमुमं निष्कटकमा-  
 २५ थाविनोदिदिं राज्यं गेय्युक्त-  
 २७ स्वस्ति समस्तदुस्तरारा-  
 २९ रुणकरासिधारासक्तमुक्ता-  
 ३१ णिहारयितभुजादण्डनहि-  
 ३३ ञ्रदण्डं जिनधर्मप्राकारं  
 ३५ करं सुमटारिमीकर पति-  
 ३७ गेयं स्वामिद्रोहदिशाप-  
 ३९ रगक्षेत्रपाल मच्चरिसु-  
 ४१ मुन्निरिव आयुम मे-  
 ४३ कारनेकांगवीरं विलासवि-  
 ४५ उपायनारायण नीतिपा-  
 ४७ नामादिसमस्तप्रशास्तस-

- ४८ हित श्रीमन् नकुलरसर् ४९ स्मररूपरुन्नतर नकुलर-
- ५० सन तनयर् जनक्के रा ५१ मन् लक्ष्मीधररेन्दे-
- ५२ न्दडे चावुण्डराय- ५३ नुं नागवमनुं कर-
- ५४ मेसेदरे ॥ मंगल  
तीमरी ओर
- ५५ वृत्त ॥ केडेयद् पे ( म् ) महामहिमराज-
- ५६ सुतप्रतिपत्तिर्येद्विवं तडेयदे वीरसान्त-
- ५७ रमहीपति ता दयेगेय्दु कोद्वोडं वि-
- ५८ डे निजपुत्र नीं वरिसेनिपी नेगलत्तेयनेय्दु
- ५९ कोट्टनेन्दडे दोरेयार्परार् नगुलभूप-
- ६० नोली वसुधातलाग्रदोलु । परम-
- ६१ श्राजिननिष्टदैवमनेपोर् शास्त्राग-
- ६२ मांमोधिगल् गुरुगल् भाविसे पु-
- ६३ प्पसेनमुनिपर अत्तिप्रियं वीरसा-
- ६४ न्तर भूमिपति तन्दे तां पडियरं
- ६५ श्रीकाटि ताय् पॅपलकरिसुत्तिल्दरे-
- ६६ यद्वे ये ( ने ) नगुलभूपालं महा-
- ६७ धन्यनो ॥ नगुलरसन चित्तप्रिये
- ६८ मृगलोचने दण्डनायकोडुम्मन
- ६९ ऐदु मन्दिन सासि-
- ७० वरकण्डु काप्प-
- ७१ रक्के इदनलिदं क-
- ७२ विलेयनलिदं
- ७३ चित्तारिकेतोजन मगं बहु ७४ गि आय्वोज ई शासनद
- ७५ गेय्दं कल्ल
- चौथी ओर
- ७६ पुत्रि गुणान्विते चट्ट-
- ७७ वरसिगे दोरेयार् दान-
- ७८ धर्मशीलोज्जतियोल् ७९ सकवर्ष ९७५ नेय दु-

- |                                 |                                    |
|---------------------------------|------------------------------------|
| ८० मर्तिसंवत्सरं प्रवर्तित्से   | ८१ वैशाखमासदकृष्णप                 |
| ८२ क्षदेकादशि आदित्य            | ८३ वारददु श्रीमन्महा-              |
| ८४ मण्डलेश्वर वीरसान्तर         | ८५ नगुलरसगे पर्वय-                 |
| ८६ ल् पन्नेरडर किरुडरे          | ८७ विट्टियुम कादु परिहा-           |
| ८८ रं विट्टंकेगेडु कलनाडिन्ती   | ८९ मर्यादियनलिदं वा-               |
| ९० रणासियोल् कुरुक्षे           | ९१ त्रदोल् सासिरकत्रिलेयुं         |
| ९२ पार्वरुमनलिद पातकन-          | ९३ क्कुं । स्वदत्तां परदत्ता वा यो |
| ९४ हरेत वसुधरां पट्टिर्वर्षस-   | ९५ हस्ताणि विष्टायां जायते क्रि-   |
| ९६ मि० । विप्रकुलांवरचंद्रं     | ९७ श्रीप्रतिमेय मारसिंग-           |
| ९८ तनयं विद्वद्विप्र गंगननृपनि- | ९९ योगप्रभु कविराज वल्लभ गो        |
| १०० त्रिन्दं                    | १०१ पर्वयल् पन्नेरडु               |
| १०२ पौडुचंनाडोले                | १०३ भक्तगावे हृदिगा-               |
| १०४ ल कदगोड मैसेपन्नेर-         | १०५ डुम नेलिवयलुं पा-              |
| १०६ लिगार । वीरमिनु नगुल-       | १०७ रसनुमेय्दिवेतं सासिर-          |
| १०८ गछाण ॥ मंगलं                |                                    |

[ यह लेख एक स्तम्भके चारो बाजुओपर लिखा है । चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके अधीन पट्टिपोवुर्चके महामण्डलेश्वर वीरसान्तरके समयका यह लेख है । इसके मन्त्रीका नाम नकुलरस था । ये दोनो जैन कहे गये हैं । इनके गुरु पुष्पसेनदेव थे । नगुलरसके पिता पडियर काटि, माता अरेयव्वे तथा पत्नी चट्टरसि थी । इनके दो पुत्र चानुण्डराय और नागवर्म थे । लेखमे वीरसान्तर-द्वारा अकेगेडु ग्राम और पर्वयल् विभागके कुछ करोका उत्पन्न नकुलरसको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । इस लेखके पाठकी रचना गोविन्दने की थी जो मारसिंगका पुत्र था और गंगराजाओके समयसे कवियोंमें प्रिय था । लेखको चित्तारि केतोजके पुत्र आय्वोजने उकेरा था । लेखनिर्दिष्ट दानकी तिथि वैशाख व० ११, रविवार, शक

९७५ दुर्मति संवत्सर है ( यह अनियमित है क्योंकि शक ९७५ विजय संवत्सर था ) । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० १९० ]

१३८

### मुलगुन्द ( मैसूर )

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

- १-२ श्रीमद्भक्तिभरानतामरकिरीटानर्धरत्नप्रभाजालालीढपटारविन्द-  
युगल कन्दर्पदर्पापह । त्रैलोक्योदरवर्तिकीर्तिविशदश्चन्द्रप्रभ-  
सुप्रभो भव्यानां निवहं निराकुलमल पायादपायाज्जिन ॥ १
- ३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमे-  
श्वर परममट्टारकं सत्या-
- ४ श्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेवर विजय-  
राज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रव-
- ५ र्द्धमानचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे । तत्तनयं समधिगतपंचमहाशब्द-  
महामण्डलेश्वरं वेंगी-
- ६ पुरवरेश्वरं समरप्रचण्डं कुमरमार्तण्ड परकरिमदनिचारणनम्न  
गन्धवारणं परिवारनिधानं
- ७ दानकानीन हयवत्सराज रूपमनोजं रिपुनृपतिहृदयसेहलं भुवनै-  
कमल्लं मण्डलिकशिरो-
- ८ मणि चालुक्यचूडामणि विद्विष्टसंहारं कटकप्राकारं श्रीमत्-  
त्रैलोक्यमल्लदेवपादपंकजभ्र-
- ९ सरं श्रीसोमेश्वरदेवं वेल्बोलमूनूहं पुलिगेरंमूनूहं सुखसंक-  
धाविनोददिनालुत्तमि-

- १० रे तत्पादपद्मोपजोवि ॥ वृत्तं । विनयक्काधारभूतं पतिहितचरित-  
क्काश्रय सद्द्विवेकक्के निवास—
- ११ संपत्तिगे, कुलभवन सन्ततानूनदानक्के निधानं मान्तनक्कागर-  
मेने नेगल्द सद्द्वचोभूषण भूविनु ( तं ) ( वे- )
- १२ ल्देवनुद्यद्विधुविशदयशोव्याप्तदिक्चक्रवाल ॥२ ईव गुणं गुण  
पतिहिताचरित चरितं परोप ( का- )
- १३ रावसथार्थमर्थमघमिज्जिनतत्त्वमे तत्त्वमेव सद्भावने तम्मोलोन्दि  
नेलेवेत्तिरे कीर्त्तिगे नोन्तरिन्तु
- १४ वेल्देवनुमोलूपनादद वलदेवनुसंक्रद शान्तिवमंनुं ॥३॥ वचनं ॥  
अन्तु सकलगुणगणोत्तुगरु जिनधर्म-
- १५ निर्मलं निखिलजनोपकारनिरतरुमुदात्तकीर्त्तिलतानिकेतनरुम-  
गगलदेवप्रियतनूमवरुं गोज्जि-
- १६ काश्चिकाकुशोदरनिबिडनिबद्धपट्टरुमागि पोगल्लेवेत्त तत्सहोदर-  
त्रयदोल् अग्रभवनप्प सन्धिविग्र-
- १७ हाधिकारि ॥ वृत्त । जिनपादांशुजभृगनगजनिभ गम्यार्थरत्नाकरं  
मनुमार्गं विनयार्णवं कलिमलप्रध्वस-
- १८ क केशिराजन वटिं नयसेनसूरिपदपञ्चाराधनारक्तचित्तनुदात्तं  
नेगल्द विवेक—महीभाग-
- १९ दोल् ॥ ४ आ महानुभाव धर्मप्रभावप्रकटीकृतचित्तनागे ॥  
कन्दं । सिन्द—कनवलानन्दनकररु-
- २० पनसमसाहसनिलयं सिन्दनृपनन्दन लसदिन्दुकरप्रतिमकीर्त्ति-  
कान्ताकान्त ॥ ५ जिनधर्मनिर्मल सत्यनिधा-
- २१ ननचूनदान—अनन्दिन कचरसं पंचेषुनिर्मं मुलगुन्दसिन्ददेश-  
ललाम ॥ ६ एंब पेंपिंग जसक्कमागरमा—



- २२ द् कंचरसं तन्न सीवटदोलगे धर्मानुरागचित्तं सहिरण्यपूर्वकं  
कुडे कोण्डु ॥ श्रीमूलसघवारा-
- २३ शौ मणीनामिव सार्चिषां । महामुखरत्नानां स्थानं सेनान्वयो-  
जनि ॥ ७ व । आ चन्द्रकवाटान्वयवरिष्ठ-
- २४ रजितसेनमट्टारकर् तदन्तेवासिगल् कनकसेनमट्टारकरवरशिष्यर् ॥  
कन्द । चान्द्रं कातंत्रं जैनेन्द्रं श-
- २५ व्दानुशासनं पाणिनि मत्तैन्द्रं नरेन्द्रसेनमुनीन्द्रं गौकाक्षरं पेरंगिवु  
मोग्गे ॥ ८ अन्तु जगद्विख्यातरादर
- २६ रवर शिष्यर् ॥ वृत्त । निनगेनेवेनो शाकटायनमुनीशनन्ताने  
शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीयदोले चन्द्रं चा-
- २७ न्द्रदोल् तज्जिनेन्द्रने जैनेन्द्रदोला कुमारने गडं कौमारदोल्  
पोलपरन्तेने पोलर् नयसेनपण्डितरोलन्यर् वार्धि-
- २८ वीतोर्वियोल् ॥ ९ इन्तु समस्तशब्दशास्त्रपारावारपारगर् नयसेन  
पण्डितदेवर पादप्रक्षालनगे-
- २९ य्दु । शकवर्षमौवयूनूरैल्पत्तयूदनेय विजयसंवत्सरदुत्तरायण-  
सक्रान्तियुंद्दु तीर्थद व-
- ३० सदिगाहारठाननिमित्त निजां विकेयप्प गोज्जिकव्वेगे परोक्षविनयं  
नगरमहाजनमु पंचमटस्था-
- ३१ नमुमरिये नगरेश्वरद् गडिं वद कोलोललेदु किरुगेरेय केय्योलगे  
सर्ववाधापरिहारमा-
- ३२ गे धिट्ट केय्मत्तर् पन्नेरहु । आ केय्ये गुहे ईशान्यदोल् कविलेय  
कल् थारनेयदोलादित्यन कल् नैक्क-
- ३३ त्यदोल् चन्द्रन कल् वायव्यदोल् पद्मावतिय कल् असगगेरेय  
तैक्क सासिर वल्लिय तौटवोन्दु ॥ स्वदत्तां—

३४ ( परदत्तां वा ) यो हरेत वसुन्धरां । षष्टिर्वर्षसहस्राणि  
विष्ठायां जायते कृमिः ॥ १०

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् सोमेश्वर ( प्रथम ) त्रैलोक्यमल्लके राज्य-  
मे शक ९७५ में लिखा गया था । उस समय वेल्वोल तथा पुलिगेरे  
प्रदेशपर सम्राट्का पुत्र सोमेश्वर ( द्वितीय ) शासन कर रहा था । वहाँके  
सन्धिविग्रहाधिकारी वेल्वेदेव थे । ये अगलदेव तथा गोज्जकव्वेके पुत्र थे ।  
वलदेव तथा शान्तिवर्मा उनके वन्धु थे । वेल्वेदेवकी प्रेरणासे सिन्दकुलके  
सरदार कंचरसेने नयसेन पण्डितदेवको कुछ भूमि दान दी । नयसेनकी गुरु-  
परम्परा इस प्रकार थी — मूलसध-सेनान्वय-चन्द्रकवाट अन्वयके अजितसेन-  
कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन । नरेन्द्रसेन तथा नयसेन दोनों व्याकरणशास्त्रके  
विशेषज्ञ थे ।

[ ए० इ० १६ पृ० ५३ ]

१३६-१४०

नन्दिवेवूरु ( बेल्लारो, मैसूर )

शक ९७६ = सन् १०५४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९७६, उत्तरायण  
सक्रान्ति, रविवार, जय सवत्सरका है । इसमें नोलम्ब पल्लव पेर्मान्डिके  
राज्यकालमें देसिगणके अष्टोपवासि भटारको रेच्चूरुके महाजनो-द्वारा  
भूमि, उद्यान आदिके दानका उल्लेख है । लेखमें जगदेकमल्ल नोलम्ब  
ब्रह्माधिराजका सामन्तके रूपमें उल्लेख किया है । इस लेखके पीछेकी ओर  
प्रायः ऐसे ही लेखमें अष्टोपवासिमुनिको वैदूरुमें दिये हुए दानका वर्णन है ।  
इसमें वीरणन्दिसिद्धान्तिका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २०१ पृ० १६ ]

१४१

कोगलि ( जि० वेल्लारी, मैसूर )

शक ९७७ = सन् १०५१

जैन मन्दिरके आगे एक शोडमें, कन्नड

यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालका है । इसमें कहा है कि इस मन्दिरका निर्माण गग राजा दुर्विनीतने किया था । लेखके समय जैन आचार्य इन्द्रकीर्तिने इस मन्दिरको कुछ दान दिया था । इन्द्रकीर्तिका वर्णन इस प्रकार किया है—

श्रीमदरुहचरणसरसिंहभृग, कोण्डकुन्दान्वयसमूहमुखमंडन, देशीयगण कुमुदवनशरच्चन्द्र, कोकलिपुरेन्द्र, त्रैलोक्यमल्लसद सरसिकलहंस, कविजनाचार्य, पण्डितमुखाम्बुरुहचण्डमार्तण्ड, सर्वशास्त्रज्ञ, कविकुमुदराज, त्रैलोक्यमल्लेन्द्रकीर्तिहरिमूर्ति ]

[ इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७४, इ० म० वेल्लारी १९६ ]

१४२

डम्बल ( मैसूर )

शक ९८१ = सन् १०५९, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेव ( सोमेश्वर १ ) के समय चैत्र शु० १३, रविवार शक ९८१, विकोरि सबत्सरके दिन लिखा गया था । इसमें धर्मवोल्लके नगरजिनालयके लिए वाचय्यसेट्टिके जमात वीरय्यसेट्टि द्वारा कुछ सुवर्णदान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० ८९ ]

१४३

मोरव ( धारवाड, मैसूर )

शक ९८१ = सन् १०६०, सस्कृत-कन्नड

[ यह लेख मार्गशिर शु० २ शक ९८१ विकारि सवत्सरका है । इसमें यापनीय सघके जयकीर्तिदेवके शिष्य नागचन्द्र सिद्धान्तदेवके समाधि-मरणका उल्लेख है । उनके शिष्य कनकशक्ति सिद्धान्तदेवने यह निसिधि स्थापित की थी । नागचन्द्रको मन्त्रचूडामणि यह विरुद दिया है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई० २३९ पृ० ५६ ]

१४४

छुट्टि ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक ९८० = सन् १०६०, कन्नड

[ इस लेखमें सव्वि नगरके धोरजिनालयके आचार्य कनकनन्दिके समाधिमरणका उल्लेख है । इनकी निसिधि भागियव्वे-द्वारा स्थापित की गयी । इस लेखकी रचना वज्रने की तथा नाकिगने उसे उत्कीर्ण किया । तिथि वैशाख शु० ५, रविवार शक ९८२ शर्वरी सवत्सर ऐसी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० १५ पृ० २५६ ]

१४५

तोललु ( मैसूर )

शक ९८३ = सन् १०६२, कन्नड

इस लेखकी पहली ८ पक्तियाँ घिस गयी हैं ।

९ कम्बुकन्धरे केलेयव्वरिसि वीरगग पोयिसलगं

१० पेम्पनवद्यु...विनयार्क पो-

-११ यिसलजनप माडि ॥ श्रीवर्धमानस्वामि-

- १२ गल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवलि गौतमस्वामिगलिं भद्रवाहुस्वामि-  
गलिवलि
- १३ पुष्पदन्तमट्टारकरि मेघचन्द्र
- १४ श्रीमूलसंघ-
- १५ द वेलवेय अमयचन्द्रपण्डितगे विनयादित्यहोयिसलदेवरु शक-  
वर्ष ९८३ शुभकृतसवत्सरद
- १६ उत्तरायणसक्रमणद दानार्थदेमण्ण धारापूर्वकं कोट्ट अदकं तेरे ह
- १७ णवय्यु हणवारमत्तदि देवर चरुपिगे यिप्पत्तयरहु सलगेय  
धारापूर्वक माडि
- १८ विट्ट दत्ति तोल्ललहल्लिय मुद्दगौडनु तिप्पगौडनु वुरतेकळु  
यिरभुगाम्भ होर-
- १९ गेरिय मूडणभूमि विग्गुड्डेय भूमिय अमयचन्द्रपण्डितरिगे धारापू-  
२० र्क माडि विट्टरु ई धर्मवन् अवनोव्वनु

[ इस लेखमें होयसल राजा विनयादित्य-द्वारा शक ९८३ मे उत्तरा-  
यणसक्रमणके अवसर पर मूलसघके पण्डित अभयचन्द्रको कुछ भूमिदान  
दिये जानेका उल्लेख है। अभयचन्द्रको पूर्वपरम्परामें गौतमस्वामी,  
भद्रवाहुस्वामी, पुष्पदन्तमट्टारक तथा मेघचन्द्रका उल्लेख किया है।  
मुद्दगौड तथा तिप्पगौड द्वारा भी कुछ भूमिदान दी गयी थी। ये दोनो तोल-  
लहल्लिके निवासी थे। ] [ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४३ ]

१४६

पालियड ( गुजरात )

सवत् १११२ = सन् १०६६, सस्कृत-नागरी

१ सिद्धं विक्रम संवत् १११२ चैत्र सुदि १५ अद्येह आकाशिका-  
ग्रामावासे समस्त-

- २ राजावलीविराजितमहाराजाधिराजश्रीभीमदेव. ॥  
वायडाधिष्ठानप्रति-
- ३ वद्धवो (षो) दशोत्तरग्रामशतान्त पातिसमस्तराजपुरुषान् ब्रा(ह्म)  
णोत्त ( रान् ) ज-
- ४ नपदांश्च बोधयत्यस्तु व सविदितं यथा अद्य सोमग्रहणपूर्वाणि  
चराचर-
- ५ गुरुं सर्वज्ञमभ्यर्च्य वायडाधिष्ठानीयवसतिकार्यै अत्रैव वायडा-  
(धि)ष्ठाने
- ६ (च) रीक्षेत्रान्तरितया गुद्धुलापालिसंरुग्न्यावणिकसादाकभूमी-  
सं ( वध्य )-
- ७ मानया कलसिकाद्वयवापभुवा सहास्यैव सादाकस्य सत्का  
हलद्वयस्य २
- ८ भूः शासन (ने) नौदकपूर्वमस्माभिः प्रदत्तास्याश्च भूमे पूर्वस्या  
दिशि कल्य
- ९ पालकेसरिसत्कं क्षेत्र दक्षिणस्यां च राजकीया चरी । पश्चिमा
- १० यां च वाणिय (ज) कभामलीयं क्षेत्रमुत्तरस्यां च पालवाड-  
ग्राममा-
- ११ र्गं इति चतुराघाटोपलक्षितां भुवमेतामवगम्य एतन्निवासि-  
जनपदै-
- १२ र्था दीयमानभागभोगकरहिरण्यादि सर्वमाज्ञा(श्रव)णविधेयै-
- १३ भूर्त्वास्यै वसतिकार्यै समुपनेतव्यं सामान्यं चैतत्पुण्यफल  
मत्वास्म-
- १४ द्वंशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मदायोयमनुमन्तव्यः
- १५ - १६ नित्य-के शापात्मकश्लोक
- १६ लिखितमिदं कायस्थ-

- २ नं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जि-  
 ३ नशासनं ॥  
 ४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्व-  
 ५ रं द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुलां-  
 ६ वरद्युमणि सम्यक्तचूडामणि मल-  
 ७ परोलुगण्डाद्यनेकनामावलीविराजितरप्य श्री-  
 ८ मत्त्रै ( लो ) क्यमल्ल विनयादित्य होय्सल-  
 ९ देवर् गंगवाडितोमत्तरुसासिरमनाल्दु  
 १० सुखदिं पृथ्वीराज्यं गेय्ये सकवर्ष ९९१ ने-  
 ११ य पिंगलसंवत्सरद् बैशाख शुद्धत्रयोदशि बृह-  
 १२ वारदल् पिंद्दु देवसं होय्सलदेवर् मत्तवुरके  
 १३ कालं तिर्वित्तु द्विजयगेय्दु वसदिगे वदि  
 १४ देवरं कंडि बेट्टदोले कल्दरव विल्लियके माडि-  
 १५ सिदरुलगे माडिसिवेदडे माणिकसेट्टि  
 १६ यिन्तेदु विन्नपगेय्दम् देवर् नीवूरोल्लोदु  
 १७ वसदियं माडिसि भूमियं विट्ट मा-  
 १८ नमहिमेगल कोट्टडे वडवव्वर् निर्मद-  
 १९ ददर्थक्के प्रमाणुंटे देवरर्थमं मलेय-  
 २० रसुगल हडद मत्तमुं समानमदर  
 २१ माणिकसेट्टिय मारिं मेच्चि नक्कु करवोल्लित्तै-  
 २२ दु वसदियनूरोलगे माडिसि सामियं  
 २३ माणिकसेट्टि राजगावुण्ड सुदगावुण्डरिं वे-  
 २४ सायिदेन्नूरु (?) मत्तक्के बिडिसि ॥ तेरेयोल् प-  
 २५ ढ नाडलियलि सिद्धायदल्लि मत्तनूल नेल वि-  
 २६ नयायितनू पम्पेत्तेरेगल मत्तवूर व-  
 २७ सदिगे विट्टं ॥ अत्तु विट्टु वसदियवसदलिपळव-

- २८ मनेगल माडिसि रिपिहल्लियेदु पेसरनिदु  
 २९ मनेदेरे मादुवेदेरे ऊरुट्टिगे तौदे सु-  
 ३० रंदु कवर्ते सेसे ओसगे मनकरे कूट क-  
 ३१ कन्दि बीरवण कोडतिवण कत्तरिवण अडेकलु-  
 ३२ वण हडवलेय हदियराय कुंवर बि-  
 ३३ ट्टि कंमर विट्टि थिवोलगागि हलवु महिमे-  
 ३४ गलं विनयादित्यहोयमलदेवर् आचंद्रार्क-  
 ३५ तारंबरं सलो ॥ इन्ती धर्मदोलावनानु तप्पिद-  
 ३६ वं गगेयलु गंगेयं कौदु तिन्दं लिंगालि-  
 ३७ प गेय्दनिस्थानवे कट्टेगल स्थानं जागवल्ल  
 ३८ मत्तावुर हल्लिय गावुण्ड तानित्तुदक्के पे-  
 ३९ न्दे नित्तुददक्के देवगृह  
 ४० वह नानवक—होलंहा-वागिर्प ॥ ४०००००

[ यह लेख होयसल वशके राजा विनयादित्यके समय वैशाख शु० १३, वृहस्पतिवार, शक ९९१ पिंगल सवत्सरके दिन लिखा गया था । मत्तवूर ग्रामके लिए एक नहर बनवायी थी तब राजा विनयादित्य वहाँ गये थे । इस ग्रामकी बसदि ग्रामके बाहर एक पहाडीपर थी । उसे देखकर राजाने ग्रामीणोंसे पूछा कि ग्राममे बसदि क्यों नहीं है ? इसपर माणिकसेट्टिने कहा कि ग्राममें बसदि बनानेकी हमारी इच्छा है किन्तु हम गरीब हैं । तब राजाने ग्राममें बसदि बनवाकर नाडलि ग्रामके कुछ करोका उत्पन्न उमे दान दिया । माणिकसेट्टि, राजगावुण्ड तथा मुद्दगावुण्डने भी बसदिके लिए कुछ भूमि दान दी । ]



१५३

## सोरटूर ( मैसूर )

शक ९९३ = सन् १०७१, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव ( सोमेश्वर २ ) के समय माघ शु० १, रविवार, शक ९९३, विरोधकृत् संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था ( यहाँ माघ स्पष्टत गलत है जो पौष होना चाहिए । ) उक्त समय महाप्रधान सेनाधिपति कडितवेर्गडे दण्डनायक बलदेवथ्य-द्वारा सरटवुर ग्राममे स्थित बलदेवजिनालयके लिए कुछ भूमि अर्पण की गई थी । बलदेवथ्यके पिता गग कुलके अगलदेव थे, माता गोज्जिकब्बे थी तथा उसके ज्येष्ठ बन्धुका नाम बेल्लदेव था । इस दानकी व्यवस्थापिका हुलियब्बाज्जिके सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके सिरिणदिपण्डितकी शिष्या थी । उक्त मन्दिरको सरटवुरके दो-सौ महाजनोने भी कुछ भूमि, तेलधानी तथा घर अर्पण किये थे । सिरिणन्दिपण्डितकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है - चंदणदि - दावणदि - सकलचन्द्र - कनकनदि - सिरिणंदि । ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० १०७ ]

१५४

## गावरवाड ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक ९९३-९४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादासोवलांछनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन ॥
- २ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधिराजं परमेश्वर परमभट्टारकं स-
- ३ त्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरण श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रवर्धमानमाच-

- ४ दार्कतारं सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजोवि समधिगतपंचमहाशब्द  
महामंडलेश्वरनुदारमहेश्वरं चलके बलुगंड ( शौर्यमार्तंडं )  
पतिगे-
- ५ कदाड संग्रामगरुडं मनुजमान्धातं कीर्तिविख्यात गोत्रमाणिक्यं  
विवेकचाणाक्य परनारीसहोदरं वीरवृकोदरं को-
- ६ दंडपार्थ सौजन्यतीर्थं मंडलीककंठीरव परचक्रमैरवं रायटडगोपालं  
मलेय मंडलीकमृगशार्दूलं श्रीमद्भुव-
- ७ नैकमल्लदेवपादपंकजभ्रमरं श्रीमन्महामंडलेश्वरं लक्ष्मरसरु  
वेल्वोलमूनूरुमं पुलिगेरेमूनूरुमन्तेरडल्लूरु-
- ८ मं दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनेयिं प्रतिपालिसुत्तमिरे ॥वृ॥ अणुगाल्  
कार्यं शौर्यदाल् विजयदाल् चालुक्यराज्यक्के कार-
- ९ णमादाल् तुलिलाल्तनक्के नेरेदाल् कट्टायदाल् मिक्कमन्नणेयाल्  
मान्तनदाल् नेगल्ल्तेवडेदाल् विक्रान्तदाल् मेलदाल् रणदाल्-  
लदनेन-
- १० सुवावेडेयोळं विश्वासदोलु लक्ष्मण ॥ कलितनमिल्ल चागिगे  
वदान्यते मेय्गलिगिल्ल चागि मेय्गलियेनिपंगे शौचगुणमि-
- ११ ल्ल कर कलि चागि शौचिगं निले नुडिवोजेयिल्ल कलि चागि  
महाशुचिसत्यवादि मंडलिकरोलीतनेन्दु पोगलगुं बुधमद-
- १२ लि लक्ष्मभूपन ॥ कुटुरेय मेले थिल् परसु तोरिगे सुलिगे पिंदि-  
वालमेत्तिद करवालवादिंदुव कर्कडे पारुव चक्रमेन्दोदेन्तो-
- १३ दरुवरंन्तु पायिसुवरंन्तु तरुभुवरंन्तु निलपरंन्तोडरुवरंन्तु लक्ष्मण-  
नोलान्तु यहुंक्कपरन्यभूभुजर् ॥ एने ने-
- १४ गल्द लक्ष्मभूपति जनपतिभुवनैकमएउदेवादेदां तनगेमदिरे नादि-  
सिदं [ तिनशा- ]सनवृद्धियं प्रवर्धनमागलु ॥ आ चैत्याल-

- १५ यद् पूर्वावतारमेन्तेने ॥क॥ श्रीवसुधेशन चाव रेवकनिर्मडिय  
वल्लभं वृतुगनात्मावगतसकलशास्त्रनिलाविश्रुतकीर्ति
- १६ गंगमंडलनाथ ॥ वृ ॥ रूडिगे रूडिवेत्तेसेद वेल्वलदेशमनाल्द  
गंगपेर्माडिगलिन्दमण्णिगेरे नालकेरेवट्टेनिसिन्त नाड नाडा-
- १७ डिगलुं वमेंविनेगमा पुरदोलु जयदुत्तरग पेर्माडियिनाय्नु वृतुग-  
नरेंद्रनिनल्लि जि-
- १८ नेंद्रमंदिर ॥ वृ ॥ संगतमागे माडि तलवृत्तियनल्लिगे मूडगेरि  
गुम्मुंगोलनादियागे नेगल्दिट्ट-
- १९ गें गावरिवाडमेंव वाडंगल शासनं वेरसु सर्वनमस्यमिवेंदु विट्टु  
कोट्टं गुणकीर्तिपंडितगे मक्ति-
- २० यिनुत्तमदानशक्तिर्यि ॥क॥ उदितोदितमेने विभवास्पदमेने भुवन-  
यक्वन्धमेने संचलमागदे गंगा-
- २१ न्वयमुल्लिनमिट्टु सर्वनमस्यवागि नडेयुत्तमिरलु ॥ वृ ॥ परम-  
श्रीजिनशासनक्के मोडलादी मूलसंधं
- २२ निरन्तरमोप्पुत्तिरे नन्दिसंधवेमरिंदादन्वयं पेपुवेत्तिरे सन्दर्  
वलगारमुख्यगणदोलु गंगान्वयक्कि-
- २३ न्तिवर्गुरुगलु तामेने वर्धमानमुनिनाथर् धारिणीचक्रदोलु ॥  
श्रीनाथर् जैनमार्गोत्तमरेनिसि तप.ख्यातियं
- २४ ताल्दिदर सज्जानात्मर् वर्धमानप्रवरवर शिष्यर् महावादिगलु  
विद्यानन्दस्वामिगल् तन्मुनिपतिगनुजर् तार्किंका-
- २५ कर्माधिनाधीनर् माणिक्यनंदिप्रतिपतिगलवर शासनोदात्त-  
हस्तरु ॥ तदपत्यर् गुणकीर्तिपडितर् अवरर् तच्छास-

- २६ नख्यातिकोविदरा सूरिगलात्मजर् विमलचन्द्रर् तत्पादांभोजषट्-  
पदर् उद्यद्गुणचंद्ररन्तवर शिष्यरु नोडिशास्त्रा-
- २७ र्थदोलु विदितरु गण्डविमुक्तरिन्नभयनन्द्याचार्यर्योत्तमरु ॥  
वृ ॥ पोले चोलं नेलेगेद् तन्न कुल-
- २८ धर्माचारमं विद् बेलवलदेशकडिथिद देवगृहसंदोहगलं  
सुद् कथ्यले पाप बेलेदेत्ते-
- २९ नल्के धुरदोलु त्रैलोक्यमल्लगे पदलेयं कोदसुवं विसुद् निज-  
वंशोच्छित्तियं माडिद ॥क॥ श्रीपेर्मा-
- ३० नडि माडिसिदी परमजिनालयंगल पोलेवदिर्दा पाण्डयचोलनेव  
महापातकतिवुलनलिदधोगतिगिलि-
- ३१ द ॥ वृ ॥ बलिकी बेलवलदेशमं पडेद दंडाधीशसामन्तमंडलिकर्  
धर्मद बटेगेद् नडेयुत्तिर्दल्लि तज्ज मन-
- ३२ गोले कालीयगुणेतं कृतयुगाचारान्वितं लक्षममंडलिकं निर्मल-  
धर्मवत्तलेय नष्टोद्धारमं माडि-
- ३३ द ॥ ई नेलदोलु नेगरतेय पोगरतेय बाल्तेय पुण्यतीर्थ-  
सन्तानदोलिन्नविल्लेनिसि सद्दुद् दक्षिणगंगे तुंगभ-
- ३४ द्रानदि तन्नदीतटदोलोपुत्र कक्करगोण्डमेंविष्टानदोलुर्वराधिपति  
चक्रधरं नेलसिर्द वीडिनोलु ॥
- ३५ वृ ॥ शककाल गुणलब्धिरध्रगणनाविख्यातमागल् विरोधकृदम्बं  
बरे चैत्रमागे विपुवत्संक्रान्तियोलु पु-
- ३६ प्यतारके पूर्णागिरमागे चक्रधरदत्तादेशदि देशपालकचूडामणि  
धर्मवत्तलेयनत्युत्साहिर्दि

- ३७ माडिद ॥ क ॥ त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररनभिवंदिसि मक्तिरिंदे  
काल्गर्चिं जगत्प्रभुवनि वेसदिं लक्ष्मणत्रिभु
- ३८ कोटं हस्तधारेरिं शासनम ॥ वृ ॥ परडनूर वाडदोलगी जिन-  
गेहवे पूज्यमेंढक्करसर कां-
- ३९ के विल्दुवियसुंवलसुंवलिदायमादियागेरडरुवत्तु पोन्नरुवणं  
समकट्टेने माडि शासनं ।
- ४० वरैयिसि कोट्ट धर्मागुणम मेरेद नृपमेरु लक्ष्मण ॥ जिननाथा-  
वासमं वासवरितुनिभमं कष्ट-
- ४१ कालेयदुर्मावनेयि चांडालचोलं सुडिसि किडिसे विच्छित्तियागि-  
दुंदिं नेदने नष्टोद्धारमं शाश्वतमतिशय-
- ४२ माय्तेबितं माडि तच्छासनमाचंद्रार्कतारं निले निलिसिदं  
धन्यनो लक्ष्मभूपं ॥ अरसगं सेसेयेन्द-
- ४३ रसर काणिकेयेन्दु दायधर्मद तेरेयेन्दरुवणदिदगलमेन्दरेवीसम-  
नक्कि कौडवर् चांडालरु ॥
- ४४ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्दमहासामन्त भुजवल्लोपार्जित-  
विजयलक्ष्मीकान्त समस्तारिविजय-
- ४५ दक्षदक्षिणदोर्दण्डं कत्तलेकुलकमलमातण्डं मयूरावतीपुरवराधीश्वरं  
ज्वालिनीलब्धवरप्रसाद क-
- ४६ पूरवर्षं जिनधर्मनिर्मलं नेरेकटियककार नामादिसमस्तप्रशस्ति-  
सहितं श्रीमन्महासामन्त वे-
- ४७ ल्वलाधिपति भुजवल्लकाटरसरु ॥क॥ जगमेल्लं देसेगे कय्मुगि-  
गेम कोट्टरियनोन्दु कागिणियुम-
- ४८ ना गगनदोलिर्पादित्यं वगेदुदनित्तपने वेल्वलादित्यन वोलु ॥  
इन्तेनिसिद् वेल्वलादित्य सक्वर्षं ९९४ ने

- ४९ य परिधाविसंवत्सरद पुण्यसुद्ध पंचमि बृहस्पतिवारदंद अणिण-  
गेरेय गंगपेर्माडिय वस-
- ५० दिव्य दानसालेगविलगालव गावरिवाडद तम्म सिवटद मत्तर-  
खत्तुमन् अण्डिगेरेयोलु क्रयविक्रय-
- ५१ दिं यल्लियाचार्यरु त्रिभुवनचन्द्रपंडितर कालं कर्चि धारापूर्वकं  
माडि विट्टु कोट्टरु ॥
- ५२ स्वस्ति समस्तविनमदमरमकुटतटवन्तिशोणमाणिक्यमौक्तिक-  
मयूखकुंकुमलयजाभ्यर्चि-
- ५३ तश्रीमदर्हत्परमेश्वरप्रणीतपरमागमविशारदरुमनवरतपरमागमो -  
पदेशप्रसगरुमप्य श्रीमदु-
- ५४ दयचन्द्रसैद्धान्तदेवर दिव्यश्रीपादपद्माराधकरं श्रीमत्बलात्कारग-  
णांबुजसरोवरराजहरुमप्य श्री-
- ५५ मत्तमकलचंद्रदेवरु श्रीमद्राजधानीषट्ठणमणिणगेरेय महास्थानं  
श्रीमद्गंगपेर्माडिय वस-
- ५६ दिगालव ग्रामादि वाडदलु याचार्यरं चवुडगावुडमुख्यवागि  
हेगडे सहित मूवत्तु मनुष्य-
- ५७ देवपुत्रगै कोट्ट वृत्तिय क्रम ॥ चंडव्वेय मगं हेगडे मल्लय्यनु  
यादिनाथस्वामिगेयल्लियाचा-
- ५८ रियगै बेसकेय्दुव वृत्ति मत्तर (प)न्नेरडु केतगावुड याचार्यगै पाद-  
पूजेयं कोट्टु
- ५९ तम्म सेनगणद यसदिगे हूलिगोलद सीमेडिट्टु कुलुपल्लदिं  
पडुवलु मत्तरेट्टु यरुवणं गद्याण
- ६० नाल्कारिदिधिक कोडवर् चांडालरु ॥ एममेय केति सेट्टिय साम्यक्के  
मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं ना-

- ६१ ल्कु कणविय सेट्टिय वम्मि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कत्ते-
- ६२ य दारि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु हव्वेय देवि सेट्टिय
- ६३ साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु गोलिय चवुडि सेट्टिय साम्यक्के मत्त-
- ६४ रेंट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु रुड्डुलिय संकि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने
- ६५ वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु कंदल मल्लि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं
- ६६ नाल्कु मत्तलव्वेय पुत्ररु चण्डि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु माध-
- ६७ वसेट्टिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं नाल्कु

[ इसी तरह ८३वी पंक्ति तक वयसर वोप्पि सेट्टि, नेमिसेट्टि, गोखर वम्मि सेट्टि, मयिलि सेट्टि, गोखर वोसि सेट्टि, चंदि सेट्टि, एम्मेयर चवुडि सेट्टि, होय्मर चवुडि सेट्टि, केल्लर गोरवि सेट्टि, तालवम्मि सेट्टि, कडवर देवि सेट्टि, मचल वोसि सेट्टि, वेणिल मल्लि सेट्टि, वेण्णेय नालि सेट्टि, दोडुर केति सेट्टि, मजडिय येचि सेट्टि, गडि सेट्टि, मुरियर कलि सेट्टि, वयसर वसवि सेट्टि, नूति सेट्टि, चिक्कि सेट्टि, इनके वारेमें निर्देश है ।]

- ८३ नाल्कु चिक्कि सेट्टिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याण नाल्कु यिन्ती देवपुत्रिकरोलगे याव-
- ८४ नोर्वनु धम्मैक्कं याचार्यगं विरोधियागि राजगामित्वं माड्ढिदन-  
प्पडे वृत्तिच्छेदसमयवाह्य ॥
- ८५ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महाप्रधान वसुधैकवान्धवं  
श्रीरेचिदेवदडनाथ वट्ठकेरे-

- ८६ य श्रीकलिदेवस्वामिजिनश्रीपादाचर्चनेगे कर्पूरकुंकुमश्रीगंधसहित  
यष्टविधार्चनेगे
- ८७ कोट केयियरकरेयिं मूडलु मत्तर् पन्नेरडुम याचार्यरुं देवपुत्रि-  
करुं सर्वाबाधप-
- ८८ रिहारवागि प्रतिपालिपरु ॥ दक्षिण ऐयावोलेयुमप्प ग्रामादिं  
वाडक्के श्रीगंगपेर्माडि-
- ८९ य बसदिय पुरद मर्यादेय चले मूवत्तेदु गेणु हस्त वेगोल्लदंगे  
वृत्ति सत्तलदु ॥ वर्धतां जिनशा-
- ९० सनं ॥
- ९१ गगासागरयमुनासगमदोलु बाणारसि गयेयेम्बी तीर्थगलोलात्म-  
कुलद्विजपुंगवगोकुलमनलिदरिन्तिदनलि-
- ९२ दरु ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां । षष्ठिवर्षसहस्राणि  
विष्टायां जायते कृमि ॥
- ९३ याचार्यर येष्टटिगनागि बेसकेय्दुव वृत्ति कुरिबर केते
- ९४ न्दु ॥ याचार्यरु चबुड गवुडन हेसरिदुदक्के मूगवाड रन....
- ९५ लद सीमेयलु कोट वृत्ति मत्तरु वौंदु यदु हांलगेरे ॥

[ इस बृहत् शिलालेखके चार भाग हैं । पहले भागमे (पक्ति १-४३) अण्णिगेरे नगरके गंगपेर्माडि जिनमन्दिरका वर्णन है । यह मन्दिर रेवकनि-  
र्मडिके पति वृतुगके स्मरणार्थ बेल्वल प्रदेशके शासक गंगपेर्माडिने<sup>१</sup> बन-  
वाया था तथा उसने उसे मूडगेरी, गुम्मुंगोल, इट्टगे और गावरिवाड ये  
चार गांव दान दिये थे । यह दान मूलसघनदिसघ-वलगार गणके गुणकीर्ति  
पण्डितको दिया गया था । गुणकीर्तिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी—गंग

१ रेवकनिर्मडि राष्ट्रकूट सम्राट्कृष्ण ( तृतीय ) की बहन थी जो गंग राजा  
वृतुगको न्याही गयी थी । गंग पेर्माडि इनके पुत्र मारसिंह ( तृतीय ) ( सन् ६६०-  
७४ ) अथवा पौत्र राजमल्ल ( चतुर्थ ) होंगे ।



वंशके गुरु वर्धमान - विद्यानन्द स्वामी - उनके गुरुवन्द्यु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि - गुणकीर्ति - विमलचंद्र - गुणचन्द्र - गण्डविमुक्त - उनके गुरुवन्द्यु अभयनन्दि । कालान्तरसे चोल राजाने वेल्वल प्रदेशपर आक्रमण किया<sup>१</sup> तब इस मन्दिरको नष्ट-भ्रष्ट किया किन्तु शीघ्र ही इस चोल राजा-को अपने पापका प्रायश्चित्त करना पडा क्योंकि चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्य-मल्ल सोमेश्वर ( प्रथम ) द्वारा वह युद्धमें मारा गया ।<sup>२</sup> तदनन्तर वेल्वल प्रदेशके कई शासक हुए जिनने इस मन्दिरकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया । चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर ( द्वितीय ) के समय वेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशका शासन महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसको सौंपा गया । उसने इस मन्दिरका जीर्णोद्धार किया तथा उसके लिए मुनि त्रिभुवनचन्द्रको समुचित दान दिया ।<sup>३</sup> इस दानकी अनुज्ञा देते समय सम्राट् सोमेश्वर तुंगभद्रा नदीके तीरपर कक्करगोडके सेनाशिविरमें थे तथा शक ९९३ वर्ष चल रहा था ।

इस शिलालेखके दूसरे भागमें वेल्वलके अगले शासक काटरसका उल्लेख है जो मयूरावती नगरका स्वामी था । तथा ज्वालिनी देवीका उपासक था । इनने उपर्युक्त मन्दिरको शक ९९४ में कुछ दान दिया । यह दान भी त्रिभुवनचन्द्रको दिया था ।

तीसरे भागमें इस मन्दिरके व्यवस्थापक उदयचन्द्रके शिष्य सकलचन्द्रका उल्लेख है । इनने मन्दिरकी जमीन जोतनेके लिए मल्लव्य आदि तीस श्रेष्ठियोको सौंपी थी ।

चौथे भागमें महाप्रधान रेचिदेव - द्वारा बट्टकेरे नगरके जिन तथा कलिदेवकी पूजाके लिए कुछ जमीन दान दिये जानेका उल्लेख है ।

१. यह राजा चोल राजाधिराज होगा । ( सन् १०१८-५२ )

२. यह युद्ध सन् १०५२ के आरम्भमें हुआ था ।

३. पूर्वोक्त गुरुपरम्परासे त्रिभुवनचन्द्रका सम्बन्ध अगले लेखमें स्पष्ट किया है ।

यह शिलालेख अन्तिम रूपसे सन् ११५० के करीब लिखा गया होगा । ]

[ ए० इ० १५ पृ० ३३७ ]

१५५

### अण्णिगेरि ( मैमूर )

शक ९९३-६४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

[ यह लेख अक्षरश गावरवाड लेखके पहले दो भागो-जैसा ही है—सिर्फ चार श्लोक इसमें अधिक हैं । यथा— (१) मगलाचरणमे—जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने । नयप्रमाणवागूरश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ (२) महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसके वर्णनमे—मले यंतो (ट्ट) लतुलिदं मलेयोल् मारमलेव मलेपर मगिसिदं मलेयेलु कोर्पिदुमनलेदं जलनिघियोर्ले प्रतापियो लक्ष्म ॥ (३-४) गुणकीर्ति पण्डितकी शिष्य परम्पराके वर्णनमें—कृतकृत्यरभयनन्दिगल तनूजर् सकलचन्द्रसिद्धान्तिकरप्रतिमर् सर्वागमलान्वितगण्डविमुक्तदेवरा मुनिशिष्यर् ॥ एनिसिद गण्डविमुक्तर तनूभवर् चरणकरणपदविद्यापावन मन्त्रवाददो त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररत्ते बुधजनवन्द्यर् ॥ इससे अभयनन्दि - सकलचन्द्र - गण्डविमुक्त - त्रिभुवनचन्द्र इस परम्परा का पता चलता है । इस लेखमें गावरवाड लेखके अन्तिम दो भाग नहीं हैं । अतः प्रतीत होता है कि यह शक ९९४ में ही खुदवाया गया होगा । ]

[ ए० इ० १५ पृ० ३४७ ]

१५६

### हैदराबाद म्युजियम ( आन्ध्र )

स० ११ (२) ८ = सन् १०७२, सस्कृत-नागरी

[ इस मूर्तिलेखमें वीतरागकी उपासिका रावदेवी-द्वारा देवागना तथा क्षोणीपतिकी मूर्तियोंकी स्थापना किये जानेका उल्लेख है । समय संवत्

११ (२) ८ है। इसका तीसरा अंक कुछ अस्पष्ट है। ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५३ ]

१५७

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक ९९६ — सन् १०७४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लके समय चैत्र शु० ८, रविवार आनन्द संवत्सर, शक ९९६के दिन लिखा गया था। मणल कुलके महासामन्त जयकेसियरसने पुरिगेरेके पेर्माडिवसदिके दर्शन किये तथा मूलसंघ-बला-त्कारगणके गण्डविमुक्त भट्टारकके शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पण्डितके निवेदनपर उसे पुरके रूपमे परिवर्तित किया ऐसा इसमे उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० २९ पृ० १६३ ]

१५८

हनगुन्द ( मैसूर )

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव सोमेश्वर (२) के समय पौष शु० ५, रविवार, शक ९९६, आनन्द संवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था। इसमें सूरस्तगण-चित्रकूटान्वयके अरुहणंदि-भट्टारकके शिष्य आर्यपण्डितको पोन्नूगुन्दकी अरसर वसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान श्रीकरण देवणय्य नायक, पेर्गडे नाकिमय्य, पेर्गडे रेवणय्य, करण आय्चप्पय्य, तथा पसायित कार्टि-मय्यने सर्व प्रधानोद्दारा की गयी जिन पूजाके अवसरपर दिया था। उस समय वेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशोपर महामण्डलेश्वर संग्रामगरुड लक्ष्मरस का शामन चल रहा था। ]

[ मूल कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० १११ ]

१५६

सोमापुर ( धारवाड, मैसूर )

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा भुवनैकमल्लके समय शक ९९(६), आनन्द सवत्सर, पुष्य शु० ५, बुधवारका है । इसमें किसी सेट्टि-द्वारा एक जैन वसदिको दिये गये दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० ७७ पृ० १२६ ]

१६०

लक्ष्मेश्वर ( मिरज, मैसूर )

शक ९९९-१००० = सन् १०७७-७८, कन्नड

[ इस निषिधिलेखमें सूरस्थ गणके श्रीनन्दि पण्डितदेव तथा उनके बन्धु भास्करनन्दि पण्डितदेवके समाधिमरणका उल्लेख है । पुरिकर नगर ( लक्ष्मेश्वर ) के आनेसेज्जेवसदिमें इन्होंने सल्लेखना ली थी । मृत्युतिथियाँ क्रमशः आपाठ शु० १२, बुधवार, पिंगल सवत्सर, शक ९९९ तथा चैत्र अमावास्या, रविवार, कालयुक्त सवत्सर, शक १००० इस प्रकार दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ६ पृ० १६१ ]

१६१

अक्कलकोट ( सोलापुर, महाराष्ट्र )

चालुक्यविक्रमवर्ष ४ = सन् १०५८, कन्नड

[ इस लेखमें एक जैन मठके लिए कुछ उद्यान, भूमि आदिके दानका उल्लेख है । तिथि पुष्य व० २, रविवार, उत्तरायण सक्रान्ति, सिद्धार्थि संवत्सर, चालुक्य विक्रम वर्ष ४ ऐसी दी है । ( वस्तुतः उस वर्षका नाम कालयुक्त सवत्सर था । ) चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य ६ के समयका यह लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ९६ पृ० ३५ ]

१६२

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८०, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लके राज्यवर्ष ६, पुण्य व० (६) गुरुवार, दुर्मतिसंवत्सरका है। इस समय महामण्डलेश्वर जोयिमय्यरसकी पत्नी नाविकव्वेने कोण्डकुन्देयतीर्थमें चट्टिजनालयका निर्माण किया तथा उसे कुछ भूमि दान दी थी। ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६५ पृ० ५५ ]

१६३

अलनावर ( धारवाड, मैसूर )

शक १००३ = सन् १०८१, कन्नड

[ यह लेख शक १००३ का है। कदम्ब राजा गोवलदेवके समय अलनावरके जैन बसदिके लिए नरसिगय्य सेट्टि द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४७० पृ० ७८ ]

१६४

वनवासि ( मैसूर )

सन् १०८१, कन्नड

[ यह लेख कादम्बचक्रवर्ति वीरमके राज्यवर्ष १२, दुर्मति संवत्सरमें कार्तिक कृ० ५, सोमवारके दिन लिखा गया था। इसमें तिप्पिसेट्टि सातय्य की पत्नी भोगवेके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु देसिगण - पुस्तक-गच्छ - कुण्डकुन्दान्वयके सकलचंद्रभट्टारक थे। ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० १४३ पृ० १७२ ]

१६५

## लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८१, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्जनं(१)जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥
- २ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परममहारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्या-
- ३ मरणं श्रीमत्त्रिभुवनमल्लदेव ॥वृत्त॥ धरेयं चाराशिपर्यन्त-  
मनवयदिं दुर्विनीतावनीपालर बेरं कित्तुं नीरोल् गलगलनलेदी-
- ४ डाडि मुञ्चिन्तु चक्रेश्वररार् निष्कंटकं माडिदरेने महि निष्कंटकं  
माडि चक्रेश्वररत्नं सन्ततं पालिसिद्धनतिबलं विक्रमादित्यदेवं ॥२॥  
अन्तु श्रीम-
- ५ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रवर्धमानमा-  
चंद्रतारं सलुत्तमिरे ॥ तदनुजं स्वस्ति समस्तभुवनसस्तूयमान  
लो-
- ६ कविख्यातं पल्लवान्वयं श्रीमहीवल्लभ युवराज राजपरमेश्वरं  
चीरमहेश्वरं विक्रमाभरणं जयलक्ष्मीरमणं शरणागतरक्षामणि  
चालु-
- ७ क्यचूडामणि कदनत्रिनेत्रं क्षत्रियपवित्रं मत्तगजांगराजं सहज-  
मनोजं रिपुरायसुरेकारनणनंककारं श्रीमत्त्रैलोक्यमल्ल
- ८ वीरनोलव पल्लवपेर्मानडि जयसिंहदेव ॥वृत्त॥ परचक्र-कालचक्र  
नलनहुषनृगाद्यादिभूपालकालोचरित चालुक्य-चूडामणि  
सहजमनोजं नतारा-

९ तिभूमीश्वरसंवातोत्तमांगामरणमणिगणज्योतिरुत्तंसमास्वच्चरणं  
सामान्यने भूपरोलपगतविद्विट्कदंवं नोलंब ॥ ३ वचन ॥  
एनिसिद् पोगल्लेगं नेगल्लेगं नेलेये-

१० निसि ॥क॥ अरसुगुणंगल मेय्वेत्तिरं पगे मिगदिरे जनानुरागं  
पिरिटागिरे कीर्तिलतिके निमिरुत्तिरं वीरनोलवन-वनतारिकदंवं  
॥४ व॥ एरड्डु[ मू ]नूरुमं वनवासेपनिर्छासिरसु-

११ मं सान्तलिंगेसासिरमुमं कंठूरू सासिरमुमं सुखसंकथाविनोददि  
प्रतिपालिसुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजोवि । समधिगतपंचमहाशब्द  
महासामन्ताधिपतिं महाप्र-

१२ चण्डण्डनायकं रिपुमस्तकन्यस्तसायकं साहित्यविद्यांगनाभुजंग  
सरस्वतीमुखकमलभृंगनाराधितहरचरणस्मरणपरिणतान्त.करणं ।  
सरस्वतीकर्णामरणं

१३ श्रीमन्महाप्रधान मनेवेगंडे ण्डनायकनेरेयमय्यं ।कंड॥ सकल-  
कलाग्रहं ब्रह्मकुलार्कं वत्यगोत्रगत्नाकरशीतकरं किरियने भुवन-  
प्रकरदोल-

१४ रिमृत्युभूपनेरेगचमूपं ॥ ५ वृ ॥ एलेयोलु सादृश्यमप्यंदेरेगविभुगे  
विण्पिगे गुण्पिगे तिण्पिगेले पारावारभिद्राचलमवसुराणि रामनि  
कृणानि संचलम—

१५ श्लिष्टगंभीरसुमगुच्छुयागिल्दुवारय्ये वेरोडले वेरोन्डुत्थि वेरोन्ड-  
निमिपनगमेत्तानुमुंटप्यो डवकुं ॥ ६ कंड ॥ परिकिपोडे हस्ति-  
मशकान्तरमेनिपुट्टु तन्न

१६ गुणद नेगल्लेर गुणदन्तरमेने गुणेपु को मत्तर एंव बुधोक्त पुरेग-  
विभुगे ग्दुक्कं ॥ ७ सडमलकीर्तिवल्लरि दिशान्तरमं तेरपिल्ल-  
दन्तु पर्विदुट्टु पराक्रमं

- १७ ....समित्दुदु विणपेषमाणवाह्यमादुदु चरितं शिखापदमनेय्दुदु-  
 दार्पिन सूनु मत्ते पुट्टिदनेनिपन्तुटाय्तेरिगनुन्नतियं पोगलल्  
 समर्थरार् ॥ ८
- १८ पुनिसिल्दी ख्याति विख्यातिगे सलुतिरे सन्तं बसन्तं तदीया-  
 वनिगेंबुद्धानि पेत्तुत्तिरे पुलिगेरेमूनूर्म्मं स्वामिसंपत्तिन पेंपं ताल्दि  
 कैकोण्डनुमवि—
- १९ सुत्तमौदार्यादिं सत्यदिं कर्णंनुमं मिक्कुत्सवंपेत्तिरलेरेगचमूपं  
 बलौद्रराज्यस्वरूपं ॥ ९ कंद ॥ तदनुजनपरिमित गुणास्पदनेसेदं  
 भुवनवुंभुकं सुरप—
- २० तिसंपदनतुलभुजबलं परसुदतीप्रकरप्रसूनबाणं दोणं ॥१०॥  
 कलितनदोल् कुरुकुलसंकुलमथनन तम्मननुपमानाकृतियोल्  
 बलदेवन, तम्मं भुजबल—
- २१ दोल् यमसुतन तम्मनेरेगन तम्म ॥ ११ ॥ पुरेगनडिमोदलो-  
 लरिनृपररेगिदोडदनरियेनैरगदिरल्लंबोटागेरगिसुगुं गृध्रादि गलेरे-  
 गल् पत्तिकार्यं—
- २२ मरधुरीणं दोणं ॥ १२ वृत्त ॥ केणमुदारदोल् कोरटे सजन-  
 वृत्तियोलेगु शीलदोल् काणले बारदेंदोडे पेरर् समनप्परे मार्त्य-  
 लोकदोल् दोणनो
- २३ लगनाकुसुमबाणनोलिष्टविशिष्टसकुलत्राणनोल् अञ्जसंभव-  
 समानसमस्तकलाप्रवीणनोल् ॥ १३ परमाप्तस्वामीदेववं पशुपति  
 जितविद्विट्कदवं नोलंबं
- २४ पोरेदाल्द तदे शुंमत्तरगुणगणादिं मिक्क तिक्कं विभास्वच्चरिता-  
 लंकारे कल्वविके जननि तदीयाग्रजं दण्डनाथोत्कररत्नं रूढिवे-  
 त्तिल्लदेरकपनेने दोणं जसक्किक्केदा-



- २५ णं ॥१४ (ई) कलिकालदोल् विषमकालदोल् उब्बटेयाय्तु धर्म-  
रत्नाकरनेविर्न पलवु कालदिनीक्षिसलाहुदिंतु कोल्पोकुमे धर्म-  
मेन्दोसेट्टु तन्नन कौतुकमागे मे-
- २६ दिनीलोकमशेषमोंदे कोरलोल् पोगलल् पडिचंदमप्पिनं ॥१५  
कमनीयक्रमविक्रमाब्दततिषट्कं दुर्मतिप्राब्द पुष्यमशुक्लं  
भृगुषष्टियोप्पलवरोल् कूडलु
- २७ व्यतीपातमेंत्र महायोगमुमुत्तरायणमहासंक्रान्तिंतुं मानवो-  
त्तमनन्दुज्वलकीर्तिं दोणनुरुधर्मत्राणनुत्साहदिं ॥१६ कंद॥ परम-  
जिनसमयरत्ना-
- २८ करहिमकरमूलसघसंभवशोभाकरसेनगणनम स्थल- सरसिजवान्ध-  
वर सितयश श्रीधवर ॥१७ वरमुनिपर विनतक्षितिपर निरवधर  
नरेद्रसेन-
- २९ त्रैविधर पादप्रक्षालनपुर सर दिव्यपुरदोली पुरिकरदोल् ॥१८  
चाट्ट कातंत्रं जैनेद्रं शब्दानुशासनं पाणिनि मत्तैद्रं नरेद्रसेनमु-
- ३० नीद्रंगेकाक्षरं पेरंगिवु मोग्गे ॥१९ अवरग्रशिष्यं॥ निनगेनेबेनो  
शाकटायनमुनीशं ताने शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीय-  
दोलु चांद्रं चांद्रदोलु तज्जिनेद्र-
- ३१ ने जैनेद्रदोला कुमारने गडं कातंत्रदोल् पोल्परन्तेने पोल्  
नयसेनपण्डितरोलन्यर् वाधिवीतोवियोल् ॥२० सरसतिथं  
मनोमुदडे ताल्दिदनेन्ननवज्ञेयेय्दनानिरेनवलिके चि.-
- ३२ मवतियोल् पुटुवाल्बुट्टु कष्टमेन्दु निष्ठुरवचनंगलं जुडिदु  
दिव्करियं परिदेरि कीर्तिं तां पुरुडिसि दूरिपल् वरतपोनिधियं  
नयसेनसुरियं ॥२१ अवरग्रशिष्यर् ॥ नत्तभू-
- ३३ पेंद्रकिरीटताडितपदाभोजद्वयं नूतनप्रतिमाभारवि नारहार-

हरहासाकाशनीहारविश्रुतकीर्तिप्रमदाननाब्जमुकुरं हा बाप्पु  
सामान्यमे श्रुतवाराशि नरेन्द्र-

३४ सेनमुनिपं त्रैविद्यचक्रेश्वर ॥२२ जितविद्विष्टप्रतापान्वितदिनधिक-  
शौर्यत्वदाटोपदिंदूर्जितमास्वज्जैनधर्मापितदृढमतिर्यिं विप्रवंशां-  
वराहर्षतियेवोदुद्घतेजस्तवदिननु-

३५ लबलैश्वर्यादि त्यागदोदुन्नतिर्यिंदं सत्यदिंदं दिनकरनतिशोभाकरं  
पुण्यपुंज ॥२३ दिनकरनोदयदोल् तममनितुं तूल्दोडुवन्ते  
मिथ्यात्वतमं दिनकरनुदयिसे निजकुल-

३६ वनदि तूल्दोडि किडुवुदें विस्मयमे ॥२४ आतन तनयर्  
जनविख्यातर् जिनपदपयोजभृंगर् विनयान्वितरेने नेगहृदर-  
खिलक्षमातलदोल् राजिमय्यनुं दूढमनु ॥२५ वृत्त॥

३७ जिनपादांभोजभृंग सुजनजनमनोरजन विश्वधात्रोविनुतं दिग्द-  
न्तिदन्ताश्रितविशदयशोभासि शिष्टेष्टकल्पावनिज सत्पात्रदाना-  
धिकनेनुते मनोरागदिं कृत्तुं विद्वज्जनमे-

३८ ल्ल वणिणकु राजननमललसत्तेजन निच्चनिच्च ॥ २६ मनुमुनि-  
मार्गनेम जिनपूजेयोर्लतिंगनेदु दानियेदनुपमतेजनेदु शुचियेदु  
दयापरनेदु निच्चलुं मनमो(से)-

३९ दक्करिं बिडडे वणिणसुगु जगमेय्दे कूडे राजननिनतेजनं पसुगे  
गोजननाश्रितकल्पभूजन ॥ २७ तत्प्रियानुजन शौर्यदलवं  
पेल्वडे ॥ कडुपिन्द

४० धरणीश्वर वेससे चौरासीशनं बन्दियं पिडिदं साहसदिन्दमं  
मुगेयनिन्दोर्वाशन कोपदिं पिडिदुख्दा सेरंयिट्ट सोमननत्याश्चर्यदि  
बन्दिय पिडि

४१ दं तानेने शौर्यदोन्दलवदें सामान्यमे दूडन ॥ २८ निजपत्तियं

सेरेविडिदोडे भुजबलदि बन्दिविडिट्टु विडिसिदनेन्दी त्रिजगं  
वण्णिसुगु सद्दिजकुलन शौर्य-

- ४२ शालियं दूडमन ॥ २९ इन्तेनिसिद दूडन वरकान्ते मनोभवन  
कान्तेग रूपिनोलत्यन्तं मिगिलेने पोगलल्केन्तु नेरेयरियर्  
एचिकव्वेय रूप ॥ ३० अन्तवरगं पुट्टिदल् सुरका-
- ४३ न्तोपमे विचलदलिकुलालके विलसन्मान्तनसमेते बुधजनचिन्ता-  
मणि हम्मिकव्वे ललनारत्त ॥ ३१ आ नेगल्द हम्मिकव्वेगनून-  
प्रियवत्तलभं मनोभवरूपं दानढेडे-
- ४४ गन्दिना कानीनन वोल् नेगल्दनरसिमय्य जगदोल् ॥ ३२  
अनुपमदानशीलगुणभूषणभूषितेयाद् हम्मिकावन्तिगसत्युदार-  
हरसय्यमहाविभुगं चिनी-
- ४५ तनोल्पिन कणि वैद्यशास्त्रकुशलं सुजनाग्रणि वैद्यकन्नपं तनय-  
नेनल्के नोन्तनेन कन्नन वोल् कृतपुण्यनावनो ॥ ३३ जिनपद-  
पकजभ्रमरनिन्दपनुद्घुणाब्धियीश्वरं वि-
- ४६ नयविलासि राजि सुजन कलिदेवनगण्यपुण्यवर्धनकरनादिनाथ-  
नधिक शुचि शान्ति नेगर्त्तेत्त पार्श्वनुमिवरात्मजातरेने कन्नन  
वोल् कृतपुण्यनावनो ॥ ३४

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) त्रिभुवनमल्लके छठवें वर्षमें अर्थात् सन् १०८१ मे लिखा गया था। उस समय वेल्वोल, पुलिगेरे, वनवासि, सान्तलिगे, तथा कण्डूर प्रदेशोपर सम्राट्के पुत्र जयसिंह शासन कर रहे थे। इन्हें त्रैलोक्यमल्ल, वीरनोलम्ब, पल्लवपेर्मानिडि ये उपाधियाँ दी हैं। इनके अधीन महासामन्त एरेमय्य पुलिगेरे प्रदेशका अधिकारी था। इसे एरेग या एरेकप भी कहा है। इसका बन्धु दोण था जिसकी लेखमें बहुत प्रशंसा की है। इसने मूलसध-सेनगणके नरेन्द्रसेनके प्रशिष्य

तथा नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन ( द्वितीय ) को पौष कृष्ण ६, शुक्रवार, उत्तरायणसक्रान्तिके अवसरपर कुछ दान दिया । इसके बाद लेखमें दिनकर, उसके पुत्र राजिमय्य तथा दूडम, दूडमकी पत्नी एचिकव्वे तथा पुत्री हम्मिकव्वे, हम्मिकव्वेका पति अरसय्य तथा पुत्र वैद्य कन्नप एवं कन्नपके पुत्र इन्दप, ईश्वर, राजि, कलिदेव, आदिनाथ, शान्ति, एव पार्श्वका वर्णन है । सभवत इन लोगोकी प्रार्थनापर दोगने उक्त दान दिया था । ]

[ ए० इ० १६ पृ० ५८ ]

१६६

अरसीबीडि ( विजापुर, मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष १० = सन् १०८५, कन्नड

[ इस लेखकी तिथि आषाढ शु० १, बुधवार, शोधन सवत्सर, चालुक्य वर्ष १० ऐसी है । इस समय सुकवेर्गडे मन्तर वर्मणने विक्रमपुर ( वर्तमान अरसीबीडि ) स्थित गोणद बेडगि जिनालयके ऋषि-अर्जिकाओ-को आहारदान देनेके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान दिया था । सिन्द वशके सिन्दरसके पुत्र वर्मदेवरसके अधीन प्रान्तीय शासकके रूपमे सुकवेर्गडे नियुक्त था । ]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २३९ ]

१६७

मरुत्तुवक्कुडि ( तजोर, मद्रास )

तमिल, सन् १०८६

[ यह लेख ऐरावतेश्वर मन्दिरके आगे मण्डपकी दक्षिणी दीवालपर है । त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तु ग चोलदेव, जिमने मद्रुरा जीतकर पाण्ड्य

राजाका शिरच्छेद किया था—के १६वें वर्षमें यह लेख लिखा गया था । इसमें जननाथपुरम्के दो जैन मन्दिर चेदिकुलमाणिकक पेरुम्बल्लि तथा गंगरुलसुंदर पेरुम्बल्लिका उल्लेख है । ]

[ ३० म० तंजोर १००३ ]

१६८

दोणि ( धारवाड, मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष २० = सन् १०९६, कन्नड

[ यह लेख फाल्गुन शु० १३ गुरुवार, चालुक्यविक्रम वर्ष २० के दिन लिखा गया था । सम्राट् त्रिभुवनमल्ल ( विक्रमादित्य पष्ठ ) के राज्यका यह लेख है । इस समय यापनीय सघ-वृक्षमूल गणके मुनिचन्द्र त्रैविद्य भट्टारकके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको सोविसेट्टि द्वारा एक उद्यान दान दिया गया था । ]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० ड० ड० ११ पृ० १६९ ]

१६९-१७०

तुम्बदेवनहल्लि ( मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष २१ = सन् १०९६, कन्नड

- १ श्रीमदरेयंगदेवर असव्वर(सि)माडिसिद वसदि मंगल महा श्री
- २ स्वस्ति समस्तसुरासुरमस्तकमणिमकुटरश्मिरंजितचरणप्रस्तुत-  
जिनेन्द्रशासन-
- ३ मस्तु चिरं सकलमव्यचन्द्रजनाना ॥(१) मद्रमस्तु जिनशासनाय  
समद्रतां प्रति-
- ४ विधानहेतवे अन्यवादिमद्रहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटी-  
यसे ॥(२)

- ५ जयवर्म मुददिन्दं इत्तु नियतं पट्टल्लिगेयं राज्यलीलेयिनाल्-  
दुन्नतिरियं मनं-
- ६ गोलिसि विद्विष्टप्रजक्केय्दं भीतियनित्तायमनप्पुकेय्दु चलमं  
कैकोण्डु लोकप्रसि-
- ७ द्वियुतं माडिदनावगन् निले कदम्बाम्नायविख्यातियं ॥(३)  
श्रीमत्कदम्बवंशललामा-
- ८ वनिनाथरोलगे रणकिक्षितिप भीमपराक्रमनेनिसिदनी महियोल्ल  
अरातिनृपजयोद-
- ९ यद्विदं ॥(४) आतन, मगनमल्लगुणोपेतनतिप्रबलजलदघनपवन-  
नेनिप्पाततय-
- १० शोविलासविनूततेगेडेयागि नेगल्द कलि ह्दुवचुपं ॥(५) तत्त-  
नेयनतुलत्रलनुद्वित्तरिपु-
- ११ क्षितिपकुधरवज्रं धीरोदार्तनेने नेगल्दनकुटिलचित्त पोचायिनूत-  
पूत वृत्त ॥(६)
- १२ आतगे पुट्टि बलवदरातिमहीभुजरनिरिदु गेल्दर्मिनोलुवीतलमे  
पोगले तोरिदनात-
- १३ तसित्तकीर्ति नोसलक्षणं चिण्ण ॥(७) एने नेगल्द चिण्णनृपतिग  
अनवद्यलतांगि सुग्गियट्टवरसिग-
- १४ सुर्विनदोसगे पुट्टे पुट्टिद तनेयनतिप्रकटविशदयशनेरेयग अक्कर  
नेगल्द नृ-
- १५ परत्तनाल्वरनेवेट्टे भीतियिं वन्दु पोगले तन्ननवर पट्टियोडेयनं  
पेरगिक्कि काट्टुनिन्दाल्वरनं वगेयद-
- १६ आन्तरिसेनेयनोडिसि गेल्दर्मिनेसकटिं सिन्धुजंगं मिगिलुदग्र-  
वलावलेपनं भुजादण्डनी नन्निसातण्डदेव ॥(८)
- १७ मलेडिदिरनान्त चोलिकवल्लमेत्तटोढान्तुमडिरदरेयंगन दोवंल-  
दल्लवनेवोगल्लुट्टो जक्कलदेवननेय्दे

१७१

हनगुन्द ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[ इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव ( विक्रमादित्य पष्ठ ) का उल्लेख है । तिथि शक ९० दी है । मूलसंघ-देशीय गण-पुस्तक गच्छ-कुन्दकुन्दान्वयके ( इन्द्र )णदिके शिष्य बाहुवलि आचार्य द्वारा एक जिन-मन्दिर बनवानेका तथा उम मन्दिरके लिए कुछ भूमिदान प्राप्त करनेका इसमें उल्लेख है । ]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० ड० इ० ११ पृ० १४१ ]

१७२

तोललु ( मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

- १ स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर ' त्रिभुवनमल्ल तलका-  
 २ कमाडि विट्टन्दु ३ नडसुविरि  
 ४-७ ( ये पंक्तियाँ घिस गयी हैं )  
 ८ स्वस्तिश्रीमनु तोललु यसद्रिगेनाडु ... ९ ...  
 १० टिरिय सुद गनुण्ड ' 'गनुण्ड विलग  
 ११ चुण्ड वूलुवनड'...'चुण्ड वूर्यवर् ओक्कल  
 १२ '...'वत्तराण संक्रान्तियन्दु नविल्ल-  
 १३ रं नेमिचन्द्रपण्डितगे धारापूर्वकं माटि कोट्टु आ-  
 १४ नविल्लगोलगे भावनागि-वट्टुकुववनु'...'हण  
 १५ वेन्दु दिटिमिदव' 'हन्नेन्दु  
 १६ तत्येयं नरकटन्निःश्लिवरु गंगेयतट्टियलि कविले-

१७ यं ब्राह्मणरं नोय्सिद फलमन् पुरन्दुरु

१८ स्वदत्ता परदत्तां वा यो हरेत वसुधरां ष-

१९ छिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ।।

[ इस लेखमें तोललके जिनमन्दिरके लिए नेमिचन्द्र पण्डितको नविलूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान हिरियमुद्दुगौण्ड, विलिगौण्ड तथा अन्य ५२ निवासियों द्वारा दिया गया था । लेखमें प्रारम्भमें त्रिभुवनमल्ल ( विक्रमादित्य पण्ड )के किसी माण्डलिकका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४४ ]

१७३

तिरुनिडकोण्डै ( मद्रास )

तमिल, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[ इस लेखके प्रारम्भमें कुलोत्तुंग चोल ( प्रथम )की ऐतिहासिक प्रशस्ति है । राजेन्द्रचोलचेदिराजन् द्वारा देवमन्दिरमें दीपके लिए कुछ धान अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । उडैयार् मल्लिषेणका उल्लेख है जो स्पष्टतः कोई जैन आचार्य थे । लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०१ पृ० ६५ ]

१७४

ऊन ( मध्यप्रदेश )

११वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[ इस स्थानमें कई जैन मन्दिरके ध्वस्त अवशेष हैं । इनमें एक मन्दिरके एक छोटे-से लेखमें मालवराज उदयादित्यका उल्लेख है । अतः यह मन्दिर ११वीं सदीका बना है यह स्पष्ट होता है । ]

[ रि० आ० स० १९१८-१९ पृ० १७ ]



- १८ काटुकलिपिद चलम ॥ (९) अन्तु नेगल्द्रेरेगनुपतिगनन्तसुखास्य-  
देयेनिप्प येचांविकेग कन्तुवेनिप्प
- १९ चिण्णं कान्त पुट्टिटनुदारतेजोनिलय ॥ (१०) पुट्टलोड निन्नये  
पेसरिट्टपरी जगढ मनुजरन्डोडे पेसरों-
- २० टिट्टिलमाढडे कोलु पुट्टिलिगेय चिण्णनेम्भ मयरसदिंदिं ॥ (११)  
आतगे बुट्टिटं विख्यातितशितकीर्-
- २१ तिं नेगल्द गण्डतरण्डं भूतलकं कल्पवृक्षसमोपेतनेनिप्प दानि  
येरेगमहीश ॥ (१२)
- २१ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्द महामण्डलेश्वरं वनवासिपुर-  
वराधीश्वरं कादम्ब-
- २३ चक्रेश्वरं नुदारमहेश्वरं नुभयबलगण्डं नन्निमार्तंडं तनगिल्लदीवं  
कर्गसहादे-
- २४ वं मानिनोमनोहर हरचरणशेखरं हरिपादसरसीरुहोत्तंसं  
सरस्वतीक-
- २५ णावतंसं विकलकुलनृपतिहृदयसंतापकरं विवेकविद्याधरं भृगुमता-
- २६ चार्थं मन्दरधैर्यं कादम्बकुलकमलविकाशनादित्यं विजातिराजता-  
रागणतरुणादि-
- २७ त्यं विक्रमप्रक्रमकिशोरकण्ठीरवं कादम्बकण्ठीरवं मागधिकमा-  
निनीमदहरिषपु-
- २८ लक लाटवधूटीमाललीलातिलकं विरुदन्निनेत्रं ह्यशालिहोत्रं तूगितु-
- २९ त्तिडुव विरुदरपेण्डिरगण्डं गण्डतरण्डं अरिविरुदरवायोले सुरि-  
गेयं किरिपु
- ३० व दोडुंकां वडिव गीतप्रगीतं गेयविनोदं निजकुलोत्तुंगं श्रीमदेरे-  
यंगदे-
- ३१ व स्थिरं जीयात् ॥ कन्द ॥ गंगेगडलगल नोरेगं तिगल वेल्-  
पिंगमोदवलडकिल्वेल्पिं

- ३२ संगलिसि तीविदत्तेरेयंगन जसमखिलभुवनांतरदोलु । नटनिट-  
लेक्षणा-
- ३३ ग्नि नृगणंगणं उज्वलकीर्तिपाण्डुरभू कुरुलु जडेयागे जगक्के
- ३४ देवनाडरिविरुद्रिनेत्रनेमगी ' कोण्डकुन्दान्वयो-
- ३५ त्पन्ने विख्याते देसिगे गणे रविचन्द्राख्यसै यमनियम-
- ३६ स्वाध्यायपराणेरप्प माचवेगन्तिय तावरेयकेरेय केलग-
- ३७ ण आडणमण्णं धारापूर्वकं कोट्टर् चालुक्यविक्रमकालद २१ने  
धातुसवत्सरद कार्तिक न-
- ३८ न्दीश्वरदष्टमियन्दु मंगलमहाश्री स्वदत्ता परदत्तां वा यो हरेत  
वसुन्धरां षष्टिर्वर्ष-
- ३९ सहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ॥

[ यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके निर्माणके समयका है । यह वसदि  
एरेयगदेवकी रानी असवव्वरसि द्वारा बनवायी गयी थी । लेखमे एरेयगका  
वशवर्णन इस प्रकार दिया है—कदम्ब कुलमे रणकि राजा—तत्पुत्र ह्दुव-  
तत्पुत्र वूत—तत्पुत्र चिण्ण—तत्पुत्र एरेयग—तत्पुत्र चिण्ण २—तत्पुत्र एरेयग २ ।  
इस मन्दिरके लिए कोण्डकुन्दान्वय-देसिग गणके रविचन्द्र सै(द्वान्तदेव)के  
उपदेशसे माचवेगन्ति द्वारा कुछ भूमि दान दी गयी थी । लेखकी तिथि  
कार्तिककी नन्दीश्वर-अष्टमी ( शुक्ल ८ ), चालुक्य विक्रम वर्ष २१, धातु  
सवत्सर इस प्रकार दी है ।

इसी मन्दिरकी एक प्रतिमाके पादपीठपर ११वीं सदीकी लिपिमें  
निम्न वाक्य खुदा है—

वस(दिगे) वासवुरदे विदृ ग २ भत्त ५०

अर्थात्—इस वसदिके लिए वासवुर ग्रामके उत्पन्नसे २ गद्याण  
( मुद्राएँ ) और ५० भत्त (चावलके परिमाण) दान दिये गये हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १४५-१५२ ]

१७५

सागरकट्टे ( मैसूर )

११वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमद्राविलमं	२ घट आरुंगला-
३ न्वयद नन्दिगण	४ द शान्तिमु-
५ निगल शिष्यसन्त-	६ ति श्रीवादिरा-
७ जदेवर शिष्यरु	८ श्रीवर्धमानदे-
९ वरु होय्सल-	१० कारालियदलु
११ अग्रगण्यरु स-	१२ न्यसनदि मुडि(पि)
१३ दरवर सध-	१४ मरु कमलदे-
१५ वरु निसिधियं	१६ निरिसिदरु

[ इस लेखमे द्राविल सध-अरुगल अन्वय-नन्दिगणके शान्तिमुनिकी परम्पराके वादिराजदेवके शिष्य वर्धमानदेवके समाधिमरणका उल्लेख किया है । वर्धमानदेवके गुरुवन्द्यु कमलदेवने उनकी यह निसिधि स्थापित की थी । वर्धमानदेवको होय्सल राज्यमे प्रमुख कार्यकर्ताका स्थान प्राप्त था । लेखकी लिपि ११वी सदी की है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०८ ]

१७६

वेणगि ( जि० वेलगाव, मैसूर )

११वी सदी, कन्नड

[ इस लेखकी लिपि ११वी सदीकी है । लेखके समय ( रट्ट वंशके ) कार्तवीर्य ( द्वितीय )का शासन कूण्डि ३००० प्रदेश पर था । इसे जिनेन्द्रपादसरोजभृंग तथा सेननसिग कहा है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८४ पृ० २४७ ]

१७७-१७८

## चिक्कहनसोगे ( मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

[ यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इसमें हनसोगेके तीर्थ-वसदिकी स्थापना रामचन्द्र-द्वारा की जानेका तथा कालान्तरमे शक, नल, विक्रमादित्य, गंग एव चंगाल्व राजाओ-द्वारा उसकी सहायताका उल्लेख है । प्रस्तुत लेखके समय नागचन्द्रदेवके शिष्य समयाभरण भानुकीर्ति पण्डितदेवने इस वसदिका जीर्णोद्धार किया था । इसी पादपीठके दूसरे लेखमें जयकीर्ति भट्टारकके शिष्य बाहुबलिदेव-द्वारा वसदिके निर्माणका उल्लेख है । इन लेखोका समय ११वीं सदी प्रतीत होता है । ये आचार्य मूलसंघ देसिगण-पुस्तकगच्छके प्रमुख थे । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५० ]

१७६

## चिकमगलूर ( मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

- १ स्वस्ति श्रीमतु वूचव्वे-
- २ गन्तिथर सिष्य नेचटिम-
- ३ ताय निसिधिगेय नि-
- ४ लि मज बरेद ॥

[ यह निषिधि लेख वूचव्वेके समाधिभरणका स्मारक है जो उसके शिष्य नेचतिमतायि-द्वारा स्थापित किया गया था । इसकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६२ ]

१८०

कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

[ यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें कोण्डकुन्द अन्वयके मलधारिदेव तथा अन्य आचार्योंका वर्णन है । एक गृहस्थ जैनका भी वर्णन है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९८ पृ० ३७ ]

१८१

मदचित्तगम् ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड, ११वीं सदी

[ यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है । किसी जैन मन्दिरके लिए दानशाला, उद्यान आदिकी व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० ३९२ पृ० ५७ ]

१८२

वेलूर ( हासन, मैसूर )

११वीं सदी, कन्नड

- १ ...युतं जिनेन्द्रप्रगुणि-
- २ . द दर्प ...सले महे-
- ३ ....
- ४ नेयुदिव नें....
- ५ पूर्वाकमन् एरुवं 'माणद' य
- ६ महीतलकति मुददि . .
- ७ विलोक बुध बोध . भाग्य ...

- ८ न्तं दिविजविमवमं सन्द मासावि वर्म्मं ॥ पतिहितवृत्तियो-  
 ९ लिवन् अप्रतिमन् एनल् दिविज पद्मं महीपतियोडने  
 १० कूडि पोक्कं चतुर मासावि वर्म्मं आ नेगल्द भूमि-  
 ११ य मुन्नाल्दगं सले लाक्षियं माध्य देनेताल्दनोडने सग्गम-  
 १२ न् आल्द "य्यन्दु वर्म्मं"

[ इस लेखमें मासावि वर्म्म नामक व्यक्तिके देहत्यागका वर्णन है । अपने स्वामीकी मृत्युपर खेद व्यक्त करनेके लिए उसने सम्भवतः देहत्याग किया था । यह प्रथा होयसल राजाओके समय रूढ थी । लेखकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ५९ ]

### १८३

#### हृदण ( मैसूर )

१२वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[ इस लेखमें होयसल राजा बल्लाल १के समय मरियाने दण्डनायक द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । आचार्य शुभचन्द्रका भी इसमें उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५ ]

### १८४

#### चिकमगलूर ( मैसूर )

शक १०२२ = सन् ११०१, कन्नड

- १ सव्वत सकवर्ष १०२० नेय
- २ विक्रमसंवत्सरद फाल्गुन शु (४)
- ३ सोमवारदंडु द-विन

- ४ सनंगेचट्ट दिवक्के सुन्दरव(र)सद  
 ५ मिं मालेयव्वगन्तियप्परो वि(ने)  
 ६ यमं माडि निसिडिगेय माडि  
 ७ अवर गुड्डु जगमणचारि व-  
 ८ रेद

[ यह लेख फाल्गुन शु० ४, सोमवार, शक १०२२ विक्रमसंवत्सरमें लिखा गया था । एक व्यक्तिके ( जिसका नाम लुप्त हुआ है ) समाधि-मरणके बाद उसके सहाय्यायी मालेयव्वेगन्ति-द्वारा इस निषिधिकी स्थापना का इसमें उल्लेख है । उसके शिष्य जगमणचारिने यह लेख उत्कीर्ण किया था । ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६१ ]

१८५

ढौंक ( राजस्थान )

सवत् ११५८ = सन् ११०२, सस्कृत-नागरी

[ इस मूर्तिलेखमें आलाक नामक व्यक्तिका उल्लेख है । तिथि वै ( शाख ) शु० ७, सवत् ११५८ ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४७२ पृ० ६९ ]

१८६

होसूर ( जि० बेलगांव, मैसूर )

शक १०३० = सन् ११०८, कन्नड

[ इस लेखकी तिथि सोमवार, पौष शु० ५, शक १०३०, सर्वधारि संवत्सर, उत्तरायण संक्रान्ति ऐसी है । ( रट्ट वंशके ) लक्ष्मीदेव-द्वारा एक वसदिके लिए राजधानी वेणुपुरसे कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । यह वसदि लक्ष्मीदेवने ही बनवायी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० १५ पृ० २४१ ]

१८७

## मुडिगोण्डम् ( मैसूर )

शक १०३ (१) = सन् ११०९, कन्नड

[ इस लेखमें मुडिगोण्डचोलपुरके नगरजिनालयको हदिनाडुका एक गाँव दान दिये जानेका उल्लेख है । यहाँकी मुख्य मूर्ति चन्द्रप्रभस्वामीकी थी । तिथि शक १०३ (१) ]

[ रि० सा० ए० १९१० क्र० १० पृ० ५४ ]

१८८

## श्रवणनहल्लि ( मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोघलांछ-
- २ न जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन स्वस्ति
- ३ श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमहल तल-
- ४ काहुगोण्ड भुजवलवीरगंग विष्णुवर्धन होय्स-
- ५ लदेवर पिशियरसि चन्तलदेवियरु त्रिभुवनतिल-
- ६ तीर्थद वीरकोंगाल्वजिनालय-
- ७ द देवर अंगमोगकर्क रिषियराहारदानकर्क त-
- ८ म्म वप्प पृथ्वीकोंगाल्व देवर वग बलिवलि वि-
- ९ द्द मन्दगेरेय श्रितियोलगे कावनहल्लिय तम्म
- १० तम्म दुद्दमल्लदेवनु तावु इरुदु श्रीमूलसघ
- ११ देसिगगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमेघ-
- १२ चन्द्रत्रैविद्यदेवर शिष्यरु प्रभाचन्द्रसिद्धा (न्तदेव-)
- १३ र कालं कर्चि धारापूर्वकं माडि स(र्ववाधा-)
- १४ परिहार माडि विट्ट दत्ति सं(गल महा-



१५ श्री ॥ इदन् भावन् ओर्वं प्रतिपालिसिद्ध

१६ (क) विलेय कोडु कोलगमं

१७ गगेय ..

[ इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी-द्वारा तथा उसके बन्धु दुद्दमल्ल-द्वारा वीरकोगाल्व जिनालयके लिए कावनहल्लि ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान मूलसंघ-देशिगणके मेघचन्द्र-त्रैविद्यदेवके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवको दिया गया था । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० १०३ ]

१८६

अंकनाथपुर ( मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[ इस लेखमें एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए राजा दुद्दमल्ल-द्वारा हेण्णेगडंग नगरसे अय्यवल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है । यह दान प्रभाचन्द्रदेवको दिया गया था । लिपि ११वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३ ]

१६०

कण्णूर ( मैसूर )

चालुक्यवर्ष ३७ = सन् १११२, कन्नड

[ चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य ( षष्ठ ) के समय चालुक्यविक्रम वर्ष ३७ ( सन् १११२ ) में कालिदासदण्डनाथ-द्वारा कन्नवुरीके पार्श्वनाथ-वसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है । मूलसंघ-देशिगण- पुस्तकगच्छके आचार्य वर्धमानमुनिके प्रशिष्य तथा बालचन्द्रव्रतीके शिष्य अर्हणन्दिवेददेवको यह दान दिया गया था । ]

[ रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४२ ]

१९१

जक्कलि ( विजापूर, मैसूर )

चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ = सन् १२१६, कन्नड

[ इस लेखमें चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ मे उत्तरायण संक्रान्तिके समय एक जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए कुछ दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० १९६ पृ० १७ ]

१६२

कोल्हापुर ( महाराष्ट्र )

शक १०३७ = सन् १११५, संस्कृत-कन्नड

पहला पत्र

- १ स्वस्ति । जयत्याविष्कृत विष्णोर्वाराहं क्षोमितार्णवं (१) दक्षि-  
णोन्नतदंष्ट्राग्रविश्रा-
- २ न्तभुवनं वपु ॥ (१) जयति जगति रूढो राजलक्ष्मीनिवासः  
प्रविजितरिपु-
- ३ वर्गस्वीकृतोत्कृष्टदुर्गं (०) सकलसुकृतवासो वीरलक्ष्मीविलासो  
जनितसुजन-
- ४ राग श्रीशिलाहारवंशः (॥२) श्रीमत्शिलाहारनरेन्द्रवंशे श्री-  
कीर्तिकान्ताः कमनी-
- ५ यरूपा. (१) विख्यातशौर्या बहवो नृपेन्द्राः सपालयामासुरिमां  
धरि-
- ६ त्रीं (॥३) तद्वशे नृपतिर्बभूव जतिगो गोमन्थदुर्गाधिपो मामः  
श्रीवनितापतिस्सु-
- ७ चरितो गंगस्य पेर्मानडेस्तस्याभूत्तनय प्रतापनिलय ( ) श्री-  
नायिमा-

- ८ को नृपः कर्णाटीकुचकुमांकिततनुर्विद्याधराधीश्वरः (॥४)  
तस्यात्म-
- ९ जस्सुपरिवर्धितराज्यलक्ष्मी प्रादुर्वभूव समुपार्जितपुण्यपुङ्ग. (१)
- १० चन्द्राह्वयो जगति विश्रुतकीर्तिकान्तत्यागार्णवो बुधनुतो नयनामि-
- ११ राम. (॥५) तस्यापि पुत्रो जतिगो नरेन्द्रो जात प्रवीरो गज-  
यूथनाथ. (१) तस्या-
- १२ त्मजौ गौकलगूवलख्यौ जाताबुमौ वैरिकुलाद्रिवज्रौ (॥६) तद्-  
गौकलस्य तनुजी रिपुदन्ति-
- १३ सिंहः श्रीमारसिंहनृपतिमखक्कसर्प. (१) प्रादुर्वभूव समरां-  
गणसूत्र-
- १४ धारो विख्यातकीर्तिरिह पण्डितपारिजात (॥७) तस्याग्रसूनुर्जग-  
देकवीरो वी-
- १५ रांगनावाहुलतावगूढः कीर्तिप्रियो गूवलदेवनामा बभूव भूपाल-
- १६ वरो नरेन्द्र (॥७) तस्यानुजस्सकलमंगलजन्मभूमिरासीन्नृपाल-  
तिलको भुवि भोज-
- १७ देवः (१) प्रोत्तु गवीरवनिताश्रयवाहुडडश्चंडारि-मंडलशिरोगिरि-  
वज्रदंड. (॥९)  
दूसरा पत्र . पहला भाग
- १८ श्रीमत्कदंबांबरतिग्मरश्मेशिशरस्सरोजं खलु शान्तरस्य (१) पूजां  
प्रचक्रे स च चक्रवर्तिश्रीविक्र-
- १९ मादित्यनृपेन्द्रपादे (॥१०) किं वर्ण्यते जगति वीरतर. प्रसिद्धः  
कोपात्तु कौंगजनृपोपि-
- २० पपात यस्य (१) सूर्यान्वयांबररविस्स च विज्जणोपि चक्रे गृहं  
सुरपतेभुंवि य-
- २१ स्य कोपात् (॥११) यत्प्रतापप्रदीपेस्मिन् कोक्कलइशलभायितः  
(१) पलायिता न गण्यन्ते सोयं

- २२ भोजनृपालकः (॥१२) वैष्णुग्रामदवानलो विजयते चैरीभकण्ठीरवो  
गोविंदप्रलयान्त-
- २३ क शिखरिणो वज्र कुरजस्य च (१) भोज. स्वीकृतकौकणो  
भुजबलात् तद्भिल्लमोद्वन्ध-
- २४ कृत् सोयं कर्णदिशापटो रिपुकुभृद्दोर्दण्डकण्ठहरः (॥१३)  
तस्यानुजातो गुणराशि-
- २५ रासीत् बल्लालदेवो जितचैरिभूपः (१) जीमूतवाहान्वयरत्नदीपो  
गंभीर-
- २६ मूर्तिभुवि शौर्यशाली (॥१४) भजनि तदनुजातस्तिग्मरश्मि-  
प्रतापो दिविजयतिवि-
- २७ भूतिस्सवलक्ष्मीनिवास (१) कृतरिपुमदभगो राजविद्याप्रसंगो  
भुवनवि-
- २८ नुतमूर्तिगण्डरादित्यदेव (॥१५) चक्रे चालुक्यचक्रेशो विक्रमा-  
दित्यवल्लभ. (१) निशं-
- २९ कमल इत्याख्या गण्डरादित्यभूपतेः (॥१६) धन्यास्ते मान-  
वास्सर्वे धन्याश्च मृगजात-
- ३० य (१) स देशस्सफलो यत्र गण्डरादित्यभूपतिः (॥१७) यत्-  
खड्गाद्भुततीव्रघा-
- ३१ तचकितस्तत्कृण्णिदेशाधिपो दण्डव्रह्मनृपो जगाम सदनं ससेव्य-  
मान सुरै-
- ३२ स्त्यक्त्वा राष्ट्रमतीवरम्यमतुलां लक्ष्मीं भुजोपार्जिता सोय गण्डर-  
देवम-
- ३३ ण्डलपतिस्संशोभते भूतले (॥१८) रत्नानि यत्नेन ददाति तस्मै  
रत्नाक-
- ३४ रो भगभयाज्जहात्मा (१) आपूर्यं सम्यक् सततं वहित्र सूक्ष्माणि

- ३५ वासांसि हयाश्च तस्मै (॥१९) किमिह बहुभिरुक्तैरल्पगर्भैर्व-  
चोभिर्भुवन-  
दूसरा पत्र : दूसरा भाग
- ३६ विदितवीरः क्रूरसग्रामधोरः (१) अपरनृपतिकोशं देशमत्यन्तशोभं  
यदि स कुपितचित्तः
- ३७ कारयत्यात्मकीयं (॥२०) समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरः  
तगरपुरवरा-
- ३८ पीश्वरः । श्रीशिलाहारनरेन्द्रः । जीमूतवाहनान्वयप्रसूतः सुव-  
र्णगरुड-
- ३९ ध्वजः । मवक्कशसर्प । अय्यनसिंह (१) रिपुमण्डलिकभैरवः  
(१) विद्विष्टगजकण्ठी-
- ४० रव । गणिकामनोजः । हयवत्सराज । शौचगांगेय । सत्यराधेयः ।
- ४१ इडुवरादित्यः रूपनारायणः । कलियुगविक्रमादित्य । शनिवार-
- ४२ सिद्धिः । गिरिदुर्गलंघनः श्रीमन्महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादादि-  
समस्तराजाव-
- ४३ लीविराजितः श्रीमन्महामण्डलेश्वरः श्रीगण्डरादित्यदेव श्रीम-  
द्वलय-
- ४४ वाडशिविरे सुखसंकथाविनोदेन राज्यं कुर्वाणः । सप्तत्रिंशदु-  
त्तरसह-
- ४५ स्त्रेषु शकवर्षेषु १०३७ अतीतेषु मन्मथसंवत्सरे कार्तिकमासे  
शुक्लपक्षे ।
- ४६ अष्टम्या बुधवारे मिरिंजदेशे । मिरिंजेगम्पणमध्ये । अंकुलगे बोप्पे-
- ४७ यवाड इति ग्रामद्वयं आदगेनामग्रामस्य प्रविष्टं कृत्वा तद्ग्रा-
- ४८ मारुवण त्यक्त्वा तन्नत्यनार्गावुण्डा यदि नायकत्वं कुर्वन्ति तेषां  
शरी-

- ४९ रजीवितार्थं सुवर्णं न ददाति यदि नायकत्वं नेच्छन्ति स्वेच्छया तिष्ठन्ति त-
- ५० दा कोदेवण नास्ति । एवमनेन क्रमेण ० श्रीमत्पवित्रेण निगुंव-  
तीसरा पत्र
- ५१ वशे जातः पुमान् होरिमनामधेयः (१) कीर्तिप्रियः पुण्यधनः  
प्रसिद्धः श्री-
- ५२ जैनसंघांबुजतिग्मरश्मि (॥२१) तस्यात्मजोभूदिह वीरणाख्यस्त-  
स्यानुजोभू-
- ५३ दरिकेसरोति (१) तद्वीरणस्यापि तनूमवोयं बभूव कुंदातिरिति  
प्रसिद्ध (॥२२)
- ५४ तस्यानुजस्सुपरिपालितवन्धुवर्गः श्रीनाथिमो जिनमतांबुधिचं-
- ५५ द्र एषः (१) त्यागान्वितस्सुचरितस्सुजनो बभूव प्रख्यातकीर्ति-  
रिह धर्मप-
- ५६ र. प्रसिद्ध. (॥२३) तस्यापि वीर सुजनोपकारी नोलंबनामा  
तनयो बभूव (१)
- ५७ श्रीगण्डरादित्यपदाब्जभृंगो धर्मान्वितो वैरिमतंगसिंहः (॥२४)  
तस्मै
- ५८ समस्तगुणालंकृताय निगुंवकुलकमलमार्तण्डाय । सुवर्णम-
- ५९ त्थोरगेन्द्रध्वजविराजिताय सस्यक्त्वरत्नाकराय पद्मावतीदेवी-  
लब्धवर-
- ६० प्रसादाय नोलंबसामन्ताय सर्वानमस्य सर्ववाधापरिहारं पुत्र-
- ६१ पौत्रकमाचन्द्रार्कं दत्तवान् ०

[ यह ताम्रपत्र चालुक्य मन्नाट् विक्रमादित्य ( पष्ठ )के माण्डलिक शिलाहार राजा गण्डरादित्यदेव-द्वारा कार्तिक शुक्ल ८, बुधवार, शक १०३७ के दिन दिया गया था । निगुंव वंशके सामन्त नोलंबको मिरिज

प्रदेशके अकुलगे तथा वोप्पेयवाड इन दो ग्रामोका अधिकार अर्पण करनेका उल्लेख इसमें किया है । नोलंवकी वशावली इस प्रकार थी—होरिम-वीरण-कुंदाति—उमका बन्धु नायिम-नोलव । नोलंवको सम्यक्त्वरत्नाकर तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये त्रिशोपण दिये हैं ।]

[ ए० इ० २७ पृ० १७६ ]

१६३

होले नरसिपुर ( मैसूर )

१२वीं सदी : पूर्वार्ध ( सन् १११५ ), कन्नड़

[ इस लेखमें महामण्डलेश्वर वीर कोगाल्वदेव-द्वारा मूलसंघ-देसिगण-के मेघचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवके उपदेशसे सत्यवाक्य जिनालयके निर्माणका तथा उसे हेण्णेगडलु ग्राम दान देनेका उल्लेख है । ( समय लगभग सन् १११५ । ) ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३ ]

१६४

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् १११५, तमिल

[ यह लेख चोल सम्राट् कुलोत्तुग राजकेसरिवर्मन्के ४५वें वर्षमें लिखा गया था । तिरुप्परम्बूरकी ग्रामसभा-द्वारा तिरुक्काट्टाम्पल्लि आल्वार जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि विक्रय किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३५ ]

१९५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् ( चिगलपेट, मद्रास )

राज्यवर्ष ४६ = सन् १११६, तमिल

[ यह लेख राजकेसरिवर्मन् कुलोत्तुग चोलके ४६वें राज्यवर्षका है ।

इसमें तिरुप्परुत्तिकुण्डुके ऋषिसमुदायके लिए एक नहर बनवानेके लिए कैतडुपूरकी ग्रामसभा-द्वारा कुछ भूमि करमुक्त रूपमें बेची जानेका उल्लेख है। यह लेख त्रिकूटवसदिके छतमे लगा है। ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८२ पृ० ३७ ]

१६६

पुटुप्पट्टु ( चिंगलपेट, मद्रास )

११वीं-१३वी सदी, तमिल

[ स्थानीय जैन मन्दिरके मण्डपके एक स्तम्भपर यह लेख है। अस्पष्ट और अधूरा है। इसमें चोल राजा परकेसरिवर्मनका उल्लेख हुआ है। ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० ७९ पृ० १२ ]

१६७

अनमकौंडा स्तम्भ लेख ( वरगलके समीप, आन्ध्र )

चालुक्य विक्रम वर्ष ४२ = सन् १११७, कन्नड  
पूर्वकी ओर

- |                              |                                    |
|------------------------------|------------------------------------|
| १ श्रीमज्जिनेद्रपदपद्म-      | २ शेषमव्यानव्यात् त्रिलोकनृ-       |
| ३ पतीन्द्रमुनीन्द्रवद्य नि.- | ४ शेषदोषपरिखंडनचडका-               |
| ५ षण्डं रत्नत्रयप्रभवमुद्घ-  | ६ गुणैकतानं॥(१)स्वस्ति समस्त-      |
| ७ भुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ- | ८ महाराजाधिराजपरमेश्वर-            |
| ९ परमभट्टारक सत्याश्रयकु-    | १० लतिलक चालुक्याभरणश्रीम-         |
| ११ त्रिभुवनमल्लदेवर विजयरा-  | १२ ज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्ध- |
| १३ मानमाचद्रार्कतारं सलुत्त- | १४ मिरे। तत्पादपद्मोपजीवि समधि     |
| १५ गतपंचमहाशब्द महामं(ड)     | १६ लेश्वरनन्मकुडापुरवरेश्वरं       |
| १७ परममाहेश्वरं पतिहितच-     | १८ रितं विन(य)विभूषणं श्रीम-       |



- १९ न्महामण्डलेश्वरं काकतीवेत(भू) २० पालकुलक्रमागतं तदीयरा-  
 २१ ज्यमरनिरूपितमहामात्यप- २२ दवीविराजमान मानोज्ञत प्र-  
 २३ भुमंत्रोत्साहशक्तित्रयसं- २४ पत्रना(गि)॥घनशौर्याटोप(दिं)  
 २५ मान्तनद महियेयिं चारुचारि- २६ त्रदिं(दो)ल्पिन तेल्पिं सत्क-  
 २७ लदिनो)द्विडाश्चर्य(सौं)- लाकौश-

## उत्तरकी ओर

- २८ दर्यदिद(थिं)निकायप्रार्थितार्थ-  
 २९ (प्र)द वितरण(वि)ख्यात- ३० (वि)नुतं श्रीकाकतीवेतरसन  
 नादं धरित्रो सचि-  
 ३१ वं वैज दंडाधिनाथ ॥(२)अगणितशौर्य-  
 ३२ दिं नेगल्द काकतिवेतनरेड्नं जगं  
 ३३ पोगले चलुक्यचक्रिचरण सले का-  
 ३४ णिसि तत्प्रसाददिं बगेगोले सन्विसा-  
 ३५ थिरमनालिसि(दु)दधयशो- ३६ धिनाथनं पोगलदरारो मंड(लि)  
 ३७ ककाकतिवेतन मन्नि वैजन ॥ ३८ तंगं विकसितकंजातानने था-  
 (३)आ-  
 ३९ कमव्वेगं जनिथिसिदं ख्यातं ४० धरेयोलु पेर्गडे वेतं मं-  
 ४१ त्रिजनमकुटचूडारत्न ॥(४) ४२ आतं मां(धा)तरामोपम-  
 ४३ नेविसिद श्रीकाकतीप्रोलभू- ४४ पख्यातामात्यं विवेकाप्रणि  
 ४५ सकलकलाकोविदं सच्चरित्र- ४६ प्रीतं साहित्यविद्यानिधि वु-  
 ४७ धविबुधोर्वोरुह सत्यधर्मो- ४८ पेतं स्वग्रामदौल् माडिदनतिमु  
 ४९ ददिं हत्तु देवालयंगलु ॥(६) ५० अतिशयजैनधर्मसमयोचित-  
 ५१ शासनदेवि भारतोसति शशिविवव(क्त्र)-  
 ५२ दशनच्छदे शुद्धसुवर्णकुंमसन्नुत्त-

५३ नुवर्णपीवरपयोधरि मैल (म या-)

५४ कमांत्रिकासुततदमात्यवेतह-

५५ दयेइवरि निश्चललक्षिम भाविसलु ॥ (६)

पश्चिमकी ओर

५६ पददिदालुलितालकं वेरेग (मं) गो-

५७ पांगमं पचरत्नदिनांगोचितमागे ५८ निर्मिसिसुरस्त्रीभाग्यसौभाग्य-

५९ सम्म (द) सौंदर्यमनाश्रु तीवि ६० पदेदं कंजातसंजातनी

सु(दती)-

६१ रत्नमनेंदु मैलमननारारू बणिस-६२ लौकदोल ॥ (७) नुतरूपवति

कला (व)-

६३ ति रतिरति श्रीसतिघटान्तकी- ६४ णीसतिर्येदमात्यवेतन सतियं  
सति वा-

६५ क्षितियेहलमेथे नुतियिसुतिकुं- ६६ मुददिंदेने नेगल्द रमास्पदे मै-

॥ (८)

६७ लम मक्तिर्येदे माडिसि तन- ६८ यकरमागिरलु वेदद (मि) गण

गभ्युद-

६९ कदलालयबसदियनेसेयलु ॥ (९) ७० अदकं नित्यपूजेगं धूपद्रीप

(नि) वेद्य-

७१ ककं पूजारिगाहा (र) वस्त्रादि- ७२ श्रीमत्रिभुवमहमडलिकभू-

गलगं

(पा)-

७३ लपुत्रनप्प काकतियपोलरसन रा- ७४ ज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रवर्ध

मानमा-

७५ गमम्भकुन्देयलाचद्रार्कतारं स- ७६ लुत्तमिरे श्रीमञ्जालुक्य-

विक्रमवर्ध-

- ७७ द नाल्वत्तेरेडेनेय हेमलंबि(सं)- ७८ वत्सरपौप्यवहुल १५ सोमवा-  
 ७९ रददिनुत्तरायणसक्रांतिनिमि- ८० त्तं धारापूर्वकमागि तन्न  
वल्लभनप्य  
 ८१ वेतन-पेर्गडे तन्न पेसरिंदं माडि- ८२ सिद केरेयेरिय केलगनेरहुं  
 ८३ हासरगल्लुगल नहुवण गढे(य) ८४ मत्तरेरहुं मत्तमाकेरंय प-  
 ८५ हुवण नेल दोणेय तेंकलेरेय ८६ मत्तर्नालुकुं करंवं मत्तरारु-  
 ८७ मं कोट्टु निरिसिदलीशासनगंस ॥

## दक्षिणकी ओर

- ८८ मत्तमी धर्मक्के तेल्लटियागे ॥  
 ८९ अ(ष्टौ) दन्तिसहस्राणि दशको- ९० टी च वाजिनामनन्त पादसं-  
 ९१ घातमित्येते माधववर्म- ९२ वशोद्भवरप्य श्रीमन्महा-  
 ९३ मण्डलेश्वरनुग्रवा (डि)- ९४ य मेलरसं तन्ना (लि) के-  
 ९५ योहंगल्ल कूचिकेरे- ९६ येरिय केलगे कालुवेय  
 ९७ मोदल गढेय मत्तरोन्दा स- ९८ मीपदले करंवं मत्त-  
 ९९ रु हत्तुमनित्त ॥ निरुत्तमि- १०० दनलिदवं सासिरकवि (ले)-  
 १०१ यनलि (द) पापसं (पो) दुं- १०२ गुमादरदि रक्षि (सि) दं सा-  
 १०३ सिरयज्जद पलमनेयदि १०४ शुम (मं) पडेगु ॥ (१०) स्वद-  
 १०५ त्तां परदत्तां वा यो हरेत १०६ वसुंधरां । षट्ठिर्वर्षसहस्रा-  
 १०७ णि विघ्ठाया जायते १०८ बहुभिर्वसुधा दत्ता राजमिस्स-  
कृमिः ॥ (११)  
 १०९ गरादिमि. । यस्य यस्य य- ११० दा भूमिस्तस्य तस्य तदा  
फलं ॥ (१२)  
 १११ अल्लिक्क वमदिय कसं गलेव वो- ११२ यपहंगे पाग वोंटु ॥

[ यह स्तम्भ चालुक्यविक्रमवर्ष ४२ ( सन् १११७ ) में पौष अमा-  
 वस्याको उत्तरायण संक्रान्तिके समय स्थापित किया था । उस समय

चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्ल विक्रमादित्य (पण्ड) के माण्डलिक काकतीय वेतका पुत्र पोलरस ( प्रोल ) सव्वि प्रदेशपर शासन कर रहा था । वेतका महामात्य वैज था । वैजकी पत्नी याकमव्वे थी तथा पुत्र वेत पेर्गडे था । वेत पेर्गडे प्रोलका मन्त्री था । इसकी पत्नी मैलम थी । इसने अन्मकुन्द पहाडीपर कदललायदेवीका मन्दिर बनवाया तथा उसे उक्त तिथिको कुछ जमीन दान दी । इसी मन्दिरको उग्रवाडिके मेलरसने जो माधववमकि कुलमे उत्पन्न हुआ था—भी कुछ जमीन दान दी । कदललायदेवी सम्भवत पद्मावतीका नाम है । इस समय यह मन्दिर ब्राह्मणोके अधिकारमे है तथा वे उसे पद्माक्षी देवी कहकर पूजा करते हैं ।]

[ ए० इ० ९ पृ० २५६ ]

१६८

कोविलंगुलम् ( रामनाड, मद्रास )

सन् १११८, तमिल

[ एक भग्न मन्दिरके दक्षिण तथा पश्चिमकी आधारशिलापर यह लेख त्रिभुवनचक्रवर्ति कुलोत्तु गचोलदेवके ४८वें वर्षका है । कुम्बनूरके २५ जैनो-द्वारा मुक्कुडैयारके लिए एक मण्डप तथा सुवर्ण विमान बनवानेका इसमे निर्देश है । कुम्बनूर गाँव वेम्बुवलनाडु प्रदेशके शेगाट्टिस्वकै विभागमे था । इसी लेखमे त्रिछत्राधिपति देव तथा एक यक्षीकी ताँवेकी मूर्तियोकी स्थापनाका भी उल्लेख है । इस मन्दिरके लिए जमीन और प्याऊके लिए भी दान दिया गया था । इस लेखकी तमिल भाषा साहित्यिक दृष्टिसे बहुत अच्छी है ।]

[ ३० म० रामनाड १७ ]

१६९

ऐहोले ( विजापुर, मैसूर )

चालुक्य विक्रमवर्ष ४४ = सन् १११९, कन्नड

[ यह लेख त्रिभुवनमल्लदेव विक्रमादित्य पण्डके समय वैशाख शु० ३,  
१० ]

सोमवार, विकारी संवत्सर, चालुक्य विक्रमवर्ष ४४ के दिन लिखा गया था । इसमें जेमपार्य तथा जातियक्कके पुत्र केशवय्य सेट्टिका उल्लेख है जिसने स्थानीय जिनमन्दिरमें पूर्व और पश्चिमकी ओर वसदियाँ, एक पट्टशाला तथा कूपका निर्माण कराकर लोकपाल-मूर्तियोंकी स्थापना की थी और देवपूजाके लिए कुछ भूमि आदि दान दिया था ।]

[ मूल लेख कन्नडमें मुद्रित ]

[ सा० इ० इ० ११ पृ० २१९ ]

२००

### कुमारवीडु ( मैसूर )

शक १०४४ = सन् ११२२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वाढामोवलाञ्छनं (I) जीयात्
- २ त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनं (II) स्वस्ति समधिग (त)  
पंच-
- ३ महाशब्द महामण्डलेश्वरं कुलोत्तंगचोलभुजव-
- ४ लवीरगंगहोय्सलदेवरु गंगवादि तौमट्टरु-
- ५ सासिरमनेकच्छत्रदि तलकाडळिट्टु सुखसकतावि-
- ६ नोददि राज्य गेय्युत्तमिरे शकवर्ष १०४४ ने-
- ७ य प्लवसंवत्सरद मार्गसिर सुध ५ सोमवार-
- ८ दंडु महाप्रधान टण्डनायक गगपय्य-
- ९ गलु तम्म सोवणदण्डनायकंगे हादरिवागिल-
- १० वीडिनलु परोक्षविनयक्क माडिसिद वसदिगे
- ११ विट्ट दत्ति मैसेनाड चन्दवनहल्लियुं वीडिद
- १२ मूडण कम्माडिय केरेय गद्दे ३० सलगेयु
- १३ आ केरेयि वडगलु एरिय वेडले वेलि २
- १४ आ केरेय हडुवण कट्टद केलगे तौट
- १५ ५०० गुलियुं वीडिन २ गाणद एण्णयुं

- १६ सोडरिगे सल्लुदु ॥ वसद्विगे विट्टीधर्मम-  
 १७ नोसदु करं सलिसुतिर्दगंक्कुं पुण्य असव-  
 १८ सदि केडिसिदवर्गलु पसुवुं ब्राह्मण-  
 १९ न कोद वधे समनिसुगु ॥ स्वदत्ता पर-  
 २० दत्तां वा यो हरेत वसुधरां षष्टिर्वर्षस-  
 २१ हस्त्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ( )

[ यह लेख होयसल राजा विष्णुवर्धनके राज्यमे मार्गगिर शु० ५, सोमवार, शक १०४४, प्लव सवत्सरके दिन लिखा गया था । दण्डनायक गगपय्य-द्वारा सोवणदण्डनायककी स्मृतिमे हादरवागिलु ग्राममे एक जैन मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे दिये गये दानका उल्लेख इस लेखमे किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६६ ]

२०१

वेलूर ( मैसूर )

१२वीं सदी — पूर्वार्ध, कन्नड

- १ पुणिसचमूपनेम्बेसेव शासनवाचकचक्रवर्तिगिन्तेनिसलोड पोगत्तं  
 तनगागिरे पुट्टिद चामराज नाकण कुमरय्यनेम्ब रत्नत्रयमू-  
 २ तिगे पुन्नोप्पिद पुणिसमदण्डनाथनुदितोदितचामचमूपसभव (।)  
 नमः सिद्धेभ्यः (॥)

[ यह लेख किसी जैन मन्दिरके स्तम्भपर था । वह स्तम्भ बादमे केशवमन्दिरमे लगाया हुआ पाया गया । इसमे सेनापति पुणिस तथा उसके तीन पुत्र चामराज, नाकण तथा कुमरय्यकी प्रशंसा की है । यह पद्य अन्य लेखोमें भी पाया गया है । पुणिस राजा विष्णुवर्धनका जैन सेनापति था । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० ८३ ]

२०२

अरताल ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक १०४५ = मन् ११२३, कन्नड

[ यह लेख चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका है । उस समय वनवासि तथा पानुगल प्रदेशोपर कदम्ब कुलका महामण्डलेश्वर तैलपदेव शासन कर रहा था । मूलसघक्राणूरगणके कनकचन्द्रके शिष्य गगर वम्मिसेट्टिने कोन्तकुलि विभागके प्रमुख नगर पयिट्टुणमे एक मन्दिर बनवाया । वम्मिसेट्टि बट्टकेरेका निवासी था । इस लेखकी तिथि पौष अमावास्या, सूर्यग्रहण, रविवार, शक १०४५, शुभकृत् सवत्सर ऐमी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४३-४४ एफ् १ ]

२०३

हिरेसिंगनगुत्ति ( विजापुर, मैसूर )

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[ इस खण्डित लेखका समय चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य पष्ठ) के राज्यका है । देसिगगण-पुस्तक गच्छके आचार्य वालचन्द्रका इसमे उल्लेख है । किसी मन्दिरके लिए उन्हें कुछ भूमि अर्पण की गयी थी । ]

[ मूल लेख कन्नडमे मुद्रित ]

[ सा० ड० इ० ११ पृ० २६२ ]

२०४

तोगरकुण्ट ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लके समय एक सूर्यग्रहणके अवसरपर लिखा है । इसमे तोगरकुण्टके चन्द्रप्रभदेववसदिके लिए दण्डनायक

कोम्मणार्य-द्वारा कुमारतैलपदेवकी पुण्यवृद्धिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मूलसघके पद्मनन्दिदेवके शिष्यको अर्पित किया गया था।]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ३४४ पृ० ६६ ]

२०५

उगरगोल ( वेलगाँव, मैसूर )

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख जिनशासनकी पशसासे प्रारम्भ होता है। चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके किसी महाप्रधानका इसमें उल्लेख है। लेख खण्डित है।]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८२ पृ० २४७ ]

२०६

सिरसंगि ( जि० वेलगाँव, मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड

[ चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका यह लेख है। तिथि पौष शु० १३, रविवार, उत्तरायण सक्रान्ति ऐसी है। ऋषिशृगीके छह गावुण्डोका इसमें उल्लेख है। वाचि गावुण्ड तथा अन्य व्यक्तियों-द्वारा किसी बसदिको जमीन आदिके दानका उल्लेख है। गण्डवि ( मुक्त ) सिद्धान्तदेव, अत्तिमन्वे, देवरस, तथा कलिदेवसेट्टिका भी उल्लेख है।]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ७६ पृ० २४६ ]

२०७

हूलि ( जि० वेलगाँव, मैसूर )

१२वी सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-कन्नड

१ ( श्रीमत्परमगभी)रस्याट्वादासोघलाञ्जनं । जीयात् त्रैलोक्य-



- नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥(१) श्रीवीरनाथस्य गणेश्वरोभूत्  
सुधर्मनामा प्रविधूत' ..
- २ यापनीये सं(घे) पुनस्तत्र च चारुमार्गं ॥(२) कण्डूरुखियातगणे  
बभूवु पुरा मुनीन्द्रा बहवो महा . .
- ३ दैकसिंहो मुनीश्वरो बाहुवली बभूव ॥(३) जयतु शुभचंद्रदेवः  
कण्डूरुगणपुंडरीकवनमार्तदंडश्चडत्रिदंड ...
- ४ पारगो बुधविनुत ॥(४) नुतयापनीयसवप्रतीतकण्डूरुगणाधि-  
चद्रमरेंदी क्षितिवलयं पोगल्विनमुंनतिवेत्तर् मोनि (दे-  
वदिव्यमुनीन्द्र) रु ॥(५) श्रीमावनद्वित्रतिनाथमोडे कामारिमोमो  
(र) गवैनतेयं । नन्नावनीपालकविद्धकीर्ति सि(द्धा)त त(त्त्वा)  
र्णवपूर्णच(द्रं) ॥(६)
- ६ ( त्वस्ति । समस्तभुव ) नाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधि-  
राज परमेश्वरं परममद्भारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्यामरणं  
श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-
- ७ ( देवर विजय ) राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचंद्राकंतार-  
वरं मलुत्तमिरे । क्षितिगेल्लं तन्न तेजं तोलगि वेलगे तन्नाज्ञे चोला  
( वनी )-
- ८ लु नतिसुतिरे सले तन्नापुं लोकक्के कल्पक्षितिजातं कूडे पण्त्तित्तिरे  
कलियुगदोलु पुट्टियु राघवादिक्षितिपालानीकरोलु पा
- ९ . . (त्रिक्र)मादित्यदेव ॥(७) जलविपरीतभूतलवधूटिगे कुतलदंडदिं  
मनगोलिसुवुद्रेनु नोर्पढमे कुंतलदेगमदक्के चिन्नपूगल तेरदंतं  
रजि
- १० ट्ट मीक्षितकावलयि पोदल्द हारद वोलिपुंदु नोर्पढे पूलि लीलेयि  
॥(८) मत्तं । पोंगलसंगलिदेसेव देवगृहंगलिनोप्पुवेत्त वारांग-  
नेयकंल्.....

- ११ "पोट) लद् वेदंगले मूर्तिगोंडु देनिपंददलोप्पुव विप्ररिंदे ग्रामंगल चक्रवर्तियेसेदिर्दुदु नोपंडे पूलि लीलेयि ॥ (९) मत्तमल्लिय विप्रर महिमेये (न्तेटोडे) ।
- १२ " पोंठनेनिप श्रीकृष्णदेवं सविस्तरदिं तन्न सहस्रमप्प पेसरं रूपागिरलु माडि साक्षरवेदाक्षरजीवमंत्रचयमं तीविट्टु पुलीमहापुर'
- १३ ( एसेटर् ) सासिर्वरित्तुर्वियोलु ॥ (१०) उपमातीतमेनिप्प पेंपु गुणमोठायं चल साहसं जपहोम नियमं महोन्नतिकसत्यं शौचमा
- १४ "शास्त्रदोदविं श्रीकेशवादित्यदेवपादांभोजवरप्रसादरेसेटर् सासिर्वरित्तुर्वियोलु ॥ (११) हरि किलेनेलेयिं चलिसिद हरिबदवेट्टि
- १५ क्केट्टु निराकरिपुट्टु सासिर्वरुचित्तदे चलितवचन ॥ (१२) स्वस्त्यनवरतविनमदम (र) राजत्किरीटकोटिताडितजिनेट्टुचरणारविंदम—
- १६ " (चल) टुत्तरंग। वीरविट्टिसंहरणप्रतापकार्तिकेय । गंगगांगेय । चपलवैरिवाहिनीसंहननप्रतापलंकेश्वरं । कोलालपु (रवराधीश्वरं ।)
- १७ " (एत्ते) दोडे । मंडलिकजगडलं मार्कोडर जवनार्थिजनके कल्पमहीजं गंडर तीर्थ सितगर गड मार्कोल भैरवं पिट्टुत्तुपं ॥ (१३) मत्तं .
- १८ ' पुट्टिट्टोप्पेपेर्मन्नुप विज्जमहीपति कीत्तिभूपनु जेट्टिग गोर्मनुं नेगटं (लद) मैललदेवियुमंते रूपिनिधिट्टुलवागि .
- १९ ॥ (१४) लिक्कट्टंकरिभूभुजरं तवे कोंडु गुर्जराट्टु जयसिंहदेव धरणीश्वरनं निजराज्यलक्ष्मियोलु पट्टु
- २० पोगलुतिपुट्टु विज्जलभूमिपालनं ॥ (१५) मत्तं । रेवकनिर्मंडि कन्हरदेवंगोतवकनंते भूनुते सिरिया (देवि)

- २१ ॥(१६) ँदु दल्ल्ताय्वनेयेदु विज्जलनृपं चउवीसतीर्थरूकलं  
मुददि माडिसि कल्लेसं समेसि  
२२ दिं विट्ट—वेल्वलदोलितोप्पिप्प पेगुम्मियं ॥(१७) हरलारु-  
वाडकंसि  
२३ चालुक्यचक्रवर्तिं पेर्माडिरायन् कय्योल्  
२४ माडिसिद माणिक्यतीर्थं

[ यह लेख चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (पष्ठ) के राज्यकालका है । इसमें प्रथम सुधर्म गणधरकी परपरामे यापनीय संघ—कण्डूर गणके वाहुवली, शुभचद्र, मौनिदेव तथा माघनदि इन आचार्योंका उल्लेख है । इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है । अनन्तर एक पूलि नगरके पिट्ट नृपका उल्लेख है जो गंगवशमे उत्पन्न हुआ था । इसके चार पुत्र थे—पेर्म, विज्जल, कीर्ति, गोर्म—तथा एक कन्या थी—मैललदेवी । विज्जलके सम्बन्धमें गूर्जराष्ट्रके जयसिंहका उल्लेख किया है किन्तु इसका ठीक अर्थ स्पष्ट नहीं क्योंकि यहाँके कई अक्षर घिस गये हैं । इसी तरह कृष्णराजकी वहिन रेवकनिर्मडिकी एक श्लोकमे सिरियादेवीसे तुलना की है उसका पूर्वापर सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है । अनन्तर कहा है कि विज्जलने एक जैन मन्दिर बनवाया तथा उसे पेर्गुमि ग्राम दान दिया । लेखके अन्तिम भागमें माणिक्यतीर्थका उल्लेख है । इसका सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है । ]

[ ए० इ० १८ पृ० २०१ ]

२०८

वेलवत्ति ( धारवाड, मैसूर )

१२वीं सदी - पूर्वार्ध, कन्नड

[ इन लेखमें मैसूरके बम्मिसेट्टि-द्वारा एक ब्रह्मजिनालयके निर्माणका उल्लेख है । इस जिनालयके लिए बम्मिसेट्टिने वेलवत्तिके ३०० महाजनो-

को कई दान दिये थे । इस स्थानके कुछ आचार्योंके नाम भी लेखमे दिये हैं । तिथि आपाठ शु० प्रतिपदा, सोमवार, उत्तरायणसक्रान्ति, शोभकृत् संवत्सर ऐसी दी है । उस समयके चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके राज्यका उल्लेख किया है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २१६ ]

२०६

वैल होंगल ( वेल्गाँव, मैसूर )

११वीं - १२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लदेवके समयका है । शक वर्षके अंक अस्पष्ट हुए हैं । इसमें रट्टवशीय महासामन्त अक, शान्तियक्क तथा कूण्डि प्रदेशका उल्लेख है । अनन्तर यापनीयसघ-मैलाप अन्वय-कारेय-गणके मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवसूरिका उल्लेख है । यह सम्भवत किसी जिनमन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० ३३ पृ० १२ ]

२१०

गोळिहल्लि ( जि० वेल्गाँव )

सिद्धेश्वरमन्दिरके ममीप शिलापर

१२वीं सदी, कन्नड

[ मैल्लदेवी तथा जयकेशिनके पुत्र वीर पेर्माडि तथा विजयादित्यके शासनका इस लेखमें निर्देश है । अगडिय मल्लिसेट्टि-द्वारा किरुसपगाडिमें वनवाये गये जैन मन्दिरके लिए भूमिदान देनेका इसमें उल्लेख है । मूलसघ, बलात्कारगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य वासुपूज्य भट्टारकको यह दान दिया गया । वासुपूज्यकी गुरुपरम्परा कुछ विस्तारसे दी है । लेखके समय फाल्गुन शु० १५, गुरुवार, मन्मथ सवत्सर था तथा चालुक्य भूलोकमल्ल सम्राट् थे । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५ ]

२११

चरांग ( मैसूर )

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[ यह लेख आलुप राजा कुलगेखरके समयका है । इसमे माधवचन्द्र, प्रभाचन्द्र, तथा श्रीचन्द्र इन आचार्योंका उल्लेख किया गया है । ]

[ रि० आ० स० १९२८-२९ पृ० १२७ ]

२१२

दडग ( माडया, मैसूर )

१२वीं सदी - पूर्वार्ध, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगमीरस्याद्वादासोघलांछनं ( । ) जी-
- २ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ( ॥ )
- ३ कुलरत्नाकरदोलु कौस्तुभादिगल वोलु पलरुं लोकोपकारपरिणतरू  
एकीकृ-
- ४ तसकलराजगुणरु "सकलजनोक्ति यादवकुलदोलु पुलि पाये
- ५ सलेयिं पुलियं पोय् सल येने पोय्दुदरिं पोय्सणवेसरवनिद  
वादुद-
- ६ लिल्ले "नयं प्रदरण नना " युरदि जग-
- ७ नयनिमि पोरेदं विनयादित्यं समस्तभुवनस्तुत्यं आतंगतिमहिम-
- ८ नमाख्यातकीर्ति सन्मूर्तिमनोजात मर्दितरिपुनृपजातं तनुजात-  
नादन् एग्रेयंग-
- ९ नृपं ॥ च " धर्मार्थकामसिद्धिवोल् अन्ननीवल्लमर् आतन तन-
- १० यर् वल्लाल विट्टिदेवन् उदयादित्यं ॥ मूर्वर्- तनयरोलं तां  
माविसे म' .

- ११ ध्यमनागियुं स्रदगुणसद्भावदिन् उत्तमनादं विनुतविभवद्भूत-  
जिष्णु वि-
- १२ ण्णुमहीशं । स्वस्ति समधिगतपंचमहागव्द महामंडले-
- १३ श्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलांबरधुमणि स-
- १४ म्यक्त्वचूडामणि मलपरोलुगण्डं गण्डभेरुण्ड शशकपुरनिवास
- १५ वासंतिकादेवीलब्धवरप्रसाद दानसन्मानसंपादितविप्रप्रगामोद
- १६ नामादिसमस्तप्रशस्ति सहितं तलकाहु कोंगु नगलि गंगवाडि नो-
- १७ णंयवाडि वनवासे हानुंगलु गोड भुजबलवीरगंग प्रताप
- १८ होय्सणदेवर् पृथ्वीराज्यं गेयुत्तमिरे तत्पादपञ्चोपजीविगलप्प ॥  
भीम अ-
- १९ जुंनलवकुमारी माल्क्वेनल् अंतं पुट्टिये मरेदरु श्रीमन्मरियाने-
- २० युं उट्टामगुण भरतराजदण्डाधिपरु ॥ करिगति सिहमध्ये कल-
- २१ सस्तनि दोस्त्रजपुण्यवार्धि मित्ररुचिरकटाक्षे वलिसुखि वेण्यहि
- २२ गेहविलासलक्षिम भासुरे सुमनोविमाने गुणरत्नयशोहारि की-
- २३ तिगोपति स्थिरसत्त्वे जक्कियक्कनेने पोल्वर् आर् अमलकान्त  
तनुव ॥
- २४ बल्लेशनधीशं चरितार्थं नेगलद तन्डे मारायर् ॥ तत्परमजिन-  
देव्यमेन्द्र
- २५ हरियवेयन्तेच्छे नोन्त कान्तेयरोलरे ॥ श्रीमूलसंब कुण्डकुटान्व-
- २६ य काणूरुगण तिन्रिणिगच्छद जवल्लिगेय सुनिमद्रसिद्धान्तदेवर  
शिष्य
- २७ मेवचन्द्रसिद्धान्तदेवर्गे श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक मरिया-
- २८ नेयुं श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायक भरतिमर्यगलुं दडिग-
- २९ नकेरेय पचवसद्वियोलगे वाहुवलिकूटम धारापूर्व-
- ३० कं माडि कोट्टरु मरियानेसमुद्रद वयलुमं

- ३१ मलेहल्लिय मुंदण किरुकरेयं अल्लिय होलगुत्त-  
 ३२ गेयु कोडियहल्लिय मुंदण किरुकरेयं आवेदलेय  
 ३३ हिरियकरेय केलगण अडकेय तोटसु ॥ अन्तु सर्वाय सुद्धवागि  
देशियगणद वसदि ४ वकं काणूरगणद व-  
 ३४ सदि वोन्दक्कं अन्तु पच वसदिगे समानवागे इल्लि हुट्टि-  
 ३५ द माचिगौडनु कमवगौडनु ॥  
 ३६ स्वदत्तां परदत्ता वा यो हरेत वसुंधरा पट्टिवर्ष सह-  
 ३७ साणि विष्टायां जायते क्रिमि

[ इस लेखमे होयसल राजा विष्णुवर्धनके महाप्रवान दण्डनायक मरि-  
 याने तथा भरतिमथ्य-द्वारा दडिगनकेरे स्थानकी पाँच वसतियोमे वाहुवलि-  
 कूट नामक वसतिका दान तथा कुछ भूमिके दानका निर्देश है । यह दान  
 काणूरगण-तित्रिणिगच्छके मुनिभद्र सिद्धान्तदेवके शिष्य मेघचन्द्रदेवको दिया  
 गया था । ] [ ए० रि० मै० १९४० पृ० १५६ ]

२१३

कम्बदहल्लि ( मैसूर )

१२वीं सदी—पूर्वार्ध ( सन् ११३० ), कन्नड

- १ (द्रोह)घरट्ट दण्डनायक गगराजन मग वोप्पदेवरिगे रूवारि  
 २ द्रोहघरट्टाचारि कन्नेवसदिम माडिद ॥ मंगल महाश्री

[ यह लेख स्थानीय शान्तीश्वर वसदिके भग्नावशेषोंमें है । यह वसदि  
 दण्डनायक गगराजके पुत्र वोप्पदेवके लिए द्रोहघरट्टाचारि नामक शिल्पकार-  
 ने बनवायी ऐमा लेखमें कहा गया है । यह कन्नेवसदि अर्थात् निर्माता-  
 द्वारा बनवायी पहली वसदि थी । अत इसका समय लगभग सन् ११३०  
 है क्योंकि वोप्प-द्वारा सन् ११३३ में हलेविडमें निर्मितआ दीश्वरवसदि  
 विद्यमान है । ]

( ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९३ ]

२१४

सालूर ( मैसूर )

सन् ११३०, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वाढामोघलाञ्जनं जीयात् त्रलोक्य-
- २ ( नाथस्य शासन जिन ) शासन ॥ स्वस्ति समस्तभुवना-
- ३ ( म ) हाराजाधिराज परमेश्वर पर-
- ४ ( सत्या ) श्रयकुलतिलक चालुक्याभरण
- ५ श्रीम ( द्भूलोकमल ) देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृ-
- ६ ( द्विप्रवर्धमान ) माचंद्रार्कतारं सलुत्तमिरे । समधिगतपचम-
- ७ ( हाशब्द महाम ) डलेश्वर वनवासिपुरवराधीश्वर त्रिक्षयक्षमा-
- ८ ( समव चतुराशीतिनग ) राधिष्ठितल ( लाटलोचन ) चतुर्भुज
- ९ श्रीजयतीमधुकेश्वरदेवलब्धवरप्रसाद नामादि-
- १० समस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महामण्डलेश्वर मयू-
- ११ रवर्मदेव तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महामण्डलेश्वर
- १२ मगर कारगरसर् सान्तलिंगेसाथिरमुम दुष्टनि-
- १३ ग्रहविशिष्टप्रतिपालनदिनालुत्तिरे ॥ श्रीमूलसवको-
- १४ ( ण्ड ) कुन्दान्वय काणूरगणद मेष(पो)षाणगच्छद श्रीप्रभाच-
- १५ द्रसिद्धातदेवर शिष्य कुलचद्रपं(टित)देवर गुड्ड(म)-
- १६ द्रायिसैट्टि श्रीमदनादियग्रहार सालियूर सासिर्व-
- १७ र ब्रह्मजिनालयद वसदिय निवेद्यक्के भूलोकवर्षद
- १८ ५ नेय साधारणसवत्सरद पुष्य सुद्ध ३ सोमवारद वुत्त

[ यह लेख चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लके ५वे वर्षमें पौष शु० ३ सोमवारको लिखा गया था । उस समय कदम्बवशीय मण्डलेश्वर मयूरवर्माके शासनान्तर्गत सान्तलिंगे प्रदेशपर मगर कारगरसर् शासन कर रहा था । उक्त तिथिको सालियूर अगहारमे स्थित ब्रह्मजिनालय वसदिको भद्र-



रायिसेट्टिने कुछ दान दिया था । मूलमंघ-काणूरगण-मेपपापाणगच्छके प्रभाचन्द्र मिद्वान्तदेवके शिष्य कुलचन्द्रपण्डित भद्ररायि सेट्टिके गुरु थे । ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० २४५ ]

२१५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् ( त्रिगलपेट, मद्रान )

राज्यवर्ष १३ तथा १७ = सन् ११३१ तथा ११३५, तमिल

[ यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् विक्रमचोलके राज्यवर्ष १३का है । इसमें विलशार्की ग्रामसभा-द्वारा त्रैलोक्यनाथजिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि करमुक्त रूपमें ठेकी जानेका उल्लेख है । इसीके बाद इसी राजाके १७वें वर्षमें तिरुप्परुत्तिकुण्डुकी कुछ भूमि आरम्बनन्दिको ठेकी जानेका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८१ पृ० ३७ ]

२१६

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

सन् ११३२, कन्नड

[ इस लेखमें गोगियवसदिके इन्द्रकीर्ति पण्डितका उल्लेख है । उन्होने तथा पेगडे मल्लियण्ण आदिने वसदिकी भूमिमें घर आदि बनवानेके कुछ नियम बनाये थे । हेमदेव-द्वारा वसदिके पुजारीको कुछ भूमि दान दी जानेका भी उल्लेख है । तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, परिधावि संवत्सर, भूलोक-वर्ष ( चालुक्यसम्राट् भूलोकमल्लका राज्यवर्ष ) ७, बुधवार इस प्रकार दो है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ४८ पृ० १६४ ]

२१७

वहुरीवंद ( जि० जवलपुर, मध्यप्रदेश )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-नागरी

स्वस्ति ...वदि ९ मीमे श्रीमद्गयाकर्णदेवविजयराज्ये राष्ट्रकूटकुलोद्भवमहासामन्ताधिपतिश्रीमद्गोलहणदेवस्य प्रवर्धमानस्य ॥ श्रीमद्गोह्लापूर्वाम्नाये वेल्लप्रभाटिकायामुरुकृताम्नाये तर्कतार्किकचूडामणिश्रीमन्माधवनन्दिनानुगृहीत साधुश्रीसर्वधरः तस्य पुत्र. महाभोज धर्मदानाध्ययनरत । तेनेद कारित रम्यं शान्तिनाथस्य मन्दिरं ॥ स्वलात्यमसज्जकसूत्रधार श्रेष्ठिनामा वितानं च महाश्वेतं निर्मितमतिसुन्दरं ॥ श्रीचन्द्रकराचार्याम्नायदेसीगणान्वये समस्तत्रिद्याविनयानदितविद्वज्जना. प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत्सुभद्राचिरं जयतु ॥

[ यह लेख कलचुरि राजा गयाकर्णके सामन्त राष्ट्रकूट गोल्हणदेवके राज्यकालमें लिखा गया है । वेल्लप्रभाटिका गाँवमें गोल्लापूर्व जातिका महाभोज नामक श्रावक था जो माधवनन्दिके गिण्य सर्वधरका पुत्र था । उसने शान्तिनाथका एक सुन्दर मन्दिर बनवाया । इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा चन्द्रकराचार्याम्नाय-देसीगणके आचार्य सुभद्रके हाथों हुई थी । ]

[ इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ दि कलचुरि-वेदि एरा पृ० ३०९ ]

२१८

आदिनाथमन्दिर, नाडलाई ( जि० देसूरी, राजस्थान )

संवत् ११८९ = सन् ११३३, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् ११८९ माघसुदि पंचम्यां श्रीचाहमानान्वय श्री-महाराजाधिराज ( रायपा ) ल

- २ देव तस्य पुत्रो रुद्रपालश्चमृतपा (लौ) ताभ्यां माता श्रीराज्ञी मा  
(न) लदेवी तथा (नदू) ल (डा) गिका-
- ३ यां सता परजतीनां (रा)ज कुलपल (म) ध्यात् पलिकाद्वयं  
घाण (कं) प्रति धर्माय प्रदत्त । सं० वागसि-
- ४ वप्रमुखमस्तग्रामीणक । रा० तिमटा वि० सिरिया वणिक  
पोसरि । लक्ष्मण पुते सा ।
- ५ खि कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यदु पापं गोहत्यात्मगूण । ब्रह्म-  
हत्यामतेन च । तेन
- ६ पापेन लिप्यन्ते स ॥ श्री ॥

[ यह लेख सवत् ११८९ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था । इसके दो पुत्र थे—रुद्रपाल तथा अमृतपाल । इनकी माता मानलदेवीने नदूलडागिका आनेवाले यतियोके लिए कुछ दान दिया था । ]

[ ए० ड० ११ पृ० ३४ ]

२१६

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

सन् ११३४, तमिल

[ यह लेख परकेसरिवर्मन् विक्रम चोल राजाके १६वें वर्षमे लिखा गया था । इसमे वैशाख मासमे उत्सवोके अवसरपर अरुमोलिदेव (अर्हत्) तथा नित्यकल्याण देवकी पालकी-यात्राकी व्यवस्थाके लिए मलयन् मल्लन् अर्थात् विक्रमचोलमल्लन-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१० पृ० ६६ ]

२२०

## शेरगढ़ ( कोटा, राजस्थान )

संवत् ११६१ = सन् ११३५, संस्कृत-नागरी

- १ माहिल्लमार्यान्तिमा—स्य तिलके सूर्याश्रमं प (त्त) ने । श्रीपालो गुणपालकश्च त्रिपु-
- २ ले खण्डि (लवा) ले कुले सूय (र्या) चन्द्रमसाविवाम्बरतले प्राप्तो क्रमान्मालवे ॥१॥ श्रीपालादिह देवपालतनयो दानेन चिन्तामणि(ः) शा-
- ३ (न्ते. श्री) गुणपालठक्कुरसुताद् रूपेण कामोपमात् । पूनीमर्थ-जनेरुहकप्रभृतयः पुत्राश्च येग्रा नव तैः सर्वैरपि कोशवर्धनत-
- ४ ले रत्नत्रय कारित(.) ॥२॥ वर्षे रुद्रशतैर्गतै शुभतमैरेकानव-त्याधिकैर्वैशाख(खे) धवले द्वितीयदिवसे देवान् प्रतिष्ठा-
- ५ पितान् । वन्दन्ते नतदेवपालतनया माल्हूसधान्वादय पूनी-शान्तिसुतश्च नेमिमरता. श्रीशान्तिसत्कुन्ध्वरान् ।
- ६ ॥३॥ दादिसूत्रधारोत्पन्नः शिलाश्रीसूत्रधारिणा । शान्तिकुन्ध्वरना-मानो जयन्तु वटिता जिनाः ॥४॥ देवपालसु-
- ७ तेल्लुक गोण्डित्रीसललल्लुक मौक हरिश्चन्द्रादि गागासुपुत्र (.) अल्लुक ॥५॥ संवत् ११९१ वैसाष सुदि २ (म)-
- ८ गलदिने प्रतिष्ठा कारापिता ॥

[ यह लेख वैशाख शु० २, मंगलवार, संवत् ११९१ का है । इस समय खण्डिल्लवाल कुलके शान्तिके पुत्रोने रत्नत्रय अर्थात् शान्ति, कुन्धु तथा अर इन तीन तीर्थकरोकी मूर्तियां स्थापित की थी । इनका निर्माण सूत्रधार दादिके पुत्र शिलाश्रीने किया था । ]

[ ए० इ० ३१ पृ० ८३ ]

२२१

## कोल्हापुर ( महाराष्ट्र )

शक १०५८ = सन् ११३५ कन्नड़

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादामोघलाहनं । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशामनं ॥ (१) स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द  
महाम-
- २ ण्डलेश्वरं । तगरपुरवराधोश्वरं श्रीशिलाहारनरेंद्रं । जीमूत-  
वाहनान्वयप्रसूतं । सुवर्णं गरुडध्वजं मरेवोक्कमर्पं । अय्यन
- ३ सिंग । रिपुमण्डलिकभैरव । विद्विष्टगजकण्ठीरवं । इडुवरादित्य ।  
रूपनारायणं । कलियुगविक्रमादित्य । शनिवारसिद्धि गिरिदु-
- ४ र्गलघनं । श्रीमहालक्ष्मीदेवीलब्धवरप्रसादादिसमस्तसाजावली-  
विराजितरूप्य श्रीमन्नहामण्डलेश्वर गण्डरादित्यदेवरु वल-  
वाहद ने-
- ५ लेवोडिनल् सुखसकथाविनोददि राज्यगेय्युत्तमिरे । तत्पादपञ्चोप-  
जीवि समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्त । विजयल-
- ६ क्ष्मीकान्तं । रिपुसामन्तसीमन्तिनीसीमन्तभग । वीरवरागना-  
प्रियभुजगं । वैरिसामन्तमेघविघटनसमीरणं । नागलदेविय  
गन्धवा-
- ७ रणं विद्विष्टसामन्तविलयकाल । सामन्तगण्डगोपालं । दायादसा-  
मन्ततारासुरवीरकुमार । सामन्तकेदारं । तोण्डसामन्त-  
पुण्डरीक-
- ८ षण्डप्रचण्डमदवेदण्डं । गण्डरादित्यदेवदक्षदक्षिणभुजादण्ड ।  
थाचकजनमनोभिलषितचिन्तामणि । सामन्तशिरोमणि । जिन-  
चरणसरसिरु-

- ९ हमधुकरं सम्यक्त्वरत्नाकरनाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदं  
पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसाद । नामादिसमस्तप्रशस्तिसहित श्री-  
मन्महा ।
- १० सामन्त्र । निवदेवरसरु । कवडेगोल्लद वलिय सन्तेय मुद्गोडे-  
यल् माडिसिद वसदिय पार्श्वनाथदेवरष्टविधार्चनक्कमा वसदिय  
जीर्णोद्धारक्क-
- ११ मल्लिप्प ऋषियराहारदानक्कं । स्वस्ति । समस्तभुवनविख्यात-  
पचशतवीरशासनलब्धानेकगुणगणालकृत सत्यगौचाचारचार-  
चारित्रनयविनय-
- १२ विज्ञान वीरवल्ल ज्ञधर्मप्रतिपालन विशुद्ध गुडुध्वजविराजमानानून-  
साहसोत्तुग कीर्त्यङ्गनालिंगित निजभुजोपार्जितविजयलक्ष्मी-  
निवासवक्षस्थलहं ।
- १३ भुवनपराक्रमोन्नत वासुदेवखण्डलीमूलभद्रवशोद्भवरु । भगवती-  
लब्धवरप्रसादहं । तावु काडि सोलदरु । मरुवक्कमारिगळुं  
परस्त्रोपर
- १४ धनवर्जितहं चतुष्पष्टिकलेगलोल् प्रवीणरप्पुदरिं । ब्रह्मनन्नरु ।  
चक्रमुल्लुदरिं नारायणनन्नहं । दृष्टियोल् नोडि कोल्लुदरिं ।  
कालाग्निरुद्रनन्नरु । को-
- १५ न्दरनरसि कोल्लुदरिं । परशुरामनन्नहं । तुल्लिदु कोल्लुदरिं ।  
मदान्धगन्धसिन्धुरदन्नरु । गिरिदुर्गम मरेवोक्करं तेगेदु कोल्ले-  
डेयोल् सिंहदन्नरु ।
- १६ पातालम पोक्कर कोल्लेडेयोल् वासुगियन्नहं । आकाशदोलिदरं  
कोल्लेडेयोल् गरत्तमनन्नहं । पेंपिनल् पृथिव्यन्नरु । विण्पिनल्  
कुलगि-
- १७ रियन्नहं । गुण्पिनल् महासमुद्रदन्नरु । उद्योगदल् रामनन्नहं ।

पराक्रमदोल् पार्थनन्नरं । शाचदोल् गांगेयनन्नरं । साहसदोल्  
मामनन्न-

१८ रं । धर्मदोल् धर्मपुत्रनन्नरं । ज्ञानदोल् महदेवनन्नर । भोगदलि-  
द्रनन्नर । त्यागदोल् कर्णनन्नर । तेजदलादित्यनन्नरं । अद्विच्छन्न-  
मेनिसुवय्यवोलेपुरप-

१९ रमंउवररुमप्यन्तूर्स्वामिगलु गवरैयरु । गात्रियरं । सेट्टियरं ।  
सेट्टिगुत्तरु । गामण्डरु । गामण्डस्वामिगलु । वीर

२० रु । वीरवणिगरं । कोल्लापुरद विल्पाणसेट्टियु । गोविन्दसेट्टियुं ।  
कोमर अणमय्यनुं । मिरिजेय विज्जसेट्टियुं । वोप्पिमे-

२१ ट्टियु । गण्डरादित्यदेवर राजश्रेष्ठि वेमपय्यसेट्टियरं । आ मण्ड-  
लेइवरन वीढिन वम्मिसेट्टियुं । कूडिपट्टनदादित्यगृह-

२२ द सासनिरं हेग्गडे रावसेट्टियुं । चौधारे वोप्पिमेट्टियुं । तारं-  
वगेय प्रभु कन्नपय्यसेट्टियु । मयिसिगेय काजगारं चौवो-

२३ रे गोरविसेट्टियुं । वलेयवट्टणद शान्तिसेट्टियु । अय्यवोलेय्य-  
न्तूर्वर सिंगं हालियसेट्टियुं । कवडेगोल्लद प्रभु खप्परय्यना-

२४ दिय्यागि समस्तदेशं नरेट्टु । शकवर्षद मासिरदय्वत्तेटेनेय  
राक्षससवत्सरद कार्तिकवहुल पचमि सोमवारदंडु श्रीमूलसंघ-

२५ देसीयगण-पुस्तकगच्छद कोल्लापुरद श्रीरूपनारायणवसदिया-  
चार्यरप्य आश्रुतकीर्तित्रैविद्यदेवरु कालं कर्चिं । धारापू-

२६ र्चकमागि कोट्टायमेन्तेदोडे अडके हेरिगे अरवत्तु । जवलक्किर्पत्तु  
हसरकरट्टु । एले हेरिगे नूरु । तलेवोगेगयवत्तु । हमरकिर्प-

२७ त्तरट्टु । तुप्पमेण्णेयेविनु कोडक्के सोल्लगे सिद्दिगेगरवाण सगडि-  
गोर्माणं दूसिगवसरक्कमक्कसालेग होंगे हणं । हत्ति मलवेग-

२८ य्वलं । मण्डिय करुसेय मलवेगेरड्डु वीसिगे । जवलक्के पलं

पत्त । लंकरोक्कलल्लि आरु तिगल्लगे मणेतिविगे मरवियेबिवो-  
न्दक्कु । वर्षक्के म-

२९ चवोन्दक्कु । अल्लवरिसिन शुण्ठि बेत्तुल्लि बजे मद्रमुस्तेयेंविवु  
मोदलागि तूगि मारुव मण्डंगल्लगे हेरिंगय्वलं जवलक्किप्पल  
हस-

३० रकोप्पलं जीरगे मेलसु सामवियेविवु हेरिगोम्मानं जवलक्क-  
रवन हसरक्के सोल्लगे । उप्पु मोदलागि हदिनेट्टु ध्यानं-

३१ गल्लग मडिगे कोलगवोंटु हेरिंगे मानवेरड्डु तलेवोरेगोमानं वाडु  
कार्येविवु मंडिगें हत्तु तलेवोरेगे नालक्कुं । भण्डिगे दण्डिगे  
वोंटु ।

३२ सेवेययट्टु हूट्टेयेरडक दण्डिगे वोंटु सेवेयेरड्डु हूविन हेडलिगेगे  
माले वोन्दु कुंवररत्तिल हसरक्के मडके वोन्दु ॥ इन्तीया-

३३ यमनलिदाताते वाणराशिकुरुक्षेत्रादिगल्लोल् पंचमहापातकसं  
माडिद फलमकुं ॥

[ इस लेखका साराण द्वितीय भागमें क्र० ३०२ में दिया है किन्तु उस समय मूल लेख प्रकाशित नहीं हुआ था । यह लेख शिलाहार वंशके महामण्डलेश्वर गण्डरादित्यके समय शक १०५८ में लिखा गया था । इसका सामन्त निम्बदेव था जिसने तोण्डमण्डलके युद्धमें शूरता प्रदर्शित की थी । निम्बदेवने कवडेगोल्ल नगरमें एक जिनमन्दिर बनवाया था । इसके बाद वीरवल्लज लोगोंके सघका विस्तृत वर्णन है । उसके प्रतिनिधियोने कोल्हापुरके रूपनारायण जिनमन्दिरके व्यवस्थापक मूलसघ-देशीय गणके श्रुतकीर्ति त्रैविद्यको कवडेगोल्ल जिनमन्दिरके लिए उक्त तिथिको कुछ करोका उत्पन्न दान दिया । ]



२२२

कोल्हापुर ( महाराष्ट्र )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध कन्नड

महालक्ष्मी मन्दिरमें छतके खम्भोंपर

[ यह लेख गिलाहार राजा गण्डरादित्यके समयका है । इनके सामन्त निम्बने एक चैत्यालय बनवाया था । नाकिराजकी कन्या कर्णादेवीका भी उल्लेख है जो एक रानी थी । कोण्डकुन्दान्वयके माघनन्दि आचार्यका भी उल्लेख है । ]

[ रि० ड० ए० १९४५-४६ क्र० ३५१ ]

२२३

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

सन् ११३७, तमिल

[ यह लेख कुलोत्तुग चोलदेव ( द्वितीय ) के राज्यवर्ष ४ मे लिखा गया था । आलप्पिरन्दान् मोगन् उपनाम कुलोत्तुगशोलकाडवरायन्-द्वारा कच्चिनायनारु (चन्द्रप्रभ) की पूजाके लिये जननाथमंगलम् गाँवके उत्पन्न-से ४२० कलम् ( नापका प्रकार ) चावल अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३११ पृ० ६६ ]

२२४

गणपचरम् ( गुण्टूर, आन्ध्र )

११वीं-१२वीं सदी, तेलुगु

[ यह लेख श्रावण गु० ३ का है - शकवर्षके अक लुप्त हुए हैं । कुलोत्तुग राजेन्द्रके पुण्यवृद्धिके लिए अक्कसाल कामोजु-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । अन्तमे चन्द्रप्रभजिनालयका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ पृ० ४३ क्र० ४५८ ]

२२५-२२७

तिरुक्कोल ( उ० अर्काट, मद्रास )

११वीं-१२वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें तण्डपुरम्की पल्लि ( जैनवसति ) के लिए एरणन्दि उपनाम नरतोग पल्लवरैयन्-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । यह ग्राम पोन्नूरनाडुमे सम्मिलित था । यहीके एक अन्य लेखमें शेम्बियन् शेम्बोत्तिलाडणार्-द्वारा कनकवीर शित्तडिगल्को कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । यह चोल राजा परकेसरिवर्मन्के १२वें वर्षका लेख है । तीसरा लेख स्थानीय वर्धमानमन्दिरके दो स्तम्भोपर है । ये स्तम्भ अश्मोलिदेव-पुरम्के इडैयारन् आट्कोण्डान् मावीरन्-द्वारा स्थापित हुए थे । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० २७६-२८० पृ० ९१ ]

२२८-२३०

वस्तिहल्लि ( मैसूर )

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[ यहाँ तीन लेख है । एक जिनमूर्तिके पादपीठपर मूलसध-देसियगणके-कुक्कुटासन-मलघारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तिदेवके शिष्य दण्डनायक गगपय्यका नामोल्लेख है । एक दूसरे मूर्तिके पादपीठपर मूलसध-देसियगणके दिनकरजिनालयमे हेगडे मल्लिमय्य-द्वारा मूर्तिस्थापनाका उल्लेख है । इस मन्दिरके द्वारके लेखमें इस मन्दिरकी स्थापनाका वर्ष सन् ११३८ दिया है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४४ ]

२३१

नाडलाई ( जि देमूरी, राजस्थान )

संवत् ११९५ = सन् ११३९, सस्कृत-नागरी

१ ओं नम सर्वज्ञाय ॥ संवत् ११

- २ ९५ आसडज वट्टि १५ कुजे ।  
 ३ अघेह श्रीन (डू) लडर (गि) कायां महा-  
 ४ राजाधिराजश्रीराय (पा) लडेवे । विज -  
 ५ यी राज्यं कुर्वतीत्येतस्मिन् काले  
 ६ श्रीमद्भुजिततीर्थ श्री (ने)मिनाथदेव-  
 ७ स्य डीपवृषनैत्रे(द्य)पुष्पपूजाद्यर्थे गू -  
 ८ हिलान्वय. राउ० ऊधरणसूनु  
 ९ ना मीक्तारि ठ० राजदेवेन स्वपु-  
 १० ण्यार्थे स्वीयादानमध्यात् मार्गे[र]  
 ११ च्छत्तानामागताना वृषभानांशेके (पु)  
 १२ यदामाच्य भवति तन्मध्यात् वि(श)  
 १३ तिमो मागः चंद्राकं यावत् देवस्य  
 १४ प्रदत्त. ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा  
 १५ केनापि परिपथा न करणीया  
 १६ अस्मदत्त न केनापि लोप(नी)यं ॥  
 १७ स्वहस्ते परहस्ते वा य. कोपि लोप -  
 १८ यिष्यति तस्याहं करे लग्नो  
 १९ न लोप्य मम शासनमिदं । लि० -  
 २० (पा,सिलेन ॥ स्वहस्तोयं सामि -  
 २१ ज्ञानपूर्वकं राउ० रा(ज)देवे-  
 २२ न मनु दत्तं ॥ अत्राहं साक्षि-(णा)-  
 २३ ज्योतिषिक (दूढ)पासूनुना गूगि-  
 २४ ना । तथा पला० पाला० । पृथि  
 २५ वा १ मांगु(ला) ॥ टेपसा । रा  
 २६ पसा ॥ मगलं महा (श्रीः) ॥

[ उक्त लेख सन् ११९५ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था । इसमे नदूलडागिकाके नेमिनाथमदिरके लिए ठा० राजदेव द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है ]

[ ए० इ० ११ पृ० ३६ ]

२३२

नाडलाई, ( जि देमूरी, राजस्थान )

सन् १२०० = सन् ११४४, संस्कृत-नागरी

- १ ओ सव(त्) । १२०० जेष्ट (सु)दि ५ गुरौ श्रीमहाराजाधिराज-  
श्रीरायपालदेवराज्ये—हास -
- २ समये रथयान्नायां आगतेन रा० राजदेवेन आत्म-पाइलामध्यात्  
( सर्वसाउतपुत्र ) विमो—
- ३ पको दत्त । आत्मीयघाणकतेलव(ल)मध्यात् । मातानिमित्तं  
पलिकाद्वयं । प्ली २ दत्त ॥ म-
- ४ हाजनग्रमीण । जनपदसमक्षाय । धर्माय निमित्तं विसोपको  
१ पलिकाद्वयं दत्त ॥ गोह -
- ५ त्याना सहस्रेण ब्रह्महत्यासतेन च । स्त्रीहत्याभ्रूणहत्या च जनु  
पापं तेन पापेन लिप्यते स० ॥

[ यह लेख संवत् १२०० में राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था । यात्राके लिए आये हुए रा० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । ]

[ ए० इ० ११ पृ० ४१ ]

२३३

कम्बदहलिल ( मैसूर )

सन् ११४५, कन्नड

[ इस लेखमे होयसल राजा नरमिहके दो दण्डनायक मरियाने तथा

भरतिमय्य-द्वारा जान्तीश्वरवसदिके लिए मोदलियहल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान क्रोधनसवत्सरका है। तदनुमार सन् ११४५ का यह लेख है। ये दण्डनायक आचार्य गण्डविमुक्तदेवके शिष्य थे। ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ५१ ]

२३४

वालेहल्लि ( वारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ८ = सन् ११४५, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लदेवके राज्यवर्ष ८, क्रोधन सवत्सरमे फाल्गुन शु० १, रविवारके दिन उत्कीर्ण किया गया था। वम्मिसेट्टिने वालेहल्लिमे पार्श्वनाथमन्दिरका निर्माण किया तथा उसकी रक्षाके लिए देसिगण, पुस्तकगच्छ, ( कोण्डकुन्द ) अन्वयके मलघारिदेवको कुछ दान दिया ऐसा इसमे उल्लेख है। मन्दिरको दिये गये कुछ अन्य दानोका भी इसमे उल्लेख है। ]

[ रि० ड० ए० १९४७-४८ क्र० १७६ पृ० २२ ]

२३५

नाडलाई ( जि० देसूरी, राजस्थान )

सवत् १२०२ = सन् ११४६, सस्कृत-नागरी

- १ ओं ॥ संवत् १२०२ आम्रोज वदि ५ शुक्रे श्रीमहाराजाधिराज-श्रीरायपालदेवराज्ये प्रवर्त(माने)
- २ श्रोनदूलडागिकाया रा० राजदेवठकुरेण प्रव(र्त)मानेन श्रीमहा-वीरचैत्ये साधुत-
- ३ पोधननि(ष्ठार्थे) श्रीअमिनवपुरीय वज्रार्या अ(त्रै)पु स(म)स्त-वणजारकेपु देसी मिलित्वा वृ -

४ (ष) म (भ) रित जतु पाइलालगमाने ततु वीस प्रति रूभा २  
किराडउभा गाड प्रति रू १ वण -

५ जारकै धर्माय प्रदत्त ॥ लोपकस्य जनु पाप गोहत्यासहस्रेण  
ब्रह्महत्यासतेन पापेन लिप्यते स ॥

[ यह लेख सवत् १२०२ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमे  
लिखा गया था । इसमे नदूलडागिकाके महावीर मन्दिरमे भाये हुए साधुओ-  
के लिए ठ० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है । ]

[ ए० इ० ११ पृ० ४२ ]

२३६

कुण्टन होसल्लि ( जि० धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

वसवण्ण मन्दिरके समीप शिलापर

[ यह लेख खराब हुआ है । चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय  
दसवें वर्ष, प्रभव सवत्सरमे यह लिखा गया था । नागिसेट्टि-द्वारा किसी  
जैन देवताको कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमे निर्देश है । कदम्ब-  
वंशीय तैल मण्डलेश तथा आचलदेवीका भी इसमे उल्लेख है । ]

( रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६८ )

२३७

नीरल्लिगि ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यवर्ष १० मे पुण्य शु०  
१३, गुरुवार, उत्तरायण सक्रान्तिके दिनका है । इसमे नेरिल्लिगेके नाल्प्रभु  
मल्लगावुण्ड-द्वारा स्वनिर्मित मल्लिनाथ-जिनालयके लिए कुछ भूमि मूलसध-

मूरस्थ गण-चित्रकूट गच्छके हरिणन्दिदेवको अर्पित की जानेका उल्लेख है ।  
मल्लगावुण्ड चतुर्थजातिका व्यक्ति था । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० इ० ६१ पृ० १२४ ]

२३८

करगुदरि ( जि० धारवाड, मैसूर )

सन् ११४८, कन्नड

[ यह लेख पौष शुक्ल १, सोमवार, प्रभव सवत्सर, के दिन लिखा गया था । महावड्ढुव्यवहारि कल्लिसेट्टि-द्वारा करेगुदुरेमे विजयपार्व्वजिनेन्द्र मन्दिर बनवाया गया उसे कुछ जमीन दान देनेका इममें निर्देश है । यह दान मूरस्थ गण, चित्रकूट अन्वयके वासुपूज्यके गिष्य हरिणन्दिके शिष्य नागचन्द्र भट्टारकको दिया गया था । उस समय महाप्रचण्डदण्डनायक सोवरसका शासन हानुगल ५०० के प्रदेशपर चल रहा था तथा उसके एक भागपर मण्डलेश कदम्बवगीय तैलका अधिकार था । इस समय चालुक्य प्रतापचक्रवर्ती जगदेकमल्ल सम्राट् थे । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६७ ]

२३९

हुलगूर ( जि० धारवाड, मैसूर )

१२वीं सदी - मध्य, कन्नड

[ यह लेख अधूरा है । चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय पुरिगेरे तथा वेलवोल प्रदेशपर महाप्रचण्डदण्डनायक वावणरस शासन कर रहा था । इनका मामन्त मणलेर कुलका जयकेशी था जो पुरिगेरेके राष्ट्रकूट पदका अधिकारी था । इसके समयकी एक जैन श्राविका नीलिकट्वेका इस लेखमें निर्देश है । ]

२४०

## शृंगेरी ( मसूर )

शक १०७१ = सन् ११५०, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादामोघला-
- २ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशामन
- ३ स्वस्ति श्री(म)तु सकवरुपंगलु १०७१ ने प्रमोदू-
- ४ तसंवत्सरठ वयिसाखमासठ शुद्ध सप्तमि
- ५ स दन्टु श्रीकाणूरुगण मूलसघ
- ६ पुस्तकगच्छद...हरिय
- ७ मंगल

[ यह लेख पार्श्वनाथदमदिके मुखमण्डपके एक पापाणपर है । वैशाख शु० ७, शक १०७१, प्रमोदूत सवत्सर इस तिथिका तथा मूलसघ-काणूरु-गण-पुस्तकगच्छका इसमे उल्लेख है । लेख अस्पष्ट होनेसे इसका उद्देश आदि विवरण ज्ञात नहीं हो सकता । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० ११३ ]

२४१

## अरसीवीडि ( विजापूर, मैसूर )

चालुक्यविक्रम वर्ष ७६ = सन् ११५१, कन्नड

[ इस लेखमे चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके सामन्त वीरचाण्डरस तथा उसको पत्नी देमलदेवी-द्वारा पीप व०-२, बुधवार, चालुक्य विक्रम वर्ष ७(६)के दिन मूलसघ-देशियगणके आचार्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र पण्डितदेवको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ३३ पृ० ४३ ]



२४२-२४३

छतरपुर ( मध्यप्रदेश )

सं० १२०८ = सन् १५५१, मस्कृत-नागरी

[ ये दो लेख लखनऊ म्युजियमकी दो मूर्तियोंके पादपोठीपर हैं । ये मूर्तियाँ छतरपुरसे प्राप्त हुई थी । सुविधिनाथ तथा नेमिनाथकी इन मूर्तियोंकी स्थापनातिथि आपाढ शु० ५, गुरुवार, सं० १२०८ थी ऐसा लेखमे कहा है । ]

[ मे० आ० सं० ११ ( १९२२ ) पृ० १४ ]

२४४

स्टेट म्युजियम, भरतपुर ( राजस्थान )

सं० ११०९ = सन् १०५३, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें ज्येष्ठ शु० (?) रविवार, सवत् ११०९ के दिन पार्श्व-नाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । लेख मूर्तिके पादपीठपर उत्कीर्ण किया है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६३ पृ० २१ ]

२४५

शेडवाल ( बेलगाँव, मैसूर )

शक १०७५ = सन् ११५३, कन्नड

[ यह लेख वसवर्णमन्दिरमे लगा हुआ है । इसमें सेणिग कोत्तलि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ करोके उत्पन्नके दानका उल्लेख किया है । तिथि चैत्र शु० ५, रविवार, श्रीमुख सवत्सर शक १०७८ ऐसी दी है । किन्तु तिथि आदिकी गणनानुसार यह शक १०७५ का लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १८७ पृ० ३६ ]

२४६

वेलूर (मैसूर)

शक १०७६ = सन् ११५३, कन्नड

- १ निश्शेषशास्त्रवाराशिपारगैः । श्रीवर्धमानस्वामिगल धर्मतीर्थ प्र -  
 २ मद्रथाहुमट्टारकरिंद । भूतवलिपुष्पदंतस्वामिगलिंद । एकसंधि-  
 सु(मातिगलिंदं अ) -
- ३ कलंकडेवरिंदं । वक्रग्रीवाचार्यरिंद । वज्रणडिमट्टारकरिंद  
 मिहणं (टि कनक-)
- ४ मेन वादिराजडेवरिंदं । श्राविजयडेवरिंदं । शांतिडेवरिंदं पुष्प-  
 सेन(डेवरिंदं ।)
- ५ अजिनसेनपंडितडेवरिंदं । कुमारसेनडेवरिंदं । मल्लिपेण मलधा-  
 रिंदे(वरिंदं)
- ६ (श्रु)तकीर्ति श्रीपालं वरवाणिश्रीपालं विरुदवाडिमदविस्फालं ॥  
 तमगे -
- ७ (अ)मदेंत्ति धरेगेयडे तम्म मुखदोल् पट्टकंवाराशिविभ्रममापो ..
- ८ रुम कील्पडिसित्तु पॅपिनेसक श्रीपालयोगीद्रर ॥ आवन  
 विपयमो
- ९ (ग)घपद्यवचोविन्यास निसर्गविजयविलासं । कश्चिद् वाद-  
 विनोदकोविद ..
- १० दक्ष कश्चन कश्चनापि गमको वाग्मी पर कश्चन । पाट्टित्ये  
 सुचतुर्विधेपि निपुण श्रीपालदेव. पुनस्तकंव्याकरणागम-
- ११ प्रव्रणधीस्त्रैविद्यविद्यानिधि । अवर सधर्मर् । वर्गत्यागद  
 सूचितमार्गोपन्यासदलम मानुडियत्कामर्गवरीदे-
- १२ नल्के निरगलमादत्तनन्तवीर्यव्रतियोल् ॥ आ श्रीपालत्रैविद्यदेवर  
 शिष्यर् ॥ श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापतिपटकमलारा-

- १३ धनालब्धद्विः सिद्धांतामोनिधानप्रविसरदमृतास्त्रदपुष्टप्रमोद ।  
दीक्षाशिक्षासुरक्षाक्रमकृतिनिपु-
- १४ णः सन्तत मव्यसंव्य. सोत्र दाक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयते  
वासुपूज्यव्रताद्र ॥ मत्यशौचकरणागुणोत्करैस्त्य-
- १५ क्तलोभमदमानरोषणै । शुद्धवृत्तियुतवाधदर्शनैर्वादिराज मुनिराज  
राजसे ॥ श्रापालत्रैविद्यश्रीपादप-
- १६ मान्तरगसगतभृग श्रीपरिपूर्ण होय्सलभूपालकमन्त्रि माचदण्डा-  
धीश ॥ जिननासं पारेद नृपालतिलक श्री-
- १७ विष्णु (भूपा)लक जनक स एर्यगवेगडे जगद्विख्याते राजव्वे  
ताय् तनगिन्नम्मडिदण्डनायकने ता मावं महामन्त्रि
- १८ येन्देनला माचिणदण्डनाथने ब्रह्म धन्य पेर धन्यने ॥ सुरगुरु-  
मंत्रक्रमदोल् धुरदोल् मिहप्रतापनप्र-
- १९ तिमतेज सुरतरु वितरणगुणदि नरसिंहमहीशमन्त्रि माचचमूर्पं ॥  
स्वस्ति ममस्तप्रशस्तिमहित श्री-
- २० मन्महाप्रधानं माचियणदण्डनायक तनगं ब्रवगुरुगलु श्रुतगुरु-  
गलुमेनिसिद परवादिमल्ल-
- २१ वादीभसिंह महामण्डलाचार्य श्रीपालत्रैविद्यदेवर् माडिसि-  
दादिदेवर बसदिय केलसद कोरतेग देवर्
- २२ अष्टविधार्चनेग ऋषियराहारदानक्कवागि शकवर्ष १०७६ नेय  
श्रीमुखसवत्सरदुत्तरायणसक्रमण-
- २३ ददु महादानगल माडु तिर्पा समयदोले माचिणदण्डनायक  
विज्ञपं गेय्यल् होय्सलश्रीनारसि-
- २४ हदेवर् कम्बुणाड नागरहालं सर्ववाधापरिहारवागियादिदेवर्गे  
धारापूर्वक माडि कोट्ट दत्तिय-
- २५ तु देवदानवादा नागरहाल चतु.सीसियप्पुदु मूडलु कल्ल दोणे  
संचरिवल्ल । आग्नेयदल्ल कडवदको

- २६ लड होरेंयणि भागवागि वन्द हेद्वट्टे । तेंकल् जालदहल्ल वल्लि  
हड्डुवल्लु केंडलिरहल्ल । नैऋत्यदल्लु हुलियक्-
- २७ लळाल हड्डुवल्लु हुलियहल्ल । वायव्यदल्लु सूळड हिरियकणि ।  
वडगल् भागेडेगे हाह हेदारियव-
- २८ डगण मोरडि । इशान्यदोल् कोडेयालव्हिल्ल तेकलु नट्ट कल्लु ।  
इंतो चतुःमीमे वेरसु नागरहाल वल्लजिना (ळ)य-
- २९ क्के सर्वनमन्यवागि पडिसलिसुववगे गंगेय तडियल् सायिर  
कविलेयं कोडुं कोलगुमं होन्नलु कट्टिसि चतु-
- ३० गुत्तरायणसंक्रमणग्रहणव्यतीपातदंडु दान माडिड फलवी  
धर्ममं कि-
- ३१ 'यला कविलेयुमना ब्राह्मणरुमना तिथिवारडलु-
- ३२ ' मंम प्रतिपालिसुवुदु ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत
- ३३ ' जायते क्रिमि ॥ मंगल महा श्री श्री पालित
- ३४ जालोलं विशदयशोलीलं गुणसेनपंडित बुधर्नि .
- ३५ 'पुरदर गुणसेनपंडित . '

[ यह लेख केशवमन्दिरके छतमे लगा पाया गया । इसमे पहले वर्ध-  
मानस्वामी ( महावीर ) से प्रारम्भ कर कई आचार्योंकी परम्परामे श्रीपाल  
त्रैविद्यदेवका वर्णन किया है । इनके द्वारा निर्मित आदिदेवकी वसदिके  
लिए होयसल राजा नरसिंहके सेनापति माचियणने नागरहाल ग्राम दान  
दिया था । दानकी तिथि शक १०७६ की उत्तरायणसक्रान्ति थी । लेखमे  
श्रीपाल त्रैविद्यके गुरुबन्धु अनन्तवीर्य तथा शिष्य वासुपूज्य एव बादिराज-  
का भी वर्णन है । अन्तमे गुणसेन पण्डितका भी उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १०२ ]

२४७

वल्लुगेरि ( वेलगाँव, मैसूर )

शक १०७८ = सन् ११५६, कन्नड

[ इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालमें कलचुरि वंशके विज्जल ( द्वितीय ) तकके सामन्तोकी वशावली दी है । विज्जलके बन्धु मैलुगि तथा उसकी पत्नी लक्ष्मादेवीका ग्रामन वेलवल ३०० प्रदेशपर चल रहा था उस समय राजाके मन्त्री कालिदास चम्पने पार्श्वनाथतीर्थकी यात्रा कर एक मन्दिर बनवाया तथा उसके लिए कुछ दान दिया । इसकी तिथि पुष्य शु० (१२), धातु मवन्सर, शक, १०७८, उत्तरायण-सक्रान्ति ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७५ पृ० ३५ ]

२४८

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् ११५६, तमिल

[ यह लेख चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें लिखा गया था । इस मन्दिरमें मन्व्यासमय दीप प्रज्वलित रखनेके लिए मन्दिर-अधिकारी-द्वारा ३०० कागु स्त्रीकार किये जानेका इसमें निर्देश है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४१ ]

२४९-२५०

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

सन् ११५६-५७ तमिल

[ इस लेखमें जयंगोण्डशोलमण्डलम् प्रदेशके ऊरुक्काडु ग्रामके एक वेल्लाल-द्वारा करन्दैस्थित जिनमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए कुछ

गायें दान दी जानेका उल्लेख है । यह चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें दिया गया था । राजराजदेवके ११वें वर्षका एक लेख यही है ! इसमें पनेयूरनाडु प्रदेशके अरुमोलिदेवपुरम् स्थानके नगरत्तार् लोगो-द्वारा तिरुप्परम्बूरके जिनमन्दिरमें प्रबोधन समारोहके अवसरपर दिये गये दीप-दानोका विवरण दिया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३१-१३२ ]

२५१

करडकल ( रायचूर, मैसूर )

शक १०८१ = सन् ११५९, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा त्रिभुवनैकवीर विज्जलके राज्यकालमें आषाढ, दक्षिणायन सक्रान्ति, शक १०८१, प्रमाथि सवत्सर, गुरुवारके दिन लिखा गया था । इसमें एक सेनापति तथा पद्मलदेवीका उल्लेख है तथा मूलमघ-देसिगण-पुस्तकगच्छके किसी आचार्यको दान दिये जानेका उल्लेख है । इस समय यह लेख वीरभद्रमन्दिरमें लगा है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २३८ पृ० ४१ ]

२५२

केरेसन्ते ( कडूर, मैसूर )

१२वीं सदी ( सन् ११५९ ), कन्नड

- १ बहुधान्यसंवत्सरद माघ सु १५ रलु
- २ श्रीमत् प्रतापचक्रवर्ति होयसण श्री
- ३ वीर नारसिंहदेवरसरु अडकेय पा-
- ४ रिशदेवन मग चिक्कमल्लणगे केरेयसथे-
- ५ य द्रविलसंघट आदिनाथदेवर पाश्वर्ददेवर
- ६ वसदिगलिगे भा केरेयसंथेय हिर्यकेरेय

- ७ केलगुलनह त्थलवृत्तिय तोट गढे वेडलु म-  
 ८ ने आ देवहगलिगुलंतह समस्ततेजस्वा-  
 ९ म्यवनु आ श्रीवीरनारसिंहदेवगरु आ मल्ल-  
 १० षणगे दानवागि भारापूरक माडि आचद्रार्क-  
 ११ तारवर सल्वतागि कोट्टरु मगल महा श्री श्री

[ इस लेखमें होयसल राजा नरसिंह-द्वारा केरेयसथे स्थित द्रविलसघकी आदिनाथ-पार्वनाथ वसदिके लिए चिक्कमल्लणको कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है तदनुसार यह लेख बहुधान्य सवत्सर = सन् ११५९ का होगा । तब नरसिंह प्रथमका राज्य चल रहा था । इस समय यह लेख जनार्दनमन्दिरमें लगा है । ]

[ ए० रि० मै० १९४५ पृ० ११२ ]

२५३

हुल्लियार ( मैसूर )

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[ इस लेखमें होयसल राजा नरसिंह १ के समय चान्द्रायण देवके शिष्य सामन्त गोवकी पत्नी श्रीयादेवी-द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । इस समय यह पादपीठ विष्णुमूर्तिके लिए उपयोगमें लाया जाता है । ]

[ ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५ ]

२५४

हरिद्वार ( उत्तरप्रदेग )

स० १२१६ = सन् ११५९, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख पीतलकी चौबीसी-मूर्तिके पीठपर है । इसमें मूर्तिकी न्यापनातिथि आपाठ ९, न० १२१६ दी है । मूर्ति इस समय लखनऊ म्युजियममें है । ]

[ मै० आ० स० ११ ( १९२२ ) पृ० १५ ]

२५५

## शृंगेरी ( मैसूर )

शक १०८२ = सन् ११६०, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादामोवलांछनं (1)
- २ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनं (11)
- ३ स्वस्ति श्रीमत् सकवर्षं द १०८२
- ४ विक्रमसवत्सरद कुम्भ शु-
- ५ द्द दशमि बृहन्नारदन्दु श्रीमन्निडुगोड
- ६ विजयनारायण शान्तिसेट्टिय पुत्र वा-
- ७ सिसेट्टियर अक्क सिरियवेसेट्टियर म-
- ८ गलु नागवेसेट्टियर मगलु सिरिय-
- ९ लेसेट्टितिग हेम्माडिसेट्टिग सुपुत्रन-
- १० प्प मारिसेट्टिगे परोक्षविनयक्के मा-
- ११ डिसिद बसदिगे विट्ट दत्ति केरेय केलग-
- १२ ण हिरिय गदेय बसदिय बडगण होस-
- १३ यु भडियु होलेयुं नडुवण हुद्रांवन होरद
- १४ मण्णु कण्डुग सुल्लिगोड अरुगण्डुग मण्णु
- १५ वणजमुं नानदेसियु विट्टय
- १६ ' मलवेगे हाग हज हात्तिय मल
- १७ '...ले मेलसिन मारक्के हागमु
- १८ मत्तं पोत्ताव्वलुप्पु हेरिगय्वत्तेले अरिसिनद मलवेगे वीसक्के विट्ट  
तपिट्टडे तप्पिट्टननु गगेय-
- १९ लु साडर कविलेय कौण्ड पात्तक

[ यह लेख पार्श्वनाथमन्दिरके नभागृहमें है । इसकी तिथि शक



१०८२, विक्रममवत्सर, कुम्भ मास शु० १० गुरुवार ऐसी है। इस दिन इस मन्दिरके लिए कुछ भूमि तथा व्यापारियो-द्वारा कुछ करोका उत्पन्न दान दिया गया था। यह मन्दिर हेम्माडिसेट्टिकी पत्नी सिरियवेके पुत्र मारिसेट्टिकी स्मृतिमें बनवाया गया था। मन्दिरके गर्भगृहकी पार्श्वनाथ-मूर्तिके पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—श्रीमत्-पारिसनाथाय नमः । ]

[ ए० रि० मै० १९३३ पृ० १२२, १२५ ]

२५६

बावानगर ( विजापूर, मैसूर )

शक १०८३ = सन् ११६१, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा विज्जणदेवके समय शक १०८३, विक्रम सवत्सरका है। इसमें मूलसध-देसिगणके मगलिवेडके आचार्य माणिक्य-भट्टारकका तथा मैलुगि नामक शासकका उल्लेख है। इसने कन्नडिगेके जैन वसदिको कुछ दान दिया था। ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ पृ० १३० क्र० ई १२० ]

२५७

गुत्तल ( धारवाड, मैसूर )

शक १०(८४) = सन् ११६२, कन्नड

[ यह लेख गुत्त वंगके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यरसके समय पौष शु० १५, सोमवार, शक १०(८४) का है। इसमें केतिसेट्टि-द्वारा निर्मित पार्श्वदेवमन्दिरके लिए राजा-द्वारा भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। पुस्तकगच्छके मलधारिदेव तथा सोमेश्वरपण्डितदेवका भी उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई ५१ पृ० ९६ ]

२५८

## हालुगुड्डे ( मैसूर )

शक १०८४ = सन् ११६२, कन्नड

- १ नमस्तुंगशिरश्रुम्विचन्द्रचामरचारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्त-  
म्माय शम्भवे ॥ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्द
- २ अशेषमहामण्डलेश्वरनुत्तरमधुराधीश्वर पट्टिपोम्बुच्चपुरवरेश्वरं  
पद्मावतीलब्धवरप्रसाद मृगमदामोद सन्तत-
- ३ सकलजनस्तुत्य नीतिशास्त्रज्ञ-विरदसर्वज्ञ-नामादिप्रशस्तिसहितं  
श्रीमन्महामण्डलेश्वर प्रतापभुजबल
- ४ शान्तरदेवरु सान्तल्लिगेसाथिरमं सुखसंकथाविनोददिं राज्यं  
गेयुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपच-
- ५ महाशब्द महाप्रचण्डकुमार वेदण्डपंचानन रिपुकुमारतारक-  
षडाननं अरसकगाल विजयलक्ष्मीलोल श्रीमतु-
- ६ होसगुन्दद वीररसरु मेलुसान्तल्लिगेयुमं अग्रहारमुमं सुखदि-  
नालुत्तमिरे शकवर्ष १०८४ नेय चित्रमानुसंवत्सरद
- ७ वैशाख सुद १० वड्डुवारदन्दु कटद दण्डु अलिय वम्मणोयनुं  
पाण्ड्यरसनुम्बलिगारनु समस्तसाधन बेरसि वूरलु बिट्टु
- ८ वत्ति वहल्लि नेल्लिवडेयलु जिनपादशेखर सन्धिविग्रहि माचि-  
राजन ॥ कं० तलपारिनायकगे एलेयलु बोप्पेयन्वे नायकित्ति
- ९ मग भूवल्लयदोल् अधिक पुट्टिद कल्लिगल सुखतिलक गोग्गि-  
मण्टरदेव । रूपिनोलु कामसन्निभ कूर्पिनोला नरतनूज अभिमन्नु
- १० तां वेर्प जनक्कीवेडेयोलु नोर्पडे कलि गोग्गि कत्तवृक्ष जगदोल्  
धुरदोल् अरातिभूभुजरनन्तघट्टिरसकगाल वीर
- ११ नल्लुक्केथि वेससे गोग्गणन्तिरिवल्लि विदं वीरर नोरेनेत्तिरिं नेणन  
खण्डद दिण्डेगरुल्लि मयकर एने विक्रमं कल्लिग, ..

- १२ ना जगदेकवीरन । अणियरमोड्डिदड्डुणढ वीररनान्तिसुतिर्पं विल्ल  
वल्लणिय तुरंग साधनमनान्तिरिवल्लि महामयं
- १३ (ने)णमय खण्ड दिण्डि नोरेनेत्तर कापुंरमन्दु नोपेडेणकमो  
गोगियान्तिरिद विक्रममाहवरगभूमियो (ल्)
- १४ कलहदोलान्त वीरचतुरगवलगलनान्तु गोगिग तोल्वालघटिन्दे  
तूल्डिरिये विहरिसेनेय लोहिताम्बुविं पलवु सिरगल . .
- १५ रत्त वोलोप्पिरे वीररट्टेगल् तोलतोलगेन्दु तल्तिरिव सम्भ्रम  
संगररगभूलियोल्
- १६ . णमय लोहितवारि नेण्ट केसरुगल कुणिवट्टेगल् एन्दडिदेन-  
णकमो विक्रमद
- १७ 'वागलोन्दु तिरुविं विडुवाग्लू नूरु परिये सायिरवरियं  
नेडुवल्लि कोटियेने पोडावियोल् .
- १८ रु ॥ तरिसन्दोड्डिदरातिय मरुवक्कमनान्तु गोगिग यिरियल्  
धुरदोल परिदलेयोलु मह .
- १९ ....दलव ॥ नायकतन मुम्बरिसिद नायकरिदिरागि गोगियोलु  
तागुउदुं सायकदिनेच्चु तू ...
- २० देवरदेन पेलुवे ॥ मारमलेदोड्डिदन्यनृपसैन्यपयोधिगे वीरभूभुजं  
नूर्मडि वाडवानल
- २१ . नोपुंदु कर्मनखास्त्रमेम्भुरिय नालगेगल् विडेयट्टिवेदुं मुस्म-  
लियाय्तु वैरिव .
- २२ . कृतास्त्रनो ॥ धुरदोलरिसेनेय निर्भरमिरियल् गोगिग वैरिवि-  
क्रान्तमरल् भरदिन् तनुवनुच्चा
- २३ . टोला सिन्धुसुतन पोत्त ॥ सन्ततमोड्डि निन्दरिवलालगल-  
नान्तिरिवाल्ल वैरिविक्रान्तमरालिगल् तनुवनुच्चा
- २४ .. ग्रदोल् ॥ सन्तनसूनुवेन्तु सरसैयेयोलोप्पिदन्ते गोगिग  
विक्रान्तमनासेवट्टु सरलोट्टिदनाह ...

- २५ . योल् ॥ सगरदोलिरिद वीरमे श्रृगारममेक्केवत्त गोगिगय  
तम्मुत्संगदोल् इट्टुय्दि निलिपांगनेयर्
- २६ (अ)मरावतिर्यं ॥ अन्तु तलप्रहारिनायकन मग गोगिगय-  
नायक कटकमनान्तिरिट्टु तुसुल .
- २७ . . . मसान्तरनेनिसिद श्रीवल्लभदेवनग्रपुत्र प्रतापभुजवल सान्तर-  
मेनिसिद तैलपदेवरु बिडियम्मरसन पुत्र श्रीमत्तु
- २८ रु तम्मरसर हंसरलु (?) गोट्टनेन्दु (?) हालुगुड्डेय त्रिमोगा-  
भ्यन्तरसिद्धियागि कल्लु नट्टु कारुण्य गेट्टु कोट्ट होस .
- २९ . . वर मने वडि (?) डविन कैयोलने होद कैय मक्कि (?)  
सहितमागि कोट्टरु ॥ मगल महा श्री श्री

[ यह लेख वैशाख शु० १०, बुधवार, शक १०८४, चित्रभानु सवत्सरके दिन लिखा गया था । पट्टिपोम्बुच्चके सान्तरवशीय राजा श्रीवल्लभदेवके पुत्र तैलपदेव-द्वारा हालुगुड्डे ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । तलप्रहारि नायकके पुत्र सेनापति गोगिगकी पाण्ड्यरसके विरुद्ध लड़ते हुए मृत्यु हुई थी । गोगिगके कुटुम्बियोंको यह ग्राम दान दिया गया था । लेखमें तैलपदेवको पद्मावतीलब्धवरप्रसाद यह विशेषण दिया है तथा गोगिगको जिनपादशेखर कहा है । तैलपदेवके अधीन मेलु-सान्तलिंगे प्रदेशके शासक वीररसका भी उल्लेख किया गया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२३ पृ० ७४ ]

२५९

एकसम्बि ( बेलगाँव, मैसूर )

शक १०८७ = मन् ११६५, कन्नड

[ यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके पुत्र विजयादित्यके समय-का है । रट्टवंशीय कत्तम (कार्तवीर्य) का सेवक मारगौड था । इसकी

वशपरम्परा इस प्रकार दी है — मारगौड — आचगौड — होल्लिगौड — जिन्नण, कालण तथा मद्रुवण । इनमें जिन्नण गण्डरादित्यका सेनापति था तथा कालण विजयादित्यका । कालणकी पत्नी लच्छले थी तथा उसे तीन पुत्र थे — जिन्नण, आचण तथा रामण । कालणने एकसम्बुगोमे नेमिनाथवमदि वनवायी तथा उसके लिए यापनीय संघ — पुन्नागवृक्षमूलगणके महामण्डलाचार्य विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी । विजयकीर्तिकी गुरु-परम्परा यह थी — मुनिचन्द्र-विजयकीर्ति-कुमारकीर्ति त्रैविद्य-विजयकीर्ति ( प्रस्तुत ) । इस मन्दिरकी कीर्ति सुनकर राजा कार्तवीर्यने भी इसके दर्शन किये तथा फाल्गुन शु० १३ शक १०८७ को विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ४८ ]

२६०

मन्तगि ( थारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १० = सन् ११६५, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा विज्जणदेवके राज्यवर्ष १०, पार्थिव सवत्सरमें (?) मानके शु० ५, गुरुवारके दिन लिखा गया था । पान्थिपुर ( वर्तमान हनगल ) के कलिदेवसेट्टि-द्वारा चतुर्विंशति तीर्थकरमूर्तिकी प्रतिष्ठा तथा मन्दिरके निर्माणका इसमें उल्लेख है । इसके लिए नागचन्द्र भट्टारकको कुछ दान दिया गया था । हानुगल नगर तथा कलिदेवसेट्टिकी विन्नृत प्रयत्ना की है । ]

[ जि० ड० ए० १९४७-४८ क्र० २०७ पृ० २५ ]

२६१

अरसीवीडि ( विजापूर, मैसूर )

राज्यवर्ष १२ = सन् ११६७, कन्नड

[ इन लेखमें कलचुर्य राजा भुजयलमल्लके राज्यवर्ष १२, सर्वजित

सवत्सरमे पुष्य शु० १४, सोमवारके दिन सिन्द कुलके विट्टरसके पुत्र होलरस द्वारा गुणवेडगिय वसदिके लिए कुछ करोके उत्पन्न दान देनेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ४० पृ० ४४ ]

२६२

नदिहरलहल्लि ( धारवाड, मैसूर )

शक १०९० = सन् ११६८, कन्नड

[ इस लेखमे कलचुर्य राजा विज्जणदेवके समय शक १०९०, सर्वधारि सवत्सर, चैत्र पूर्णिमा, सोमवारके दिन जैन साधु-साध्वियोंके आहारदानके लिए कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५८ पृ० १५२ ]

२६३

हलसंगि ( विजापूर, मैसूर )

शक १०९० = सन् ११६८, कन्नड

[ इस लेखमे शक १०९० मे चन्द्रग्रहणके समय घोरजिनालयके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८, क्र० ई० २५ पृ० २०१ ]

२६४

हिरेमन्नूर ( धारवाड, मैसूर )

शक १०९१ = सन् ११७०, कन्नड

[ यह लेख पुष्य शु० ५, गुरुवार, शक १०९१ विरोधि सवत्सरका है । इसमें सिन्द कुलके महामण्डलेश्वर चावुण्डरस-द्वारा हिरियमणियूरके जैनशालाके अधिष्ठायक दासवोवकी प्रार्थनापर कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ४ पृ० २० ]

२६५

## विजोलिया ( राजस्थान )

सवत् १२२६ = मन् ११७०, संस्कृत-नागरी

- १ सिद्धम् ॥ ॐ नमो वीतरागाय । चिद्रूपं सहजोदितं निरवधि  
ज्ञानैकनिष्ठापित नित्योन्मीलितमुल्लसत्परकलं स्यात्कारविस्फा-  
रितं । सुव्यक्तं परमाद्भुतं त्रिवसुखानन्दास्पदं शास्वतं नौमि  
स्तौमि जपामि यामि शरण तज्ज्योतिरात्मो(त्थि)तं ॥ १ ॥ नास्त  
गतः कुग्रहसग्रहो न नो तीव्रतेजा ।
- २ ॥ नैव सुदृष्टदेहोऽपूर्वो रविस्तात् स मुदे वृषो व ॥२॥ [स]  
भूयाच्छीशाति शुभविभवभंगोभवभृतां विमोयस्यामाति  
स्फुरितनखरोचि करयुग । विनन्नाणामेषामखिलकृतिनां मगल-  
मयी स्थिरीकर्तुं लक्ष्मीमुपरचितरज्जुं व्रजमिव ॥३॥ नासाश्वा-  
सेन येन प्रबलबलभृता पूरित पाचजन्य
- ३ ॥ वरदलमलि(नीपाद)पद्माग्रदेशै । हस्तांगुष्ठेन शार्गं धनुरतुल-  
बलं कृष्टमारोप्य विष्णोरंगुल्यां दोलितोय हलभृदवनित तस्य  
नेमेस्तनोमि ॥४॥ प्राञ्जुप्राकारकांतात्रिदशपरिवृढव्यूहरुद्धावकाशां  
वाचाला केतुकोटि(क्व)ण्डनणुमणीकिंकिणीभि ससतात । यस्य  
व्याख्यानभूमोमहह किमिदमित्याकुला. कौतुकेन प्रेक्षते  
प्राणमाज
- ४ ( न भुवि ) विजयतां तीर्थकृत पाश्वर्नाथः ॥ ५ ॥ वर्धतां  
वर्धमानस्य वर्धमानमहोदय । वर्धता वर्धमानस्य वर्धमान-  
( महो )दय ॥६॥ सारदां सारदां स्तौमि सारदानविमारदां ।  
भारती भारती भक्तभुक्तिमुक्तिविशारदां ॥७॥ नि प्रत्यूह-  
मुपास्महे जिनपतीनन्यापि स्वामिन श्रीनाभेयपुर.सरान् पर-  
कृत्वापायूपपाथोनिर्धान् । ये ज्योति.परमागमाज-

- ५ नतया मुक्तात्मतामा(श्रि)ता श्रीमन्मुक्तिनितविनीस्तनतटे  
 हारश्रिय विभ्रति ॥८॥ मव्यानां हृदयाभिरामवसति सद्धर्म-  
 (मर्म)स्थिति कर्मोन्मूलनसंगति शुमततिः निर्बाध(वो)धो-  
 दूधतिः । जीवानामुपकारकारणरनि श्रेय श्रियां ससृति.  
 देयान्मे सवसभृति शिव(म)ति जैने चतुर्विंशति ॥ ९ ॥  
 श्रीचाहमानक्षितिराजवशः पोत्रोप्यपूर्वो न जडावनद्ध. । मिश्रो  
 न चां-
- ६ ( गो न च ) रंघ्रयुक्तो नो नि फल सारयुतो नतो नो ॥१०॥  
 लावण्यनिर्मलमहांज्वलितांगयष्टिरच्छोच्छलच्छुचिपय परिधानधा-  
 (त्री । उक्तु)गपर्वतपयोधरमारभुगना शाकभराजनि जनीव  
 ततोपि विष्णोः ॥११॥ विप्र श्रीवत्सगोत्रेभूदहिच्छत्रपुरे पुरा ।  
 सामंतोनतसामन्त पूर्णतल्लो नृपस्तत ॥१२॥ तस्माच्छ्री-  
 जयराजविग्रहनृपो श्रीचन्द्रगोपेन्द्रको तस्माहु(र्ल)मगूवकौ शशि-
- ७ नृपो गूवाकसच्चद्वनौ । श्रीमद्वप्पयराजविध्यनृपती श्रीसिंह-  
 राड्विग्रहौ । श्रीमददुर्लमगुदुवाकपतिनृपा श्रीवीर्यरामोऽनुजः  
 ॥१३॥ ( चासुंडो ) वनिपोऽतिश्च राणकवर श्रीसिंघटो दूस्-  
 लस्तभ्राताथ ततोपि वीसलनृप श्राराजदेवीप्रिय । पृथ्वीराज-  
 नृपोथ तत्तनुभवो रासल्लदेवीविभुस्तत्पुत्रो जयदेव इत्यवनिप.  
 सोमल्लदेवीपति ॥१४॥ हत्वा चच्चिगसिंधलाभिधयमोराजादि-  
 चीरत्रयं ।
- ८ क्षिप्र करकृतातवक्त्रकुहरे श्रीमार्गदुर्दान्वित । श्रीमत्सो(ल्ल)ण-  
 दण्डनायकवर सत्रामरगागणे जीवन्नेव नियत्रित करमके  
 येन (क्षि)मात् ॥१५॥ अण्णोराजोस्य सूनुधृतहृदयहरि मत्व-  
 वाशिष्टसीमो गामीर्यौदार्यवर्यं समभवद(चि)रालव्धमध्यो न  
 दीन । तच्चिज न जाड्यस्थितिरवृत महापकहेतुर्न मध्या न  
 श्रीमुक्तो न दोपाकररचितरतिर्न द्विजिह्वाधिसेव्यः ॥१६॥



९ यद्राज्यं कुशवारणं प्रतिकृतं राजांकुशेन स्वयं येनात्रैव नु  
चित्रमेतत् पुनर्मन्यामहे तं प्रति । तच्चित्र प्रतिभासते सुकृतिना  
निर्वाणनारायणन्यकाराचरणेन भगकरणं श्रीदेवराजं प्रति ॥१७॥  
कुवलयविकासकर्ता विग्रहराजोजनि (स्तु) नो चित्रं । तत्तनयस्त-  
च्चित्र य(न्न) जडक्षीणसकलक ॥१८॥ मादानत्वं चक्रे मादान-  
पते परस्य मादान. । यस्य दधत्करवाल करतलाकलित

१० करतलाकलित. ॥१९॥ कृतांतपथसज्जोभूत् सज्जनो सज्जनो  
भुव । वैकुण्ठं कुंतपालोगा( द्यत ) वै कु( त )पालक ॥२०॥  
जावालिपुर ज्वाला(पु)रं कृता पल्लिकापि पल्लीव । नद्वल-  
तुल्य रोषान्नदूल येन शौर्येण ॥२१॥ प्रतोल्यां च वलभ्यां च  
येन विश्रामितं यशः । दिल्लीकाग्रहणश्रांतमाशिकालामलंसितं  
॥२२॥ तज्ज्येष्ठभ्रातृपुत्रोऽभूत् पृथ्वीराज पृथूपम । तस्माद-  
जितहेमांगो हेमपर्वतदानतः ॥२३॥ अतिधर्मरतेना-

११ पि पाश्र्वनाथस्वयंभुवे । दत्त मोराझरीग्रामं भुक्तिमुक्तिश्च  
हेतुना ॥२४॥ स्वर्णादिदाननिवहैर्दशमिर्महद्भिस्तोलानरैर्नगर-  
दानचर्यैश्च विप्रा. । येनाचिताश्चतुरभूपतिवस्तुपालमाक्रम्य  
चारुमनसिद्विकरी गृहीतः ॥२५॥ सोमेश्वराल्लब्धराज्यस्ततः  
सोमेश्वरो नृप । सोमेश्वरननो यस्माज्जनः सोमेश्वरोभवत्  
॥२६॥ प्रतापलंकेस्वर इत्यमिख्यां यः प्राप्तवान् प्रौढपृथुप्रतापः ।  
यस्यामिमुख्ये वरवैरिमुख्या केचिन्मृता केचिदभिद्रुताश्च ॥२७॥  
येन श्रा-

१२ पाश्र्वनाथाय रेवातीरे स्वयंभुवे । सामने रेवणाग्रामं दत्त स्वर्गाय  
कांक्षया ॥२८॥ छ ॥ अथ कारापकवंशानुक्रम. ॥ तीर्थे श्रीनेमि-  
नाथस्य राज्ये नारायणस्य च । अमोधिमथनाहेवबलिभिर्वल-  
शालमि. ॥२९॥ निगत. प्रवरो वशा देववृद्धै समाश्रितः ।  
श्रीमालपत्तने स्थाने स्थायितः शतमनुना ॥३०॥ श्रीमालशैलप्र-

वरावचूल पूर्वोत्तरसत्वगुरु सुवृत । प्राग्वाटवंशोस्ति बभूव तस्मिन्  
मुक्तोपमो वैश्रवणाभिधान ॥३१॥ तडागपत्तने येन कारित

१३ जिनमदिर । ( तीर्त्वा ) आंत्वा यशस्तत्वमेकत्र स्थिरतां गतं  
॥३२॥ योचीकरच्चद्रसुचिप्रमाणि व्याघ्रेरकादौ जिनमंदिराणि ।  
कीर्तिद्रुमारामसमृद्धिहेतोर्विभांति कंदा इव यान्यमंदाः ॥३३॥  
कल्लोलमांसलितकीर्तिसुधासमुद्रः सद्बुद्धिवंधुरवधूधरणे  
ध(रेशः) । \* पोकारकरणप्रगुणातरात्मा श्रीचच्चुलस्वतनय...  
पदेभूत् ॥३४॥ शुभकरस्तस्य सुतो जनिष्ट शिष्टैर्महिष्ठैः परि-  
कीर्त्यकीर्तिः । श्रीजासटोसूत तदगजन्मा यदंगजन्मा खलु  
पुण्यराशिः ॥३५॥ मंदिरं वर्ध-

१४ मानस्य श्रीनाराणकसस्थित । माति यत्कारित स्वीयपुण्य-  
स्कधमिवोज्वल ॥३६॥ चत्वारश्चतुराचारा पुत्रा. पात्रं शुभ-  
श्रियः । अमुप्यामुप्यधर्माणोर्वभूवुर्भार्ययोर्द्वयोः ॥३७॥ एकस्या  
द्वावजायेता श्रीमदाम्बटपद्मौ । अपरस्या (सुतो जातो आमल्ल)-  
क्षमटदेसलो ॥३८॥ पाकाणां नरवरे वीरवेश्मकारणपाटव ।  
प्रकटितं स्वीयचित्तेन धातुनेव महीतलं ॥३८॥ पुत्रौ पवित्री  
गुणरत्नपात्रौ विशुद्धगात्रौ समशीलसत्यौ । बभूवतुर्लक्ष्मटकस्य  
जैत्रौ मुनींदुरामेद्विभिधौ प्रशस्तौ ॥४०॥

१५ षट्खडागमबद्धसौहृदमरा. षड्जीवरक्षेश्वराः षड्भेदेप्रियवश्यता-  
परिकरा. षट्कर्मत्रल्लसादराः । षट्खडावनिकीर्तिपालनपरा पाड्-  
गुण्यचिंताकरा. षडदृष्टयंबुजभास्करा समभव षट् देशलस्या-  
गजा ॥४१॥ श्रेष्ठी दुद्यकनाथकः प्रथमक श्रीमोसलो वीगडि-  
द्वेषस्पर्श इतोपि सीयकवर श्रीराहको नामतः एते तु क्रमतो  
जिनक्रमयुगांभोजैकभृंगोपमा मान्या राजशतैर्वदान्यमतयो  
राजति जवृत्सवा । ४२॥ हर्म्य श्रीवर्धमानस्याजयमेरोर्विभूषण  
कारितं यैर्महामार्गवि-

- १६ मानमित्र नाकिनां ॥४३॥ तेषामंतः श्रियः पात्रं (सीय)कः  
 श्रेष्ठभूषणं । मडलकरमहादुर्गं भूषयानास भूतिना ॥४४॥  
 यो न्यायांकुरस्येचनैकजलदः कोर्तेर्निधानं परं सौजन्यावुजिनो  
 विकामनरवि. पापादिभेदे पवि. । काष्ण्यामृतवारिधेर्विलसने  
 राकागशांकोपमो नित्य साधुजनोपकारकरणव्यापारवद्वाढरः ॥४५॥  
 येनाकारि जितारिनेमिमवनं देवाद्दिश्रृंगोद्धुरं चंचत्कांचन-  
 चारुदंडकलगश्रेणांप्रभामास्वर । खेलत्-खेचरसुन्दरीश्रमभरं  
 सजद् ध्वजोर्द्वाजनैर्धत्तेष्टापदशैलशृगजिनभृत्प्रोढामसद्वाश्रियं  
 ॥४६॥ श्रीसीयकस्य भार्ये द्वे
- १७ सौनागश्रीमामटाभिधे । आद्यायास्तु त्रयः पुत्रा द्वितीयायाः  
 सुतद्वयं ॥४७॥ पचाचारपरायणात्ममतयः पचागमंत्रोज्वलाः  
 पचज्ञानविचारणासुचतुराः पचेन्द्रियार्थोज्ञयाः । श्रीमत्पचगुरु-  
 प्रणाममनस पंचाणुशुद्धव्रताः पचैते तनया गृही(तवि)नया.  
 श्रीसीयकश्रेष्ठिनः ॥४८॥ आद्य. श्रीनागदेवोऽमूल्लोलाकश्रोज्व-  
 लन्तथा । महीधरो देवधरो द्वावेतावन्यमातृजो ॥४९॥ उज्वल-  
 स्यागजन्मानो श्रीमद्दुर्लभलक्ष्मणौ । भ्रमूतांभुवनोद्भासियशो  
 दुर्लभलक्ष्मणौ ॥५०॥ गामीर्यं जलधे स्थिरस्वमचलात्तेज-
- १८ स्विता मास्वत नौभ्यं चद्रमसः शुचित्वममरस्रोतस्विनीतः परं ।  
 एकैकं परिगृह्य विडवविदितो यो वेधसा सादरं मन्ये वीजकृते  
 कृत. सुकृतिना मल्लोलकश्रेष्ठिनः ॥५७॥ अथागमन्मं (दिरमं)  
 पर्कार्ते श्रीवि(ध्यव)र्द्धी धनधान्यवर्द्धी । तत्रालु(लोकं ह्यमितल्प-  
 सुप्त ) कच्चिन्नरंश पुरत स्थित स. ॥५२॥ उवाच कस्त्वं  
 क्रिमिहाभ्युपेत. कुत. स तं प्राह फणोश्वरोह । पातालमूलात्तत्र  
 देशनाय (श्री) पाठर्वनाथ स्वयमेप्यतीह ॥५३॥ प्रातस्तेन  
 समुन्धाय न किंचन विवेचित । स्वप्नस्यांतर्मनोभावा यतो  
 वानादिद्रूपिता. ॥५४॥ लोला-

१९ क(स्य) प्रियास्त्रिस्तो बभ्रुवर्मनस प्रियाः । ललिता कमलश्रीश्र  
लक्ष्मीलक्ष्मीसनामय ॥५५॥ ततः स भक्तां ललिता वभापे  
गत्वा प्रिया तस्य निशि प्रसुप्तां । शृणुष्व मद्दे धरणोहमेहि  
श्री (पार्श्वनाथ खलु द)श्यामि ॥५६॥ तथा स चोक्तो  
( यत्त्वं न हि ) सत्यमेतत् । श्रीपार्श्वनाथस्य समुद्धृतिं स  
प्रासादमर्चा च करिष्यतीह ॥५७॥ गत्वा पुनर्लोलिकमेवमृचे  
भो भक्त शक्तानुगतातिरिक्त । देवे घने धर्मविधौ जिनोष्ठौ श्री-  
रेवतीतीरमिहाप पाद्वर्ष ॥५८॥ समुद्धरेनं कुरु धर्मकार्यं त्वं  
कारय श्रोजिनचे-

२० त्यगेहं । येनाप्स्यसि श्रीकुलकीर्तिपुत्रपोत्रोरुसतान-सुखादिवृद्धिं  
॥५९॥ त(देतद्भी) माख्यं वनमिह निवासो जिनपतेस्त एते  
आवाण. शठकमठमुक्ता गगनतः । सदारा(म) (शश्वत्स)  
दुपचयत्. कुंडसरितोस्तदत्रैतत् स्थानं... (नि)गम प्रायपरम ॥६०॥  
अत्रास्त्युत्तममुत्तमाद्रिसिखरं साधिष्ठमचोच्छ्रितं तीर्थं श्रीवर-  
लाङ्कात्र परमं देवोतिमुक्ताभिध । सत्यश्चात्र घटेश्वर.  
सुरनतो देव कुमारेश्वरः सोभाग्येश्वरदक्षिणेश्वरसुरो मार्कंड-  
रिच्छेश्वरी ॥६१॥ सत्योर्वरेश्वरो देवो ब्रह्ममहोश्वरावपि कुटि-

२१ लेशः कर्करेशो यत्रास्ति कपिलेश्वरः ॥६२॥ महानाल-महा  
का(लम)रथेश्वरसंज्ञका. श्रीत्रिपुष्करतां प्राप्ता( संति) त्रिभुवन-  
चिताः ॥६३॥ कीर्तिनाथश्च (केदार) मिस्वामिनः । संगमेशः  
पुट्टीशश्च मुखेश्वरवटेश्वराः ॥६४॥ नित्यप्रमोदितो देवो सिद्धेश्वर-  
गयेश्वरा । (गगाभेदश्च) सोमेश गगानाथत्रिपुरांतका. ॥६५॥  
सस्नात्री कोटिलिगानां यत्रास्ति कुटिला नदी । स्वर्णजालेश्वरो  
देव समं कपिलधारया ॥६६॥ नाल्पमृत्युर्न वा रोगा न  
दुर्मिक्षमवर्षणं । यत्र देवप्रभावेन कलि-

२२ पंकप्रधर्षण ॥६७॥ षण्मासे जायते यत्र शिवलिंगं स्वयंभुवं ।

तत्र कोटीश्वरे तीर्थे का श्लाघा क्रियते मया ॥६८॥ इत्येवं...  
 कृत्वावतारक्रियां । कर्ता पार्श्वजिनेश्वरोत्र कृपया सोथाद्य वामः  
 पतेः शक्तेर्वैक्रियिक. श्रियस्त्रिभुवनप्राणिप्रबोध प्रभुः ॥६९॥ इत्या-  
 कर्ण्य वचो विभाव्य मनसा तस्योरगस्वामिनः न प्रातः प्रतिबुध्य  
 पार्श्वमभितः क्षोणो विदार्य क्षणात् । तावत्तत्र त्रिभुं ददर्श  
 सहसा नि.प्राकृताकारिण कुडाभ्यर्णत एव धाम दधतं स्वायभुवं  
 श्रीश्रितं ॥७०॥

२३ नासीद्यत्र जिनेन्द्रपादनमन नो धर्मकर्मजिन ( न स्नानं ) न  
 विलेपनं न च तपो ध्यानं न दानार्चनं । नो वा मन्मुनिदर्शनं  
 (न) ... ॥७१॥ तत्कुडमध्यादथ निर्जगाम श्रीसीयकस्यागमनेन  
 पद्मा । श्रीक्षेत्रपालस्तदथाविका च (श्रीज्वा)लिनी श्रीधरणोर-  
 गेंद्र. ॥७२॥ यदावतारमकार्षीदत्र पाञ्चजिनेश्वरः । तदा नागहृदे  
 चक्षगिरिस्तत्रः पपात स ॥७३॥ यक्षोपि दत्तवान् स्वप्नं  
 लक्ष्मणब्रह्मचारिण । तत्राहमपि यास्यामि यत्र पाञ्चविभुर्मम  
 ॥७४॥ रेवतीकुण्ड-

२४ नीरेण या नारी स्नानमाचरेत् । सा पुत्र मर्तृसौभाग्य (लक्ष्मीं  
 च) लभते स्थिरं ॥७५॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यो वा शूद्र  
 एव वा । रेवतीस्नानकर्ता य स प्राप्नोत्युत्तमा गतिं ॥७६॥  
 धनं धान्यं धरा धाम धैर्यं धौरयतां धियं । धराधिपतिसन्मानं  
 लक्ष्मीं चाप्नोति पुष्कलां ॥७७॥ तीर्थाश्रयमिदं जनेन विदितं  
 यद्ग्रायते सांप्रतं कुष्ठप्रेतपिशाच-कुञ्जररुजाहीनांगगंडापह ,  
 संन्याम च चकार निर्गतमय वृकसृगालीद्वय काली नाकमवाय  
 देवकलय किं किं न संपद्यते ॥७८॥ श्लाघ्यं जन्म कृत धन  
 च सफल नीता प्रसिद्धिं मति. ।

२५ सद्वर्मापि च दर्शितस्तनुरुहस्वप्नोर्पितः सत्यता म रदष्टिदूषित-  
 मना सदष्टिमार्गे कृतो जै(ने) ना श्रीलोककश्रेष्ठिनः ॥७९॥

किं मेरोः शृंगमेतत् किमुत हिमगिरेः कूटकोटिप्रकांडं किं वा  
कैलासकूटं किमथ सुरपते. स्वर्विमानं विमान । इत्थं यत्तन्व्यते  
स्म प्रतिदिनममरैर्मर्त्यराजोत्करैर्वा मन्ये श्रीलोलकस्य त्रिभुवन-  
भरणादुच्छ्रितं कीर्तिपुज ॥८०॥ पवनध्रुतपताकापाणिनो भव्य-  
मुख्यां पटुपटहनिनादाढाह्वयत्येष जैनः । कलिकलुषमथोच्चैर्दूर-  
मुत्मारयेद्वा त्रिभुवनाव-

२६ (भुला) मान्नृत्यतोवालयोयं ॥८१॥ (काश्चित् स्था) नकमाधरति  
दधते काश्चित्च गांतोत्सव काश्चिद् विश्रति तालकं सुललितं  
कुर्वति नृत्यं च काः । काश्चिद् वाद्यमुपानयंति निभृत वीणास्वर  
काश्चन यत्रोच्चैर्ध्वजकिंकिणीयुवतयः केषां मुढे नामवन् ॥८२॥  
य सद्वृत्तयुत. सुदीप्तिकलितस्त्रासादिदोषोज्झितश्चिताख्यात-  
पदार्थदानचतुरश्रितामणे. सोदरः । सोभूच्छ्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरु-  
स्तत्पादपंकेरुहे यो भृगायत एव लोलकवरस्तीर्थं चकारैष सः  
॥८३॥ रेवत्या सरितस्तटे तरुवरा यत्राह्वयंते भृश

२७ शाखाबाहुलतोत्करेन ( रसु ) रान् पुस्काकिलाना रूतैः । मत्पुष्पो-  
च्चयपत्रसत्फलचयैरानि(मल्लै)र्वारिभिर्भो मोभ्यर्चयतामिषेकयत  
वा श्रीपाद्वनाथ विभुं ॥८४॥ यावत्पुष्करतीर्थसैकतकुल यावच्च  
गगाजल यावत्तारकचंद्रमास्करकरा यावच्च दिक्कुजरा । याव-  
च्छ्रीजिनचंद्रशासनमद् यावन्म(हें) द्रं पदं तावत्तष्टु तत्  
प्रशस्तिसहित जैन स्थिर मंदिर ॥८५॥ पूर्वतो रेवतीसिंधुर्देव-  
स्यापि पुर तथा । दक्षिणस्या मठस्थानमुदीच्यां कुण्डमुत्तम  
॥८६॥ दक्षिणोत्तरतो वाटी नानावृक्षैरलकृता । कारितं

२८ लोलिकेनैतत् सप्तायतनसयुतं ॥८७॥ श्रीमन्मा(धु) रसंवेभूद्  
गुणमद्रो महामुनिः । कृता प्रशस्तिरेषा च कवि (क) ठ (वि)  
भूषणा ॥८८॥ नैगमान्वयकायस्थछोतगस्य च सूनुना । लिखिता  
केशवेनेद मुक्ताफलमिवोज्वला ॥ ८९ ॥ हरमिगसूत्रधाराय

तत्पुत्रो पाल्हणो भुवि । तदंगजेमाहडेनापि निर्मापितं जिनमद्विरं  
॥६०॥ नानिगः पुत्रगोविदपाल्हणसुतदेहणो । उत्कीर्णा प्रश-  
स्तिरेषा च कीर्तिस्तम्भ प्रतिष्ठितं ॥६१॥ प्रसिद्धिमगमदेव. काले  
विक्रममास्वत्. षड्विंशो द्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥६२॥

२६ (तृ)तीयायां तिथौ वारे गुरुस्तारे च हस्तके । धृतिनामनि योगे  
च करणे तैतिले तथा ॥६३॥ (स) वत् १२२६ फाल्गुन वदि ३  
कांवारेवणाग्रामयोरतराले गुहिलपुत्र रा० दाधरमहं घणसीहाभ्यां  
दत्त क्षेत्र डोहली १ खटुवराग्रामवास्तव्य गौडसोनिगवासुदेवा-  
भ्यां दत्त डोहलिका १ आतरीप्रतिगणके रायताग्रामीय महंतम-  
लीवडिपोपलिभ्या दत्त क्षेत्र डोहलिका लघुवीओलिग्राम सगुहिल-  
पुत्र राव्याहरूमहतममाहवा--

३० (भ्यां द) त्त क्षे (त्र) डोहलिका १ बहुमिर्वसुधा भुक्ता राजभि-  
र्मरतादिभि । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फल ॥छ॥

[ इस लेखका निर्देश जै० शि० स० के तृतीय भाग में क्र० ३७४ पर  
हुआ है किन्तु उस समय इसे श्वेताम्बर लेख समझकर मूल पाठ नहीं दिया  
गया था । इसमें पहले २८ श्लोकोंमें साभरके चौहान राजाओंकी वशावली  
चाहुमानसे सोमेश्वर तक दी है । इसमें कुल ३१ राजाओंके नाम हैं । इनमें  
अन्तिम दो राजाओंने इस स्थानके पार्श्वनाथ मन्दिरको दो गाँव दान दिये  
थे—पृथ्वीराज ( द्वितीय ) ने मोराझरी गाँव और सोमेश्वरने रेवणा गाँव  
दिया था । तदनन्तर इस मन्दिरके निर्माताकी वशावली विस्तारसे ५१वें  
श्लोक तक दी है जो इस प्रकार है -

प्राग्वाटवशीय वैश्रवण ( इसने तडागपत्तन, व्याघ्रेरक आदि स्थानोंमें  
मन्दिर बनवाये ) - उसका पुत्र चञ्चुल - उसका पुत्र शुभंकर - उसका  
पुत्र जासट ( इसने नाराणक स्थानमें वर्धमान मन्दिर बनवाया ) - उसकी  
दो स्त्रियोंसे दो दो पुत्र हुए - आम्बट, पद्मट, लक्ष्मट तथा देसल ( इनने

नरवर नगरमें वीरजिनमन्दिर बनवाया ) - लक्ष्मणके पुत्र मुनीन्दु तथा रामेन्दु - देसलके पुत्र दुद्यक, मोसल, वीगडि, देवस्पर्श, सीयक तथा राहक-सीयकने मण्डलकर दुर्ग विभूषित किया और नेमिनाथ मन्दिर बनवाया - उसको स्त्रिया नागश्री तथा मामटा - नागश्रीके पुत्र नागदेव, लोलक तथा उज्वल - मामटाके पुत्र महीघर तथा देवघर - उज्वलके दो पुत्र दुर्लभ तथा लक्ष्मण । इनमें सीयकके पुत्र लोलकने यह मन्दिर बनवाया । मन्दिरके निर्माणका वर्णन ८७वें श्लोक तक किया है । कहा है कि लोलक तथा उसकी पत्नियाँ ललिता, कमलश्री और लक्ष्मी विध्यवल्ली नगरमें थे उस समय घरणेन्द्रने स्वप्नमें लोलाक श्रेष्ठीको इस मन्दिरके निर्माणका आदेश दिया । तदनुसार जमीन खोदते हुए एक पार्श्वनाथमूर्ति मिली और उसके लिए लोलकने यह मन्दिर बनवाया । इस स्थानको वरलाडका तीर्थ कहकर यहाँके कई शिवमन्दिरोका माहात्म्य भी इस लेखमें दिया है । यहाँके रेवतीकुण्डमें स्नान करनेसे कोढ़ आदि रोग दूर होनेका भी वर्णन है । लोलाकके गुरु जिनचन्द्रसूरि थे । इस लेखकी रचना माथुर सघके महामुनि गुणभद्रने की । इसे केशवने शिलापर लिखा और गोविन्द तथा देल्हणने उत्कीर्ण किया । यह कार्य फाल्गुन कृ० ३ सवत् १२२६ को सम्पन्न हुआ । अन्तमें इस मन्दिरको दानरूपमें प्राप्त कुछ जमीनोका विवरण दिया है । ]

( ए० इ० २६ पृ० १०२ )

२६६

### इन्दोर म्युजियम ( मध्यप्रदेश )

सवत् १०२७ = सन् ११७१, सस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें शख चिह्न है जिससे प्रतीत होता है कि यह नेमिनाथकी मूर्तिका पादपीठ होगा । इसमें देशीगणके गुणचन्द्र, श्रीकीर्ति, रत्नचन्द्र तथा भावचन्द्रका उल्लेख है और गुर्जर जातिके वीन नामक व्यक्तिका भी उल्लेख है । समय सवत् १२२ (७) । ]

[ रि० इ० ए० क्र० ( १९५०-५१ ) १६१ ]



२६७

नदिहरलहसि ( धारवाड, मैसूर )

शक १०९(५) = सन् ११७३, कन्नड

[ यह लेख कलचुर्य राजा रायमुरारि सोविदेवके समय श्रावण शु० (?) गुरुवार, शक १०९ (५), नन्दन सवत्सरका है । इसमें उल्लेख है कि दण्डनायक महेश्वरदेवके अधीन कर संग्रह करनेवाले अधिकारियोने गोट्टगडि स्थित नागगावुण्डकी वसदिके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान दिया । उस समय वनवामि प्रदेशपर कासिमय्य दण्डनायकका शासन चल रहा था । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई० ५९ पृ० १५२ ]

२६८

वोगाडि ( माड्या, मैसूर )

शक १०९५ = सन् ११७३, कन्नड

१ श्रीमत् पार्थिवकुलचद्र थदुवशवाधिर्वर्धनचंद्रं सोमभुजं ललना-  
जनकामाभिरामन् वल्लाल ॥ दिगिमंगलु मदविहलगल मलुंकलु  
कूर्मनिन्तोमेयुं मोगर्मायं भुजगाधिप बहुमुखं सारल्लु यार्सग-  
मेन्दुगुणोदग्रसमग्रलक्षणलसदोर्दण्डदोलु संतोष मिगे भूकामिनि  
यिर्दलु आपदुलदिं वल्लालभूपालन ॥ आ नृपनगण्यपुण्यं  
मानसरूपाटुदेविनं भुवनजन मानोज्ञतकनकाचलन् आनतरक्षैव-  
दक्षरत्ननिधानं ॥ महांगमन्त्रकमनीयालं वितसुरराजपूज्यचरणा-  
क्यन् पुनलु सचित्तकीर्तिपराक्रमप्रभावन् पुनिसि

२ माचिराजं नेगलदं ॥ तनुविं कामन(न)र्थिगीव गुणदिं कल्पाद्रियं  
हेमाचलम चारुचरित्रदिंदुदधिय गांभीर्यदिं स्थैर्यदिं कनकाद्रीन्द्र-

मर्निद्रनं विमवदिं गेविट्टना माचिराजनन् भार्भणिण ( सलापरु  
ई ) विश्वंमराभागदोलु ॥ आ विभु माचिराजन मावं बल्लय्यन्  
अय्यन् ई धरेगेल्ल काव गुणदिन् आठन् अटाव गुणगणदिन्  
आतन् एणेयप्पनं ॥ अधिगमसम्यग्दृष्टियन् अधिगतसकलाग-  
मार्थंन कविवृधमागधदीनजैनजनतानिधियं पोगललुके बल्लर्  
आर् बल्लय्यनं विरिदवन् ईयलु वल्लं सरणेदडे करुणदिंदे कायलु  
वल्लं पुरुषांतरमं बल्ल परिकियटन्तल्ले ॥

३ ल नाटं वल्ल ॥ परकान्ताळकजालकवके पर\*\*\*टाराहरलवके  
पानतरोत्तुगस्तनद्वन्द्वसुंदरसंगक्के परांगनाभुजलतासंश्लेषणक्को-  
दिसं निरस्त श्रीं वल्लदेव निद परिहृतपरदार दीनाधनाथ ॥  
विदितविशदकीर्तिविश्रुतोदारमूर्ति स जयतु बल्लदेव श्रीजिने-  
न्द्रांघ्रिसेव ॥ अन्ता बल्लालमहीकांतन वरमन्त्रिवल्लमं बल्लय्यं  
सन्ततजिनपूजनेगागन्तुकमं भो(ग)वदिय बसदिगे बिट ॥  
नीचेकी ओर

४ होरवारु ओलवारु मग्गदेरे कालयोवनहल्लिय' यिनितर मत्तंतु  
मनेसुक नेरे मलवत्तियसुंक विनित ॥ \* ॥ वनपालम सुक-  
वनितं मनुमार्गं मदनमूर्ति विभु बल्लय्य मनमोसदु भोगवसदि-  
योलु जिनपूजेगे भक्तिर्यिददा

५ दिदिनितदनेय्दे काव पुरुषंगायुं जयश्रीं द कायदे काव्य  
पापिगे वारणासियोल् एक्कोटिमुनीन्द्रर कविलेय वेदाध्यरं  
कोन्दुदोदयश पोदुंगुमैदु सारिदपुदीशैलाक्षरं धान्नियोल् ॥ विषं  
न विषमित्याहु देव-

६ स्व विषमुच्यते विषमेकाकिनं हन्ति देवस्व पुत्रपौत्रकं ॥  
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुधरा षष्टिर्वर्षसहस्राणि  
विष्टायां जायते क्रिमिः ॥ मगल

७ सामान्योयं धर्मसेतुर्नृपाणां काले-काले पालनीयो भवद्मि  
 सर्वानेतान् भाविन. पार्थिवेन्द्रान् भूयो-भूयो याचते रामचंद्रः ॥  
 स्वस्ति श्रीमन्महामंडलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल वीरगंग वल्लालदेवरु  
 दोरसमुद्रदल्ल सुखसंकथाविनोददिं राज्य गेयुत्त विरलु तत्पाद-  
 पद्मोपजीवि महाप्रधान सर्वाधिकारि हेग्गडे वल्लय्य शककालं  
 सासिरद् तौमत्तैदनेय विजयसंवत्सरद् कार्तिक शुद्ध पंचमि  
 सोमवारदद् कालवोवनहल्लिसहितवागि बोगवदियलुल्ल समस्त-  
 सुंकव श्रोकरणजिनालयद् श्रीपार्श्वदेवर् अष्टविधार्चनेगेंदु  
 श्रीमदक्कलकदेव(सिहा-)

८ हात्मनस्थितरप्प श्रीपद्मप्रभस्वामिगलगे धारापूर्वकं माडि कोट्टरु

( इस लेखमे होयसल राजा वल्लालके महाप्रधान हेग्गडे वल्लय्य-द्वारा  
 भोगवदिके पार्श्वजिनालयके लिए अक्कलकदेवकी परम्पराके पद्मप्रभ स्वामी-  
 को कुछ करोका उत्पन्न दान दिये जानेका निर्देश है । यह दान कार्तिक  
 शु० ५, शक १०९५, विजयसवत्सर,के दिन दिया गया था । हेग्गडे  
 वल्लय्य महाप्रधान माचिराजका माव ( ससुर या चाचा था )

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १५० ]

२६६

सोगि ( जि० वेल्लारी, मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड ( वीरप्पके घरके आगे एक शिलालेखण्डपर)

[ इस लेखमे होयसल राजा विष्णुवर्धन वीरवल्लाल-द्वारा कार्तिक  
 कृ० ५, गुरुवारको किमी जैन सस्थाको भूमिदान दिये जानेका  
 निर्देश है । ]

[ ड० म० वेल्लारी २३७ ]

२७०

## चिक्कहन्दिगोल ( धारवाट, मैसूर )

राज्यवर्ष ८ = सन् ११७५, कन्नड

[ इस लेखमें कलचुर्य राजा मोविदेवके राज्यवर्ष 'जयमवत्सरमें शख-जिनालयको दिये गये दानका वर्णन है । इस लेखकी रचना 'अनुपमकवि-कालिदाम' हित्तिन सेनवोव-द्वारा की गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० १५० पृ० १२ ]

२७१

## कलसापुर ( कडूर, मैसूर )

शक १०६८ = सन् ११७६, कन्नड

- १ ( घिस गयी है )
- २ कैवल्यबोधेन्दिराधाम षोडशतत्त्व(तीर्थ)कर्तृ विमलज्ञानासिय सत्सुखाराम माल्के विनेयसन्ततिगे नित्य शान्ति-
- ३ तीर्थेश्वरं ॥ (१) श्री स्वस्ति होयिसलवशाय प्रतापार्जितकीर्तये । यदुवशनृपान भूमृ-
- ४ ते ॥ (२) तदन्वयावतारमेन्तेन्दोडे ॥ सरसीजोदरनामिपन्नजनजं तत्पुन्ननन्तत्रियत्रिरुहोद्भूतबु-
- ५ धं पुरुरवने तज्ज तत्तनूजायुवायुरपत्य नहुपं यथातिमहिप तत्सम्भवं नरेश्वरजा-
- ६ त । यदु तत्कुल सलनृप लोकोत्तम पुट्टिद । (३) यादवरोले होयिसलवेमरादुदु मलनिन्दे हुलि-
- ७ य सेलेयुण्डिगेयादुदु चिह्न वरमन्तादुदु सले शशकपुरद वासन्तिकेर्थि ॥ (४) सलनृपनिं व-

- ८ लियि यदुकुलदोल् पलम्बरोगेडर् अत्ररन्वयदोल् । वलवद्-  
विरोधिकुलिश जनियिसिदनेसेयेवि-
- ९ नयादित्य ॥ (५) घनमार्गानुगत जगत्प्रणुतमित्रं मण्डलाग्र-  
प्रतापनियुक्तं रिपुभूपसन्नम-
- १० सभेद सज्जनं नसन्तीषकरं स्ववन्धुजनचक्राह्लादक पुष्टिदं  
विनयादित्यनृपाल-
- ११ क यदुकुलात्तुगोदयार्द्रान्द्रदि ॥ (६) विनयादित्यनृपालन कुल-  
वधुवेनिमि सिरियोल्-
- १२ वाणियोलं तनगे केलेयोल्न्दु बुधजनवेने केलियव्वरसि  
सरसिजानेनेयेसेदल् ॥ (७) सति केलियव्वरसिगमा-
- १३ विनयादित्यनृपतिग पुष्टिदमुद्धतवैरिदरिदलनोद्यनमयनयशौर्य-  
शालियेरेयंगनृप ॥ (८)
- १४ विनयादित्यावनिपालन सुतनेरेयंगं सगवित भू . निरव्ये  
धर्मदीक्षागुरुविनतमहीभृत्समू-
- १५ हैकरक्षावनधिप्रिय समस्ताश्रितनटनटीसिन्धमू कलनिव निजतं-  
सत्यवाणिमुखमणि मा-
- १६ पुरनिर्मलावोधसुत हिमत्चियन्ते सेवादरविय लतियं सरसिजमं  
मनोरमकुसुमंगलं कद-
- १७ नयं मदन विदियागि ताने तोयूदमृतदिनेरडे निर्मिसिदनेन्नदे  
केलडेय भूरमणन कान्तेय परत-
- १८ नेन्नदिर् एन्वळडेविराणियं ॥ (९) अन्तेरेयंगमहीशन कान्तेगे  
जनियिसिदरेसेव वल्लालमहीकान्त विष्णुमहिपननन्तगुणं
- १९ नृपललामनुदयादित्यं । (१०) अत्ररोधद्दुमनागियुं बुधनिकाय-  
स्तूयमानि श्री . विशेषोन्नतियिन्दमु -
- २० त्तमनेनिष्पं सच्चरिताद्रि वगगाजलधौतनिर्मलकुलदृष्टारिदर्पापहं  
मुव . विमवं . श -

- २१ श्रीविष्णुभूपालक ॥ (११) जनियिसिदं विष्णुमहीशन ल...  
विदनुपमं नरसिंहावनिप नतरिपुभूपाल-निकायलला -
- २२ टतटविघटितचरण देवनृसिंहन प्रियमहिषीपट्टदोलरेत्तु पट्टमहि-  
पिये • देचलदेवा लसल्लतागि
- २३ राजीवदलाक्षि पल्लवनिमाधरे पाटलकण्ठि कांकिलारावे' 'राजीव-  
नल' थ । यनेये ताल्द्विदल् ॥ (१२) कालनिमप्रत -
- २४ जनरमिंहमहीपतिग मदेभलालसयानेकम्बुनिमकन्वरे येचल-  
देविगं • श्रीललनेशनतानेने पुट्टिदनुजित -
- २५ पुण्यमूर्ति वल्लालनृपाल समदवेरिमहीभुजदर्पभंजन ॥ (१३)  
क्रा...वादिधरावनितेय चातुर्यदि नीडी (?)
- २६ निरमणि रमणाशकुलमं श्रीयोलायशानुरत्यागदि वन्दिवृन्द-  
मनित्यानतमत्यादि चरितादि सन्ततमु तन्नोल् क्रमदि निश्चल -
- २७ मपूर्व...तलेद वल्लालभूपालक ॥ (१४) निजपाठानत दित-  
लक्ष्मीवल्लम - ला मूर्ति विबुधाराध्य
- २८ जगन्नेत्र नीरजमित्र स दे कान्तनेनिप प्रतापदेवं समस्त-  
जगद्वन्धपदारविन्द • रारा नल ॥ (१५) पुरुहू (त)
- २९ ख्यातभोग शिखिनिभघनतेज यमावार्यशौर्यं नरवाहातोष...वायु-  
सत्र धनाधीश्वरस -
- ३० घर महेशप्रकटितमहिम लोकपालप्रभावान्तरनाड दिग्बधूमण्डन-  
विशदयशं वीरवल्लालदेवं ॥ (१६) भृगुगेनि वत्सराज
- ३१ हयदिनिमसमारुढप्रौढियिन्द्रं भगदत्त वेषदिन्द्र दिविजपति कं  
सत्त्वगुण प्रभूति
- ३२ राघवन् हनतनय त्यागदि वादिभूपाल नदिदत्तप्रतिमनेनिसिदं  
वीरवल्लालदेव ॥ (१७) स्वरित समधिगतपच -
- ३३ महाशब्दमण्डलेश्वर द्वारावतीपुरचराधीश्वरं यादवकुलाम्बर-  
द्यमणि सम्यक्त्वचूडामणि तलकाहुकौण्णित्र -

- ३४ नवासिबुच्छगिहानुंगलगोण्ड भुजवलवीरगंगनसहायत्र निशग-  
कप्रताप होयमलवीरवल्लालदेवरसर् द्वारसमु -
- ३५ द्रदोल् सुखदि राज्यं गेयुतिरे तत्पादपञ्चोपजीविगल् एनिसिद  
श्रीमन्महावज्जुव्यवहारि क्वडेमर्यं नति
- ३६ द्यवर गुरुकुलान्वय क्रममेन्तेन्द्रोडे ॥ विमलश्रीजैनधर्मकमल-  
तोऽविनन्तोप्पुगुं मूलसंघं कमनीयं
- ३७ कोण्डकुन्दान्वयमं वरगणं देशि गच्छ'क्रमदि तत' वधं  
गेसेये श्रीवधूटीरम -
- ३८ ण देवेन्द्रसैद्धान्तिक मुनियेसेदं महोत्साहधामं ॥ (१८) तच्छिष्यं  
नाडे विधृतगुण वृषणमन्दि मुनि कायो -
- ३९ एगंगाण्डुपत्रासदिन्द' चतुर्मुखाख्येयनाल्दम् । (१९) अवरग्र-  
शिष्यरोलश्रन्तदि द्विजराजिकुमतवादमददर्पद -
- ४० नावर्तिकीर्तिवृक्षनुं श्रीगोपनन्दिपण्डितदेवर् ॥ (२०) जिनसमय-  
यशश्चन्द्रं जिनागमाम्मोनिधिप्रवर्धनचन्द्रं-जिनमुनिकु -
- ४१ बलयचन्द्रं जिनचन्द्रं विबुधनिकरराकाचन्द्रं ॥ (२१) निरवद-  
यचोधदशनचरणयुत्तरं माघनन्दिसेद्धान्तिकदेवरशि -
- ४२ एयरार् शमान्वितनिरुपमधर्मेन्द्र रत्ननन्दिमुनीन्द्रर् ॥ (२२)  
तत्तमधर्मरं संहिताद्यखिलागमार्थनिपुणव्याख्यानसंशुद्धि -
- ४३ यिं ह सैद्धान्तिकतत्त्वनिणयवचोविन्यासदिं श्रुतिसम्बद्ध' ''  
तयनार्थशास्त्रमरतालकारसाहित्यदिन्द्वानूह
- ४४ बालचन्द्रमुनिय त्रिद्याधर '(२३) चक्रे श्रीमूलसंघ 'पद्माकर-  
राजहंयो ' निपुणप्रवरावतंम जीया -
- ४५ डिजनेन्द्रममयार्णवपूर्णचन्द्रः ' क्रुधा । (२४) चन्तेनिसिद  
श्री ' हलाचार्यर गुडु देदी -
- ४६ जनयान्वयवारिधिचन्द्रमनु 'गू श्रहंनय चरितनुं वरजैनसमय-  
कुमुदंन्दु ' अन्याचार्यजितधनम -

- ४७ नेयदे कवडेमय्यन् अणुवन्तय्यम् ॥ (२५) वरसुगुणसमन्वित  
कवडेमय्य तन्न\*\* पूज्ययशःसद्गुणि केतिसेट्टियमुदात्त -
- ४८ प्रणयरेचिसेट्टिगमन्ता पूणुमसेट्टिगमिलासंस्तुत्य टेकव्वेग प्रियपुत्र  
प्रभु बास \*\*सम्पूर्णभव्योदय
- ४९ अनुपम 'सेट्टि' \*\*यदा कान्ते अनूनशौर्य निधि
- ५० \*\*नामादि अपूर्व जनविनुत जक्किसेट्टिय वनिते सु -
- ५१ \*\*हामे तिय तलेदल् ॥ (२७) अवरात्मीयोद्यपुण्योदय
- ५२ \* 'निखिलगुणक्कास्थान बर्मन पुण्य कुलवधु देक-
- ५३ द्वितोटात्तलक्ष्मीनिवास ॥ (२८) नीतिलता दानधर्मपयो-
- ५४ धिचन्द्रम राहिमनु वददानकल्पभूजं विरो-
- ५५ तनुजोन्नत णिसेट्टिय ॥ (२९) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर  
भुजबलवीरगगनसहायशूर नि शकप्र-
- ५६ ताप होयूमलदेवरसरु शकवर्ष १०६८ नेय दुमुंखिसंवत्सरद  
उत्तरायणसक्रमणदोल् अमरदानव-
- ५७ माडुवल्लि' \*\*श्रीमन्महावडुव्यवहारि कवडमय्यन देविसेट्टिय  
तां माडिसिद श्रावीरवल्लालजिनाल-
- ५८ यद यकंलाहारदानक्क खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारक्कमेन्दु विन्नपं  
गेय्यलवर
- ५९ गणद \*\*तंद श्रीमन्महामण्डलाचार्य वालचन्द्रसिद्धान्त-  
देवर्गे भारा-
- ६० पूर्वक वालचन्द्र 'होसनाडोलगण कोरटिकेरेयनदर काल्वा-  
ल्लिगलो-
- ६१ लनादिं\*\*नाचहल्लि मडवद मरियहल्लियोलगाट हल्लिगल  
सीमासम्बन्धमेन्तेन्दोडे मू-
- ६२ वनाल प्पट्टु - रि - वकय हलेयिलेय मोरडि तेंकलारडिगेरे  
नेरित्य-



६३ ... यदोल् वायव्यदोल् नेरिलकेरेयोलगण माविनमर' देवर  
अरगल्लो ...

६४ वडमु नगर मुन्ता वायव्य ...

६५ \* लाल तिगुल तेलुग कन्नडिग देश मुख्यमाद सु-

६६ \* द्रुद नेरेपुलिय चिकहत्त्रिय केतलदेविय गडिय वाचलेश्वरदे  
मम-

६७ स्तनख श्रीशान्तिनाथदेवर कर कैकर्यक्के विष्टायमेन्तेन्दोडे  
होयमल नाडोल

६८ त्ति हेरिंगे हागवेरदु कत्तेय हेरिंगे हाग ओन्दु कुदुरे

६९ कर्पूरपट्टनूलण्ड-क्के हणवोन्दु श्रीगन्धद मालवेगे

७० हणनय्व \* वडिय मलवेगे हण नाल्कु येत्तिन मलवेगे हण  
वाण्

७१ हसुबेगे हाग वोन्दु पडसालेय गडिगे वरिसके हण वोन्दु  
आविडिव ...

७२ \* रल देविय गडिगे वरिसक्के हाग वोन्दु निच्च सेडिवत्त  
टवसद हेरिंगे मान वोन्दु

७३ मेलसु डड हेरिंगे मान वोन्दु गणदोल् धारेयेर

७४ गेय तडियोल् शतसहस्रब्राह्मणगेलंकारसमन्वित शतसहस्र-  
कविलेगल

७५ ...क्षेत्रदोलनिवर् ब्राह्मणरुमननितुकविलेगल कोन्द महापताक-  
नक्कु परिपालिपु

७६ \* गन्ते वर निनिररे धरेगे शिलाशासनाक्षरावलियेसेगुं ॥  
स्वदत्तां

७७ \* हरेत वसुन्वरां पष्टिर्पसहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ॥  
सामान्योयं धर्मसे -

७८ . लनीयो भवद्भिः । सर्वानेतान् भात्रिन पार्थिवेन्द्रान् भूयो-  
भूयो याचते राम -

७९ य स्थलद चतुस्सीमेय निवेशनमेन्तेन्दोडे मूडलु हिरिय  
राजयीडि मोदलु

८० . य घलेयलु पश्चिमके नीलविष्णु वडगण . मोदलोल  
तेकलु अ

[ यह विस्तृत लेख दुर्मुखि सवत्सर, शक १०९८ मे लिखा गया था । इसके प्रारम्भमे होयसल वशके राजाओका कुलवर्णन वीरवल्लालदेव (द्वितीय) तक किया है । इनके समय देविसेट्टि नामक घनिकने वीरवल्लालजिनालय नामक मन्दिर बनवाया । मूलसघ-देसिगण-कोण्डकुन्दान्वयके आचार्य वालचन्द्रकी प्रेरणासे यह कार्य हुआ । इस मन्दिरके लिए राजा वीरवल्लाल-ने कुछ गाँव तथा कुछ करोका उत्पन्न अर्पण किया था । वालचन्द्रकी गुरुपरम्परा देवेन्द्र मैद्धान्तिक - वृषभनन्दि-चतुर्मुख-गोपनन्दि-जिनचन्द्र-माघनन्दि-रत्ननन्दि-उनके गुस्वन्धु वालचन्द्र इस प्रकार दो हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९२३ पृ० ३६ ]

२७२

कुचिंगि ( तुकूर, मैसूर )

१२वीं सदी ( सन् ११८० ) कन्नड

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इसकी स्थापना मूलमघ-देशीगण-पनसोगे शाखाके नयकीतिसिद्धान्त चक्रवर्तिके जिष्य अध्यात्मि वालचन्द्रके उपदेशसे वम्मिसेट्टिके पुत्र केसरिसेट्टिने वेलूरमें की थी । (ममय लगभग ११८० ई० ) । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८३ ]

२७३

पाटशीवरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

शक ११०७ = सन् ११८५, कन्नड

[ यह लेख चालुक्य राजा वीर सोमेश्वरके समय शक ११०७ विष्वा-  
वमु सवत्सरका है । इसमें राजाके सामन्त भोगदेव चोल महाराजाका तथा  
वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्ति और उनके शिष्य पद्मप्रभमलधारिदेवका  
उल्लेख है । [ रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० २८ पृ० ७२ ]

२७४

लक्ष्मण्डि ( घाग्वाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ४ = सन् ११८५, कन्नड

[ यह लेख त्रिभुवनमल्ल वीरसोमेश्वरके राज्यवर्ष ४, विष्वावसु  
सवत्सरमें पुण्य शु० २ बुधवारका है । इसमें कुछ सेट्टियो द्वारा अष्ट-  
विधार्चनके लिए नोम्पियवसदिको कुछ दान देनेका उल्लेख है । कुछ  
शिल्पकारो द्वारा गान्तिनाथदेवको दिये हुए दानोका भी उल्लेख है । ]

[ रि० मा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ५५ पृ० ५ ]

२७५-२७६

कुमठ ( उत्तर कनडा, मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख कदम्ब राजा वीर कावदेवरसके राज्यकालमें चैत्र व० १,  
मंगलवार, श्रीमुख संवत्सरके दिन लिखा गया था । चन्द्रकीर्ति भट्टारकके  
शिष्य तथा वर्धमानसेट्टिके पुत्र सातिपेहके समाधिमरणका इसमें उल्लेख है ।  
यहीके एक अन्य लेखमें एक सेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० रा० १९४७-४८ क्र० २३८-२४० पृ० २७ ]

२७७-२७८

बम्बई ( महाराष्ट्र )

१२वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख भायखलाके जैन मन्दिरमे है । कदम्ब राजा कावदेवके राज्यवर्ष ४४, ईश्वर सवत्सरमे भाद्रपद शु० १२, सोमवारके दिन नागय्य-के समाधिमरणका इसमे उल्लेख है । यहीके एक अन्य समाधिलेखमे दी हुई तिथि इस प्रकार है - भाद्रपद शु० ७, सोमवार विक्रम सवत्सर । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १९९-२०० पृ० ३७ ]

२७६

नागपुर म्युजियम ( महाराष्ट्र )

संवत् १२४५ = सन् ११८८, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख एक मूर्तिके ऊपर है । माणिकसेनदेव, वीरसेनदेव तथा वाजसेन (?) देवका इसमें उल्लेख है जो सम्भवतः जैन आचार्य थे । तिथि संवत् १२४५ दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २६७ पृ० ५० ]

२८०

बिल्लिगिरि रंगनवेष्ट ( मैसूर )

शक १११२ = सन् ११६०, कन्नड

- |                               |                            |
|-------------------------------|----------------------------|
| १ शुभमस्तु श्रीमत्परमगमी-     | ० रस्याद्वादामोघलांछन जी-  |
| ३ यात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन   | ३ जिनशासन स्वस्ति श्रीप्र- |
| ५ तापचक्रवर्ति होयिसल श्रीवी- | ६ रवल्लाळटेवरसरु पृथुविरा- |
| ७ ज्यं गेय्युत्तिरल्लु सकवरुस | ८ १११२ साधारण सवरद वै-     |
| ९ साकसुद्ध पंचमि त्रिह        | १० ...                     |

[ यह लेख रगनवेदके समीप जगलमे श्रवणनअरे नामक पापाणपर खुदा है । होयसल राजा वीरवल्लाल ( द्वितीय ) के राज्यमे वैशाख शु० ५, गुरुवार, शक १११२, साधारण सवत्सरके दिन यह लिखा गया था । लेख टूटा होनेसे इसका उद्देश ज्ञात नही हो सकता । किन्तु प्रारम्भमे जिनशासनकी प्रगसा है अतः यह किसी जैन व्यक्तिका निसिधिलेख या किसी जैन मन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख प्रतीत होता है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १९३ ]

२८१

होसनगर ( मैसूर )

शक १११२ = सन् ११९०, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वाढामोघलाछन
- २ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनं
- ३ स्वस्ति श्रीवल्लालदेवरसर-
- ४ ...
- ५ जेयं उत्तरोत्तरामिरुद्धमिरलु सक वरुष
- ६ १११२ पुरढनेय सर्वधारिसंवत्सरद
- ७ ज्येष्ठ सुध एकादशि वडुवारदलु गु-
- ८ णसपन्नरप्प पुप्पसेनदेवर गुड्डि श्री-
- ९ मनु सर्वाधिकारि वम्माचारिय हेण्डति ह-
- १० व्वक्कनु सुरलोकप्राप्तेयादलु

[ इस लेखकी तिथि ज्येष्ठ शु० ११, शनिवार, शक १११२, सर्वधारि नवत्सर है ( यह तिथि अनियमित है क्योंकि शक १११२ साधारण संवत्सर था ) । उक्त समय होयसल राजा वल्लाल ( द्वितीय ) का राज्य था । सर्वाधिकारी वम्माचारिकी पत्नी हव्वक्काके समाधिमरणका इस लेखमे निर्देश है । इनके गुरु पुप्पमेनदेव थे । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० १७२ ]

२८२

## सोमपुर ( मैसूर )

शक १११४ = सन् १९९२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वाढामोघलांछन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शामन जिनशासन ॥ (१) जयति मकलविद्यादेवता -
- २ रत्नपीठं हृदयमनुपलेप यस्य दीर्घं स देव (१) जयति तदनु  
शास्त्र तस्य यत् सर्वमिथ्याममयतिमिरघातिज्योतिरेकं  
नराणां (॥२)
- ३ द्वाग्रदिं सलनेम्बनाग पुलियं पोय्दा सल पोय्सल योगं
- ४ पलम्बरु राज्यं गेयुत्तिर्पिनं । (३) विनयप्रतापमेम्बी जननाथो-  
चितचरित्रयुगदिं जगमं जननयनवेनिसि नेगल्लुदं विनया-
- ५ दित्य समस्तभुवनस्तुत्यं । (४) भातगतिमहिम हिमसेतुसमा-
- ६ ख्यातकीर्ति सन्मूतिमनोजातं ,मर्दितरिपुनृपजातं तनुजातनादने-  
रेयंगनृपं । (५) बल्लिदरवनापतिसम्पादितधर्मार्थ-
- ७ कामसिद्धिब्रोलवनीवल्लभरातन तनयर् बल्लाल विष्टिदेवमुदया-  
दित्य । (६) मूवररसुगलोलं ता भाविसे मध्यमनदागियुं
- ८ नृपगुणमद्भावदिनुत्तमनाद भाविमवद्भूतजिष्णु विष्णुनृपाल ।  
(७) मलेय साधिसि माण्डने तलवन कांचीपुर कोयतू -
- ९ मलेनाडा तुलुनाहु नीलगिरिया कोलालमाकोंगु नन्गलियु-  
च्छगि विराटराजनगरं वल्लरिवेल्ल दुर्वारदोर्वलदि
- १० लीलेयि साध्यमाहुवेणैयार् विष्णुक्षमापालनोल् । (८) येन-  
लाल्द चूडामणि हारमेने
- ११ किन्नरेश्वरशिरःप्रोत्तुंग फणि गुणमणि
- १२ सम्यक्तचूडामणि आ विष्णुवर्धनगं येनिसिद लक्ष्मादेविगमुद्-  
मविसिदनी भूविश्रुत नरसिंहनाहव-

- १३ सिंहं ॥ (१) पडेमातेम्बन्दु कण्डंगमृतजलधि तां गर्वदिं गण्ड-  
वातं नुडिवातंगेननेम्बै प्रलयसमयटोल् मेरेय मीरि वर्षा  
कडलन्-
- १४ नं कालन्तं सुलिद कुलिकनन्न युगान्तागिनयन्नं मिडिलन्नं  
सिगदन्नं पुरहरनुरिगणनन्ननी नारसिंहं । (१०) रिपुसर्पद्वर्ष-  
दावानलवहलशि-
- १५ खाजालकालाम्बुवाहं रिपुभूपालप्रदीपप्रकरपटुतरस्फारझंजासमीरं  
रिपुनागानीकताश्चर्य रिपुनृपलिनी-
- १६ षण्डवेतण्डरूप रिपुभूभृद्भूरिवज्रं रिपुनृपमदमातंगसिंहं नृसिंहं ॥  
(११) "पोगल्द तीव्रप्रताप" गिदु पोगल्दुद मा--
- १७ ण्डोड शत्रुगात्रप्रगलदूरक्तप्रवाहप्रबलगुरुध्वानमुं शत्रुभूभृद्भूरि-  
सन्डोहदाहप्रचुरचिटिचिटिध्वानमु निर्विक-
- १८ त्प पोगलुत्तिकुं नृसिंहप्रबल भुजबलाटोपम धात्रिगेल्लं ॥ (१२)  
श्रा विभुविन पट्टमहादेविगे सद्गुणचरित्रदिन्दं सीतादेविगे मि-
- १९ गिलाटेचलदेविगे वल्लालदेवनुदयंगेय्द ॥ (१३) कलिकाल-  
क्षत्रपुत्रप्रयलतरदुराचारसन्डोहदिन्दं-पोले पोर्टल् पेसि वेसत्तलव-
- २० लिद महाकान्तेय रक्षिसल्का जलजाक्षं ताने वन्दिन्तवतरिसि-  
द्वोल् वीरवल्लालदेव कुलजात्याचारसारं नृपवरनुदयंगेय्द-
- २१ नाश्चर्यशौर्यं ॥ (१४) विनयश्रीनिधियं विवेकनिधिय ब्रह्मण्यनं  
पूर्णपुण्यननुदामयशोर्थियं जितजगत्प्रत्यर्थियं सर्वसज्ज-
- २२ नसम्नुन्यननुद्मवद्वितरणश्रोविक्रमादित्यनं मनुजेशर् मलेराज-  
राजनन्दे वल्लालन पोल्वरं । (१५) उरिगण्णि वेन्द चण्डा  
निपुर्-
- २३ सुरिद्वोल् चुचुरिल्लुदास्गानं रि दन्दर धगिल धन्धग धग  
चेटे चेल्चेल्चिलगट्टुपोर्देम्बरवं कैगण्मं टिकपालकर् खलवलिय-

- २४ ल् वीरवल्लालनिं ( दि ) दुरिदत्तुच्छगियोडे रिपुनृपति पेल-  
लुप्टे ॥ ( १६ ) रणरंगागणञ्जक नडेदोडिन्तुच्छगि नुर्चलित्त
- २५ तत्क्षणदि नोडे विराटराजपुर वीत्तुत्ताय्नु मुन्नान्न सेवुणरापोश-  
नमात्रक नेरेदरिल्लेन्डन्दु वल्लालदोर्गुणघ चाण्णिसलण्ण
- २६ वल्लवरदागी भूरिभूचक्रदोल् ॥ ( १७ ) विलयाद्दि येनिप सेवुण-  
वल्लन निचयाविल मकराकुल्लवी यदुकुलपरितलन-
- २७ तवाय्नु वन्दु " ॥ ( १८ ) कन्दनदृप्तारिरक्त कूडे हयखुर-  
दिन्डा गेल्लिगेत्तगद या दाल् मुम्पेण पेणन वेत्ति-
- २८ भूतालि पुण्यराशीकृतविपुलतल वीरवल्लालदेवं ॥ ( १९ )
- २९ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लस राजाधिराजपरमेश्वर  
परममद्वारक द्वारावतीपुरवराधीश्वरं वासन्तिकादेवीलब्ध-
- ३० वरप्रसाद रिपुसम्मर्दनविनोद यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-  
चूडामणि शत्रुक्षत्रिय-
- ३१ मानमर्दनं वीररिपुदर्पशर्पञ्जानिल श्रीमद्वीर्य पराक्रमैक-  
प्रभाव । निरुपमात-
- ३२ कर्षप्रताप नयविनयस्वभाव । सकलजनसत्याशीर्वाद । मुद्गर-  
समरकेलियंस-
- ३३ क्त रिपुविजितादित्यप्रताप । सप्तांग विलास सरस्वती  
स्तम्बेरम राज-
- ३४ कण्ठीरव । पाण्डयकुल दण्ड । पल्लवकुलयशोविपिनदावानल ।  
सिंहलसपालकुरंगकुलपलायनकार-
- ३५ ण कठोरनिजविजयदोर्दण्ड । सकलरिपुनृपकुल इत्यादि-  
नामादि-
- ३६ समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमत्सार्वभौम सग्रामराम मिल्लमदिशा-  
पट्ट धरित्रीपट्ट मलेराजराज मलेपरोल्गण्ड



- ३७ तलकाडु-गंगवाडि-नोलम्बवाडि-वनवासे - पानुंगल्-हुलिगेरे-हल-  
सिगे-वैल्वल-तलवलि-तलयंगगोण्ड भुजवलवारांगं-
- ३८ गनेकांगवार सनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमहल . चलदकरामनसहाय-  
शूर निशंगकप्रतापचक्रवर्ति श्रीवीरवल्लालदेवनसंग्यातनिजचतु-  
रगवल
- ३९ वेरसु सेवुणवलमेह्लमं वीरविलासनेम्ब पट्टमानट्टि तोल्लुलट्टुलिये ।  
सेवुणवलजलवि-वडवानलनेकांगदि सप्तागसा-
- ४० म्राज्यमनलवडिसि राष्ट्रकण्टकर निर्मूलमं माडि कल्याणपर्यन्त-  
मागि सुखसकथाविनोददि राज्य गेययुत्तमिरे
- ४१ तद्राज्यपूज्यमप्प राजधानि दौरसमुद्रदोलु श्रीमद्वादीनसिह  
तार्किकचक्रवर्ति श्रीपालत्रैविद्यदेवरमवर गुडुगल् मा-
- ४२ रिसेट्टियुं कण्णिसेट्टियुं भरतिसेट्टियुमिन्ती नाल्वरु नानाट्टेसियुं  
नगरमु श्रीमदमिनवशान्तिनाथट्टेवर भव्यजिनालयमेनि-
- ४३ प नगरजिनालयमं माडिमिद राजसेट्टियन्वयमुमाचार्यवलियु-  
मेन्तेन्दोडे(१)श्रीमदट्टमिलसधेस्मिन् नन्दिंसधोस्त्य-
- ४४ रुगल (१)अन्वयो माति निश्लेषशास्त्रवाराशिपारगै(११)श्रीवर्ध-  
मानस्वामिगल धर्मतीर्थ प्रवर्तिसुवल्लि गौतमस्वामिगलिं मद्रवा-
- ४५ हुस्वामिगलिं भूतवल्लिपुष्पटन्तस्वामिगलिं सुमतिमटारकरिन-  
कलकदेवरिन्दं वक्रग्रीवाचार्यारिं वज्रनन्दिगालिं सिंहनन्दिगालिं  
परवादिमल्लरिं
- ४६ श्रीपालदेवरिं श्रीहेमसेनरिं दयापालमुनीन्द्ररिं श्रीविजयदेवरिं  
शान्तिदेवरिं पुष्पसेनदेवरिं चक्र-
- ४७ वर्ति श्रीवाटिराजदेवरिं श्रीशान्तदेवरिं शब्दब्रह्मस्वामिदेवरिं  
अजितमेनपण्डितदेवरिं मल्लिपेणमलधारिस्वामिगलिं
- ४८ श्रीपालत्रैविद्य गद्यपद्यवचोविन्यासं निसर्गं विजयविलासं । तद-  
नन्तरं श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापति-पदकम-

- ४६ लाराधनालब्धवुद्धिः सिद्धान्ताम्भोनिधान मृतास्वाद...दीक्षा-  
शिक्षासुरक्षा...ऋवाक्पतिनिषुण सन्तत मव्यसेव्य. सोयं
- ५० दाक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयतेवासुपूज्यव्रतीन्द्रः (॥) तदनन्तरं  
सुरराजेन्द्रमदेमदन्तचयदोल् द्विग्गामि . मन्दिरदोल् म-
- ५१ र्गकराल वि लतमो द्विमाद्रिकूटगलोल् धरणान्द्रोद्धकिरीटकूट-  
तलदोल् वाग्देवि येन्दरिवल् श्रीमुनि वज्र-
- ५२ नन्दिय गभीरोदार वलसित ज-
- ५३ गल कोडिनोल् पोदल्देसेदु मन्दरमनेय्दे . यशोलतेये मुनि  
वज्रनन्दिय
- ५४ इगडलन्नरुवलि वज्रनन्दिव्रतिया । तत्स-
- ५५ मयडोल् कुमारनन्दु समस्तप्रभुगावुण्डगलि नाड कायु . प्रताप-  
चक्रवर्ति वीरवल्लाल
- ५६ देवन काणल्वेडि वन्दिर्दलि अभिनवश्रीशान्तिनाथदेव 'मसष्ट-  
विधाचनेयुम पूज्युमं ऋषियराहारदानमुमं
- ५७ कण्डु पिरिदुं सन्तस माडि देवर श्रीकार्यकके नाडगौण्डुगल्  
तम्मोलैकमत्यवागि प्रतापचक्र-
- ५८ वर्ति वीरवल्लालदेवं बन्दु शान्तिदेवरष्ट-विधाचनेगं खण्डस्फु-  
टितजीर्णोद्धारकक ऋषियराहारदानककवागि
- ५९ शकवर्ष १११४ नेय विरोधिकृत्संवत्सरद उत्तरायणसंकवाण-  
दन्दु 'वज्रनन्दिसेद्धान्त-देवरिगे धारापूर्वकं नाड मैसेनाड
- ६० गुम्भनवृत्तियोल् मुच्चण्डियं कडलहल्लिय कडलहल्लिय ईशा-  
न्यद तारेना-
- ६१ ड सन्तेनाडा गण्णिनाड नडदु येलुवलद सीमेय नट कएलु  
अल्लि गुरविनगुण्डिये मरनितालेयमो --
- ६२ रडि मोरडि चचरिवल्लद तडि कडलेयहल्लिय आग्नेयदलुरिद-  
वालिकेय लविवल्लिय गुम्भनवृत्तिय ना-

६३ गव य मोरडि चंचरिवल्ल मत्तवी कडलेयहल्लिय नैऋत्यद  
वल्लरेय काणि--

६४ यकलु खडेय' कोलवूरुवल्लं सत्तिय मरन गल्लुत्तट्टु  
मत्तवा कल्लेयहल्लिय वायव्य-

६५ द तोरेनाड हल्लियवीडिन त्रिसन्धियोलु कर्गल्लमोरडि अल्लिं  
चंचरिवल्लं तेन्तट्टु वटवृक्ष अ

६६ ल्लिं मत्तवी कडलेयहल्लिय ईशान्य गुम्मनवृत्तिय त्रिसन्धिय  
नडुगणेय कूडित्तु इन्तिट्टु सीमाक्रम । मंगल महाश्री

६७ भूमिदानात् परं दानं ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो

६८ हरेत् वसुन्धरां पृष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि

[ इस लेखके प्रारम्भमें होयसल राजाभोकी वशावली वीरवल्लाल ( द्वितीय ) तक दी है । वीरवल्लालने मैसेनाड प्रदेशके दो ग्राम-मुच्छण्डि तथा कडलेहल्लि अभिनवशान्तिनाथमन्दिरको अर्पण किये थे । इस दानकी तिथि शक १११४ की उत्तरायणसक्रान्ति थी । यह मन्दिर कई नाडुगौण्डोने तथा सेट्टियोने मिलकर बनाया था । मन्दिरके कार्यका निरीक्षण कर युवराजके प्रसन्न होनेपर राजाने यह दान दिया था । वामुपूज्य व्रतीन्द्रके शिष्य वज्रनन्दि मिद्धान्तदेव इस मन्दिरके प्रमुख थे । इनकी गुरुपरम्परामें द्रमिलसघ-नन्दिसघ-अरुगलान्वयके निम्नलिखित आचार्योंके नाम दिये हैं- गौतम, भद्रबाहु, भूतवलि, पुष्पदन्त, सुमति, अकलक, वक्रग्रीव, वज्रनन्दि, सिंहनन्दि, परवादिमल्ल, श्रीपाल, हेमसेन, दयापाल, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेन, वादिराज, शान्तदेव, शब्दब्रह्म, अजितसेन, मल्लिपेण, श्रीपाल ( द्वितीय ) । श्रीपाल त्रैत्रिद्यके शिष्य वामुपूज्यव्रतीन्द्र ही वज्रनन्दिके गुरु थे । वर्तमान समयमें यह लेख सोमपुरके निकट नंजेदेवरगुडु नामक पहाड़ीपर है । वहाँके मन्दिरका रूपान्तर शिवमन्दिरमें हो गया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४७ ]

२८३

इगलेश्वर ( विजापूर, मैसूर )

शक १११७ = सन् ११६५, कन्नड

[ इन लेखमें तीर्थ चन्द्रप्रभदेवकी गिण्या पेण्डर वाचि मुत्तव्वेके ममाधिमरणका उल्लेख है । शक १११७ का उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १४ पृ० ८५ ]

२८४

ताडपत्री ( जि० अनतपुर, आन्ध्र )

शक ११२० = सन् ११६८, कन्नड

रामेश्वर मन्दिरके प्राकारके उत्तर पश्चिम कोनेपर

[ इस लेखमें सोमिदेव तथा काचेलादेवीके पुत्र उदयादित्यका उल्लेख है जो जैन था और ताटिपर ताडपत्रीमें रहता था । ]

[ इ० म० अनन्तपुर २०३ ]

२८५

वेलगामि ( मैसूर )

सन् ११६९, कन्नड

[ इस लेखमें होयमल राजा वीरवल्लालके समय सन् ११९९ में महाप्रधान मल्लिप्रण दण्डनायकके अधीन हेगडे सिरियण्ण-द्वारा मल्लिका-मोदशान्तिनाथजिनालयके लिए आचार्य पद्मनन्दिको कुछ करोका उत्पन्न दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४६ ]

२८६

## कान्तराजपुर ( मैसूर )

१२वीं सदी, कन्नड

- १ श्रीमतपरमगंभीरस्याद्वादामोघ-
- २ लांछनं (१) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा-
- ३ सन जिनशासनं ॥
- ४ स्वस्ति श्रीमन्महाप्रतापचक्रवर्ति गण्डभेरुण्ड मलपरोल्
- ५ गण्ड शनिवारसिद्धि गिरिटुर्गमत्तल चलदंकराम होयसलवी-
- ६ रबल्लालदेवरु सुखसकथाविनोददि पृ(थ्वी) राज्य गेयुतु-
- ७ तमिरे ॥ ततुश्रीपादसेवकरु कव्वहिनवृत्तिय अधिष्ठा-
- ८ यकरु महापमायतरु परमविश्वासिगल् सामिसन्-
- ९ तोषकरु सेवुणकटक सुरेकारुं शरणागतवज्रपंजर-
- १० रुमप्प बेहूरमोतद सुगिगयनहल्लिय भरकरेय वो-
- ११ केयनायक होनहल्ल मादेयनायक कलियनायक
- १२ वाचिहल्लिय बोकयनायक वेल्लूर माचयनायक मोन्-
- १३ गलाचार्य केसवेयनायक चलुवन माचयनाय-
- १४ क अरसयनायक वरजियन माचयनायक मसणेय-
- १५ नायक कोलेयादिनायक वचन मारेयनायक कोलेयत-
- १६ न माचयनायक वलेयन मारेयनायक हलवनाय-
- १७ कन वचेयनायक वोम्मेर कयिदालद वयक कसविय-
- १८ नायक हेग्गडेनायक मैलेयनायक मारदेव वालना-

- १६ यक काचिनायक पम्पणनायक माविथनाय (क)
- २० सात्रुकनायक चिकयनायक मादियनायक बडचर बिज्ज-
- २१ पनायक वड्डुगेयनायक सनियमनायक हे-
- २२ माडिनायक हरियणनायक पूमयनाय-
- २३ क जवनेयनायक मैलयनायक वैजयणनायक मा-
- २४ केयनाय (क) बमेय नायवेयनायक गुडेयनायक
- २५ मारतमनायक मल्लेयनायक हरियवूर माचगौड सि-
- २६ गगौड सोमगौड वदियनौडन मादिगौड उत्तगौड वयचिगौड
- २७ मारगौड मादिगौड अबिगौड हलुवाडिगट्ट कुदरंय के-
- २८ चगौड सकरनायकर नायक मल्लिगौड कंसिय-हल्लिय वा-
- २९ हुबल्लिसेट्टि पारिससेट्टि बिजेसेट्टि अवर पुत्रक वल्लगौड ब-
- ३० सवगौड माचेय भरतय मादय आलय माचयउत्त-
- ३१ गौडन मारय पापय चिक्कम्म विरिशेट्टिय मग आलगौ-
- ३२ ड चिकगौड सोमगौड चिणयगौड मारगौड कसवगौड  
श्रीमन्महा(मं)ण्-
- ३३ डलाचार्यरु राजगुरुगलु नयकीर्तिसिद्धातदेवर शिष्यरु नेमि-
- ३४ चद्रपडितदेवरु बालचद्रदेवरु नयकीर्तिदेवरगुड-
- ३५ गलु बाहुबल्लिसेट्टि पारिससेट्टि माडिसिद एककोटिजिनालय-
- ३६ द पद्मप्रभदेवर अष्टविधार्चनगे वूर मुन्दे आरिय मारं-
- ३७ यनायक कट्टिसिद केरे आ कीलेरिय गद्दे आ मूडलु सुत्तलु नट्ट
- ३८ वेदलेय हिरियकेरंय मोदलेरि-
- ३९ गदेय श्रीमुत्तसवत्सरद वयि

४० बोम्म नातिवेय सा ' सेनबोत्र समन्न "

४१ पूर्वकं माडि विट्ट वत्ति यिधर्मत्तं प्रतिपालिसिद् गणे

४२ "

[ यह लेख हीयसल राजा वीग्वल्लालदेवके राज्यकालमें वैशाख, श्रीमुखमवत्सरमें लिखा गया था। बाहुवलिसेट्टि तथा पारिससेट्टि-द्वारा निर्मित एक्कोटि जिनालयेके पद्मप्रभदेवकी पूजाके लिए अरेय मारयेनायक-द्वारा एक तालाव तथा अन्य कई नायको, गौडो तथा सेट्टियो-द्वारा जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है। इनमें नयकीतिसिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र तथा बालचन्द्र पण्डित भी सम्मिलित थे। ]

[ ए०रि० मै० १९२७ पृ० ४५ ]

२८७

### वेरावल ( सोराष्ट्र, गुजरात )

१२वीं सदी, अन्तिम चरण संस्कृत-नागरी

- १ नवप्रति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ १ भूयादमीष्टसंमिद्ध्यै सु-
- २ पाटकान्यं पत्तनं तद्विराजते ॥ ३ मन्यं वेवा विधायैतद्विधित्सुः  
पुनरीदश-
- ३ ...रेंद्रंशंयमंत्रजैर्यत्र लक्ष्मीः स्थिरीकृता ॥५ तज्जिःशेषमहीपाल-  
मालिघृष्टाहि"
- ४ ' सो नृप । तेनोत्पानासुहृन्मूलो मूलराज स उच्यते ॥७  
एकैकात्रिकभूपाला. नम --
- ५ " जिवजग्वुराहनं । अनुच्छमुच्छलत्सूर्यपर्वत्रममजीजनत ॥६  
पांप्पेण प्रनापेन पुण्येन--

- ६ \* रन्धूनविक्रम । श्रीमीमभूपतिस्तेषां राज्य प्राज्य करोत्ययं ॥ ११  
मालाक्षराण्यनन्नाणा यो बभज म--
- ७ न्निदिमघे गणेश्वरा । बभूवु कुंडकुंडाख्या. साक्षात्कृत-  
जगत्त्रयाः ॥ १२ येषामाकाशगामित्व त्या--
- ८ \* तपंचकमुज्वल । रचयित्वाथ जल्पंति येऽन्यन्नियमपूर्वक ॥ १५  
कालेऽस्मिन् भारते क्षेत्रे जाता--
- ९ \* \* \* रीणास्तत्त्ववर्त्मनि तेषां चारिर्त्रिणां वशे भूरय सूरयोऽभवन्  
॥ १७ सद्देषा अपि निद्वेषाः सकला भक-
- १० भावस्यारुहोह तत् । श्रीकीर्तिं प्राप्य सत्कीर्तिं सूरिं सूरिगुणं तत-  
॥ १६ यदीयं देशनावारि सम्यग्वि-
- ११ कश्चित्रकूटाच्चाल स । श्रीमन्नेमिजिनाधीशतीर्थयात्रानिमित्ततः  
॥ २१ अणहिल्लपुरं रम्यमाजगाम-
- १२ \* नीन्द्राय ददौ नृपः । विरुदं मंडलाचार्यं सद्यत्र ससुखासनं  
॥ २३ ॥ २३ श्रीमूलवर्मतिकार्य्य जिनमवन तत्र
- १३ \* सज्ञयैव यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचद्रां यस्ततोभूत्स गणीश्वर  
॥ २५ चारुकीर्तियश कीर्ती ध-
- १४ \* मुक्तो यो रत्नत्रयवानपि । यथावद् विदितार्थोभूत् क्षेमकीर्ति-  
स्ततो गणी ॥ २७ उद्रेत स्म लसज्ज्योति
- १५ \* लेपि वासिते हेमसूरिणा । वस्त्रप्रावरणाय-
- १६ कीर्तिर्यत्कीर्तिर्नर्तकीव नरिनर्ति । त्रिभुवनरगे वासुकिनूपुरशशि-  
तिलकनेपथ्या ॥ ३१ ते
- १७ \* \* ति ॥ ३२ समुद्भूतसमुच्छन्नशार्णजोर्णजिनालय । य  
कृतारमनिर्वाहसमुत्साहशिरोम ( णि. ॥ ३३ )



- १८ ' च यैरवगण्यते ॥३५ वाडिनो यत्पटद्वडनखचद्रेषु विविता ।  
कुर्वते विगतश्रीकाः कलक-
- १९ ' दं तीर्थभूतमनादिकं ॥३६ सीतायाः स्थापना यत्र सोमेश-  
पक्षपातकृत् । त्रामत्रैलोक्य-
- २० तद्दुदृष्टत तेन जातोद्धारमनेकशः ॥३८ चैत्यमिदं ध्वजमिपतो  
निजभुजमुदृष्ट्य सक--
- २१ ' षतो मडलगणिललितकीर्तिसत्कीति । चतुरधिकविंशतिलस-  
दध्वजपटपट्टहस्तक-
- २२ ' ' मेतदीयसद्गोष्टिकानामपि गल्लकानां ॥४१ यस्य स्नानपयो-  
नुलिप्तमखिल कुष्ठ दनी-
- २३ चद्रप्रभ स प्रभुस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताद् दिग्वाससां शासनं  
॥४२ जिनपतिगृह-
- १४ चार्यत्रयो ब्रतत्रिनयसमेतैः शिष्यवर्गैश्च सार्द्धं ॥४३ श्रीमद्विक्रम-  
भूपस्य वर्षाणा द्वाद (श)-
- २५ ककीर्तिलघुबंधुः । चक्रे प्रशस्ति मनवा (मतिदिव्यां) प्रवरकीर्ति-  
रिमां ॥४५ म १२

[ यह लेख टूटा है तथा उमका आधा भाग मिल नहीं सका है । गुजरातके चौलुक्य राजा भीमदेव ( द्वितीय ) के समय वारहवीं सदीके अन्तिम चरणमें यह उत्कीर्ण किया गया है । पश्चिम समुद्रके तीरपर चन्द्रप्रभ तीर्थकरका पुरातन मन्दिर था । यहाँकी मूर्तिके गन्धोदकसे कुष्ठरोग दूर होता था । इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका डम लेखमें वर्णन है । आचार्य कुन्दकुन्दकी परम्परामें नन्दिमवमें श्रीकीर्ति मुनि हुए । ये चित्रकूटसे नेमि-तीर्थकरके तीर्थ ( गिरनार ) की यात्राके लिए जाते हुए गुजरातकी राजधानी अणहिल्लपुरमें आये । वहाँ राजाने उनका सत्कार कर उन्हें

मण्डलाचार्य यह विरुद दिया । इस नगरके मूलवसतिका नामक जिन-  
मन्दिरका भी यहाँ उल्लेख है । अनन्तर क्रमश अजितचन्द्र, चारुकीर्ति,  
यश कीर्ति, तथा क्षेमकीर्ति इन मुनियोका नामोल्लेख है । किन्तु इनका  
परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है । इसी तरह आगे मण्डलगणि ललितकीर्तिका  
उल्लेख है जिनने सम्भवत यह जीर्णोद्धार कार्य कराया था । इस लेख  
की रचना प्रवरकीर्तिने की थी । इसका ४२वाँ पद्य मदनकीर्तिकृत शासन-  
चतुस्त्रिशिकासे लिया गया है । ]

[ ए० इ० ३३ पृ० ११७ ]

२८८

### कुमारबीडु ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वाढामोत्रलाञ्छन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासन जिनशासन (॥) जयति स-
- २ कलविद्या ( देवतारत्नपीठ हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देव )  
जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत्स ( वामिथ्या )
- ३ समय ( तिमिरहारि ज्योतिरेकं नराणा ) स्वस्ति समधिगतपच-  
महाशब्द महामङ्गलेश्वरं द्वारावर्तापु-
- ४ रवराधेश्वरं यादवकुलावरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मल्लराजराज  
मलपरोलुगडाघनेक-
- ५ नामावलीसमलंकृतप्य श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल तलेकाडु कौंडुनंग-  
लेगंगवाडिनोलववाडिवनवासि ( मुंदे वरवणगेयिल्ल )

[ यह लेख किसी जैन सैनिककी मृत्युका स्मारक है । होयसल वंशके  
किसी राजाके विरुद प्रारम्भमें दिये हैं । किन्तु राजाका नाम तथा सैनिकके  
नामादिका विवरण नहीं मिलता क्योंकि लेख अधूरा है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६८ ]

२८६

ग्राम ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें किसी होयसल राजाके सेवक पेर्गडे वासुदेवके पुत्र जिनभक्त उदयादित्यका वर्णन है । इसने सूरस्थगणके चन्द्रनन्दि गुरुके उपदेशसे वासुदेवजिनवसतिका निर्माण किया था । यह लेख इस समय केशवमन्दिरमें लगा है । ]

[ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ४४ ]

२६०

ग्राम ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें शान्तिग्रामके होन्निसेट्टि तथा अन्य भग्यो-द्वारा देसियगण-डगलेग्वर गाखाके हरि आचार्यके उपदेशसे सुमतिभट्टारककी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१७ पृ० ६० ]

२६१

कुप्पटूर ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख पादर्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है । मूलसधकाणूरगण-तिप्रिणोक गच्छरे पर्यतमुनिका इसमें उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४० ]

२६२

माविनकेरे ( कडूर, मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, १२वीं सदी

१ श्रीमूलसंघपनसोगवतीप्रसिद्धदेशीयविदितपु-

२ स्तकचारुगच्छे । य० कुण्डकुदमुनिवं-

३ शललामभूल्ललितकीर्तिमहा-

४ मुनींद्र । ॥ तत्पादयुगलांभोजशेखरी-

५ भूतमस्तक. जिनदत्तान्वय स्वामी योभूत ..

६ नन्दन. ॥ स्वस्तिश्रीशकवत्सरे ..

७ पृथ्वीपति सो-

८ यं श्रीकलशा-

९ ख्यचारुनगरे श्रीचं-

१० द्रनाथप्रमो(ः)प्रि(प्री)-

११ त्या साधयदुत्स-

१२ वेन महता बिंब-

१३ प्रतिष्ठापितं ॥ श्री

१४ श्रीदेवच-

१५ द्रदेवरु ने

१६ यि ओदु

[ यह लेख स्थानीय वसदिके चन्द्रनाथमूर्तिके समीप है । मूलसघ-देशीयगण-पनसोगा शाखाके ललितकीर्ति मुनिके शिष्य देवचन्द्र-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी । जिनदत्तके वशके किसी राजाका इसमें उल्लेख है । शकवर्षके अक लुप्त हुए हैं । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३६ ]

२६३-२६४

निट्टूर ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख शान्तीश्वरवसदिके द्वारपर है । मालवेके पुत्र मलेय-द्वारा यहाँके मूर्तियोंके निर्माणका इसमें उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है । यहाँके एक अन्य लेखमें शिवनहसेट्टिकी निषिधिका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१९ पृ० ५१ ]

२६५

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख रसासिद्धुल्लुगुट्ट नामक पहाडीपर एक पापाणपर खुदा है । इसमें गुम्मिपेटिके पुत्र ब्रमदेवका उल्लेख किया है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५७ पृ० १२६ ]

२६६

हूल्लि ( जि० वेलगाँव, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्तीके शिष्य नविलूस्के गोवरिय कलिगावुण्ड, तावरे महादेविगट्टि आदिके द्वारा इस दरवाजेके बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ई क्र० २४ पृ० २४२ ]

२६७

गोरूर ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें मलवसेट्टि, कटकद वम्मिसेट्टि तथा केसिसेट्टि इन तीन व्यक्तियोंद्वारा गोरूर ग्रामकी वसदिके लिए पाँच खडुग भूमि दान दिये जानेका वर्णन है । मल्लियक्का नामक स्त्रीकी भी प्रशंसा की है । लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । इसका बहुत-सा भाग घिसनेसे नष्ट हो गया है । ]

( मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित )

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७४ ]

२६८-३००

मनोली ( जि० वेलागाँव, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखकी लिपि १२वी सदीकी है । यापनीय सघके आचार्य मुनिवल्लिके मुनिचन्द्रदेवकी समाधि कुल्लेयकेतगावुडकी पुत्री गगेवे-द्वारा स्थापित की गयी थी । ये मुनिचन्द्र सिरियादेवी-द्वारा स्थापित वसदिके आचार्य थे ।

इसी समयके दूसरे लेखमे मुनिचन्द्रके शिष्य पाल्यकी(ति) देवके समाधिमरणका उल्लेख है । तिथि आश्विन कृ० ५, शुक्रवार, साघा(रण) सवत्सर, ऐसी है ।

यहाँके तीसरे लेखमें इसी परम्पराके एक और आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १६४०-४१ ई० क्र० ६३-६५ पृ० २४५ ]

३०१

कीलक्कुडि ( जि० मदुरा, मद्रास )

कन्नड, १२वीं सदी

समणरमलै पहाडीपर पापाणके दीपस्तम्भके समीप

[ इस लेखमे आरियदेव, वेलगुलके मूलसघके वालचन्द्र देव, नेमिदेव, अजितसेनदेव तथा गोवर्धनदेवका निर्देश है । लिपिके अनुमार यह १२वीं सदीका लेख होगा । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० २४४ ]

३०२

वेहार ( नरसिंहगढ, मध्यप्रदेश )

प्राकृत-नागरी, १२वीं सदी

- १ " अं घणोमम सुंदरं
- २ सि.....
- ३ । तिहुभणतिलभं सी-
- ४ री- द्रावटस्स अमराल-
- ५ अ रम्मं ॥ श्रीआण-
- ६ देवेन गाथा वि-
- ७ रचिता

[ यह लेख सोलखभ नामक उध्वस्त जैन मन्दिरमें एक स्तम्भपर है । इसमें श्री आणदेव-द्वारा लिखित एक गाथा है जो किसी तिहुभणतिलभ ( त्रिभुवनतिलक ) मन्दिर तथा उसके स्थापक द्रावडके वारेमें है । इसी स्तम्भपर बृहन्न्य व्यक्तिवाँके नाम भी खुदे है । गाथाकी लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ दि० ड० ए० १९४६-४७ क्र० १७४ ]

३०३

सवण्णर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लिखित जैन मठप्रारि आचार्यके ममाधिपदणका स्मारक है । लिपि शुद्ध प० ८, गोमग, विष्णुगमु संवत्सर ऐसी दी है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ दि० ड० ए० १९५२-५३ क्र० ५९ पृ० ३३ ]

३०४

अम्मिनभावि ( धारवाड, मैसूर )

[ यह लेख वर्धमानमूर्तिके पादपीठपर है । बहुत अस्पष्ट हुआ है ।  
लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ७० पृ० ३४ ]

३०५-६

मण्डूर ( धारवाड, मैसूर )

[ यहाँ १२वीं सदीकी लिपिमें दो लेख हैं जो जैनोंसे सम्बन्धित  
प्रतीत होते हैं । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ९४-९५ पृ० ३६ ]

३०७

सालिग्राम ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख अनन्तनाथकी मूर्तिके पीठपर है । मूलसंघ-बलात्कारगणके  
भाषनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तिके शिष्य शम्बुदेवकी पत्नी वोम्मव्वे-द्वारा अनन्त-  
व्रतकी समाप्तिपर यह मूर्ति स्थापित की गयी थी । लिपि १२वीं सदी  
की है । ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३६ ]

३०८

गोरूर ( हासन, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

१ ओं श्रीमतु परमगंभीरस्याद्वाढामोवलांछनं(१)जीयात् त्रैलोक्य-  
नाथस्य शासन जिनशासन(॥)



- २ ओं मेलेनिसिपुंदा मलेगे धात्रियोलं किसुवत्तिलयन्तद पालिसि  
सततं सुखदिन् इर्पिनेग सिरि
- ३ पुट्टे पुट्टिदं हेरियवासेवेगडेगवातन वलभे निजिकव्वेग लीलेयोल्  
पुंदे वण्णिपुट्टु पे-
- ४ गंडे सत्यमनं जगज्जनं ॥ स्थिरने वाप्पमराद्रियिदधिकगंभीरने  
वाप्पु सागरदिंदगलद-
- ५ न्तु दानिये सुरोर्वीजके मारण्डलं सुरराजंगेणेयेण्दे कीर्तिपुट्टु  
कैकोण्डकरि संततं
- ६ धरेयेल्लं सले सत्यवेगंडेयोल् औदार्यमं सौर्यमं ॥ कोट्टपेनेदोड्  
ईश्वरन कोट्ट वर

दूसरा

- ७ सरणेट्टु वंदरं नेट्टने डे वज्जि 'पूण्डु कोडिट्ट विरो ..  
८ तरिवन् एन्दोडे ताने कृतान्त यि ..पेगंडे..
- ९ आतन मावं सकल मही ' जवल्लि .. वेनिसि नेगल्लं भूतल
- १० दोलगोसेये कच्छवेगंडेय ' ण्णु ' य विण्णु
- ११ नाडे केसरिय पोडपुं ' मनो''''यनि
- १२ सिर्द वीरनोल् अदेंदु करं नलि तरिपुट्टु क ले पलरु निरन्तरं  
तीसरा भाग
- १३ एने नेगल्लद कच्छवेगंडेगनुपम कुल'' ने धोरे
- १४ यल्लु विनुत त वगे
- १५ रेनिप्परु ' मणिय-
- १६ न्तवरीवरीनन य'' सन्तत जस' ''
- १७ यल्लु अखिल भूमण्डलडे ' ख्यातंगे मले नेगल्लद गगेगं गौरिग वेम्म
- १८ ' नो दारंयेनिप्परु भूतलदोलु' यं ॥ गत्यंतंवरि-
- १९ य नमर समयदोल वस ' मन पोललितर'' आ विभुविन

- २० कुलवधु ता भूविनुत श्रीगे नेलेयेनिप्प गनेयर् पलरुं  
पेण्डतिगेनेगे वपरं
- २१ योलु ॥ आतन किरिय पेण्डति रतियं पोत्वलु तूपिपति-  
चरियोल् अतियट्टवे
- २२ प्रोत्वलनिधि तत यशोवल्लरिय मतिहीनर् अदेनु वणिणपर्  
वाचवेय ॥ अवरीवरं गु-
- २३ (रु)गल् अवर् भुवनजनाराध्यरखिलगुणगणनिलयर् कडि...वर  
नयकीर्ति-
- २४ देवसिद्धान्तेशरु ॥ आ महानुभावनर्धागियरवसान कालदोलु ॥  
वोधिसुत जिनपदमं वा-
- २५ .. व सिद्धपदमन् अक्षय पदमं विनुतं मुनिपदमं वाचवे वेगडि-  
तियर् सुरगतियं
- २६ परम जिनेश्वर पदपंकरुहमनानंदट्टि नेनेयुतागलु पिरिदोदु  
सक्तिरियं
- २७ तियं वाचियक्कन् एय्दिदल् आगलु ॥ अवर परोक्षदोलु आदं  
सत्रिनयट्टि केल
- २८ यिन्ति करल भुवनजन्वरिये निरिसिदल् अविचलमप्पन्तु  
चट्टारंवरं ॥

[ इस लेखमें किसुवल्लि ग्रामके शासक सत्यवेगडेका उल्लेख है । यह हेरियवासेवेगडे तथा उनकी पत्नी निजिकव्वेका पुत्र था । इस सत्यवेगडेकी पत्नी वाचवे थी । वह कच्छवेगडेकी पुत्री थी । इसके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव थे । लेखमें वाचवेके देहत्यागका उल्लेख है जो सम्भवत सत्यवेगडेकी मृत्युके कारण किया गया था । लेखकी लिपि १२वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

३०६

हलेवीड ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

- १ स्वस्ति श्रीमन्नयकीर्तिसिद्धान्तचंद्रयतिदेवर्गे कवडेयर जकव्वेयर माडिसि कोट्ट पट्टशालेय शान्तिनाथदेवर अष्टविधार्च(ने)गं खडस्फुटितजीर्णोद्धारक ...
- २ शिष्यरु सुरभिकुमुदचंद्रापरनामधेयरप्प नेमिचद्रपण्डितदेवर जीवंगल् हिरियकेरेय बोलवगट्ट दोलगरेय हुणसेय .
- ३ ल्लगे मूरु गंगवुरद उत्तमवागि ? मूनूरु वेह्लेयं सर्वबाध-परिहारवागि चंद्राकर्तारंवरं सत्वतागि कोट्टरु ई धर्मव अवर शिष्यसंतानगलु नडेसुवरु

[ यह लेख १२वी सदीकी लिपिमें है । कवडेयर जकव्वे-द्वारा निर्मित पट्टशालाके शान्तिनाथदेवकी पूजा आदिके लिए कुछ भूमि बोलवगट्ट तालावके समीप और गंगवुर ग्रामके समीप दान दी गयी। ऐसा इसमें निर्देश है । यह दान सुरभिकुमुदचन्द्र अपरनाम नेमिचन्द्र, पण्डितदेवने दिया था । जकव्वेके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तचन्द्र थे । ]

[ ए० रि० मै० १९३७ पृ० १८५ ]

३१०

अथनी ( वेलगाव, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ इस लेखमें वम्मण-द्वारा देसिगण-डगलेश्वरवलिके सामन्तण वसदिसे सम्बद्ध रत्नत्रयमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि १२वी सदीकी है । ]

[ रि० ड० ए० १९५३-५४ क्र० १७३ पृ० ३४ ]

३११

मरसे ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, १२वीं सदी

- १ श्रीमद्द्रविलसघेस्मिन् नन्दिसघेस्त्यरुंगलः अ-
- २ न्वयो भाति योशेषशास्त्रवा-
- ३ राशिपारगं

[ यह लेख एक खेतमें मिली पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इसमें द्रविलसघ-नन्दिसघके अन्तर्गत अरुंगल अन्वलकी प्रशंसा है । यह श्लोक अन्य कई लेखोंमें पाया जाता है । लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । मूर्तिके वारेमें अन्य कुछ विवरण नहीं दिया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०६ ]

३१२

मावलि ( मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वा(दा)-
- २ मोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्य-
- ३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्री ( मृ )-
- ४ लसग कुण्डकुन्दान्वयद्
- ५ काणूर्गण साधवचद्देव(र गु)-
- ६ ड्डि नागवे गोकवेय मगलु स(मा)-
- ७ धिविधियिद मुडिपि स्वर्ग-
- ८ स्तेयादलु मगल नहा
- ९ श्री श्री

[ इस निसिधिलेखमें मूलमंघ-कुण्डकुन्दान्वय-काणूर गणके माधवचन्द्र-देवकी शिष्या तथा गोकवेकी कन्या नागव्वेके समाधिभरणका उल्लेख है । लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४१ पृ० १९२ ]

### ३१३

हम्पी ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख एक भग्न स्तम्भपर १२वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें गोल्लाचार्य, उनके शिष्य गुणचन्द्र तथा उनके शिष्य इन्द्रनन्दि, नन्दिमुनि तथा कन्तिका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० ३३५ पृ० ५० ]

### ३१४

कलकत्ता ( नाहर म्यूजियम )

कन्नड, १२वीं सदी

१ देमायपगलाणन्तियनोंपि निमित्त-

२ चागि माडिसिद प्रतिष्ठे

[ यह लेख पीतलकी चौबीस तीर्थकरमूर्तिके पिछले भागपर खुदा है । यह मूर्ति देमायप्प नामक व्यक्तिके अनन्तव्रतकी समाप्तिके समय स्थापित की थी । लिपि १२वीं सदीकी है । लिपिसे पता चलता है कि इसका निर्माण कर्नाटकमें हुआ था । ]

[ ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५० ]

३१५

रुगि ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड, १२वीं सदी

[ यह लेख किसी जैन आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ७९ पृ० १८८ ]

३१६

शेरगढ ( कोटा, राजस्थान )

संस्कृत-नागरी, १२वीं सदी

[ इस लेखमे आचार्य वीरसेन तथा सागरसेन पण्डितका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४३१ पृ० ७० ]

३१७

रायचाग ( बेलगाव, मैसूर )

कन्नड, शक ११२४ = सन् १२०१

[ यह लेख रट्ट वंशके कार्तवीर्य ४ के समयका है । इस राजाने वैशाख पूर्णिमा, शक ११२४, शुक्रवारको एक जिनमन्दिरके लिए कूण्ड ३००० प्रदेशका चिंचलि ग्राम दान दिया था । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५१ पृ० ३३ ]

३१८

वेलगाँव ( क्रमांक १ त्रिटिग म्यूजियम )

कन्नड, शक ११२७ = सन् १२०४

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जिनशासनम् ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥
- २ श्रीजिनसमयनवां बुधि राजिसुतिर्कमथनोर्जितामृतरत्न-श्रीजननगृहं  
सत्वदयाजीवनमपरिमितगभीरमपारं ॥ नवमौक्तिकहारं
- ३ श्रीयुवतिगिडेनिसिर्द कृष्णनृपवंशजपार्थिवचयदोल् सेनरसं  
भुवननुत मिसुपनेसेव नायकमणिवोल् ॥ वरकू-
- ४ डिमडलाधीश्वरनेनिपा सेनविभुगे सुतनादं दुर्धरवैरिभूप-  
मीकरपराक्रमं कार्त्तवीर्यननुपमशीर्यं ॥ आ विभुगादल् सति पद्मा-
- ५ वति जिनसमयवृद्धिकरणापरपद्मावति बुधाभिमतपद्मावति वज्रा-  
युधगे पौलोमिय वोल् ॥ अवरिवरसं पुट्टिनवनीश्वरमौ-
- ६ लिमंडनं लक्ष्मनृपं परिमलमुक्ताफलमोसेव वार्धिग ताप्रपणंगं  
पुट्टुववोल् ॥ एनेव लक्ष्मिदेव क्षितिभुजन भुजाटोपमं विद्विषद्धा-  
त्रीनाथर् संजे-
- ७ गेप मटपदहतिरिंटाट केंदूलियेंदालीनाभ्रध्वानमं तांनयतुरग-  
सुरोद्घोषमेंटंजि नानास्थानस्थायित्वमं केलपडेयदे बिडदो-
- ८ हुत्तमिर्दपरिन्नुं ॥ अपराधिगलने नोल्पुट्टु नृपालकरदडनीति  
वाप्पु वनाज्ञाधिपनागे लक्ष्मभूविभुवपराध दडमेंबि-  
विल्लें कृतियो ॥
- ९ अमृतांभोराशियोल् पुट्टिद सिरियनणं वय्तु धात्रं स्वमायाक्रमदिं  
वेरोर्वलं निर्मिसि चपलेयना कृष्णनोल् कूडि मत्ता विम-

- १० लोद्यद्भाग्येयं सुस्थिरेयनोसेदु कोट्ट मर्हाभृत्त्रिकायोत्तमनष्पी  
लक्ष्मिदेवगेने मिगे तलेदल् चंद्रिकादेवि चेल्व ॥ प्रणुतश्रीनिधि  
चंद्रिका-
- ११ सतिय शीलघ्रातमं कूडे धारिणियोल् वणिणसलारुमातंपरे  
लक्ष्मोर्वीशनं क्षत्रियाप्रणियं शीलडे मेच्चिसल् फणिपनं पूण्डे-
- १२ ते ता तन्न कयुगुणम कंडुदरिंदवं पोगल्लापं विश्वजिह्वालियि ॥  
नरपतिलक्ष्मिदेवसति चदलदेवि निजोदधहस्तदिं धरंगेसेयल्के
- १३ संक्रमणदोल् कुडे कांचनसं वेरलग्लोल् वेरेसेद हेमकालिकेय कर्प-  
सेदिपुंदु वाहुकल्पवह्लरिय तलप्रचालद नखप्र-
- १४ सवक्केलसिर्द तुंविवोल् ॥ श्रीवसुदेवनंतेस्व लक्ष्मन्पुंगवनिंद्य-  
देवकीदेविवोलोपुवी विनुतचदलदेविगमादरात्मजर भूवल्य-
- १५ प्रदद्धबलकेशवरेंदेने कार्तवीर्यधात्रीवरमल्लिकार्जुनकुमारकरुजित-  
शौर्यशालिगल् ॥ दृढशौर्य कार्तवीर्य तल-
- १६ रे बलयुत दिग्जयक्कन्यधात्रीपतिगल् बेन्नित्तु नीरं पुगलवर शरी-  
रोष्णादिं वत्ति चित्तोद्गतभीत्युत्कर्षवृत्तिप्रसरणविसरद्व-
- १७ मंतोयोर्मियिं विस्तृतमागल हानियु वृद्धियुमदु निजसंभोधिर्गेव-  
विंमूढर् ॥ ई कमनोऽयवाजिचयमी क-
- १८ रिसकुलमी विलासिनीलोकमिवेम्मवा कविय कालेगदोल् बयला-  
जियोल् पुराणीकद युद्धदोल् पिडिदनिंतिवनी कलिकार्तवीर्यनेदा-
- १९ कुलमागि नोडुवुदु बन्धनशालेयोल् इदरिन्नजम् ॥ श्रीरद्वशमेव  
सुमेरुवनाश्रयिसि कल्पकुजननमेनले राराजि-
- २० पुदुदो विद्वधाधारं श्रीमत्कुल प्रमोदनिवास ॥ आ महनीय-  
कुलक्के शिरोमणि सव्यांबुजक्के तेजोमणि रक्षामणि बुधविततिगे



- २१ चिंतामणि बेलपुर्गेनलके रंजिपनुदयं ॥ ललितगुणौघं लक्ष्मीनिलयं  
संश्रितमधुव्रतं तलेदं निर्मलमप्पुदयमरोवरदोल् उदयमं पुरूप-  
पुंढरीकं वी-
- २२ चं ॥ प्रकटश्रीनिधि वीचण कुलगृह शीलक्के लीलाश्रयं सुकृत-  
क्कुट्मवमंदिरं सारिगे सेवास्थानकं सद्गुणक्के कलाभ्यासपदं  
सरस्वतिगे संचारालयं
- २३ धर्मकार्यकलापक्कमिवृद्धिगेहममलाचारक्केनल् रंजिपं ॥ वीचणे  
सुकवि संस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेद्रमतश्रीलोचनसंनिभरात्महिता-
- २४ चारपर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ पापापहारिजिनपश्रीपटमक्तं  
सुपात्रसकुलटानव्यापारगमितदिननेनिपी पेर्मणे पेर्मणं  
तवर्मनेयाद ॥
- २५ स्थिरपद्मोदयमवुजक्के कमलं पद्माकरक्कवुजाकरमुद्यानवनक्के पूर्ण-  
फलिताराम पुरक्कोप्पुवंतिरे लोकोत्तमकार्तवीर्यनृपराज्यं-
- २६ गोपुवं सद्गुणाभरण श्रीकरणाग्रगण्यवेनिसिर्दप्पं जगं वाप्पेनल् ॥  
अनवद्योक्ति विनूनवाणिगुपदेश चागमस्दप्पनभूजनिकायकृतिविस्म-
- २७ यस्थितिकरं जैनक्रमांभोजपूजनमैद्रध्वजविभ्रमश्रुतिलसत्संवादिये-  
दंढनिघनयश्रीकरणाप्पणंगे दोरेयारी धात्रियो-
- २८ क् धामिकर् ॥ अचलितगुणनिलयं चतुरचतुर्मुखनेनिसुवप्पण  
वल्लभे सुप्रचुरविवेकास्पदचारुचरिते वाग्देवियेव पेसरिंसेवल् ॥  
वरवा-
- २९ ग्देविगमप्पणप्रभुगमादर् नंडनर् श्रीजिनेश्वरमार्गप्रतिभासक-  
प्रविलसद्दत्तत्रयंगल् विनेयर पूर्वार्जितपुण्यदिंटे निरुत् मेय्वेत्त-  
वेंवते-

- ३० सुस्थिरलक्ष्मीपतिवीचवैजवलदेवर् सज्जनानंदकर् ॥ प्रणुतोद्यत्-  
पात्रदान व्रतगुणचरित सज्जिनावासनिर्मापणवात्मोर्वा-
- ३१ शराज्याभ्युदयनयचयं तम्मोलोप्पुत्तिरल् धारिणियोल् विख्याति-  
वेत्तिवरे सोगयिपरा गडरादित्यसेनाग्रणी निंव कार्तवीर्यक्षि-
- ३२ तिपतिसचिवोत्तंसनी वीचिराजं ॥ सुजनाकर्षणमात्मवल्लम-  
वशीकारं सुहृन्मोहन कुजनोच्चाटनमन्यमंत्रिचयमानस्तंमनं  
दुर्णयत्र-
- ३३ जविद्वेषणमेंविवागे निजमत्रागंगलिं रजिपं विजयश्रीनिधि-  
कार्तवीर्यसचिवं लक्ष्मीचणं वीचण ॥ परवधुगनुमतियं जैनरीय-  
लागट्टु परप्र-
- ३४ वर्तनेयोल् जैनरोलधिक वीचं तंदरिनृपभुजविजयलक्षिमयं  
पतिगीच ॥ हृदयाह्लादकनादनुर्विगिवनोर्वं सर्वसंपद्गुणास्पद-  
वीचानुजवैजणं वि-
- ३५ भूंतयोल् धर्मात्मज मूर्तियोल् मदन चागटोल् बांधवतनूजं  
जैनपूजाभिपेकदोलिदं नयटोल् वृहस्पति रणोद्यत्क्रीडेयोल्  
राघव ॥ विदि-
- ३६ तजिनागमांबुनिधिवर्धनटोल् निजवंशवारिजाभ्युदयविधानटोल्  
बुधमनोमिमतापणटोल् कलकमिह्लद हिंमरोचि तापकृतिथिह्लद  
भानुविमू-
- ३७ ढवृत्तियिह्लिद सुरभूरूह धरेयोल्प्पसुतं वलदेवनोप्पुवं ॥ स्वस्ति  
समधिगतपंचमहाशब्दमहामण्डलेश्वर कार्तवीर्यदेव निजानु-
- ३८ जयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदेव वेरसु वेणुग्रामस्वन्वावारटोल्  
सान्राज्यपुखमनुमविसुत्तमात्मीयश्रीकरणाग्र-
- ३९ गण्यनुमसिलिमंत्रिजनवरेण्यनुमप्प वीचिराजं माडिसिद

रत्नजिनालयद श्रीशान्तिनाथदेवर नित्यपूजामिपेकं मोदलाद  
धर्मकार्यनिमित्त-

- ४० मागि तल्लिजनालयाचार्यश्रीशुभचंद्रभट्टारकदेवगें शकवर्षद ११२७  
नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पुण्यसुद्धविदिगे वड्डुवारदोल् आद  
संक्रमण-
- ४१ समयदोल् नाल्छासिवं महाजनंगल् सहितमागि धारापूर्वकं  
माडि वेणुग्रामेयोल् कोट्ट स्थलवृत्ति अदर तेंक देसेय वजेय  
खारिगेयि प-
- ४२ डुवल् कोढगेय्य इप्पत्तनाल्कनेय ढत्तियल्लि इरिसिल्गट्टे सहितं  
मत्तरय्हु ॥ आ वेणुग्रामेयल्लि हिरिय मूढगेरिय पडुवण  
वरियो-
- ४३ ल् दुगियर तीकणन मनेयि वडगल् मनेयोडु । पडुवगेरिय  
पडुवण हरियोल् मनेयोडु । पडुवण गवनियल्लि मनेयोडु ।  
साल वसदियि मूढण-
- ४४ कपिलेश्वरदेवर धवलारद कट्टिदिरोल्मने मूरु । आनेयकेरेंगे  
होद वट्टेयि वडगल् हूदोटं आ वेणुग्रामद कोळि मत्तरंरहु  
कम्मविन्नूरेल्पत्तारु । वणंत्तुरिगे-
- ४५ याल्लरिं पडुवण हेगेरेयि पडुवल् केय्मत्तरु हंनेरहु । पडुवण  
हट्टियल्लि तेंकगेरियोल् अय्गय्यगलट्टिप्पत्तोडु कय्नीलद  
मनेयोडु ॥ मत्तं स्वस्त्य-
- ४६ नेकगुणगणालं कृतसत्यशौचाचारनयविनयमंपन्नरुमाश्रितजन-  
प्रसन्नर मवपट्टिपुरप्रतिष्ठितजिनमुनिजनोपट्टिष्टगुडुशास्त्र क्रमप-
- ४७ रिपालितवीरवणजुधर्मरुं समाचरितपुण्यकर्मरु । पद्मावतीदेवी-  
लब्धवरप्रसादरुं विहितसकलजनाह्लादरु । न्यायोपार्जनव्यवहार-  
प्रशस्तरुं

- ४८ मल्लुंकिदंडहस्तरुमप्प समयचक्रवर्ति जयपति सेट्टि मुख्यमागि वेणुग्रामद स्थलद समस्तमुम्मुरिदंडंगलुं कूंडिमूसासिरद पट्टणिग मोदळाट्टु-
- ४९ भयनानादेशिमुम्मुरिदंडंगलुं परशुराम नायक पोम्मण नायक अम्मुगि नायक प्रमुखरप्प समस्तलालव्यवहारिगलुं पडप नायक कौ-
- ५० ड नंबि सेट्टि पोरेयच सेट्टि मोदलादेवला मलेयालव्यवहारिगलु मत्तमा वेणुग्रामद स्थलद चिन्नगेयिकदवरुं दूसिगरुं मुख्यमागुलिद परदरु । तेलिगरुं । टिक-
- ५१ सालिगरुमितिवरेल्ल नेरेटा शान्तिनाथदेवर वसदिगे विट्टायवेंतें-दोडे वडगणि वंद कुटुरेगे नेलमेट्टु हागवौदु । तेकल् नडेववकें सुंक हागवौदु । मलेयालर
- ५२ कुटुरेगे हागवौदु । अरुवत्तयूदेत्तु कोनंगलोल्लेनं पेरिदोडं सर्वावाध-परिहारं । चिन्नगेयिकद चीरक्के दूसिगवसरक्के । हत्तिवसरक्के । मणिगारवसरक्के । गंधवण-
- ५३ वसरक्के गधवणिगर गडिगे । अक्कसालेगमटक्के वेरेवेरे वरिसदेरे वरिसदेरे हिरिय हागवौदु । होरगणि वद सीरेय कडगेगे वीसवौदु । होरगणि वद गंधवणक्के । कक्षमंडक्के । आ मं-
- ५४ डं गद्याण तूक्वट्टु । हत्तिय मंडिगे तारं मरू आ पेरिगे काणियौदु । मत्तद मंडिगे मत्तवोर्वल्लं आ पेरिगे मत्तवोर्मानं । अंकणथ मत्त मारिदडा मत्तमोर्वल्लं । मत्त-
- ५५ वसरदगडिगे मत्तं निच्चसोल्लगे । अक्किवसरक्के अक्कियट्ट । मेलसिण हेरिगे मेलसोर्मान आ जवक्के अरेवानं । इंगिन पेट्टिगेगे इंगु गद्याण तूक्वारु अरुलअरिसिनद जवलक्के आ म-

- ५६ षडं पलवय्दु आ हेरिंगे अल्लग्रिसिनं पलं हत्तु । गाणक्के निच्चत्वेण्णयहं । अडकेय हेरिंगे अडकेयिप्पत्तय्दु आ जवलक्के अडके हंनेरड्डु । एलेय हेरिंगेले नूरु हो
- ५७ रंगेलेयय्वत्तु । तेंगिन काय हेरिंगा कायोंदु । ओलेय हेरिंगे ओलेय सूडेरड्डु आ होरेगे सूडोंदु । होरगणि वन्द वेल्लद मंडिगे बेल्लदच्चु हदिनय्दु आ
- ५८ होरेगे अच्चोंदु । बालेय हेरिंगा कायारु आ होरेगे काय्मूरु । नेल्लिय काय हेरिंगा काय्वल्लवोंदु । कविन हगरक्के ओंदु कवु । बलहद हेरिं-
- ५९ गे वलहवोर्पलं मत्तमा शान्तिनाथदेवर बसदिगे श्रीकार्तवीर्य-  
देवं कोट्ट अगडि बडगगेरिय बडगण हरिय पड्डुवण कडेयोल्ल  
राजवीथियि मूडल् नाल्कु ॥
- ६० बहुमिर्वसुधा भुक्ता राजमिः सगरादिभिः, यस्य यस्य यदा  
भूमिस्तस्य तस्य तदा फल ॥ अपि गगादितोर्थेषु हन्तुर्गामथवा  
द्विज निष्कृतिः स्यान्न देवस्व-
- ६१ ब्रह्मस्वहरणे नृणा ॥ ओदर्विदी धान्त्रियेत्तलं मिगे पोगले चिर  
वर्तिसुत्तिके नित्याभ्युदयश्रीकार्तवीर्यक्षितिपविपुलसाम्राज्य-  
सन्तानमुर्वीचिदि-
- ६२ तश्रीवीचिराजप्रथितविमलशान्तीशरावासधर्मं सदलंकारस्फुटार्था-  
न्वितपदकविकन्दर्पसुव्यक्तसूक्त ॥ दोषव्यतीतमर्थविशेषमिदेने  
पेल्दनोल्दु शासनमं पीयू-
- ६३ षसमसूक्ति चातुर्भाषाकविचक्रवर्ति कविकन्दर्प ॥ श्रीमन्माधवचन्द्र-  
त्रैविद्यचक्रवर्तिवाक्सुधारसनाभ्युदितनित्यसाहित्यकमलवनमराल  
वालचंद्रदेवं पेल्लव शासनं

[ इस लेखका साराश जै० शि० स० भा० ३ मे क्रमांक ४५३ मे आ गया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था । पाठकीकी सुविधाके लिए साराशकी मुख्य बातें यहाँ दोहरायी जाती हैं । इस लेखमे रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य ( चतुर्थ ) तथा उनके बन्धु मल्लिकार्जुनका एव उनके मन्त्री वीचणका उनके पूर्वजोसहित परिचय दिया है । वीचणने बेलगाँवमें रट्टजिनालय स्थापित किया था । इस मन्दिरके प्रधान भट्टारक शुभचन्द्रको शक ११२७, रक्ताक्षी संवत्सरमें द्वितीय पौष शुक्ल २ को बेलगाँवकी कुछ ज़मीन तथा कुछ करोका उत्पन्न दान दिया गया था । इस शिलालेखके पाठकी रचना माधवचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य बालचन्द्र कविकन्दर्प-ने की थी । ]

[ ए० इ० १३ पृ० १५ ]

३१६

बेलगाँव ( क्रमांक २ ) ( ब्रिटिश म्यूजियम )

शक ११२७ = सन् १२०४, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्यादादामोघलाछन । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥
- २ श्रीजिनसमयनवांबुधि राजिसुत्तिकर्मथनूर्जितामृतस्नश्रीजननगृहं सत्त्वदयाजीवनमपरिमितगभीरम-
- ३ पार ॥ जंबूद्वीपट भरतदोलबुजभवसारसृष्टि कूंडिमहीचक्र वगे-गोलिपुट्ट सकलजनावकधनसुकु-
- ४ तफळविलासनिवास ॥ श्रीराष्ट्रकूटवशासरोरुहवनराजहंसनाद-नादय त्रिस्तारियशोनिधि सेनमहारमणं
- ५ संभृतामल्लोभयपक्षं ॥ सिरियं निजानुजेयनादरदि शशियिस्तु राजनादं नण्पं धरियिसि मिक्कता सेनराजनो-

- ६ ल् सेणसि राजनेनिपवनावं ॥ स्थिरतेयनुत्तंगतेयं धरियिसिदा  
सेननृपवरोदयदोल् भासुरतेजोनिधि पद्माभिराम-
- ७ नेने कार्तवीर्यरवियुदयिसिद ॥ विनतारिपुप्रतिविंवालि नितान्तं  
कार्तवीर्यपदनखदोल् चेल्वेनिकुं पूर्वपदाश्रि-
- ८ तरनलिदु तन्मंत्रकृतिगे पदेदप्पुवचोल् ॥ स्थितिकारिणि विमल-  
गुणान्विते पद्मलदेवि कार्तवीर्यधरित्रीपतिदयिते तां त्रिव-
- ९ गौन्नतिसाधिकेयपरनीतिविद्येवोलेसेवल् ॥ जनियिसिदं समस्त-  
गुणसंकुलसस्तुतलक्ष्मभूमिपं जननुतकार्तवीर्य-
- १० विभुग सतिपद्मलदेविगं सुतं जनियिपवोल् जयन्तनमरप्रभुगं  
शच्चिगं मयूरवाहनमवंगवद्विजेगमंगमव हरिगं
- ११ रमाख्येग ॥ वनितेयरं मरुल्लुचुव समाकृतियि सुमनोभिवृद्धिय  
जनियिप शीलदि कुवलयक्के विकासमनीव मय्युमेयिं जन-
- १२ नयनक्के कामनो वसन्तनो चंद्रमनो दिटक्के पेलेने विभु लक्ष्मी-  
देवनेसेवं कविसंकुलकल्पमूरुहं ॥ विजितरिपुराजराजात्म-
- १३ जे चदलदेवि लक्ष्मनृपसतियेसेवल् विजितघटसर्पमदे विश्वजन-  
स्तुतचारुचरितेयेने धारिणियोल् ॥ अवरिर्वंगं कलिकार्तवी-
- १४ र्यनु मल्लिकार्जुननुमादर् प्रोद्भवसाम्राज्यरामाधिपयुवराज-  
कुमाररात्मजर् घनतेजर् ॥ जनमेल्लं पेच्चे चह्लं
- १५ पेगेवहरट सेल्लं जयश्रोगे नल्लं मनुमार्गं सत्रिवर्गं तनगेसेये  
निसर्गं गुह्रीतारिदुर्गं सनयालापं
- १६ सुरूप नेगल्दनतिदिलीपं जितारातिभूपं घनशौर्यं क्षत्रवय्यं  
सुरकुजसद्वशौदार्यनी कार्तवीर्यं ॥
- १७ श्रीमत्कुलाब्धिवर्धनसोमनेनिप्पुदयविभुविनात्मजनत्युद्दामयशो-  
निधि वीचं भूमहितं सौम्यवृत्तियं तलेदेसेव ॥ वीच-
- १८ ने सुकविमस्तुतवाचंगादर् सुतर् जिनेन्द्रमतश्रीलोचनसनिमरात्म-  
हिताचरणर् नेगल्द पेर्मणनुमप्पणनुं ॥ तनग

- १९ ब्रह्मंगमुद्यच्चतुरते तनगं वार्धिग गुण्पु चागं तनगं कर्णंगमत्युन्नति  
सरि तनग मेरुगं भूप्रियत्वं तनग चंद्रगमहंन्मतस्-
- २० चि तनगं वारिषेणंगमेंदंतनिश भव्यालि वणिणप्पुदु गुणियेनि-  
सिर्दप्पणं प्रीतियिंदं ॥ श्रीकरणाग्रणिगप्पगाकलितलस-
- २१ चरित्रे दयितेयलंकाराकीर्णे विनुते वरवर्णाकृति वाग्देवियुचित-  
नामदिनेसेवल् ॥ घनलक्ष्मीपतिपांडुगं नेगल्द कु-
- २२ न्तीदेविगं धर्मनदनभीमाजुंनरादवोल् तनुजरादर् विश्रुतर्  
कार्तवीर्यन्तृपश्रीकरणाप्पणगमेसेवी वाग्देविगं सारशौ-
- २३ र्यनिधानर् विभुवीचवैजबलदेवर् निर्जितारातिगल् ॥ अनुपम-  
विद्येगुद्वचिनय सिरिगोप्पुव चागदेल्गे जौवनके विनिर्मला-
- २४ चरणमायुगे विस्तृतकीर्ति वाक्प्रवर्तनेगे ऋतोक्ति तनेसकदिं  
सले मंडनमागे वर्तिपं जनपतिकार्तवीर्यंसचिवैकशिरो-
- २५ मणि वीचनुर्वियोल् ॥ इदु तां श्रीकरणप्पणाग्रसुतसत्पुण्यप्रभा-  
जालमिन्तिदु रट्टक्षितिपालमंत्रिय रमास्मेरावलोकांशु-
- २६ मत्तिदु दल् धार्मिकचक्रवर्तिय दयादुरधाधिधीवीचिसमभ्युदयं  
तानेने वीचिराजन यशं पर्वित्तु मूलोकमं ॥ विनुतनिज-
- २७ प्रमुगालोचनदोल् नयशास्त्रदृष्टि दुर्धरसमावनियोल् निशित-  
जयास्त्रं विनोददोल् नर्मसचिवनेनिपं वैज ॥ भरदिं तनं नो-
- २८ डिद तरुणीजनवेरेद वदिबृद मत्तोर्वरनीक्षिसदरेयदेनल् सुरूपन-  
नतिशयवितरणं बलदेवं ॥ श्रीकार्तवीर्यन्तृपति-
- २९ श्रीकरणाधिपन वीचणन गुरुकुलदोल् लोकोत्तरसुचरित्रविवेकर्  
मलधारिदेवमुनिपर् नेगल्दर् ॥ आ मुनिमुख्यर् शिव्यर्  
भूमीश्वर-
- ३० वंद्यरमलतरसिद्धांतश्रीमुखतिलकर् प्रथितोद्दामगुणर् नेगल्द  
नेमिचंद्रमुनींद्रर् ॥ निरुपमतपोनिधानर् धरणीश्वरजालमौ-



- ३१ तिलालिनपट्टरेंदुष्मुददि कीमिंपुद्वरें विशुगुनचंद्रद्वयनष्टारतरं ॥  
स्वस्ति स्वमशिरातपचमहाशब्दगणामंद-
- ३२ लेश्वरं कार्तवीर्यदेव निजानुजयुवराजकुमारवीरमालिपाराजुन्देवं  
त्रेरसु वेणुग्रामस्कंधावारदाल् मात्राज्यसुगुमनु-
- ३३ मधिसुत्तमान्मायश्रीकरणाप्रनाग्यनुगणप्यपुष्यनुमप्य श्रीनिराजं  
माडिसिद रट्टजिनालयद् श्रीशान्तिनारादेवर अंगमोग-
- ३४ रगमोगनित्यामिपे तार्चनगदावागस्रदम्फुट्टिगजीर्णाद्वरणाहारादि-  
दाननिमित्तं श्रीमूलमंत्रकौंडकुं दान्वयदेशीयगणपु-
- ३५ स्तकगच्छहनसोगप्रतिवटतजिनालयाचार्यश्रीशुभचंद्रमष्टारकठेवगे  
शकवर्षद ११२७ नेय रक्षाक्षिसंवत्सरद पु-
- ३६ प्यशुद्धविदिने बहुवारदोलोद संक्रमणसमयदोल् कुंडिमूसामिर-  
दोलगण कोरवल्लिगंपटण उंवरवाणियेव ग्रा-
- ३७ ममं सर्वाधाधपरिहारमष्टभोगतेजस्वान्यसहित निधिनिक्षेप-  
जलपाषाणरामादिसमन्वितं सर्वनमस्यं माडि स्वकीयमा-
- ३८ आज्यसतानयशोमिवृद्धयर्थमागि धारापूर्वकमतिप्रोतियं कोट्टनदकं  
सोमं ऐशानियकोणोल् नरवल मोनेय-
- ३९ लिल नट्ट कल्लल्लि तेंक मोगदे मूढण दिक्किनोल् नट्ट कल्ललि सुंते  
नट्ट कल्ललि सुंटे नगरकेरियाल्लि सुंटे आग्नेयियकोणोल् मू-
- ४० लवल्लियेलगोड सुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्ललि पडुव मोगदे तेकण  
दिक्किनोल् वम्मणवाडकट्टकवाडद सुग्गुड्डेय इंगुणिते-
- ४१ य केलगे नट्ट कल्ललि सुंटे कुनिकिल्गल्ललि नट्ट कल्ललि सुटे  
निरुतियकोणोल् कट्टकवाडकरवसेय सुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्ललि  
वडम मो-
- ४२ गदे पडुवण दिक्किनोल् मेल्लुगुंडिय करवसेय सुग्गुड्डेयल्लि नट्ट  
कल्ललि सुंटे केंदरिय मोकिनोल् नट्ट कल्ललि सुते वायुविन-

- ४३ कोणोल् मेलगुंडिय नात्रिदिनेय मुग्गुड्येय गोय्टे गट्टिनलि नट्ट कल्लिं मूड भोगदे वडगण दिक्किनोल् सुण्णद कोडिय मेगणो-  
ट्टुगल-
- ४४ लिं मुंडे सिंदिकेवेट्टद पडुवण मोनेयलि नट्ट कल्लिं मुते हेरहिनकोडिय कल्लहुजिकेय मेल् नट्ट कल्लिं मुदे मालद मेल् नट्ट कल् ॥
- ४५ मत्तं नाडोल् कोट्ट स्थलवृत्ति कवृर कालवलि मूलवल्लियोल्परिं मूडल् बेलकब्बेय केरिय तेकल् कंय्कम्मवेट्टु नूरु आकवृरो-
- ४६ ल् महि गावुडन मनेयिं पडुवलरुगय्यगलदिप्पत्तोडु कय्नीलद मनेयोडु ॥ कुलियवाल्लिगेयोल्परिं गीशान्य-
- ४७ दलि केनेश्वरदेवर केरिय मूडल् कूडिय कोल मत्तरोडु वसदियिं तेंकल् हन्निकय्यगलदिर्पत्तोडु कय्नीलद मनेयोडु ॥
- ४८ हरिगब्बेयाल्परिं पडुवल् हिंगलजेय वट्टेयिं वडगला कोल मत्तरोडु वडगण केरियलि हन्निकय्यगलदिर्पत्तु
- ४९ कय्नीलद मनेयोडु ॥ चच्छक्कियलि मूडण प्रभुमान्यदोलगे वोच्चुलगेरेयिं मूडल् मुट्टुगोडेय वट्टेयिं तेंकल् हारुव-
- ५० गोल मत्तर् मूवत्तु सेट्टिगुत्त नागणन मनेयिं वडगल् हन्निकय्यगलदिर्पत्तु कय्नीलद मनेयोडु ॥ बेलगलेय हलि हद्रिगुं-
- ५१ तियोल्परिं मूडणोत्ति पडुवल् कम्म नालनूरय्वत्तु ॥ उच्चुगावेय हलि निट्टरोल्परिं नैर्ऋत्यदोल् महाजनगल् कोट्ट-
- ५२ ग्गोडगेयं अप्पेय सावन्तनुंबलियलि कोट्ट केयं सीमे कडेय केरेयिं वडगल् हुलगन गुत्तिरियिं मूडल् सावन्तन कोडगे-
- ५३ रियिं तेंकल् सेल्लसरलि पडुवल् नट्ट कल् मूडगेरियलि दनगर मनेय स्थलदोल् हदिना (ल्लु) गय्यडुवने मुंतेरडु गोदिगे ॥ कणगावेया-

- ५४ लूरिं नैर्ऋत्यदल्लि एलेदोंटं हास्वगोल मत्तरोट्टु कम्मवेल्नूरस्वत्तंदु  
तेंकणि वंद मुगुलिय हल्लवदके तेंकण हेंले प-
- ५५ डुवला हल्लं वडगरुस्ववाविय तोटं । मूडल् मूलस्थानदेवर तोंटं ।  
आग्नेयकोणोरुल नडुवण देवालयद तोंट । आ ए-
- ५६ लेय तोटदि तेंकला हल्लदिं मूडल् हूदोंटं कम्मं नाल्नूरु ॥ ई  
सीमेगलोलेल्ल नट्ट कल्गल् ॥ ओसेदी शासनमार्गदिं नृपरदार  
पालिप्परी
- ५७ धर्ममं निसदं तत्सुकृतात्मरात्मबलमित्रप्रेयसीगोत्रपुत्रसमृद्ध-  
त्वदोलोदि विश्वधरेयं निष्कंटकं माडि सतोसदिं राज्यमनप्पु-  
केट्टु पडेव-
- ५८ दीर्घायुसं श्रीयुसं ॥ एनिसुं लोभदे शासनक्रममनावों मीरिदं  
तद्दुरात्मनसेव्याचरणान्वित पल्लिगे पैशून्यक्के पापक्के भाजन-  
नल्पा-
- ५९ यु रुजाविलं रिपुहतात्मोर्वीतलं दुर्वलं वनदुःखास्पदनागलुं  
नरकदोलोल् काडुगुं मूडुगु ॥ सामान्योयं धर्मसे-
- ६० तुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः । सर्वान्नेतान् भाविनः  
पार्थिवेद्रान् भूयो मूयो याचते राममद्रः ॥ स्वदत्तां परदत्तां
- ६१ वा यो हरेत वसुन्धरां षष्ठिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते  
कृमिः ॥ प्रहत्तारिव्रजकातवीर्यसचिवं श्रीवीचिराजं यशोमहि-
- ६२ तं पेलिमेनल्के शासनमनोल्पिं वालचद्रं गुणाग्रहि विद्वज्जन-  
समतस्फुटपदार्थालंक्रियासकुलावहमप्पन्तिरे पेल्लनिन्तु कवि-  
कन्दर्पं तुघाधीश्वरं ॥

[ इम लेखका सारांश जै० शि० स० भाग ३ मे क्रमाक ४५४ में दिया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हो सका था । यह लेख भी पहले लेखके ही दिन अर्थात् पौष शुक्ल २ शक ११२७ को लिखा गया

था । इसमें भी रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य ( चतुर्थ ) तथा उनके मन्त्री वीचणका उनके पूर्वजोके साथ परिचय दिया है । बेलगाँवमें वीचणके द्वारा स्थापित रट्टजिनालयके अधिष्ठाता शुभचन्द्र भट्टारक थे । ये मूलसघ — कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छके मलधारिदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके शिष्य थे । इन्हें कूण्ड प्रदेशके कोरवल्लि विभागका उम्बरवाणि ग्राम दान दिया गया था । ]

[ ए० इ० १३ पृ० २७ ]

३२०

बालूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड, राज्यवर्ष १६ = सन् १२०५

[ इस लेखमें होयसल राजा वीरवल्लाल २ के समय राज्यवर्ष १६, क्रोधन सवत्सरमें आषाढ व० ३ बुधवारके दिन मेघचन्द्रभट्टारकके शिष्य कसप गावुण्डकी इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१९ ]

३२१

बालूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड, १३वीं सदी

[ यह निसिधिलेख बहुत घिस गया है । 'श्रीवीतराग' इतने अक्षर पढे जा सकते हैं । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१४ ]

३२२

वेल्लगामे ( मैसूर )

कन्नड, सन् १२०६

- १ स्वस्ति श्रीमत् वीरवल्लालदेववर्षद १६ नेत्र क्षयमंवं-  
 २ त्सरद भाद्रपद व ११ बृहस्पतिवारदन्टु कमलसेन-  
 ३ देवर गुड्डि जकौव्वे समाधिविधिं मुडिपि सुगति-  
 ४ य प्राप्तेयाडलु ॥ श्रीवातरागाय नमो

[ इस लेखमें होयसल राजा वीरवल्लालके १६वें वर्ष क्षयसवत्सरके भाद्रपद कृष्णपक्षमें ११ को कमलसेनकी शिष्या जकौव्वेके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

३२३

हंचि ( मैसूर )

सन् १२०७, कन्नड

[ यह लेख सन् १२०७ का है । होयसल राजा वीरवल्लालके राज्यमें नागरखण्ड प्रदेशके वान्धवनगरमें कदम्बवशीय सामन्त वोप्पके पुत्र ब्रह्मका शासन चल रहा था । उस समय सावन्त मुद्देने मागुण्डिमें एक वसदि वनवायी तथा उसे कुछ भूमि दान दी । यह दान मूलसंघ-काणूर गण-तित्रिणीक गच्छके अनन्तकीर्ति भट्टारकको दिया गया था । उनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है — गोवर्धन सैद्धान्ति-मेघनन्दि सैद्धान्ति-दिवाकर सिद्धान्तदेव-पद्मनन्दि सैद्धान्त — मुनिचन्द्र सैद्धान्त — भानुकीर्ति सैद्धान्त — अनन्तकीर्ति भट्टारक । मुद्देकी प्रशंसा विस्तारसे की है तथा उसे रेचचमूपतिके समान कोप्पण तीर्थका रक्षक कहा है । ]

[ ए रि मै. १९११ पृ० ४६ ]

३२४

आनन्दमंगलम् ( चिगलपेट, मद्रास )

राज्यवर्ष ३८ = सन् १२१६, तमिल

[ इस लेखमें विणैयाभशूर कुरवडिगलके शिष्य वर्धमानपेरियडिगल-द्वारा जिनगिरिपल्लिम एक श्रावकको आहारदान देनेके लिए ५ कलजु ( सुवर्णमुद्रा ) अर्पण करनेका उल्लेख है । यह लेख चोल राजा ( कुलोत्तु-ग३ ) मदिरैकोण्ड परकेसरिवर्मन्के ३८वे वर्षका है । ]

[ रि सा ए. १९२२-२३ क्र ४३० पृ २५ ]

३२५

मनगुन्दि ( धारवाड-मैसूर )

शक ११३८-४० = सन् १२१६-१८, कन्नड

[ यह लेख कदम्ब राजा जयकेशि तथा वज्रदेवके समय चैत्र व ७, शक ११३८ तथा कार्तिक शु ८, शक ११४० इन तिथियोका है । इसमें मणिगुन्दिके जिनालयके जीर्णोद्धारके लिए कई भव्य पुरुषो-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है तथा वहाँके जैन आचार्योंकी नामावली दी है । ]

[ रि सा ए १९२५-२६ क्र ४३९ पृ ७५ ]

३२६

कंदगल ( विजापूर, मैसूर )

राज्यवर्ष (२) १ = सन् १२३८, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा सिंहणदेवके राज्यवर्ष (२) १, विक्रम सवत्सर ज्येष्ठ अमावास्याका है । इसमें मूलसघ-काणूरगणके सकलचन्द्र भट्टारककी शिष्या नागसिरियन्वे-द्वारा निर्मित पार्वनाथ वसदिके लिए भूमि आदिके दानका उल्लेख है । ]

[ रि सा ए. १९२८-२९ क्र ई ५० पृ ४५ ]

३२७

## हलेवीड ( मैसूर )

शक ११५७ = सन् १२३६, संस्कृत-कन्नड

- १ श्रीमद्देवासुराहीन्द्रपूजितश्रांगजन्मजिद् देवः श्री-
- २ वीरतीर्थेशः पायाद् भव्यजनव्रजान् ॥ (१) श्रीमल्लोकैकविख्या-
- ३ तमूलसंघो विराजते कोण्डकुन्दान्वयस्तत्र देशीयाख्यगणा-
- ४ ग्रणी ॥ (२) श्रीवीरनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्त्यनुजो महान्  
श्रीमद्वा-
- ५ हुवली नाम मुनि सिद्धान्तपारगः ॥ (३) सकलज्ञ-  
प्रतिपादितोभयनया-
- ६ मिज्ञानसंपन्नको मदनोद्यद्दवदावतोयदविभुः सद्धर्मरक्षामणिः  
दक्षिता-
- ७ द्वादशसत्पदार्थनिपुण षड्द्रव्यवेदी जयत्यखिलोर्वानुतचारु  
बाहुबलिसिद्धान्तीश्वरः-
- ८ सन्मुनिः ॥ (४) तस्याग्रशिष्योखिलशब्दशास्त्रपारंगम. स्वात्म-  
सुखानुवर्ती । स्याद्वादविद्याकुश-
- ९ लो विभाति कामाम्बुजेन्दु. सकलेन्दुयोगी ॥ (५) अर्हणंदिमुनी-  
न्द्राणां चारित्रं विस्मयावह ।
- १० तेषां प्रणयिनी वाणी तस्यास्तन्मुनयः प्रियाः ॥ (६) जल्प-  
वित्तण्डकथासु च शब्दाग-
- ११ मजिनमुखोत्थपरमागमयोरुन्निद्रं यच्चित्तं स त्रैविचारुहोर्हणन्दि-
- १२ मुनिः ॥ (७) एष श्रुतगुरुर्यस्य सकलेन्दुमहाव्रतेः । तस्य  
विद्यामहाप्रौढिर्मा-
- १३ दशैर्वण्यते कथ ॥ (८) इत्यभूतो यमीशो वरजिनमुनिसद्वृन्द-  
मध्ये विराजत् षड्विंशत्यर्धि-

- १४ तोरुर्जितचरितपर सप्ततत्त्वप्रवेदी । प्रायश्चित्तादिषट्कद्विगुणित-  
सुतपाश्र्वर्य-
- १५ वर्यप्रसिद्धो द्वात्रिंशद्भागसद्भावनयुतसकलेन्दुव्रतीन्द्रो विभाति ॥  
(९) एवं कतिपय-
- १६ काले प्रवर्तिते ग्रामनगरखेडेपु तत्रत्याभव्योत्पलविकाशयन्  
सकलचन्द्रसु-
- १७ निरायाति (॥ १०) सत्पाण्ड्यदेशमध्यस्थितविलिचाग्रामचैत्य-  
गृहमासाद्य ज्ञात्वा स्वान्त्य
- १८ त्रिदिनादनशनविधिना त्रिविष्टप संप्राप्तः ॥ (११) सप्ताग्रबाणे-  
न्दुशशिप्रमाब्दशकाख्यके म-
- १९ न्मथवत्सरे च सत्फाल्गुने शुद्धतृतीयकेन्दुवारेगमत् श्रीसकलेन्दु-  
देवः ॥ (१२) अरुह नमः
- २० श्रीमद्वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल सधर्मरप्य बाहुवलिसिद्धान्ति-  
देवरे दीक्षा-
- २१ गुरुगल् श्रीमदर्हणन्दित्रैविद्यदेवर् श्रुतगुरुगलुमप्य श्रीस-
- २२ कलचन्द्रभट्टारकदेवर् श्रीमद्राजधानि दोरसमुद्रद समस्तभव्य-
- २३ नगरगल् परोक्षविनयार्थवागि माडिसिद मंगलमहाश्रीश्री

[ यह निसिधिलेख राजधानी दोरसमुद्रके नागरिकोने सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणकी स्मृतिमें स्थापित किया था । वीरनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तिके गुरुबन्धु बाहुवलि सिद्धान्तीसे दीक्षा लेकर अर्हणन्दि मुनीन्द्रके पास सकलचन्द्रने शास्त्राध्ययन किया था । उनकी मृत्यु पाण्ड्य देशके विलिचा ग्राममे फाल्गुन शु० ३, सोमवार शक ११५७ मन्मथ सवत्सरके दिन हुई थी । वे मूलसघ-कौण्डकुन्दान्वयदेशीयगणके आचार्य थे । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७४ ]



३२८

हूविनसिंगलि ( धारवाड, मैसूर )

शक ११ ( ६ ) ७ = सन् १२४५, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा सिंघणदेवके समय चैत्र शु० ५ रविवार, विरोधकृत सवत्सर, शक ११(६)७ के दिन लिखा गया है। इसमें एक श्राविका-द्वारा सिंगलि ग्राममें चैत्यालय बनवानेका उल्लेख है। इस ब्रह्मसदिके शान्तिनाथदेवके लिए महाप्रधान सर्वाधिकारि प्रभाकरदेवने तथा पुलिगेरेके मन्नेय एव आठ हिट्टुओने कुछ भूमि दान दी थी। ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २९६ ]

३२९

कल्लकेरि ( विजापुर, मैसूर )

शक ११६७ = सन् १२४५, कन्नड

[ इस लेखमें यादव राजा सिंघणदेवके समय भाद्रपद शु० ४ रविवार शक ११६७ क्रौघि सवत्सरके दिन महाप्रधान मल्ल, वाच तथा पायिसेट्टि-द्वारा निर्मित अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए कल्लुकेरेके महाजनो-द्वारा भूमि आदि दान देनेका उल्लेख है। यह मन्दिर कमलसेन मुनिके उपदेशसे बनवाया गया था। ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई ५३ पृ० १८६ ]

३३०

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक ११६६ = सन् १२४७, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा सिंहणके समय ज्येष्ठ अमावास्या, शक ११६९, प्लवग मंवत्सरके दिन लिखा गया है। इसमें महाप्रधान वीचिराजकी कन्या राजलदेवी-द्वारा पुरिकरनगरके श्रीविजयजिनालयके लिए कुछ भूमि तथा द्रव्य दान दिये जानेका उल्लेख है। इनके गुरु पद्मसेन मुनि थे। ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ९ पृ० १६१ ]

३३१-३३२

शिगिकुलम् ( तिन्नेवेली मद्रास )

सन् १२५३, तमिल

[ ये दो लेख भगवती मन्दिरके दीवारोपर खुदे हैं । पहलेकी तिथि मारवर्मन् सुन्दर पाण्ड्यदेव ( द्वितीय ) के राज्यवर्ष १५ का ३६०वा दिन यह दी है तथा दूसरेकी तिथि कोणेरिण्मैकोण्डान्के राज्यवर्ष १५ का ३८८वां दिन यह दी है । पहलेमें जो राजाज्ञा है उसीका पालन होनेका वर्णन दूसरे लेखमें है । इस आज्ञाके अनुसार राजमन्त्री अण्णन् तमिलप्पलवरैयनकी प्रार्थनापर राजा-द्वारा स्थानीय जिनमन्दिरकी भूमिको करमुक्त किया गया था । यह भूमि पुगलोकैर्नाथनल्लूरनिवासी मदि-सागरन् आदिभट्टारकन्-द्वारा मन्दिरको अर्पित की गयी थी । मन्दिरका नाम न्यायपरिपालपेरुम्बल्लि तथा उममें स्थित जिनमूर्तिका नाम एणवकु-नल्लनायकर् था । मन्दिर जिस पहाडीपर था उसको जिनगिरिमलै यह नाम दिया गया था । वर्तमान समयमें इस मन्दिरकी जिनमूर्ति गौतम ऋषिके नामसे पूजी जाती है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० २६९-७० पृ० १०५ ]

३३३

सहेट महेट ( उत्तरप्रदेश )

संवत् ११७७ = सन् १२५५, सस्कृत-नागरी

[ तीन चरणपादुकाओके एक पट्टपर यह लेख है । इसके मध्यमे संवत् ११७७ ऐसा निर्माणकालका उल्लेख है । लेखका अन्त 'प्रणमति नित्य' इन अक्षरोसे हुआ है । अत यह जैन लेख प्रतीत होता है । ]

[ रि० आ० स० १९१०-११ पृ० १८ ]

३३४

विजापूर ( मैसूर )

शक ११७९ = सन् १२५७, कन्नड

[ यह लेख करीमुद्दीनकी मसजिदमें पाया गया । यह मसजिद एक जैन मन्दिरके स्थानपर बनवायी गयी थी । इस मन्दिरके आचार्य करसिदेवके लिए यादव राजा कन्हरदेवके समय शक ११७९ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है । ]

[ रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२४ ]

३३५

बस्तिहल्लि ( मैसूर )

सन् १२५७, कन्नड

[ यह मूर्तिलेख होयसल राजा नरसिंहके समय सन् १२५७ का है । इस समय श्रीकरणद मधुकण्णके पुत्र विजयण्ण तथा दोरसमुद्रके अन्य जैनोंने मूलसघ-देसिगण हनसोगे शाखाके शान्तिनाथ मन्दिरका निर्माण किया था । इस मन्दिरके लिए हीरगुप्पे नामक ग्राम नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्तिको अर्पित किया गया था । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४९ ]

३३६

कलकेरि ( विजापूर, मैसूर )

राज्यवर्ष ४ = सन् १२६०, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा कन्नरदेवके राज्यवर्ष ४ साधारण संवत्सरमें लिखा गया था । इसमें अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए रगरस-द्वारा-पुत्र प्राप्तिके उपलक्ष्यमें कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । करसंग्राहक सर्व-देव नायक-द्वारा भी इस समय कुछ दान दिया गया था । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ५४ पृ० १८६ ]

३३७

नेगलूर ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष (६) = सन् १२६२, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा कन्धरदेवके राज्यवर्ष (६) विरोधी सवत्सरमें भाद्रपद शु० १४, गुरुवारको लिखा गया था । इसमें कुलचन्द्रभट्टारकके शिष्य सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० १६२ पृ० १०७ ]

३३८

वालूर ( धारवाड, मैसूर )

शक ११८४ = सन् १२६२, कन्नड

[ इस निमिधि लेखमे कहा गया है कि सेंवूरके कावय्यकी माता चेकवाने यह निसिधि स्थापित की । लेखकी तिथि पीष शु० ११, सोमवार, शक ११८४, दुर्मति सवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१८ ]

३३९

वालूर ( धारवाड, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें यादव राजा कन्धरदेवके राज्यकालमें नल सवत्सरके पीष मासमें गुरुवारके दिन इस निसिधिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है । लेख बहुत घिस गया है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१७ ]

३४०-३४१

## हत्तिमत्तूर ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ५ तथा ९ = सन् १२६५ तथा १२६९, कन्नड

[ ये दो लेख हैं । पहला लेख यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ५ में कार्तिक व० १३, बुधवार, क्रोधन संवत्सरके दिन सेवयर जक्कयकी पत्नी मादवेके समाधिमरणका स्मारक है । दूसरेमें महादेवके राज्यवर्ष ९ में हत्तियमत्तूरकी बसदिके आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है । (न) न्दिभट्टारकदेवका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ६८-६९ पृ० ९८ ]

३४२

## हलेवीड ( मैसूर )

सन् १२६५, कन्नड

[ यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय सन् १२६५ का है । इस वर्षमें राजाद्वारा त्रिकूट रत्नत्रय शान्तिनाथ जिनालयके लिए माघ-नन्दि सैद्धान्तिको कल्लनगेरे ग्राम दान दिया गया था । माघनन्दिकी गुरु-परम्परा इस प्रकार है — मूलसंघ — नन्दिसंघ-बलात्कारगणके वर्धमानमुनि-जो होयसल राजाओके गुरु थे, श्रीधर त्रैविद्य-पद्मनन्दि त्रैविद्य-वासुपूज्य सैद्धान्ति-शुभचन्द्र-भट्टारक-अभयनन्दिभट्टारक — अरुहणांदि सिद्धान्ति, देवचन्द्र, अष्टो-पवासि कनकचन्द्र, नयकीर्ति, मासोपवासि रविचन्द्र, हरियनन्दि, श्रुतकीर्ति त्रैविद्य, वीरनन्दिसिद्धान्ति, गण्डविमुक्त, नेमिचन्द्रभट्टारक, गुणचन्द्र, जिनचन्द्र, वर्धमान, श्रीधर, वासुपूज्य, विद्यानन्द स्वामि, कटकोपाध्याय श्रुतकीर्ति, वादिविद्वासघातक मलेयालपाण्ड्यदेव, नेमिचन्द्र, मध्याह्नकल्पवृक्ष वासुपूज्य । श्रीधरदेव-वासुपूज्य — उदयेन्दु — कुमुदेन्दु — माघनन्दि । माघनन्दिके चार

ग्रन्थोका उल्लेख किया है - सिद्धान्तसार, श्रावकाचारसार, पदार्थसार तथा शास्त्रसार समुच्चय । इनके शिष्य कुमुदचन्द्र पण्डित थे । अन्तमें इस दानके सहायकके रूपमें महाप्रधान सोमेय दण्डनायकका उल्लेख किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९११ पृ० ४८ ]

३४३

अण्णिगेरि ( धारवाड, मैसूर )

शक ११८९ = सन् १२६७, कन्नड

[ इस लेखमें चैत्र व० ४, मङ्गलवार, शक ११८९, प्रभव संवत्सरके दिन मूलसघ-कोण्डकुन्दान्वयके सोमदेवाचार्यकी शिष्या आकलपे अब्बेके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २०४ पृ० ५३ ]

३४४

संगूर ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष ६ = सन् १२६९, कन्नड

[ इस लेखमें यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ९, विभव संवत्सरमें नन्दिभट्टारकके शिष्य नयकीर्ति भट्टारकके शिष्य नालप्रभु गगर सावन्त सोवके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६८ पृ० १०७ ]

३४५ -

हुलिकेरे ( मैसूर )

सन् १२७१, कन्नड

१ स्वस्ति प्रजोत्पत्तिसंवत्सरद चैत्र सु १ मि ददु श्रीमत् प्रतापवीर  
होयसल श्रीवीरनारसि.....

२ वाहुनं सोमेयदण्णायकरु मेय्दुन वाचेयदण्णायकरु होंकुदद  
वसदि जीर्णवा .. ...

३ दण्णायकरं जीर्णोद्धारवं माडिसिके - य निडिसिदरु

[ इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके शासनकालमें चैत्र शु १, गुरुवार, प्रजोत्पत्ति सवत्सर, के दिन होकुदकी वसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। यह कार्य सोमेय दण्डनायकके बहनोई वाचेय दण्डनायक-द्वारा किया गया था। लिपि १३वीं सदोकी है। संवत्सर नामानुसार यह वर्ष सन् १२७१ होगा जब नरसिंह तृतीयका राज्य चल रहा था। )

[ ए० रि० मै १९३७ पृ० १८७ ]

३४६

मुलगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

शक ११९७ = सन् ११७५, कन्नड

[ यह लेख वैशाख व. १ (३), गुरुवार, शक-११९७ युव संवत्सरका है तथा पार्श्वनाथवसदिके भीतरी दीवालमें लगा है। इसमें सरदूरके तिलकरसके मन्त्री देवण्णके पुत्र अमृतैयके समाधिमरणका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९१ पृ० ८ ]

३४७

अमरापुरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

शक १२०० = सन् १२७८, कन्नड

[ यह लेख निडुगल्लुके महामण्डलेश्वर इरुगोण चोल महाराजके समय आपाड शु० ५ सोमवार शक १२००, ईश्वर संवत्सरका है। इसमें मूलसघ-देशियगणके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य बालेन्दु मलघा-रिदेवके उपदेशसे संगयन वोम्मिसेट्टि तथा मेलव्वेके पुत्र मल्लिसेट्टि-द्वारा

तैलगेरेके प्रसन्नपार्श्वदेवके लिए २००० वृक्षोके उद्यानके दानका वर्णन है । इस मन्दिरका उपाध्याय जैन ब्राह्मण चल्लपिल्ले था जो पाण्ड्यप्रदेशके भुवलोकनाथनल्लूरका निवासी था । ]

[ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४० पृ० ७४ ]

३४८

### इन्दौर म्युजियम ( मध्यप्रदेश )

संस्कृत-नागरी, सं० १३३४ = सन् १२७८

[ इस लेखमें पण्डिताचार्य रत्नकीर्ति-द्वारा' एक मूर्ति सं० १३३४ में स्थापित किये जानेका उल्लेख है ।

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १२३ ]

३४९

### पट्टा ( उत्तरप्रदेश )

संवत् १३३५ = सन् १२७८, संस्कृत-नागरी

[ मूलसंघके गोललतक कुलके कुछ साधुओ-द्वारा संवत् १३३५ में तीन मूर्तियाँ स्थापित की गयी थी ऐसा इस लेखमें वर्णन है । ]

[ रि० आ० सं० १९२३-२४ पृ० ९२ ]

३५०

### फडकोल ( धारवाड, मैसूर )

शक १२०१ = सन् १२८०, कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघके पद्मसेन भट्टारकके शिष्य सावन्त सिरियम गौडकी पत्नी चण्डिगौडिके समाधिमरणका तथा कई गौडो-द्वारा एक वसदिको दान दिये जानेका उल्लेख है । तिथि भाद्रपद शु० ६, सोमवार, शक १२०१, प्रमाथि संवत्सर ऐसी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ ऋ० ई ५१ पृ० १२३ ]



३५१

## सण्णमल्लीपुर ( मैसूर )

शक १२०७ = सन् १२८५, कन्नड

- |                               |                               |
|-------------------------------|-------------------------------|
| १ स्वस्ति श्रीप्रतापचक्रवर्ति | २ होइसल वीर नरसिं-            |
| ३ हदेवरसरु पृथिवि-            | ४ राज्य गेयुतिरलु             |
| ५ शक वरिष १२०७ नेय            | ६ सुमक्रितुसंवत्सरद पात्त्यु- |
| ७ ण ...हे-                    | ८ गगडे                        |
| ९ ...गरवेइलु                  | १० ...लवुं                    |
| ११ ...मतरु...                 | १२ '...हि आतन तम्म' ...भाल-   |
| १३ '...कोडगे'...भाल           | १४ '...लदु-होलवेरडु भन्तु     |
| १५ '...तिदने' सा-             | १६ यिर मत्तरु' ...विट्ट       |
| १७ '...सिद सासन ॥             | १८ 'दक्षिण तगहूरलि            |
| १९ .....                      | २० (ता) यूर गुलियपुर          |
| २१ ...यषण अल                  | २२ ... नागगावुड ॥ वीतराग      |

[ यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय शक १२०७ के फाल्गुनमे लिखा गया था । किसी हेगडे-द्वारा नागगावुडको तगहूर, तायूर तथा गुलियपुर ग्रामकी कुछ भूमि करमुक्त दी जानेका इसमें वर्णन है । अन्तमे वीतराग यह मुद्रा है इससे दानदाता जैन प्रतीत होते हैं । ]

३५२-३५३

## ताडकोड ( धारवाड, मैसूर )

राज्यवर्ष १४ = सन् १२८५, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा रामचन्द्रके राज्यवर्ष १४, चित्रभानु सवत्सर-का है । इस समय कन्नरदेवकी रानीकी आज्ञासे सर्वाधिकारी मायदेवने एक जिनमन्दिर बनवाया था । यहीके अन्य लेखमें चन्द्रनाथको नमस्कार कर वालचन्द्रके शिष्य श्रीवासुपूज्यका उल्लेख किया है । ]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४४-४४५ पृ० ७६ ]

३५४

## कलकेरी ( मैसूर )

राज्यवर्ष १८ = सन् १२८९, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा रामदेवके राज्यवर्ष १८ में पौष शु० ८, वहुवार, (सर्व)धारि सवत्सरके दिन लिखा गया था । इसमें नागेयिसेट्टि और मादव्वेके पुत्र मादैयके समाधिभरणका उल्लेख है । इनके गुरु समन्त-भद्रदेव थे । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ७२ पृ० १६७ ]

३५५

## डम्बल ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक १२११ = सन् १२९०, कन्नड

[ यह लेख रामदेव ( यादव ) के समयका है । धर्मवोललके महानाडु-के १६ प्रतिनिधि तथा नाडुके ८ प्रतिनिधि एव साल्ववीर चवुण्डके छोटे वन्धु सप्तरस-द्वारा नगर जिनालयके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान देनेका इसमें उल्लेख है । इसी मन्दिरको अय्वत्तोक्कलु तथा उगुरु ३००-द्वारा कुछ तेल वगैरहका दान भी दिया गया था । तिथि पौष शु० २, रविवार, शक १२११, सर्वधारी सवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४४-४५ क्र० एफ् ६३ ]

३५६

पोन्नूर ( उ० अर्काट, मद्रास )

राज्यवर्ष-७ = सन् १२९०, तमिल

[ यह लेख स्थानीय जैन मन्दिरमें है । मारवर्मन् विक्रमपाण्डयके राज्यवर्ष ७ में विडालपर्खे नाट्टवर् ( ग्रामप्रमुखो )-द्वारा आदिनाथके पल्लिविलागम्मे रहनेवाले लोगोसे प्राप्त करोका उत्पन्न इस जिनमन्दिरमें पूजा आदिके लिए अर्पण किए जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१५ पृ० ४० ]

३५७

हुमच ( मैसूर )

शक १२१७ = सन् १२९५, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादामोघलांछ-
- २ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशास-
- ३ नं स्वस्ति श्रीमतु सकवर्ष १२१७ नेय मनु-
- ४ मथसंवत्सरद चैत्र सु पाडिव बृहस्प-
- ५ तिवारददु श्रीमत्सिद्धान्तयोगी-
- ६ द्रपादपकजभ्रमर वम्मगवुड म-
- ७ हापुरूपो...गतो सिद्धि समाधिना ।
- ८ नमनार्ण...गुणसेनमुनिश्वरं
- ९ ...द्राविडान्वय
- १० मौलिना

[ इस निसिधिलेखमें श्रीमत् सिद्धान्त योगीन्द्रके शिष्य वम्मगवुडके समाधिमरणका उल्लेख है जो चैत्र शु० १, बृहस्पतिवार, शक १२१७ मन्मथसंवत्सरके दिन हुआ था । लेखके अन्तमें द्राविड अन्वयके गुणसेन मुनीश्वरका नाम भी आता है । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७ ]

३५८

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक १२१७ = सन् १२६५, संस्कृत-कन्नड

[ इस लेखमें पुरिकरके शान्तिनाथ मन्दिरके लिए सोमय-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । तिथि भाद्रपद शु० ५, सोमवार, शक १२१७ ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई २८ पृ० १६३ ]

३५९

मन्नोर मसलवाड ( वेल्लारी, मैसूर )

शक १२१९ = सन् १२९७, कन्नड

[ यह लेख यादव राजा रामचन्द्रदेवके समय मार्गशिर शु० ५ गुरुवार शक १२१९ हेमलम्बि सवत्सरका है । इसमें महामण्डलेश्वर भैरवदेवरस-द्वारा मूलसद्य-देसिगणके नेमिचन्द्रराउलके शिष्य विनयचन्द्रदेवको भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान मोसलेवाडके जिनमन्दिरके लिए था जिसका जीर्णोद्धार महामण्डलेश्वर सालेवेय तिकमदेव राणैयके मन्त्री सावन्त पण्डितके पुत्र केशव पण्डित-द्वारा किया गया था । ]

[ रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २५६ पृ० २२ ]

३६०

कोगलि ( वेल्लारी, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें होयसल राजा प्रतापचक्रवर्ति रामनाथदेव-द्वारा युव सवत्सरमें कोगलिके चेल्लपाश्वर्जिनमन्दिरके लिए सुवर्णदान देनेका उल्लेख है । ]

[ इ० म० वेल्लारी १९२ ]

३६१-३६७

चिप्पगिरि ( जि० वेल्लारी, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ ये छह लेख हैं । मूलसंघ-देशीयगण-कोण्डकुन्दान्वय-पोस्तकगच्छके केशणदि भटारके शिष्योके समाधिमरणका इनमें उल्लेख है । इन शिष्योके नाम हैं—गोपरस, तथा उसकी पत्नी हालौवे, मादलदेवी, तिप्पयकी पत्नी जाकवे, नागलदेवी, मूलिग तिप्पय, बैतलेय वोम्मिसेट्टि तथा उसकी पत्नी वीमवे । लिपिके अनुसार ये लेख १३वी सदीके प्रतीत होते हैं । इसी समयके एक और लेखमे माघवचंद्र भट्टारकदेवके शिष्य परिसयके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ६३-७२ )

३६८

अदरगुंचि ( जि० धारवाड, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख लिपिपर-से १३वी सदीका प्रतीत होता है । यापनीय संघ-काडूरगणकी एक वसदिके लिए दी हुई जमीनकी सीमा बतलानेवाला यह पत्थर है । यह वसदि उच्छगि नगरमें थी । यह दान अदिर्गुण्टेके गोण्ड और स्थानिको-द्वारा दिया गया था । ]

( रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० ३ पृ० २५५ )

३६९

वसवपट्टण ( हासन, मैसूर )

१३वीं सदी कन्नड

१ श्रीमूलसंघ डेमियगण पोस्तकगच्छ

२ कौंडकुन्दान्वयद इंगलेद्वरद व-

- ३ लिय श्रीश्रुतकीर्तिदेवर गुड्डुगलु  
 ४ कौंग नाढ श्रीकरणद कावण्णगल मक्क-  
 ५ लु नाकण्ण होनण्णगलु माडिमिद ओ-  
 ६ नेमिनाथस्वामिगल प्रतिमे मग-  
 ७ ल मद्दा श्री श्री श्री

[ इस लेखमे श्रीकरणद कावण्णके पुत्र नाकण्ण तथा होनण्ण-द्वारा, जो कोगु प्रदेशके निवासी थे, नेमिनाथकी इस मूर्तिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। ये दोनो मूलसघ-देसियगण-पुस्तकगच्छकी इगलेश्वरवलिके आचार्य श्रुतकीर्तिके शिष्य थे। लेखकी लिपि १२वी या १३वी सदीकी प्रतीत होती है। ]

( ए० रि० मै० १९४४ पृ० ४२ )

३७०

### रत्नापुरि ( मैसूर )

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[ यह दो पंक्तियोका लेख एक मूर्तिके पाद-पीठपर है जिसमें किसी-भट्टारकदेव-द्वारा इस मूर्तिको स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वी या १३-वी सदीकी प्रतीत होती है। ]

[ मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित ] [ ए० रि० मै० १९४४ पृ० ७० ]

३७१

### बेलगोल ( माड्या, मैसूर )

१२वा-१३वीं सदी, कन्नड

[ इस छोटे-से मूर्ति-लेखमें द्रविल संघ-नन्दिसघ-अरुगल अन्वयके कुछ व्यक्तियों-द्वारा इस पार्श्वनाथ मूर्तिको स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वी या १३वी सदीकी प्रतीत होती है। ]

[ मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित ] [ ए० रि० मै० १९४४ पृ० ५७ ]

३७२

विदिरूर ( शिमोगा, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ श्री मैणदान्वयद देसियगणद नागर एककगूडिय सु-
- २ मचद्र देवरु माडिसिद वसदिगे ॥ श्रीजिनपद-
- ३ पंकजविराजितमधुकरन् पुनिप्प मल्लि कोट्टं
- ४ पूजितवेने तीर्थकराजित प्रतिकृतिय-
- ५ नुचित कडितले गोत्र ॥

[ इस लेखमें विदिरूर ग्रामके वसदिमें मल्लि नामक व्यक्ति-द्वारा इस चौबीसी मूर्तिके अर्पण किये जानेका वर्णन है । यह वसदि देसियगण-मैण-दान्वय-कडितले गोत्रके सुभचन्द्रदेव-द्वारा बनवायी गयी थी । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११४ ]

३७३

होंगनूर ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमूलसंघ श्रीक्राण्वद श्रीसकलचंद्रमहा-
- २ रक्देव सिष्यरु माधवचंद्रदेवर गुड्डुगलु
- ३ उभयनानादेसिगलु माडिसिद होंगनूर शा-
- ४ न्तिनाथदेवर जोगवड्डिगेय वसदि मगल महा

[ यह लेख एक शान्तिनाथ मूर्तिके पादपीठपर है जो वर्तमानमें लक्ष्मी-देवी मन्दिरके एक चवूतरेमें लगी है । इसमें होंगनूरकी वसदिका निर्माण सकलचन्द्रके शिष्य माधवचन्द्रके शिष्यो-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । ये मूलसंघ-क्राण्व (क्राणूर गण) के अन्तर्गत थे । लिपि १३वीं सदी-की है । ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १२६ ]

३७४

तवनन्दी ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमूलसत्र सूत्र- २ स्तगण चित्रकूटान्वयद  
३ प्रतिबद्ध

[ यह छोटा-सा लेख एक खण्डित जिनमूर्तिके पादपीठपर है । मूल-सत्र-सूत्रस्तगण चित्रकूटान्वयके किसी व्यक्ति-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी । लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५ ]

३७५

वरुण ( मैसूर )

१३वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

- १ श्रीमद् द्रविल- २ सगस्य नन्दिसं  
३ घे ह्यरुगले अ- ४ नयेऽशेषशास्त्र-  
५ इ श्रीपाल ६ मुनिराश्रिय  
७ तच्छिष्यो विदुषां ८ श्रष्ट पद्मप्रम-  
९ सुनीश्वरः तस्य १० पुत्र तपोत्ती-  
११ धर्मसेनमहा १२ मुनि ॥ सोयं  
१३ शुद्ध ( ) स्वभावस्तो- १४ बाह्यां ( न ) रपरिग्रहा-  
१५ त्व्यक्तो जिनपदात्रे १६ त्रिदिव गतवान् बुध-  
१७ .

[ इस लेखमें द्रविलसत्र-नन्दिसत्र-अरुंगल अन्वयके आचार्य श्रीपालके प्रशिष्य तथा पद्मप्रभके शिष्य घमसेनके समाधिमरणका उल्लेख है । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १७२ ]



३७६

केलगोरे ( माड्या, मैसूर )

१३वीं सदी-उत्तरार्ध, कन्नड

पश्चिमकी ओर

- १ श्रामत्परमगभीरस्याद्वादा-
- २ मोघलाछन (१) जीयात् त्रैलोक्य-
- ३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ।
- ४ मद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां
- ५ शासनायाघनाशिने । कुतीर्थ-
- ६ ध्वान्तसघातप्रमिन्नघनमान-
- ७ वे । स्वस्ति समधिगतपंचमहाश-
- ८ व्द महामंडलेश्वरं द्वारावतीपु-
- ९ रवराधीश्वरं यादवकुलावर-
- १० द्युमणि सम्यक्वचूडामणि मलपरो-
- ११ लुगण्ड नासादिसमालकृतरप्प
- १२ श्रीचिनयादित्यपोत्सलन् प्रेर्यं-
- १३ ग विट्टिदेव नारसिंह वल्लाल नारसिं-  
दक्षिणकी ओर
- १४ घयदव तस्य पुत्रं नारसिं-
- १५ हरसरु दोरसमुद्रदोलु पृथ्वीराज्यं गेयु-
- १६ त्तमिरलु स्वस्ति श्रीमूलसंघ वलात्कारं
- १७ ...यदोल् अनेकाचर्यरु न-
- १८ ....प्रवतिसल् अवरोलु वर्धमाननटा-
- १९ रकर श्रीधराचार्यरु देवनन्दित्रैवि-

- २० घरु वासुपूज्यसिद्धान्तदेवरु शुभचन्द्र-
- २१ महारकरु अमयनन्दिमहारकरु अर्हंनं-
- २२ दिसिद्धांतिगलु देवचं(द्र) सिद्धांतिगलु अष्टोप-
- २३ वासि कनकचन्द्रदेवरु नयकीर्ति चान्द्रा-
- २४ यणदेवरु मासोपवास रविचन्द्रसिद्धा-
- २५ न्तिगलु हरियनन्दिसिद्धान्तगलु श्रुत-
- २६ कीर्तित्रैविद्यदेवरु वीणदिमिद्धान्तदे-
- २७ वरु गण्डविसुक्त नेमिचन्द्रमहारकदेव  
पूर्वकी आर
- २८ ( वर्ध )मानमुनीन्द्ररु श्रीधराचार्यरु वा-
- २९ सुपूज्यत्रैविद्यदेवरु उदयचन्द्रसिद्धां-
- ३० तदेवरु कुमुदचन्द्रमहारकदेवर मा\*\*\*
- ३१ माघनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगलु श्रीपादप-
- ३२ अगल्लिगे होयसलभुजवलु श्रीवीरनारसिंहदेवरस-
- ३३ रु दौरसमुद्रद त्रिकूटरत्नत्रयद श्रीशान्तिनाथ
- ३४ देवर अं(ग)मोग रंगमोग आहारदान मुन्ताद
- ३५ समस्तधर्मकार्यक्का
- ३६ चिककंनेयनहलि
- ३७ \*\*\*अ येनुल्लंथा अष्टमो-
- ३८ ग तेजस्वाम्यसहितवागि माघनं-
- ३९ दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगलु श्रीपाद-
- ४० पद्मंगल्लिगे धारापूर्वकं माडि
- ४१ कोट्टरु स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत्
- ४२ अमुधरा\*\*\*

[ इस लेखके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओकी परम्परा नरसिंह ( तृतीय ) तक दी है । नरसिंहने राजधानी स्थित शान्तिनाथ जिनालयके लिए चिककन्नेयनऽल्लि ग्राम दान दिया । यह दान मूलसंघ-बलात्कारगणके कुमुदचन्द्र भट्टारकके शिष्य माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीको दिया गया था । लेखमें कुमुदचन्द्रके पूर्ववर्ती १९ आचार्योंके नाम भी उल्लिखित हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९४० पृ० १६४ ]

३७७-३७८

मूगूर ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

(अ) १ श्रं मूलसंघ देसियगण पुस्त २ कगच्छ कौडकुंदान्वयक

.. 'हगेरे-

३ यत्तार्थं प्रतिबद्ध भरतपण्डितरिगे ४ जविक्रयव्वेय मगलु....

(ब) १ मूलसंघ देसियगण पुस्तकगच्छ कौडकुंदान्वय इंगणेउवर मं(घ)दु श्रीभानुकीर्तिपं-

२ डितदेवर शिष्यरप्प कान \* नंदिदेवर गुडुगलप्प मूगूर समस्त

३ गावुण्डुगलु .. कोडेयर वमदिय जीर्णोद्धारणवमा

४ डि \* सिदरु मंगलमहाश्री

[ ये दो लेख मूगूरकी आदिनाथवसदि तथा पार्श्वनाथवसदिके मूर्तियोंके पादपीठोपर हैं । पहलेमें मूलसंघ-देसियगणके क-हगेरे तीर्थसे सम्बद्ध भरत पण्डितके लिए जविक्रयव्वेकी कन्या ( नाम लुप्त )-द्वारा कुछ दान दिए जानेका उल्लेख है । लेख अधूरा होनेमे विवरण स्पष्ट नहीं हो सकता । दूसरेमें मूल संघ-देसियगण-इंगणेउवर संघके भानुकीर्ति पण्डितके शिष्य - नन्दिके शिष्य गावुण्डो द्वारा मूगूरकी कोडेयरवसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लेखोकी लिपि १३वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १८२-८३ ]

३७६

हलेबीड ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

- १ जिननात्मीयेष्टदन्यं निजगुरु नयकीर्तिव्रतीशं लसद्भूवि-  
 २ नुतं तानुक्किसेट्टिप्रभु पितृ तनगेकव्वे तायेन्दोडिन्तीवन-  
 ३ धिन्यावृतघात्रीतलदोल् अदे पुण्योद्मववातदोल् कूडि नितान्-  
 ४ तं नामिसेट्टि स्फुटविशदयशोलक्ष्मियं ताने पेत्त ॥  
 ५ अन्तातं व्यवहारदि मत्र विक्रमाक्रान्त  
 ६ लदेव \* \* \* मान्धातं दो  
 ७ कोण्डु \* \* \* स्वान्तं विश्रुत ना-  
 ८ मिसेट्टि दिवदोल् कैवल्यम ताल्दिदं

[ इस लेखमें उक्किसेट्टि और एकव्वेके पुत्र नामिसेट्टिके समाधिमरण-  
 का उल्लेख है । नामिसेट्टिके गुरु नयकीर्ति व्रतीश थे । लेखकी लिपि १३वी  
 सदीकी प्रतीत होती है । पक्ति ५ के अस्पष्ट भागमें सम्भवत वीरवल्लाल  
 ( द्वितीय ) के राज्यका और तिथिका उल्लेख था । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७८ ]

३८०

तिरुनिडकोण्डै ( मद्रास )

१३वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें कहा गया है कि कुलोत्तु ग चोल राजा-द्वारा कनकच्चि-  
 न्नगिरि अप्पर देवको अर्पित नल्लूर यह एक धार्मिक स्थान है । यह लेख  
 चन्द्रनाथ मन्दिरके वराण्डेमें लगा है तथा १३वी सदीकी लिपिमें है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २९९ पृ० ६५ ]

३८१

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

१३वीं सदी, तमिल

[ यह लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर खुदा है । इस मूर्तिकी-जिसे कच्चिनायक्कर कहा है - स्थापना आलप्पिरन्दान् मोगन् कच्चियरायर-द्वारा की गयी ऐसा लेखमें कहा है । लिपि १३वी सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१९ पृ० ६७ ]

३८२

कोट्टगोरे ( मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमें देसियगण-इगलेडवर वलिके हेरगु निवासी आचार्य हरिचन्द्रके शिष्य माघनन्दि-द्वारा एक शान्तिनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १३वी सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९१९ पृ० ३३ ]

३८३

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

१३वीं सदी, तमिल

[ यह लेख यहाँकी पहाड़ीपर चढनेके लिए बनी सीढ़ियोंके पास है । इन सीढ़ियोंका निर्माण गुणवीरदेवन् पण्डितदेवन्ने किया ऐसा लेखमें कहा है । लिपि १३वी सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१६ पृ० ६७ ]

३८४

हुकेरी ( जि० बेलगाँव, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख टूटा है । यापनीय संघके किसी गणके त्रैकीर्ति आचार्यका इसमें उल्लेख है । लिपि १३वी सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४२-४३ ई ६ पृ० २६१ ]

३८५-३८६

हले हुब्बलि ( जि० धारवाड, मैसूर )

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[ यहाँके अनन्तनाथ वसदिमें दो लेख हैं । एक ब्रह्मदेवकी मूर्तिपर है । इसकी लिपि १२वी सदीकी है । सेटि महादेवी-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना-का इसमें निर्देश है । दूसरा एक जिनमूर्तिपर है । इसकी लिपि १३वी सदीकी है । इसमें यापनीय संघके (क)दूर गणका उल्लेख है ।

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३३-३४ ]

३८७

मोटे बेन्नूर ( धारवाड, मैसूर )

१३वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १३वीं सदीकी लिपिमें है । तिथि चैत्र शु० १०, गुरुवार, सोम्य सवत्सर ऐसी दी है । इसमें जिनचन्द्रदेवके शिष्य वोम्मिसेट्टिके पुत्र वाचिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १०८ पृ० १२९ ]

३८८-३८९

वनवासि ( उतर कनडा, मैसूर )

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[ यहाँ दो मूर्तिलेख हैं जो १२वीं-१३वीं सदीकी लिपिमें हैं किन्तु अस्पष्ट हैं । एकमें मूलसूत्रके किसी आचार्यका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४३-४४ पृ० २८ ]

३९०

विजापूर ( मैसूर )

शक १२३२ = सन् १३१०, कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें मूलसूत्र-निगमान्वयके कृष्णदेव-द्वारा शक १२३२, साधारण संवत्सरमें इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० १६४ पृ० १३४ ]

३९१

बेलगांमे ( मैसूर )

सन् १३१९, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमनु यादवचक्रवर्ति भुजबलवी.....वल्लाल...
- २ षट् ९ नेय सिद्धार्थिसंवत्सरद आषाढ शु .
- ३ वार व्यतीपात संक्रान्ति शुभदिनद .
- ४ (श्री)मद् राजधानिपट्टणं वल्लिग्रामेय हिरियव-
- ५ सदिय मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवर अष्ट-
- ६ विधार्च(न)ने श्रीमनु महाप्रधानं सेनाधिपति मल्लि-

- ७ यणदण्डनायकरु नागरखण्ड जिङ्गुलिगेयन्तेर-  
 ८ डेप्पत्तुमं दुष्टनिग्र(ह) शिष्टप्रतिपालनं माडुत्तं  
 ९ सु(खसं)कथाविनोददि राज्यं गेय्युत्तमिरे पट्टणद अधि-  
 १० कारि हेग्गडे सिरियण्णं तन्नंतरालिकेय मूलेवर्तमु-  
 ११ ख्यवागि हेजुकडधिकारि चानुण्डरायजुं सोमय्य-  
 १२ जुं मन्नेयेदे कोप(?)विसदधिकारि मालवेग्गडे इन्तिनि-  
 १३ वरुं तंतम्म सुकमं येत्तिप्पत्तक्कं सर्ववाधा-  
 १४ परिहारवागि सिरियण्ण आचार्यं  
 १५ पन्ननन्दिदेवर कालं कर्त्ति धारापूर्वकं माडि कोट्टरु ई धर्म-  
 १६ मं प्रतिपालिसिदंगे वारणासिकुरुक्षेत्रदल्लि साधिर  
 १७ कविलेयि वेदपालरप्य ब्राह्मणगे कोट्ट फल-  
 १८ मक्कु

[ यह लेख होयसल राजा वीरवल्लालके राज्यवर्ष ९ सिद्धार्थिसंवत्सर-  
 में आपाढ शुक्लपक्षमें सक्रान्तिके दिन लिखा गया था । राजधानि वल्लि-  
 ग्रामेके मल्लिकामोदशान्तिनाथदेवकी पूजाके लिए पन्ननन्दि आचार्यको  
 कुछ करोका उत्पन्न दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । यह दान हेग्गडे  
 सिरियण्ण, चानुण्डराय, सोमय्य और मालवेग्गडे इन चार अधिकारियोने  
 दिया था । इस समय नागरखण्ड और जिङ्गुलिगे प्रदेशपर महाप्रधान  
 सेनापति मल्लियणका शासन चल रहा था । वल्लाल द्वितीय अथवा  
 वल्लाल तृतीय इन दोनोंके ९वें वर्षमें सिद्धार्थि सवत्सर नहीं था । अतः  
 अनुमान किया गया है कि यह वल्लाल ( तृतीय ) के २९वें वर्षके सिद्धार्थि  
 सवत्सरका उल्लेख होगा । तदनुसार सन् १३१९ यह इस लेखका वर्ष  
 होगा । ]



३६२

कुमठ ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १२६६ = सन् १३४४, कन्नड

[ इस लेखमे मूलसद्य, देसियगणके विशालकीर्ति राउलके अग्रशिष्य नागचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है । तिथि श्रावण व० ११, रविवार, शक १२६६, सुभानु संवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३९ पृ० २७ ]

३६३

रायद्रुग ( बेल्लारी, मैसूर )

शक १२७७ = सन् १३५५, कन्नड-संस्कृत

तालुक ऑफिसमें रखी हुई मूर्तिके पादपीठ पर

[ विजयनगरके राजा हरिहरके समय शक १२७७, मन्मथ सवत्सरमे यह लेख लिखा गया । कुन्दकुन्दान्वय, सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण, मूलसद्यके अमरकीर्ति आचार्यके शिष्य माघनन्दि व्रतीके शिष्य भोगराज-द्वारा शान्तिनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका इसमे निर्देश है । ]

[ इ० म० बेल्लारी ४५८ ]

[ रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १११ पृ० १२ ]

३६४

होसाल ( द० कनडा, मैसूर )

शक १२७६ = सन् १३५७, कन्नड

[ यह लेख स्थानीय भग्न जिनमन्दिरमे है । इसमे विजयनगरके राजा बुक्कण्ण महारायके जैन सेनापति वैचय दण्डनायकका उल्लेख है । तिथि शक १२७९ विलम्बि सवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० २८४ पृ० ३१ ]

३९५

## तिरुनिडकोण्डै ( मद्रास )

शक १२८३ = सन् १३६१, तमिल

[ इस लेखकी तिथि धनु शुक्ल १३ बुधवार, शक १२८३ शुभकृत सवत्सर ऐसी दी है । इसमें शेम्वादि विल्लवडरैयन्के पुत्र ( नाम लुप्त )-द्वारा अप्पाण्डार् मन्दिरमें दीपके लिए भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । यह दान गोप्पण उडैयार्की प्रेरणासे दिया गया था । लेख अप्पाण्डार् चन्द्रनाथमन्दिरके मण्डपकी दीवालमें लगा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०३ पृ० ६५ ]

३६६

## साविकेरि ( धारवाड, मैसूर )

शक १(२)६८ = सन् १३७६, कन्नड

[ इस लेखमें मार्गशिर व० १(३), बुधवार, शक १(२)९८ नल सवत्सरके दिन बालेयहल्लिके बेलप्पके समाधिमरणका उल्लेख है । उस समय विजयनगरके वीरबुक्करायका शासन चल रहा था । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३३ पृ० २७ ]

३६७

## गेरसोप्पे ( मैसूर )

शक १३०० = सन् १३७८, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वाढामोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनं (१) श्रीमद्देव-
- २ जिनेन्द्राय तस्मानंतमहात्मने सर्वबोधत्रिशिष्टाय मन्यालि-  
कुमुद्रेन्दवे (२) तं वंदे देवदेवं सुरुचि-

- ३ रमनघं चारुकैवल्यनेत्र नित्यं निर्वाणरामाकुचविलिखितकाश्मीर-  
रागं वरांगं तुंगं देवेन्द्रानम्रपा-
- ४ दं गुणविलसदनन्तं स्वबोधात्मतत्त्वं मांगल्यं मन्यसार्थं निहत-  
मनसिजं नव्यधर्मस्वरूपं । (३) इट्टु
- ५ जम्बूद्वीपमंता भरतविषयदोल् पडुव मेरुसिर्दं ...पटपिन्दा मेरुर्वि  
दक्षिणदे तुलु कौंगिन्दवी शुद्ध-
- ६ दीपं मुददिं...तेगु ..वलि पनसं नदीतीरदोल् कौंगु जम्बूसदनं  
चेल्वागि तोकुं
- ७ ...विद्वार हस्तिसमूहं । (४) भा तुलुवाधीशरमणि ...वदनमागि  
तोर्पुट्टु नयदिं नीतियुत गेरसोप्ये सोलि-
- ८ सुतिर्पुट्टु विभवदिट्टायमरावतिथं । (५) अन्ता नगिरिय राज्य-  
कधीश्वरनेनिसिद मरुलयरसरन्वयसंप्रदायदा-
- ९ यट्टिं वन्द कीर्तिगे जयस्तंभनेनिसिर्दं हैवेभूपालन प्रतापवेन्तेने  
सान्द्रं ...डेभकुन्दोद्गमकुमुदन-
- १० मलमल्लिकाफुल्लमुख्यवृन्दं गंगातरंगतरलहरहास तारनीहारहारं  
सन्दिर्दी चारुकीर्तिं...
- ११ प्रमवदननुनयवेविन...माल्पुट्टु श्रीहैवेभूपालन निजयशमं  
त्रणिणमल् बह्लना-
- १२ वं दक्षिणमण्डलिक . निजनिवास . सल्लक्षण राजराजकटकंगल  
सुरेयना-
- १३ यट्टे तोण्डमण्डलभूपर मन्दि रक्षिसु हैवेराज वेनुतिर्पुट्टु-
- १४ नलियट्टे नोल्पडं भावनियंकाररतिचक्रद् हस्तपराक्रमांकनी  
हैवनृपाल चित्रय-
- १५ शो . निन्नय दुन्दुमिताडनंगलिं जावलिशवदिं परिट्टु दूरदि  
सचरिसुत्तमिर्पुट्टा

- १६ "येसेव राजहृदयंगलु मिननगलाद वद्भुतं । श्रीमद्देव "   
 गुरुगुणाद्भुतमहानागेन्द्रपंचा-
- १७ स्य "सन्दिर्द हासद वैहालि महाहाकिनीनामोपद्रव एह्व "   
 श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरा-
- १८ वासमं श्रीमदनन्तपालगीगे नित्यं दीर्घायुमं श्रीयुमं अन्ता   
 नगरियपुरवराधीश्वरं मासा"
- १९ वनियंककार मावंगेमलेव रायरगण्ड शिवसिंहासनचक्रवर्ति   
 परसालुवदङ्गुविमाड कलिगल मुखद
- २० सम्यक्तचूडामणि वसन्तराज्यचातुर्वर्ण्यक्के हलुव रायरगण्ड   
 हैवेभूपालं सुखसंकथाविनो-
- २१ ददिं राज्यं गेय्युत्तिरलु आ गेरसोप्पेय महाजनगल गुण-   
 गलेन्तेन्दोडे ॥ वृ ॥ अदरोल् नानाजा-
- २२ तिपरदरअणी सम्यक्तरादी जैनर् पडेवर् जैनमार्गाश्रयजलनिधि-   
 संवधितपूर्णचन्द्रर् मुदमं क्रोधादि-
- २३ मू मादुद्धपेकुलनिवर् विट्टु रादर् मुख्यमादधिपनखिल-   
 कलावह्लमर् कीर्तिवेत्तरताता-
- २४ मादण्डाधिपगलु सहजात कुलक्षत्रियरादरसुगलन्वयमन्तेन्दोडे   
 स्वस्ति समधिगतपचमहा-
- २५ महिमप्रसिद्धमाद बनवामिपुरवराधीश्वरर् वैजयन्ती-मधुकेश्वर-   
 लब्धवरप्रसाद मृगमदामोद गोकर्णं"
- २६ महावलेश्वरदिव्यश्रीपादपञ्जाराधकर परवलसाधकरं हरसिबस्वर-   
 शूल निगलंकमल्ल चलदंकराम राय-
- २७ रगण्ड साहसमल्ल गण्डरदार्वाणि सत्यराधेय साहसोत्तुंग   
 शरणागतचज्रपजर पश्चिमसमुद्राधिपतियप्प हैवे-
- २८ क्षत्रियकुलकमलवनमार्तण्ड परनृपतामरस पूर्णचन्द्रनेनिसिद   
 बसवदेवरसरु" देवरसर-

- २९ राज्यलक्ष्मियेनिसिद्ध चन्द्रपुरवेम्ब पट्टणदोलु राज्यं गेय्युव  
कालदोलु आ अरसुगलिगे पट्टवर्धनवाहत्तरनियो-
- ३० गिगल् जिनसेव्यनुं त्रिगक्तिवल्लयुतनुं षड्गुणसमर्थनुं राजक्षत्रिय-  
चतुर्दन्त सोमेश्वरदण्डनायक-
- ३१ न अन्वयद कीर्तियेन्तेन्दोडे श्रीसोमदण्डपुत्रनु भासुर कामण्ण-  
दण्डनायकनेनिपं सासनचक्र-
- ३२ वरिं धर्मधारक सामन्तं कीर्तिवेत्तनमल्लचरित्रं श्रीमत्सोमदण्ड-  
नायकङ्गे कामार्थं "तावु पुट्टिद्वर् श्रीमद्रामणनेम्ब हेग्गडेय-
- ३३ सुवेम्भीपुत्रसंसेव्यकं रामं पुट्टिद्वर्" दशरथसामर्थ्यादि" यपराजिता-  
रमणिगं साहित्यरत्नाकमन्ता-
- ३४ रामणनेम्ब हेग्गडे रामकङ्गे तां पुट्टिद्वर् शान्तं योजणनम्बिपुत्र-  
नेनिसल कुन्तीदेवि समन्तु
- ३५ श्रीपाण्डुराजङ्गे तां शान्तं भर्मजनेन्तु पुट्टिद्वर् वोला सम्यक्त्व-  
रत्नाकरमन्ता योजणसेट्टिय जननि रामकनन्वयमेन्तेन्दोडे-
- ३६ वसुधेयोलु नेगलते" असमैश्वर्यसम्पन्नरुं दानगुणसम्पन्नरुमप्य  
नम्बिसेट्टियर तम्मसेट्टिसहोदररेनिसिद्ध म-
- ३७ छिसेट्टि होन्नपसेट्टि" गुणाढ्यरुं जैनजनवान्धवरुं आ सेट्टरोलगे  
महाघननेनिसिद्ध आ होन्नपसेट्टि-
- ३८ " " "
- ३९ " शककाल" साविरद सुन्नूर"

( अत्रगिष्ट ६ पंक्तियाँ पढी नहीं जा सकती । )

[ यह लेख शक १३०० मे लिखा गया था । गेरसोपेके राजा हैवेय भूपालके शासनकालमे चन्द्रपुरमें वसवदेवरस शासन कर रहे थे । उनके दो मन्त्री सोमण्ण दण्डनायक और कामण्ण दण्डनायक थे । सोमण्णका पुत्र रामण्ण था जिसकी पत्नी रामक थी । उनके पुत्रका नाम योजणसेट्टि

था । इनके कुलके होत्रपसेट्टि तथा नम्बिसेट्टि इन बन्धुओने दिये हुए दानका विवरण इस लेखमे दिया था । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५ ]

३६८

### हडजन ( मैसूर )

शक १३०(६) = सन् , १३८४, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमतु शकवरिष १३० संवत्सरद
- २ ज्येष्ठ व १ आ । श्रीमतु मैसुनाड ह-
- ३ डदनद तडेयर कुलद बम्मरयनवर सुपुत्र हिरि-
- ४ य मादण्णनवरु देवरिगे । श्रीमद् रायराजगुरु मडलाचार्य
- ५ सकलविद्वज्जनचक्रवर्तिगलुमप्प सैद्धान्तिदेवर प्रियगुड्डि केशवदे-
- ६ ( वि )यरु आ केशवदेवियर अक्क मारदेवियरु स्वर्गंग-
- ७ तरादरु । अवर निसिद्वियं माडिसि आ निसिद्विय अचनेगे वि-
- ८ टं तह क्षेत्र बसदिगे पूर्वटलुल्लगद्देयि तेंकण व
- ९ तिन असरिसदलु हत्तु खंडुग गद्देयनु भारापू-
- १० वकवागि नडव हांगे आ हिरिय मादण्णनवरु विट्टदत्ति-

[ यह लेख मण्डलाचार्य सैद्धान्तिकदेवकी शिष्या केशवदेवीकी बडी बहन मारदेवीके समाधिमरणका स्मारक है । इस निसिद्विकी पूजाके लिए हिरिय मादण्णने स्थानीय वसदिको कुछ भूमि दान दी थी । लेखकी तिथि ज्येष्ठ व० १, रविवार शक १३० ( चौथा अक लुप्त है ) दी है । तिथि और वारके योगसे यह शकवर्ष १३०६ निश्चित होता है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६४ ]

३६६

## इन्दौर म्युजियम ( मध्यप्रदेश )

संवत् १४४२ = सन् १३८६, सस्कृत-नागरी

[ यह लेख शान्तिनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इसमें संवत् १४४२ में प्रौढाचार्य श्री महाकीर्तिका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५९ ]

४००

## गेरसोपे ( मैसूर )

शक १३१४ = सन् १३९२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादाभोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । जिनगिरियदेशवेम्ब ललनामु-
- २ खक्के वेमेदिर्पो गेरसोपेगे वर सेज्जेकार सले ढण्डगेय छत्रसुचामरालिर्धि वगेवुगे तोर्प हैवेनृप रामक वम्मपु-
- ३ त्रनोव्वणं नेगले सन्नुतनाद जिनचैत्यजिनालय-मन्दिरंवरं कलियुगटोल् महापुरुष योजण तन्न मगल
- ४ मण ममवेन्दु भाविसि नितान्त " स्थानम जिनालयंगलं सले माट्टि गोपुरसुमनोहर विचित्र वलयं अनन्तनाथन पति-
- ५ य " रे कृतार्थनो । अन्ता योजणसेट्टिय प्राणवल्लुभेयाट रामकन गुणंगलेन्नेन्दोडे श्रीमतु सन्
- ६ तनाथन पदाम्बुमृगनु थो-
- ७ जणमेट्टि प्र " निनिवन्
- ८ लांग " रम्य " गोत्रचि-
- ९ तामणि पार्थिव त्तपमेने

- १० टोल् सत्यधीरोदात्त' .
- ११ सेव रामकनोप्पिदली धरित्रियोलु
- १२ पतिमक्के शीलवति भूनुतचारुचरि-
- १३ त्रे सकलजीवदयापरं सन्ततचतुर्वि-
- १४ धदानटोल् भतिनिपुणतेयिन्देसेदली
- १५ रामक्क । जिनमतवाक्यदोलु
- १६ 'सले जिनराजपदाब्जभृगे तां जननुत चारु-
- १७ सीले गुण सुव्रत दान पूजेयि
- १८ मुखि कामिनोजनशिरोमणि यो-
- १९ याग्र निजनामदिं निजकुलोन्नति रामकनोप्पुतिर्दलु ।  
श्रीजिनराजपूजेयोलु श्रीमुनिराजपदाब्जसेवे-
- २० योलु नैजगुणगलि विनयदिं मयदिं निजभावतुष्टियि पूजिसि  
भक्तियिदेरगि ता स्तुतिमाडियुं कीर्त्ति-
- २१ योलिन्तु वणिण'कोण्डी निजनामदि रामकनी धरित्रियोलु  
कमलदलायताक्षि कमलानने कमलसुगन्धि कोमल
- २२ ' विमलकतांगि 'रसयुतरी जिनराजपूजेयोलु समरसभावदोलु  
सले माणिकसेट्टिपुत्रि राम-
- २३ कं क्रमगुणहस्तिकल्पकतेयं नेरे योप्पुवली धरित्रियोलु कमला-  
करदोलु कमलिनि कमलदोल
- २४ कमले पुट्टुवन्तिरं नागमनमलान्वयदोलु रामक विमलगुणामरणे  
पुट्टिदल् कलियुगदोलु
- २५ रामक्कन अन्वयमेन्तेन्दोडे । हुलिगेरेय पचवस्तिय मुन्दण  
हिरिय अगडिगे मुख्य-
- २६ वाद किरिय रामसेट्टि आ मट्टुवल्लिगे गगायि थवर मक्कलु  
बैचेसेट्टियरु आतन तंगि सोमन्वे



- २७ आ सोमन्वेयनु आ हुलिगेरेय माणिकसेट्टिगे विवाहमादी....  
अवर मगलु नागव्वे
- २८ आकेय तन्दे माणिकसेट्टि समस्तरु आ वैचिसेट्टि हुलिगेरेगेयिद  
हन्दिगुलदलि प्र-
- २९ ....आ नागव्वेयनू सलहि हिरिय हन्दिगुलद चन्द्रनाथ-  
स्वामिगल चैत्यालयदोलु पूजे
- ३० आदिके श्रीकार्य नडेवन्तागि वृत्तियनू विट्टु शासनव हाकिसिदरु  
आ वैचरसियु तम्-
- ३१ म सोसे नागव्वेयनू गेरसोप्पेय सेट्टि गुत्तवायि भोजेय मग  
माणिकसेट्टियनू तानु विवा-
- ३२ हव माडि आ माणिकसेट्टियनन्वयमेन्तेन्दोडे गुच्छक्किय  
नागिसेट्टिय मगलु रामव्वे आकेय पु-
- ३३ अ माणिकसेट्टि माणिकसेट्टिगू नागव्वेयवरिगू जनिमिद मक्कलु  
हरिसेट्टि कामण-
- ३४ नेमण्णसेट्टि सरणसेट्टि संगप यिन्तैवरोलने रामक्कननू गेरसोप्पेय  
रामण हेग्गडेय मगराज-
- ३५ णन ओजणंगे विवाहव माडि आ वोजण्णसेट्टियू रामक्कनू  
सुखसकथाविनोददि-
- ३६ दिहल्लिगे गेरसोप्पेय अनन्ततीर्थंकरचैत्यालवनारद्विसि महा-  
प्रतिष्ठेयनू माडिसि
- ३७ यिरुत्तं यिरलु सक वरुस सासिरद मूनूर इदिनाल्कनेय  
प्रजापतिसंवत्सर-
- ३८ द कार्तिक शुद्ध पंचमि आदित्यवार सन्यसनसमन्वितवागि  
स्वर्गस्तरादरु मदवल्लिगे
- ३९ रामक्कनवर तन्दे मोदलुगोण्डु चरिअदिं नेगले विक्रमसंवत्सरद  
आषाढ-

४० सुध पंचमि सुक्रवार रोहिणीनक्षत्रदलु तुंगसमाधि\*\*\*

४१ \*\*\*आचन्द्रार्कमागि

४२ मूढे मत्तवन वीजण-

४३ सेट्टि\*\*\*रामक\*\*\*

४४ निषधिय कल्लिगे मगल महा श्री

[ इस निषधिलेखमें कार्तिक शु० ५, रविवार, शक १३१४, प्रजापति सवत्सरके दिन योजणसेट्टिकी पत्नी रामकके समाधिमरणका उल्लेख किया है। रामकने गेरसोप्पेमें अनन्ततीर्थकरका मन्दिर बनवाया था। उसका वशवर्णन भी लेखमें दिया है। रामकके पिता माणिकसेट्टिकी मृत्यु आपाढ शु० ५, शुक्रवार, विक्रमसंवत्सरके दिन हुई थी। ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९७ ]

४०१

लक्ष्मणपुरकोट ( विजगापटम्, आन्ध्र )

संवत् १४४८ = सन् १३९२, सस्कृत-नागरी

[ इस मूर्तिलेखमें संवत् १४४८ में जिनचन्द्र भट्टारक-द्वारा इस मूर्ति-की स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह मूर्ति वीरभद्र मन्दिरमें है। ]

[ रि० सा० ए० १९११-१२ क्र० ४७ पृ० ५० ]

४०२

संगूर ( धारवाढ, मैसूर )

शक १३१७ = सन् १३६५, कन्नड

[ इस लेखमें जैन मल्लप्पके पौत्र तथा संगमदेवके पुत्र नेमण्ण-द्वारा संगूरके पार्श्वनाथ मन्दिरको भूमि दान देनेका उल्लेख है। विजयनगरके सम्राट् हरिहरके समय गोवाके शासक माधवका यह सेनापति था। नेमण्ण-

के पिताका समाधिमरण पुष्य शु० ११, गुरुवार, युव सवत्सर, शक १३१७ में तथा पितामहका समाधिमरण फाल्गुन व० १४, सोमवार, नल संवत्सर-में हुआ था । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६७ पृ० १०७ ]

४०३

गूटी ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

१४वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

[ इस लेखमें विजयनगरके राजा हरिहरके समय इरुग दण्डनायक-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है । कोण्डकुन्दान्वयकी परम्परामें वक्रग्रीव, एलाचार्य, अमरकीर्ति, सिंहनन्दि तथा वर्धमानदेशिकका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२०-२१ क्र० ३२६ पृ० १८ ]

४०४

हम्पी ( बेल्लारी, मैसूर )

शक १३१७ = सन् १३९५, संस्कृत-तेलुगु

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके खण्डित पादपीठपर है । तिथि फाल्गुन व० १, सोमवार, भावसवत्सर ऐसी दी है । शक वर्षके अक लुप्त हुए हैं । मूलसध-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके धर्मभूषण भट्टारकके उपदेशसे इम्म-डिब्रुकक मन्त्रीस्वर-द्वारा कुन्दनगोलु नगरमें कुन्थुतीर्थकरका चैत्यालय बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है । यह मन्त्री वैचय दण्डनाथके पुत्र थे । संवत्सरनामानुसार यह शक १३१७ का लेख प्रतीत होता है । ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ३३६ पृ० ४१ ]

४०५

करन्दै ( उत्तर अफाटि, मद्रास )

१४वीं सदी, तमिल

[ यह लेख विजयगण्डगोपालदेवके २०वें वर्षमें लिखा गया था ।  
पोन्नूरके निवासी अरुवन्दै आण्डाल् तिरुच्छोरुत्तुरै उडैयार्-द्वारा इस जिन-  
मन्दिरमें सन्ध्यासमय छह दीप प्रज्वलित रखनेके लिए तीन पलवन्नमाडै  
तथा कुछ चावलके दानका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३८ ]

४०६

हिरेचौटि ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ नमो वीतरागाय । श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादामोघलां-
- २ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । सागरवारि-  
वेष्टितसमस्त-
- ३ धरारमणीघनस्तनामोगविदंस्त्रिनं विदितविस्तृतसारतराग्रहारदिं
- ४ नागरखण्डपत्रपरिवेष्टनदिं जननेत्रपुत्रिकारागमनित्तु माण्डुदे  
मनस्सु-
- ५ खदं बनवासिमण्डल । नागरखण्ड बनवासेगागिर्कुं भूषण-बोलु
- ६ \* गिरेवागि मेरेगु नागलतापूगवनदिनेसेव तवे सो
- ७ \* \* \* नागरखण्ड \* \* सागरसागे तोपुं
- ८ सुखकिम्बागि \* मे मेरेवुदी \* ननुजना \* सेणिसेष्टि
- ९ \* \* \* वसदिय माडिसिदरु-इन्तणतम्मंदिरिब्बरु शान्तिजिनेश्वर-
- १० वसदियं माडिसि सन्तोषदिं \* \* \* सन्तसदिं पडेदुर्द धराचन्द्र
- ११ \* \* \* गुणवार्धिय \* \* \* पडेदु बालुत्तिरे पलकालं पुरुषनिधि नाग-

- १२ सेट्टि तन्नय पेम्पि देसेवल्लरसियक्कनुमत मत  
 १३ पडेदु सुखदिं बाल्बुदु स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर अरिराय-  
 १४ विमाड अगलि "भापेगे तप्पुरायरगण्ड चतुस्समु-  
 १५ द्राधिपति श्रीवीरबुक्करायमहारायरु राज्य गेय्युत्तमि 'वि-  
 १६ रोधिसंवत्सर कार्तिकशुद्धतदिगे वर देवर नि-  
 १७ " चन्द्रगुड्डिगलुमप्प ' सान्तिना-  
 १८ नाथदेवर अमृतपडि नन्दादीप '  
 १९ केरेय केलगे गहे ख ४\*\*\*\*  
 २० "यी धर्मम प्रतिपालिसु\*\*\*\*  
 २१ वारणासि कुरुक्षेत्र '  
 २२ कविलेय-  
 २३ पातकनक्कु श्रीशान्तिनाथ,

[ यह लेख कार्तिक गु० ३, विरोधिसवत्सरके दिन वीरबुक्करायके राज्यकालमें लिखा गया था । वनवासि प्रदेशके नागसेट्टि तथा सेणिसेट्टि-द्वारा शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका तथा उसमें दीपादि पूजाके लिए ४ खण्डुग भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८३ ]

४०७

हले सोरव ( मैसूर )

१४वीं सदी उत्तरार्ध, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वाढामोषलाञ्छनं जीयात् त्रै-  
 २ लोक्यनाथस्य शासन जिनशामन । अमरावतियळकावति स-  
 ३ ममेनिसुव सोरव तवनिधियुमेंवेरडं ममनागि वि-  
 ४ पालिसिदं सुमनसतरु सट्टंस तवनिधिय ब्रह्माख्यं ॥

५ . तिगलवेन्तिटडे नाक ...

६ ..युविल .

७ .. वार्धि

[ यह निसिधिलेख बहुत खण्डित है। सोरव और तवनिधिके शासक ब्रह्मके समय किसी व्यक्तिके समाधिमरणका यह स्मारक है। मृत व्यक्ति कोई महिला थी क्योंकि लेखके पाषाणपर एक स्त्रीमूर्ति उत्कीर्ण है। ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १७९ ]

४०८

### तवनन्दी ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- |                            |                         |
|----------------------------|-------------------------|
| १ जिनहं जिनमुनिगलु मत्तनु- | २ पम प्राणीश हरियन-     |
| ३ दन नेनट्टु वनजाक्षि महा- | ४ लक्ष्मुयु घनतर शौर्य- |
| ५ दौलुमधियोल् स-           | ६ ले पायिदलू            |
| ७ महालक्ष्मिय सद्गुण-      | ८ समुद्रोपमान ॥ मं-     |
| ९ गलमहा श्री श्री          |                         |

[ इस लेखमें महालक्ष्मी नामक किसी महिलाके अग्निप्रवेश-द्वारा मरणका उल्लेख है। जिन, मुनि और अपने पति हरियनदनका स्मरण करते हुए उसने वैर्यपूर्वक प्राणत्याग किया था। लिपि १४वीं सदीकी है। ]

[ ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५ ]

४०९

### तलकाड ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख द्रविल सध-नन्दिगणके कमलदेवके शिष्य लोकाचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १४वीं सदीकी है। यह लेख वैकुण्ठ-नारायणमन्दिरकी दीवालमें लगा है। ]

[ ए० रि० मै० १९१२ पृ० ६३ ]

४१०

मत्तावार ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ मरुलजिन जकवेहट्टि चटवे-
- २ गन्ति मत्तवूर बसटि तपसु
- ३ माडि सिद्धि आदलु अबेय मा-
- ४ चरन मग मार कल्ल निलिसि-
- ५ द

[ यह निषिधिलेख मरुलजिन-जकवेहट्टि नामक ग्रामकी निवासी चटवेगन्तिके समाधिमरणका स्मारक है। उसका मृत्यु मत्तवूरकी बसदिमें हुआ था। अबेय माचरके पुत्र मारने यह स्मारक स्थापित किया था। लेखकी लिपि १४वी सदीकी प्रतीत होती है। ]

[ ए० रि० मै० ९९३२ पृ० १७१ ]

४११

हुलेकल ( उत्तर कनडा, मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

[ यह लेख १४वी सदीकी लिपिमें है और बहुत घिसा है। इसके प्रारम्भमे जिनशासनकी प्रशंसा है तथा बादमे किसी मठमें आहारदान आदिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० २१ पृ० २२९ ]

४१२-४१३

कोनकोण्डल ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

१४वीं सदी, कन्नड

[ ये दो लेख १४वीं सदीकी लिपिमें रसासिद्धुलगुट्ट नामक पहाडीपर पाषाणोपर खुदे हैं । इनमें चिप्पगिरिके श्रीविद्यानन्दस्वामी तथा बोलय नागका उल्लेख हुआ है । अक्षर कुछ अस्पष्ट हुए हैं । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५२-५३ ]

४१४

उद्वरि ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्थाद्वादा-
- २ मोघलाञ्जनं । जीयात् त्रैलोक्यना-
- ३ थस्य शासनं जिनशासनं ॥ स्वस्ति श्रीमतु
- ४ .. 'विजयकीर्तिभटारर'..

[ यह लेख खण्डित है इसलिए विजयकीर्तिभटार इस नामके अतिरिक्त अन्य विवरण इससे प्राप्त नहीं होता । लिपि १४वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १४२ ]

४१५

सक्करेपट्टण ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड, १४वीं सदी

१

- २ तस्मिन् सेनगणान्तरिक्षतरणि श्रीवीरसेनो भुवि संसाराम्बु-  
धितारणैकतरणिः श्रेयोवनीसारणी । तच्छिष्य प्रचुर-



- ३ प्रवन्धरचनाचातुर्यपद्मासन पायाद् वो जिनसेन इत्यमिधया  
ख्यातो मुनिग्रामणो । (१) श्रीमत्पुस्तक-
- ४ गच्छसूरसदृशो विश्वप्रकाशात्मकस्त्रैविद्यो गुणमद्भवेत्यतिप.  
श्रीसूरसेनस्तत (१) शिष्यः श्रीकमलादिमद्गणभृद् दे-
- ५ वेन्द्रसेनस्ततः । तेनाकारि कुमारसेनमुनिपो वादीन्द्र-चूडामणिः  
(२) तच्छिष्याः हरिसेनदेवादयः । मा-
- ६ धुर्यं वाचि कारुण्यं हृदि तीव्रं तपस्तत । श्रीप्रमाकरसेनाख्य-  
गुरुश्रेयो विराजते । (१३) तत्पद्मोदय-
- ७ शैलतिग्मकिरणस्त्रैविद्यपारंगतो भूपालार्चितपादपंकजयुग  
श्रीलक्ष्मिसेनो मुनि (१) लोकं सत्त-
- ८ पसां निधानमनघं कारुण्यवारांनिधि. दाने कल्पकुजोपमो  
विजयते कामेभकण्ठीरवः । (४)
- ९ श्रीमदनसेपमुनिपो सज्ज्ञानामृतपयोधिपूर्णन्दुः (१) सुदृढतपोगुण-  
युक्तो भाति श्रीमत्प्रभा-
- १० करार्यसुत । (५) द्वीपितटाकनामनगरीपति शखजिनेन्द्रचन्द्र-  
मश्रीपादपकजालिरमलाम-
- ११ रकीर्तिमुनीन्द्रपादसेवापरिपक्त्रबुद्धि बलगारसमाह्वयवशपद्म-  
तारापति रजिपं स्वजनकं-
- १२ जनभोमणि वैश्य मायण । (६) गुणतुंगं होल्लराजं पितृ गुणवति  
देवमाभ्वेतन्नम्ब्वेयु-
- १३ घट्गुणरत्न नागराजं परिकिपोडे पितृन्त्यं गुणैकाश्रयं माकणन्  
आत्मीयानुज तानेनिपगणित-
- १४ सौभाग्यदि भाग्यदि धारिणियोल् विख्यातिवेत्तं जिनसमय-  
सरस्सारस मायणार्थं । (७) मत लोकै-
- १५ कमित्र प्रचुरतरकलावत्लमं वन्दिवृन्दोत्करपुण्यत्-कल्पभूजं  
बुधनुतचरितं वाक्परं

- १६ काव्यगोष्ठी-सरस विद्विष्टशैलाशनि सुरपुरमोदलान्तगल मीन-  
केतूद्धर रूप सद्गुणोदय-
- १७ हमयन् एनल् आश्चर्यमे मायणार्थं । (न) इन्तु होय्सल-  
भूविभुलक्ष्मीलपनसुं
- १८ श्रीवीरबुक्कराजसाम्राज्यरमारमणीयविलासदर्पणोपमं एनिसि  
सोगयिसुव होसपट्टणटोलु प्रसिद्धिवडेद वै-
- १९ श्य मायण्ण माकप्पगलु न''''दवागि माडिद श्रीलक्ष्मीसेन-  
भट्टारकर निषधिय प्रतिष्ठे शासन मंगल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[ यह निषिधिलेख सेनगणके लक्ष्मीसेनभट्टारककी मृत्युका स्मारक है । इनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी - वीरसेन - जिनसेन - गुणभद्र त्रैविद्य-  
देव - सूरसेन - कमलभद्र - देवेन्द्रसेन - कुमारसेन - हरिसेन - प्रभा-  
करसेन - लक्ष्मीसेन । लक्ष्मीसेनके गुरुबन्धु मदनसेन थे । यह निषिधि  
दलगार वशके मायण तथा माकण नामक दो वैश्यो-द्वारा स्थापित की  
गयी थी । ये होसपट्टणके निवासी थे । यह नगर होयसल प्रदेशमे था  
तथा वीरबुक्कराजके राज्यके अन्तर्गत था । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६१ ]

४१६

तेरकणांबि ( मैसूर )

१४वी सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमूलसंघ देशियगण पुस्तक-
- २ गच्छ कौंडकुंदान्वय हनसोगेय वलि-
- ३ य राजगुरु ( मंड ) छाचार्यरुमप्प ( सम )-
- ४ याभरण ललितकीर्तिमट्टारकर माडिसिद
- ५ ( प्रतिमे ) मंगल महा श्री श्री श्री

[ यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इस मूर्तिकी स्थापना मूलसंघ-हनसोगे बलिके ललितकीर्ति भट्टारकने की थी । लिपि १४वीं सदी की है । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० १६९ ]

४१७

तगडूर ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- |                       |                        |
|-----------------------|------------------------|
| १ ( कों ) डकुन्दान्वय | २ ( मू ) लसंघ नागनन्दि |
| ३ (अन)न्तमट्टारकशिष्य | ४ नन्दिमट्टारकरशि-     |
| ५ यन्तगडू             | ६ यिल्लेकन्तिय(र्)     |
| ७ (स)न्यसनंगेयदु सुर- | ८ (लोकक्के) सन्दर्     |

[ इस निसिधिलेखमें मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वयके नागनन्दि भट्टारकके शिष्य नन्दिभट्टारककी शिष्या यिल्लेकन्तिके समाधिमरणका उल्लेख है । पाषाण टूटा होनेसे कुछ अक्षर नष्ट हुए हैं । लिपि १४वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३८ पृ० १७३ ]

४१८

चामराजनगर ( मैसूर )

१४वीं सदी, कन्नड

- |                       |                |
|-----------------------|----------------|
| १ श्रीमूलद सगद का-    | २ णूरगणद अन-   |
| ३ न्तकीर्तिदेवर गुड्ड | ४ वोप्पय सन्य- |
| ५ सनविधियि            | ६ (स्व)गंस्त   |

[ इस लेखमें मूलसंघ-काणूर गणके अनन्तकीर्तिदेवके शिष्य वोप्पयके समाधिमरणका उल्लेख है । लिपि १४वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११२ ]



- ६ वैचणसेट्टि परिणतान्तस्करणमन्तप्य हैवेरायन प्रतापवेन्-  
 १० नेन्डोडे स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर ... नियमीसरगण्ड ...  
 प्रताप .
- ११ सुरेकार सिवसिहासनचक्रवर्ति निलिपपुरवरा-  
 १२ धीञ्चरनेनिप वैचिराजं राज्य गयिवलि शकवरुष  
 १३ १३२३ नेय विक्रमसंवत्सर माग शु १ मन्डवारद  
 १४ रात्रियोळु हैवेराजन अलिय मंगराजनु स्वर्गस्थनाद श्रीजि-  
 १५ नराजराजितपडाम्बुजभृग\*\*\*\*कीर्तियिन्डी जगदोलो-  
 १६ ...वलमोप्पुव दानियु हैवेभूपन राजिय पट्टदानेयं\*\*  
 १७ \*\*\*\*गोविजनरह विक्रमस \*\*नगिर मंगनृपं सुरलोक-  
 १८ केय्द्विदं \*\*\*विसुद्धरप्प मत्त\*\*\*\*राजं जिनमतांबुधिहिमकि-  
 १९ रणं नगिरपुराधीश मंगरसंगं राजसन्नत  
 २० \*\*\*\*रतिपंचवाणनस\*\*\*\*श्रीमंगभूपालकं हिमरूक्  
 २१ श्री\*\*\* विक्रमसंवत्सरद माघमासद \*\*  
 २२ लु \*\*\*सुरांगनारमण .  
 २३ जीयेम्बिन \*\*  
 २४ \*\* ससिमिते श्रीविक्रमा .  
 २५ काल्यस्थे देवप्प सूभे पक्षे वल-  
 २६ क्षे मन्डवार \*\*
- २७ सुरपदमं\*\*\*

[ यह लेख गेरसोप्येके राजा हैवेरायके जामात नगिरपूरके प्रमुख मंगरसको मृत्युकी स्मृतिमें लिखा गया था । इसकी तिथि माघ शु० १, अनिवार, शक १३२३ विक्रम सवत्सर यह थी । लेखका बहुत-सा भाग घिस गया है । इसके पूर्वभागमें दोन राजा तथा वैचणसेट्टिका उल्लेख है । उनका मंगरससे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है । ]

४२१

## सक्करेपट्टण ( मैसूर )

शक १३२८ = सन् १४०५, कन्नड

- १ श्रीमत् परमगभीरस्याद्वाढामोघलांछन (I) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासन जिनशामनं (II)
- २ श्रीमद् रायराजगुरु मण्डलाचार्य ...पुरविक्रमादित्य मध्याह्न-
- ३ कल्पवृक्ष सेनगणाग्रगण्यरुमप्प श्रीमल्लक्ष्मीसेनभट्टारकरवर  
श्रीमत् श्रीमानसेनदेवर निषिधि शकव-
- ४ घं... १३२८ नेय पार्थिव सवत्सर १० लु
- ५ श्रीमुत्तद् होसऊर वैचसेट्टिय मक्कलु मायसेट्टि वोम्मिसेट्टि  
नागणसेट्टि भवर मोम्मक्कलु वैच-
- ६ शेट्टिय तम्मसेट्टि कोवरिसेट्टि चिक्कवैचसेट्टि मादिसेट्टियर मक्कलु  
कोवरिसेट्टियरु

[ यह लेख सेनगणके भट्टारक लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनदेवकी समाधि-  
का स्मारक है। यह निषिधि मुत्तदहोसऊरके वैचसेट्टिके पुत्र मायसेट्टि,  
वोम्मिसेट्टि आदिने शक १३२७ मे स्थापित की थी। ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६२ ]

४२२

## कोरग ( द० कनडा, मैसूर )

शक १३३१ = सन् १४१०, कन्नड

[ यह लेख केरवसेके राजा सान्तर वशीय वीरभैरवके पुत्र पाण्ड्य-  
भूपालके समय पुष्य शु० १०, गुरुवार, शक १३३१, सर्वधारि संवत्सर-  
का है। इसमे वलात्कारगणके वसन्तकीतिराउलकी प्रार्थनापर वारकूरुकी  
वसदिके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५३० पृ० ४९ ]

## ४२३-४२४

भटकल ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[ ये दो लेख हैं । कार्तिक शु० १०, सोमवार, शक १३३२ सर्वधारी सवत्सर, यह इनकी तिथि है । एकमें सगिराव ओडेय-द्वारा उनके किसी सम्बन्धित मल्लिराय नामक व्यक्तिके समाधिमरणपर निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । दूसरेमें किसी राजकन्याके समाधिमरणपर निसिधिस्थापनाका उल्लेख है । इसमें हैवभूप, भैरादेवी तथा संगिरायका भी नामोल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३३९-४० ]

## ४२५

लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )

शक १३३४ = सन् १४१२, कन्नड

[ यह लेख विजयनगरके देवराय महारायके समय मार्गशिर शु० २, रविवार, नन्दन संवत्सर, शक १३३४ को लिखा गया था । शंखवसतिके आचार्य हेमदेव तथा सौम्यदेव ( शिवमन्दिर ) के शिवरामय्य-द्वारा दोनो मन्दिरोंकी भूमिकी सीमाके बारेमें कुछ विवादका समझौता किये जानेका इसमें उल्लेख है । यह कार्य नागण्ण दण्डनायक-द्वारा सम्पन्न हुआ था । ]

. [ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३३ पृ० १६३ ]

## ४२६-४३०

टोंक ( राजस्थान )

सवत् १४७० = सन् १४१३, संस्कृत-नागरी

[ ये ५ मूर्तिलेख हैं । मूलसघके आचार्य प्रभाचन्द्रके शिष्य पद्मनन्दिके उपदेशसे खण्डिल्लवाल कुलके कुछ व्यक्तियों-द्वारा ज्येष्ठ शु० ११, गुरुवार, सवत् १४७० को ये मूर्तियाँ स्थापित की गयी थी । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४६६-७० पृ० ६९ ]

४३१

मुलगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

शक १३४२ = सन् १४२०, कन्नड

[ यह लेख वैशाख शु० १४, रविवार, शक १३४२, शार्वरी सवत्सर-का है । इस समय 'रायराजगुरु हेमसेनके शिष्य बुलिसेट्टिका समाधिमरण हुआ था । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९५ पृ० ८ ]

४३२

मुलगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

शक १३४३ = सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

[ यह लेख चन्द्रनाथवसदिमे है । इसकी तिथि भाद्रपद शु० ९, शुक्रवार शक १३४३ प्लव संवत्सर है । इस समय 'स्वरटोरके तिलकरसके मन्त्री हेगडे मडुवरसके पुत्र नागरसकी मृत्यु हुई थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९४ पृ० ८ ]

४३३

गोरसोप्पे ( मैसूर )

शक १३४३ = सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वाढामोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्य-  
नाथस्य शासन जिनशासनं ॥ श्रीजम्बूद्वी-
- २ पमध्यस्थितजनसर रमणरवाभ्यंकृतश्रायर् तद्धर जिनपद-  
पञ्चभृंग स्तमित जायातं पत्तन व्यक्तपंक



- ३ ... त्रैविद्यवल्ली . मुक सुलभरारम्य . न्यितजिनेन्द्रपादयुगपद्म-  
भृंगा संसा-
- ४ र... माविध . तेसेद ... दुदुभूदरे-
- ५ द्रः तदीयवशोद्भवमंगभूपो साहित्यलक्ष्मी . भाभाति लक्ष्मी  
जिनमंदिरेषु कामं कामितदायक कन-
- ६ स्ट् कन्दर्पसर्वप्रिय कल्याणकलनानन्त . श्रीमंगभूपस्य जिनेन्द्र-  
पादद्वयपद्मगन्धमिलद्भृंगोभवत् सन्ततं
- ७ तदीयवंशसभूत . केशवाख्यः क्षितीश्वर . वशीकरोति सहसा  
वन्दिगोहेषु सम्पद सुपासितुं भवतु ते गात्रं हि-
- ८ माद्रीकृतं । श्रीमत्केशवभूमिपालचरितं श्रुत्वा स्तुवन् किन्नरैः  
तोषाकम्पितशंभुमौलिविलसद्गगातरगास्पदं आश्रयाशो दह-  
त्याशु स्वाश्रय स्वतनाथ सा ( ? स्वीयतेजसा )
- ९ केशवेन्द्रप्रतापाग्नि . नाश्रय तापयत्यहो । केशवेन्द्रगुणान् वक्तुं  
को वा शक्नोति पण्डित . आकाशस्थितनक्षत्रगणना केन मुच्यते ॥  
वर्धमानान्वयोद्भवे निर्धृताश्रित-
- १० दरिद्रे निजपतिनियमांतर्धियुते होन्नवरसि विशुद्धात्मिके श्राने-  
वलिगे तिलकमेनिकुं १ आ होन्नवरसियरसं श्रीहैवनृपं  
जिनक्रमांबुजभृंग बाहुवलनिर्जितरि-
- ११ पुभूपं साहससमुद्रनभिनवकाम । तयोरभून्नर्मलजङ्घवरसी  
नुता सुशीला जिनभक्तियुक्ता तं चोपयेमे वरमंगभूपो जामातृवर्यो  
भुवि है-
- १२ वराजः अतिन्द्रादपि निर्गन्तुं भीरव खलु योषित मंगभूपाल-  
कीर्तिस्तु कामिनीवातिलंघिनी तयोरभूतां जिननाथनम्रौ मात्रा  
पुनीताखिलजैनल ..

- १३ धात्रीव हैवणश्री 'मावलरसी समूर्जिताह्वानयुता सुशीला श्रीमन्नन्निलिम्प - मौलिविलसन्माणिक्य' त्सर्पद्युतिपाटपञ्च - नखर श्रीपाश्र्वना-
- १४ थेन तु कामं मगरमात्मजो गुरुगुणश्रीहैवणाख्योभवत् जैनयोगिनिकर साहित्यरत्नाकर श्रीमद्धानुनितम्बिनीव नितरां नृपालंकृता भू-
- १५ मौ भूरिगुणोजभास्करलसत्प्रत्यग्रभासान्विता कामं मंगनृपा गुरुदया देवी श्रीमावलांया सुधासूतिद्युति प्रत्यह १ क ।
- १६ आ मावलरसियरसं भूमीशविनभ्रपाद केशवभूपं कामारिमसित- मस्तकसोमद्युतिकीर्ति को ' सुरलोकद सुरतरुविन गुरुफ-
- १७ लमं मेद्दु तृप्तियिल्लदे सुरं धरेयोल् भूसुररादरु वरकेशवभूप- कल्पभूजस्मृहेयि माति' कीर्त्या श्रीकेशवक्षमापतिरप-
- १८ राबुधितोरगा जिनपतिश्रीपाटपञ्चानता भूमौ भाविजिनेन्द्रचन्द्र- विलसच्चारित्रनु "रागोदया संसारसारोदया ।
- १९ त्र्यव्यग्रन्यैकसमन्विते शककृते श्राशार्शरोवत्सरे भावे मानित- पंचमीतिथियुते श्रीसौम्यचारे सिते पक्षे' आदिराजवनिता धर्माभिधाने पुरे काम कारयति स्म
- २० जक्यधरसी पाश्र्वप्रतिष्ठां मुदा । अनन्तरं । नगिरद राज होन्तरसनन्वयवार्धिगे चन्द्रं सले ता सोगथिप हैवैभूपनलियं कलिकालद
- २१ कर्णनेम्बरी जगदलु मगभूवरन बान्धवे तंगलेदेवितन्दन नगेमोगदा कल्पभूज केशवरायनु कीतिवल्लमं । क । अन्ता नगिरद राज-
- २२ र सन्तानाब्धियोलु लक्ष्मीमाणिकदेवीकान्तनु एनिपवीरायगे कन्तुविनन्तुदयिसिर्द सगनृपालं संगविदूर क्षेमपुरतीर्थजिनेन्द्र पाद-

- २३ पद्मकं शंगणजीयनालजनु अम्बमहीशन पुत्र संगमं\*\*\*तन्न मनमोल्वन्तीधर्मं माडि पूर्वदोल् पिंगिद धर्मवेल्ल-
- २४ वनु पालिसिठ रविचन्द्ररुल्लिनं । अन्ताधर्मप्रतिपालकनेनिप श्रीसंगभूपालं सुखादिं राज्य गेयुत्तिरल्ल यिलेयोलु कुन्तलनाडु करं रंजि-
- २५ से पश्चिमनाडु देशदोल् कलवे वापी कूप नदी मामरनिं पनसीले बालेयिं बालेयि बलसिकोण्डु कोकमिथुनमोदलागिर-  
कल्लियारवेगल नडवोप्पु
- २६ वी पुरवनालुवन् अजनृपालनेम्बवं । यिरुन्दूरधिपति तां करमोप्पुव अडियरवकियि करमेसेवनु तम्मरस\*\*\*यलियं कीर्ति-
- २७ वेत्तना तम्मरसं । आ तम्मरसनग्रजेय तनूजं धरेयोल् इरुंदूर भूसुरनुत कल्लरसननुजे तंगदेविगे वरनेनिप हँवेयरसन वरपुत्रं प-
- २८ झणरस जैनपदमक्त । आ पञ्चणरसनू आतनग्रजे जक्कल-  
देविय\*\*\*तन्दे हँवणरसरु पार्श्वतीर्थेश्वर\*\*\*माडिद नित्यपूजे-
- २९ आहारदानमोदलाद (वु) मेल्लव पुरो\*\*\*दिगे सलिसि सुन्निन धर्मवेल्लवं नेरेमाडि बलिकक तन्नोलु सन्नुतबुद्धि पुट्टे जिनेन्द्र-  
नभिणेकनु नित्यपू-
- ३० जनं सुन्नेसेवन्नदानमोदलादवनुं पिरिदागि माडि\*\*\*तृप्तिचिन्दो-  
लिदु पद्मरसं मिगे कोट्ट वृत्तियं । श्रीपार्श्वतीर्थेश्वरद श्रीकार्य-
- ३१ ककेयू अंगमोगचैत्यालयद जीर्णोद्धारकके धारापूर्वकवागि कोहन्ता वृत्तिय विवर हँवणरसरु तावु मूलवागि आकुतिर्द कोणुवणिय-
- ३२ लि कंगन कुलिय हन्नेरहु मूडे सुनिगे सीमे मूडलु अभिन-  
सेट्टितं हित्तल गदे तेंकलु हरिदु कोडि गाडि पडुवलु तम्मरसर होसगट्टेयलु यिक्किद कल्लुगडि
- ३३ वडगलु हीलेयभागे गडियिन्ती चतुस्सीमेयिदोलगुल्ल कलवेय समस्तवृत्ति पद्मरसरु तावु मूलवागि आलुत्तैद् होन्नमन केरेय

- ३४ ....मेले येत्ति होन्नावरट नाळ्कुवरे होन्तन् तम्म अम्म तंगल-  
देवियरिगे पुण्वार्थं परिहारमाणे विट्टुट्टु हैवण्णरसरु त-
- ३५ म्म मनःपूर्वकवागि कोट्टु सर्वमान्यवागि मूलस्थलवागि तावु  
आल्लुत्तं यिट्टुं यडेय मज्जन वृत्तिगे गडि मूडलु होले तेंकलु  
होले गडि पडुवलु
- ३६ .
- ३७ ..समस्तवृत्तियन् आहारदानक्कवागि याचन्द्रार्कवागि
- ३८ धारापूर्वकं माडि कोट्टरु मत्तु आहारदानक्के या चित्यालयद ...  
गृह

[ इस लेखमें पद्मण्णरस-द्वारा पार्श्वतीर्थकरमन्दिरके लिए ४ होन्नु क्रीमतकी भूमि दान दिये जानेका निर्देश है। पद्मण्णरसकी माता तगलदेवी तथा पिता हैवण्णरस थे। उसकी बड़ी बहिन जक्कलदेवी थी। तगलदेवीका बन्धु कल्लरस था जो इस्वन्दूरके शासक तम्मरसका भानजा था। यह कुन्तलनाडुके राजा अज्जका जामाता था। अज्जका समकालीन राजा संग था जो अम्बराजाका पुत्र था। अम्बका पिता संग था जो अम्बीराय और माणिकदेवीका पुत्र था तथा राजा केशवका वंशज था। केशवकी पत्नी मावलरमि मग राजाकी कन्या थी। मगकी पत्नी जक्कब्बरसि हैवण और होन्नवरसिकी कन्या थी। इस दानकी तिथि माघ शु० ५ बुधवार, शक १३४३, शार्वरी संवत्सर ऐसी दी है। ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९३ ]

४३४

उडिपि ( द० कनडा, मैसूर )

शक १३४६ = सन् १४२४, संस्कृत-कन्नड

[ यह लेख ( ताम्रपत्र ) विजयनगरके देवरायमहाराजके राज्यकालमें पुण्य शु० ६, बुधवार, शक १३४६ क्रोधि संवत्सरके दिनका है। इसमें  
२०

मूलसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके वर्धमान भट्टारककी प्रार्थनापर राजा-द्वारा वराग नामक ग्राम नेमिनाथमन्दिरको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ए १२ पृ० ५ ]

[ इस ताम्रपत्रकी प्रतिलिपि वरांग ग्रामस्थित नेमिनाथवसदिमें एक पाषाणपर उत्कीर्ण है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२५ पृ० ४९ ]

### ४३५

माण्डू ( धार, मध्यप्रदेश )

( संवत् ) १४८३ = सन् १४२६, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें सम्भवनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । तिथि ( संवत् ) १४८३, वैशाख ( चैत्र ) शु० ५, गुरुवार ऐसी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १८२ पृ० ४४ ]

### ४३६

वसरूर ( दक्षिण कनडा, मैसूर )

शक १३०३ = सन् १४३१

[ यह लेख देवराय २ के राज्यमें शक १३५३ में लिखा गया था । इसमें जैन मन्दिरके लिए वसरूरके चेट्टियो-द्वारा वहाँके बाजारमे आनेवाली चावलकी हर गाडीपर एक 'कोलग' दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ इ० म० दक्षिण कनडा २७ ]

४३७

कुण्णत्तूर ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १३६३ = सन् १४४१, तमिल

[ यह लेख ऋषभनाथवसदिके पूर्वी दीवारपर खुदा है। कुण्णै ( कुण्णत्तूर ) के अर्हत्-मन्दिरका निर्माण शक १३६३ में होनेका इसमें वर्णन है। ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १०३ पृ० १४० ]

४३८

बदनोर ( भीलवाडा, राजस्थान )

संवत् १(४)९७ = सन् १४४२, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमें संवत् १(४)९७ में शान्तिनाथका उल्लेख किया गया है। ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४५० पृ० ६७ ]

४३९

कुण्डघाट ( जि० मोघीर, बिहार )

संवत् १५०५ = सन् १४४९, संस्कृत-नागरी

मगन मन्दिरमें एक महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[ इस लेखमें संवत् १५०५ फाल्गुन शु० ९ को महावीरमूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। ]

[ रि० इ० ए० क्र० ८ (१९५०-५१) ]

४४०-४४१

चैन्दुरु ( द० कनडा, मैसूर )

शक १३(७)१ = सन् १४५०, कन्नड

[ यह लेख विजयनगरके मल्लिकार्जुन महारायके समय चैत्र शु० १०, गुरुवार, शक १३(७)१ शुक्ल सवत्सरका है। इस समय वैदूरके पार्श्वनाथ वसदिके लिए कुछ लोगो-द्वारा दिये हुए दानोका विवरण इसमें दिया है। देवप्प दण्डनायकका भी उल्लेख है। इसी समयका दूसरा लेख यही है। इसमें हाडुवलिय राज्यके ग्रासक सगिराय ओडेयके पुत्र डंगरस ओडेयके समय पार्श्वनाथवसदिको प्राप्त दानोका विवरण है। ]

[ रि० सा० ए० १६२९-३० क्र० ५३६-३७ पृ० ५३ ]

४४२

चित्तलद्रुग ( मैसूर )

शक १३८५ = सन् १४६३, कन्नड

- १ सखवरुस १३८५ सोमकृति सं-
- २ वछरद कतिकसुध १५ आकिय सं-
- ३ गिसेट्टिय मग गुम्मिसेट्टियर नि-
- ४ स्तिगे श्रीवीतराग

[ यह एक निसिविलेख है। आकिय मंगिसेट्टिके पुत्र गुम्मिसेट्टिके समाधिमरणका यह स्मारक है। तिथि कार्तिक शु० १५, शक १३८५, शोभकृत् संवत्सर इस प्रकार दी है। ]

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४ ]

४४३-४४४

चित्तलद्रुग ( मैसूर )

१५वी सदी ( सन् १४७२ ), कन्नड

१ नंदन सं      २ वाचण्णगळ      ३ निस्तिगे

[ यह निसिधिलेख वाचण्णके समाधिमरणका स्मारक है । १५वी सदीकी लिपिमें नन्दन सवत्सरका उल्लेख है अतः सन् १४७२ का यह लेख होगा । यहीका एक अन्य लेख इसी समयकी लिपिमें है जिसमें गुम्मटदेवकी निसिधिका उल्लेख है । यथा-

१ सखवरु - २ आसाडसु ३ (गु) मटदेव  
इसमें तिथिके अक लुप्त हो चुके हैं । ]

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४-५ ]

४४५

गुरुवयनकेरे ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४०६ = सन् १४८४, कन्नड

[ इस लेखमें शक १४०६ में नरसिंह वग-द्वारा कन्नडिवसदि नामक जिनमन्दिरको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८१ पृ० ४५ ]

४४६

विदिरूर ( शिमोगा, मैसूर )

शक १४१० = सन् १४८८, कन्नड

१ स्वस्ति स (क) वरिष १४१० नेय प्लवग संचरद जेष्ट सुद



पंचमि आदिवारदलु अदियर् वलिय गण्डलिकेय उटेकॉड राम-  
नाय्कनु विदिरूरल्लि तनगे स्वर्गापवर्गसुखक्के का-

२ (र)णवागि चैत्यालयव कट्टिसि आदीश्वरन प्रतिष्ठेयन माडिसि-  
दनु श्री

[ इस लेखमे रामनायक-द्वारा विदिरूर ग्राममे चैत्यालय बनवानेका  
तथा आदिनायकी इस मूर्तिकी स्थापना करवानेका वर्णन है। यह कार्य  
ज्येष्ठ शु० ५, शक १४१० के दिन सम्पन्न हुआ था। ]

[ ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११३ ]

४४७

जबलपुर ( मध्यप्रदेश )

संवत् १५४६ = सन् १४६३, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख पार्श्वनाथकी भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। तिथि वैशाख  
शु० ३, संवत् १५४९ ऐसी दी है। ]

[ रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १२३ पृ० २१ ]

४४८

शिवडूंगर ( राजस्थान )

सं० १५५६ = सन् १५००, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख मूलसंघ-त्रलात्कारगण - सरस्वतीगच्छके आचार्य रत्न-  
कीर्तिके समय स० १५५६ में लिखा गया था। इनकी गुरुपरम्परा  
पद्मनन्दि-शुभचन्द्र-जिनचन्द्र-रत्नकीर्ति इस प्रकार बतलायी है। ]

[ रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३२ ]

४४६

## हुमच ( मैसूर )

१५वीं सदी, कन्नड

- |                                   |                             |
|-----------------------------------|-----------------------------|
| १ श्रीमत्परमगंभीस्या-             | २ द्वादासोषलाछन             |
| ३ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा-      | ४ सन जिनशासनं               |
| ५ विरोधकृत् संवत्सरद आश्वी-       | ६ ज बहुल दसमि सोमवा-        |
| ७ रदलु । श्री मद्रायराज-          | ८ गुरु मंडलाचार्यरु         |
| ९ महावादावादीश्वर रा-             | १० यवादिपितामह सकल-         |
| ११ विद्वज्जनचक्रवर्तिगलुं श्रीम-  | १२ द्वादींद्रविशालकीर्तिम-  |
| १३ -स्वरकुलकमलमार्तंडहं           | १४ श्रीमदमरकातियतीश्वरप्रि- |
| १५ याग्रशिष्यरु मूलसंघ व-         | १६ लात्कारगणाग्रगण्यरुमप्प  |
| १७ श्रीधर्मभूषणभट्टारकदे-         | १८ वर प्रियगुड्डु श्रीमदम-  |
| १९ रेंद्रवंदितजिनेद्रपादार-       | २० विंदमधुकरनुं चतुर्विधदा- |
| २१ नचिंतामणियु खडस्फुटि-          | २२ तजीर्णजिनालयोद्धारकनुम   |
| २३ प्प बिटिसेट्टिय मग चोकिसेट्टि- | २४ य निसिधि ॥               |

[ इस लेखमें विटिसेट्टिके पुत्र चोकिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है जो आश्विन व० १० सोमवार, विरोधकृत् सवत्सरके दिन हुआ था । चोकिसेट्टिके गुरु धर्मभूषण भट्टारक थे जो मूलसंघ-वलात्कारगणके अमर-कीर्ति यतीश्वरके शिष्य थे । लिपि १५वी सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२४ पृ० १७५ ]

४५०-४५१

आदवनी ( वेल्लारी, मैसूर )

१५वीं सदी, तेलुगु

[ ये लेख पहाडीपर एक पाषाणपर खुदे हुए तीर्थकरमूर्तिके पास और चरणपादुकाओंके पास है । ये बहुत घिसे हुए हैं । मूर्तिके पास एक शकवर्षकी सख्या खुदी है तथा पादुकाओंके पास किसी आचार्यका नाम है । दोनो अच्छी तरह पढना सम्भव नहीं है । लिपि १५वी सदीकी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० ७४-७५ पृ० १३७ ]

४५२-४५३

नरसिंहराजपुर ( मैसूर )

१५वी सदी, कन्नड

[ यहाँके दो मूर्तिलेख १५वी सदीके लिपिके हैं । इनपर देविसेट्टिके पुत्र दोडणसेट्टि तथा नेमिसेट्टिके पुत्र गुम्मणसेट्टिके नाम उत्कीर्ण है । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४ ]

४५४

हनसोगे ( मैसूर )

१५वीं सदी, कन्नड

- १ हनसोगेय हिरियवसदिय
- २ कोण्डिय कल्ल ओरसेय वोम्मि-
- ३ सेट्टियरु इक्किरसिदरु

[ यह लेख स्थानीय आदीश्वरवसदिके सभामण्डपके छतके पाषाणपर खुदा है । यह पाषाण ( कोण्डियकल्लु ) वोम्मिसेट्टि-द्वारा स्थापित किया गया था ऐना लेखमें कहा है । लिपि १५वीं सदीकी है । ]

[ ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९४ ]

४५५

## मूडविदुरे ( मैसूर )

शक १४२६ = सन् १५०४, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमे उल्लेख है कि कदव कुलके शासक लक्ष्मण्परस अपरनाम भैररसने जैनोके ७२ सस्थानोके प्रधान आचार्य चारुकीर्ति पंडिताचार्यके एक शिष्यको अपने राज्यके एक हिस्सेके धार्मिक अधिकार प्रदान किये । तिथि-आश्विन कृ० ५, शक १४२६, क्रौषि संवत्सर । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ५ ]

४५६

## करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १४३१ = सन् १५०९, तमिल

[ यह लेख मकर शु० १०, गुरुवार, शक १४३१ को लिखा गया था । विजयनगरके शासक नरसिंहरायके समय रामप्प नायकने मन्दिरोकी भूमिपर जोडि सज्ञक कर लगाया था जिससे मन्दिरोकी हानि हुई थी । कृष्णदेवराय सिंहासनारूढ हुए तब उन्होने मन्दिरोकी भूमिको करमुक्त घोषित किया । इस घोषणाका लाभ पडैवीट्टु तथा चन्द्रगिरि प्रदेशके जैन और बौद्ध मन्दिरोको भी हुआ । करन्दै स्थित जिनमन्दिर भी इससे लाभान्वित हुआ ऐसा लेखमे कहा गया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४४ ]

४५७

गुरुवयनकेरे ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४३१ = सन् १५१०, कन्नड

[ यह लेख स्यानीय शान्तीश्वरवसदिके मण्डपमे है । इसमे माघ व० १०, सोमवार शक १४३१ को बेलतगडीके कुछ लोगो-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८० पृ० ४५ ]

४५८

चरांग ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४३७ = सन् १५१५, कन्नड

[ यह लेख विजयनगरके कृष्णदेवमहारायके समय माघ शु० ५, शुक्रवार, शक १४३७ भावसवत्सरका है । इसमे तुलुराज्यके शासक रत्न-प्पोडेयका उल्लेख किया है । देवेन्द्रकीर्तिकी प्रार्थनापर इस वसदिके लिए देवराय-द्वारा पहले दी हुई भूमिके पुन खेतीयोग्य बनानेका इसमें उल्लेख है । यह कार्य अक्कम्म हेगिडिति तथा उनके सहयोगियो-द्वारा सम्पन्न हुआ था ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ पृ० ४९ क्र० ५२८ ]

४५९

चामराजनगर ( मैसूर )

सन् १५१८, कन्नड

[ इस लेखमें अरिक्कुठारके महाप्रभु कामैय नायकके पुत्र वीरैय नायक-द्वारा विजय ( पार्श्व ) नाथ मन्दिरके लिए सन् १५१८ में कुछ दानका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५१ ]

४६०

कोह नगोरी ( जयपुर, राजस्थान )

संवत् १५७७ = सन् १५२१, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखकी तिथि माघ शु० ५, संवत् १५७७ यह है । इसमें मूल-सघ-बलात्कारणके आचार्योंकी परम्परा दी है तथा खण्डुलवाल अन्वयके राय रामचन्द्रके शासनका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१६ पृ० ६९ ]

४६१

वरांग ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४४४ = सन् १५२२, कन्नड

[ यह लेख पोवुच्चके राजा इम्मडि भैरवरसके समय चैत्र व० १२, सोमवार शक १४४४ चित्रभानु संवत्सरका है । इसमें राजा-द्वारा वरांगके नेमिनाथ बसदिके लिए भैरवपुर नामक ग्रामके दानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२९ पृ० ४९ ]

४६२

सोदे ( उ० कनडा, मैसूर )

शक १४४५ = सन् १५२२, संस्कृत-कन्नड

[ यह ताम्रपत्र आपाठ पूर्णिमा शक १४४५ चित्रभानु संवत्सरका है । तौलव प्रदेशके क्षेमपुर ( गेरसोप्ये ) नगरसे इम्मडि देवराय ओडेयर्ने वण्डुवाल ग्रामकी कुछ भूमि लक्ष्मणेश्वरके शंखजिनवसतिके लिए दान दी थी । यह दान देशीगणके चन्द्रप्रभदेवके लिए था । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ६९ ]

४६३

सोंड ( जि० उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १४४४ = सन् १५२२, कन्नड

[ यह ताम्रपत्र यहाँके भट्टाकलक मठमें प्राप्त हुआ । हुलिगेरेकी शंख-जिनर बसतिके लिए मल्लिसेट्टिने मासूर मोसलेयकुर्वु विभागमें इम्मडि देवराज ओडेयरुसे कुछ जमीन खरीदकर दान दी । इसकी प्रेरणा देसिगणके विजयकीर्तिदेवके शिष्य चन्द्रप्रभदेवने दी थी । श्रावण शु० ५, गुरुवार, शक १४४४, विषु संवत्सर यह इसकी तिथि है । ]

( रि० सा० ए० १९३९-४० ए० क्र० १५ पृ० २२ )

४६४-४६५

श्रुंगेरी ( मैसूर )

१६वीं सदी ( सन् १५०३ ), कन्नड

[ ये दो लेख हैं । पहला अनन्तनाथमूर्तिके पादपीठपर है । चैत्र कृ० ५, रविवार, स्वभानु संवत्सरके दिन यह मूर्ति अर्पित की गयी थी । इसका स्थापक हलुमिडि निवासी देविसेट्टिका पुत्र देवणसेट्टि था । मूर्तिका वजन १८० हल कहा गया है । दूसरा लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर है । यह मूर्ति आदिसेट्टिके पुत्र वोम्मरसेट्टि-द्वारा वैशाख शु० १, गुरुवार, स्वभानु संवत्सरके दिन अर्पित की गयी थी । दोनो लेखोंकी लिपि १६वीं सदीकी है अतः संवत्सरनामानुसार ये शक १४४५ अर्थात् सन् १५२३ के प्रतीत होते हैं । ]

( मूल लेख कन्नडमें मुद्रित )

[ ए० रि० मै० १९३३ पृ० १२४ ]

४६६

नेल्लिकर ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४४७ = सन् १५२५, कन्नड

[ यह लेख स्थानीय अनन्तनाथवसदिके प्राकारमें है । देवणरस उपनाम कोन्नकी वहन शकरदेवी-द्वारा कीयरवुरकी वसदिके लिए धनु १५, रविवार, शक १४४७, तारण सवत्सरके दिन कुछ भूमिके उत्पन्नके दानका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२२ पृ० ४९ ]

४६७

पस्लिच्छन्दल् ( द० अर्काट, मद्रास )

शक १४५२ = सन् १५३०, तमिल

[ यह लेख एक भग्न जैनमन्दिरके स्थानपर है जिसे शैनियम्मण् कोयिल् कहा जाता है । विजयनगरके राजा अच्युतदेवमहारायने वैयप्प नायकके निवेदनपर शण्वैके नायनार् विजयनायकर् नामक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए जोडि और शालुवरि करोका उत्पन्न अर्पण किया था । यह राजाज्ञा वेलूर वोम्मुनायकके समय उत्कीर्ण की गयी ऐसा लेखमें कहा है । तिथि मियुन शु० १०, बुधवार, शक १४५२, नन्दन सवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ४४९ पृ० ५१ ]

४६८

पटना म्युजियम ( विहार )

संवत् १५९३ = सन् १५३१, सस्कृत-नागरी

[ यह लेख एक पीतलकी जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इसकी स्थापना मूलसध-कुन्दकुन्दाचार्यान्वयके मण्डलाचार्य धर्मचन्द्रके उपदेशसे खंडेलवाल



अन्वयके कुछ सज्जनोने की थी । प्रतिष्ठा तिथि ज्येष्ठ शु० ३, सोमवार, सवत् १५९३ ऐमी दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६२ पृ० ३३ ]

४६६

**हनुमंतगुडि ( रामनाड, मद्रास )**

शक १४५५ = सन् १५३३, तमिल

मलवनाथ जैन मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलाओंपर

[ इसमें शक १४५५ के लेखके खण्ड है । एकमे जिनेन्द्रमगलम् अथवा कुरुवडिमिदिका निर्देश है जो मुत्तोर कूरम् विभागमें था । ]

( इ० म० रामनाड २७९ )

४७०

**नीलत्तनहस्ति ( मैसूर )**

सन् १५३४, कन्नड

[ इस लेखमें सन् १५३४ में मदवणसेट्टिके पुत्र पट्टमणसेट्टि-द्वारा अनन्तनाथचैत्यालयमे किसी व्रतके पालनका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८ ]

४७१

**लक्ष्मेश्वर ( मैसूर )**

शक १४(६१) = सन् १५३९, कन्नड

[ इस लेखमें जैन और शैवोंके एक विवादके समझौतेका उल्लेख है । यह विवाद जिनमूर्तियोंके सम्मानके सम्बन्धमें था । जैनोकी ओरसे शंख-वमतिके शंखणाचार्य तथा हेमणाचार्यने और शैवोंकी ओरसे दक्षिणसोमेश्वर

मन्दिरके कालहस्ति और शिवरामने यह समझौता किया था। तिथि ज्येष्ठ शु० १ सोमवार, शक १४(६१), विल्वि सवत्सर ऐसी दी है। ( शकवर्षकी सख्याके अन्तिम अंक लुप्त हैं जो सवत्सरनामानुसार दिये गये हैं )। ]

[ रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई १८ पृ० १६२ ]

४७२.

कारकल ( द० कनडा, मैसूर )

शक १४६५ = सन् १५४३, कन्नड

[ यह लेख ( ताम्रपत्र ) चैत्र शु० ४ शक १४६५ शोभकृत् संवत्सर-का है। इसमें चन्दलदेवीके पुत्र पाण्ड्यप्परस तथा तिरुमलरस चौटरु इनमें अनाक्रमण सन्धिका उल्लेख किया है। इसके साक्षीके रूपमें जैन आचार्य ललितकीर्ति भट्टारका उल्लेख हुआ है। ]

[ रि० सा० ए० १९२१-२२ पृ० ९ क्र० ए ५ ]

४७३

कुरुगोड्ड ( वेल्लारी, मैसूर )

शक १४६७ = सन् १५४५, कन्नड

एक भग्न मन्दिरके दक्षिणी दीवालपर

[ विजयनगरके राजा वीरप्रताप सदाशिव महारायके समय शक १४६७, विश्वावसु संवत्सरमें यह लेख लिखा गया। रामराज्य-द्वारा जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमिदान देनेका इसमें निर्दश है। ]

( इ० म० वेल्लारी ११३ )

४७४

## कारकल ( मैसूर )

शक १४६६ = सन् १५४५, कन्नड

[ यह लेख माघ शु० ३, गुरुवार, शक १४६६, क्रौचि सवत्सरका है । चन्दलदेवीके पुत्र चन्द्रवंशीय पाण्ड्यप्प वोडेयके राज्यकालमें कारिजे निवासी सिदवसयदेवरस-द्वारा कारकलके गुम्मतनाथ स्वामीको कुछ भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३९ पृ० ५२ ]

४७५

## मूडबिदुरे ( मैसूर )

शक १४६८ = सन् १५४६, संस्कृत-कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें विलिगिके शासक वीरप्पोडेयकी वशावली छह पीढियों तक दी है । विदुरे नगरकी त्रिभुवनचूडामणि वसतिके लिए इस शासकने चिक्कमालिगेनाडु विभागके कुडुगिनवयलु ग्रामकी कुछ जमीनका उत्पन्न दान दिया था । इसी मन्दिरके चन्द्रनाथदेवको नैवेद्य अर्पण करनेके लिए एक चाँदीका प्याला और कुछ धन भी दान दिया था । यह दान वीरप्प-के चाचा तिम्ररसकी पत्नी वीरम्मके नामसे था । इसी तरह घण्टोडेयके पुत्र तिम्रप्पके नामसे चन्द्रनाथदेवके दुग्घाभिषेकके लिए कुछ दान दिया गया था । कार्तिक शु० ७, शक १४६८, विश्वावसु सवत्सर, यह इस दानकी तिथि थी । प्रथम आपाढ शु० १०, पराभव संवत्सर यह दूसरी तिथि दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए २ पृ० २३ ]

४७६

काप ताम्रपत्र ( जि० दक्षिण कनडा, मैसूर )

शक १४७९ = सन् १५५६, संस्कृत-कन्नड

- १ श्री धर्मनाथ (ने) शरणु ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादासोघलाछन ।  
जीया-
- २ त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ स्वस्तिश्रीसकलज्ञान-  
साम्राज्यपदराजितः । व-
- ३ धर्मानजिनाधीश स्याद्वादमठभासुरः ॥ तिन्निर्णोगच्छवाराशे -  
सुधांशुर्जानदी-
- ४ धिति । सद्धर्मसरसीहंस प्रवादिगजकेसरी ॥ काणूरगण-  
नमोभागे मामाति मुनि-
- ५ कुं (ज) र । अज्ञानतिमिरोद्धतिः श्रीमान् भानुमुनी(श्व)र ॥  
पचाचारशरध्वस्तपच-
- ६ वाणशरव्रज । अखण्डश्रोतपोलक्ष्मीनायको भानुसयमी ॥  
श्रीमद्भानुमु-
- ७ नीश्व(रो) विजयते स्याद्वादधर्माश्वरे श्रीमद्ज्ञानविनूत्नदीधिति  
(श)तध्वस्तान्धका-
- ८ रघज । श्रीमूलामलसंघनीरजमहाषण्डेष्वखण्डश्रियं व्यात (न्व)  
न् मुनि-
- ९ कोकचारुनिकर सौख्यार्णवे मगनयन् ॥ तुलुदेशवेम्बभूपन पोलेत्र  
महाप-
- १० दकटदं येसर्गं (से) गु निच्छं । धरेयोलगे कापिन नगरठ नेलन-  
नाल्व भूप महद्देगडेयम्ब ॥
- ११ पगुलत्रलि अधिपतियनु पौंगलसटे नेलके तानु नृपकुलतिलक ।  
संगतसभेयोलु

- १२ पो (गल्गुं) अंगजजयजिनपढाढजमधुकरनेवं ॥ भूदेविय मुखकंनडि  
वाडें हेल्व-
- १३ गें कापुवेनिसढ नगर । आदरद्विन्नदरो (लगा) मेद्विनिमतधर्म-  
नाथनेन (से) गु जिनप ॥ आ नगर-
- १४ क्कधिपतियुं श्रीपति तिरु (म) रस नृप (अ)वनीतिलकं ।  
वोमनदलि आतानुं-वोतुकरं मुक्किल-
- १५ क्षिमागित्त मनमं ॥ येनेम्बे मद्देहेग्गडे दानचतुर्विधक्कं ताने  
चित्तारत्तं । सन्नुतगुणगण-
- १६ निलेय उन्नतशीलवनु ताल्द (नृ) परिपुसंहारं ॥ धर्मदोलं (द्वढ)  
चित्तनु निर्मल-
- १७ गुरुमक्तियल्लि तिरुमरसनृपं । धर्मजिनजैनशासनम वोम्मन्दि तानु  
माडि क्किति (य)
- १८ नित्तं ॥ स्वस्ति श्री जयाभ्युदय शालिवाहनशकवर्ष १४७६ नेय  
संद नलसवत्सर-
- १९ द कार्तिक शुद्ध १ आदित्यवारदलु श्रीमन्महाराजाधिराजराजपर-  
मेश्वर सत्यरत्नाकर
- २० शरणागतवज्रपंजर चतु समुद्राधीश्वर कलियुगचक्रवर्ति श्रीवीर-  
प्रताप सदाशिव-
- २१ राय राजराजेंद्र दक्षिणभागभाग्यदेवतासंनिभरुमप्प रामराजय्य-  
नवरु ये-
- २२ क (च्छ) त्रिं राज्यवनु प्रजिपालिसुतिर्द कालदलु वारकूरु  
मगल्लु सदा(शि)वनायकरु
- २३ राज्यव गे(यि)तिर्द कालदलु तुलु(व)देशकामिनीमुखकमलतिल-  
कायमानानादिसि-
- २४ द्दप्रसिद्धकापिसिंहासनोदयाचलालंकरणतरुणतरणीप्रकाशरु-  
अनन्यराजन्यसौ(ज)-

- २५ न्य (श्रौ)दाय्यदीर्यधैर्य(मा)धुर्यगांभीर्यनयविनयसत्यशौचाद्यनं-  
तगुण-
- २६ गणनूत्तरत्नाभरणगणकिरणोद्योतितभरतादिसकल (पु)राणपुरुष-  
रुमप्य
- २७ तिरुमलरसराद् मद्देहेगडेयर् अवर नालिनवरु गणपणसावतरु  
कापिन राज्यव-
- २८ नु प्रतिपालिसुतिर्द कालदलु ॥ स्वस्ति श्रीमद्रायराजगुरु मडला-  
चार्य महा-
- २९ वादवादीश्वर राज्यवादिपितामह सकलविद्व(ज्)नचक्रवर्तिगलुं  
इत्याद्यनेकवि-
- ३० रुद्रावलीविराजमानरु काणूरूगणाग्रण्यरुगलुमप्य श्रीमदमिनव-
- ३१ देवकीर्तिदेवरुगल शिष्यरु मुनिचंद्रदेवरुगलु (अ)वरुगल शिष्यरु  
देवचंद्रदे-
- ३२ वरुगलु तम्म गुरु मुनिचंद्रदेवरुगलिगे स्वर्गापवर्गकके कारणवागि  
कापिन-
- ३३ लु धर्मवनु मादबेकैव चित्तदिंद तिरुमलरमराद् मद्देहेगडेयर्  
कू (कू)-
- ३४ डेयु अवर नालिनवरु गण(प)णसामतर कूडेयु कापिन हलर  
सहायर्दि-
- ३५ द धर्मके वोट्टु क्षेत्रवनु कोडवेकुकु येंदु चित्तैसलागि अवरुगलु धर्म-
- ३६ परिणामस्वरूपवने वुल्लवराद कारण गुरुभक्तियिद तम्म सीमेय-
- ३७ लुम(ला)रेम्ब (वू)रोलगे पडु(व)ण दिक्किनलु कलतोपतिना  
वालडेयलु अगलि-
- ३८ द वोलगे वेट्टिन गदेल्क वीज वल्ल मूवत्तर लेक्कद वत्त मूडे २  
मत्तम-

- ३६ गालिंदं होरगे पापिनादियेव गहेत्कं वीज वल्ल मूवत्तर लेक्कद  
वीज  
४० मूडे ४ मत्तं वागिल गहेत्कं वीज वल्ल मूवत्तर लेक्कद मूडे ४  
गहे मू-

## पिळला भाग

- ४१ रक्कं वीज मूडे १० ई भूमिगलिगे तुल्ल करे सुरे मने वावि  
हलसु मावु सुं-  
४२ बे निक्किलिस्क्कंदे कदिरु जल पाषाण सह मूलधारेयनु  
पुरदु को-  
४३ ट्टु यिमिकोद दोडुवराहग ८० अक्षरदलु येमट्टु वराह यी हों-  
४४ जिगे येरडु बेलेयलु सह वर्षल्के वह अक्कि अंगडिय होरिगेय  
४५ वल्ल पेवत्तर लेक्कद अक्कि मूडे २४ ई अक्किगे नडव धर्मदं  
विवर कापिन वस्ति-  
४६ य केलगण नेलेयलु धर्मतीर्थकरसन्निधियलु मध्याह्नकालदलु  
नित्यद -  
४७ लु दिन वोंदक्के वोंदुवल्ल अक्कि नैवेद्यदकु (सु) निचंद्रदेवस्सगल  
हेस-  
४८ रिनलु नड(व) हालधारेगु सह अक्कि मूडे १० तिगलु तिगलु  
तप्पदं तिं-  
४९ गलल्लि १७ होहाग नडव वार १ मत्तं इप्पत्तैदु २५ होहाग  
नडव  
५० वार १ अंतु तिगलल्लि येरडु वार समदाय नडवुदक्के अक्कि  
मूडेवु  
५१ १२ई वारगलल्लि मगलत्रयोदशी वहाग आ मंगलत्रयोदशी  
नडव-

- ५२ (देंदु) विशेषवागि यिरिसिद अक्कि मूडे २ अंतु अक्कि मूडे  
यिप्पत्तनाल्लु
- ५३ यी धर्मद स्थलदल्लि बल्लारिगे अनाय सनाय सल्लदु इल्ल आ  
स्थ(ल)गदल्लु इद
- ५४ वोक्कल्लिगे बिट्टि विडार सल्लदु काणिके देसे अत्पणे पददल्लि येत्तु  
सल्लदु मँदु
- ५५ सर्वमान्यवागि तिरुमलरसराद महहेग्गडेयरु अवर नालिनवरु ग-
- ५६ णपणसामतरु सह तम्म धर्मपरिणामनिमित्तवागि तम्म स्वरुचि-
- ५७ यिंद गुरुमक्तिर्यिंद वोडंबट्टु वरसि कोट्ट तांत्रशासन इंत-
- ५८ प्पुट्टके साक्षिगल्लु अधिकारि कांतसेट्टि चट विक्रसेट्टि सामणि  
संकर-
- ५९ सेट्टि राजसेट्टि बग्गे(से)ट्टिय अल्लिय केसण मूल्लर बेल्लिले  
विरुमाल
- ६० दुग्ग बंडारि विरुसामणि यित्तिनवर वुमयान्म(त)दि म-
- ६१ गल्लुरु संकै सेनवोवन वरह । यिंती धर्मशास(न)के मंगल-
- ६२ महा श्री श्री श्री ॥ स्वदत्ताद् द्विगुणं पुण्य परदत्तानुपालनं ।
- ६३ परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ दानपालनयोर्मध्ये
- ६४ दानाच्छ्रेयोनुपालन । दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं
- ६५ पद ॥ यी धर्मशासनके आवनानोव्व जैननादव तप्पिदरे बेल्लुगु-
- ६६ लद गुम्मतनाथ कोपणद चद्रनाथ ऊज्जतगिरिय नेमीश्वर-
- ६७ मोदलाट जिनबिंबगलनोडद पापके होहरु शैवनादरे प-
- ६८ वंतगोकर्णमोदलादवरल्लि कोटिलिगवनोडद पापके होहरु
- ६९ वैण्ववनादरे तिरुमलेमोदलादवरल्लि कोटिविण्णुमूर्तिर्यनोड-
- ७० द पापके होहरु ॥ मद्रं भूयाजिनशासनस्य ॥ श्री



[ यह ताम्रपत्र शक १४७९ में लिखा गया था । उस समय विजय-नगरसाम्राज्यके अधिपति सदाशिवराय थे तथा रामराज उनके प्रधान सेनापति थे । इस साम्राज्यके वारकूर तथा मगलूर प्रदेशपर केलडि सदाशिव नायककी नियुक्ति की गयी थी । इस प्रदेशमें काप नगरका अधिकारी मद् हेगडे था । इसने धर्मनाथ तीर्थंकरकी पूजा आदिके लिए मल्लार गाँवमें कुछ जमीन दान दी जिसकी आय ८० वराह थी ( वराह उस समयकी रौप्यमुद्राकी सजा थी ) । यह दान अभिनव देवकीर्तिके प्रशिष्य तथा मुनिचन्द्रके शिष्य देवचन्द्रके उपदेशसे दिया गया था । इसके पहले मूलसघ-काणूरगण-तिन्त्रिणीगच्छके भानुमुनीश्वरकी प्रशसा की गयी है । देवचन्द्र भी काणूरगणके ही थे । अन्तमें दानकी रक्षाके लिए जो शाप दिये हैं उनमें श्रवणवेलगोलके गोम्मटेश्वर, कोपणके चन्द्रनाथ तथा गिरनारके नेमिनाथकी मूर्तियोंका उल्लेख किया है ]

[ ए० इ० २० पृ० ८९ ]

४७७

चिप्पगिरि ( जि० वेल्लारी, मैसूर )

शक १४८२ = सन् १५६०, कन्नड

[ इस लेखमें आदवानीके विशालकीर्तिगुरु तथा चिप्पगिरिके श्रावको-द्वारा चतुर्थमुनीश्वरकी वन्दनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ७४ ]

४७८

मूडचिदुरे ( जि० दक्षिण कनडा, मैसूर )

शक १४८५ = सन् १५६३, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें विदुरे नगरकी चण्डोग्य पारिश्वतीर्थंकर वसतिके लिए शकरसेट्टि ऊर्फ विरणन्तर-द्वारा उमकी वहन शकरदेवीके आग्रहसे कुछ

न दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान अभिनव चारुकीर्ति पण्डितके आज्ञावर्ती सेट्टिकारोको सौपा गया था । १२५० वराह मुद्राओके एक और दानका भी इसमें उल्लेख है । तिथि मेघ ( त्रयोदशी ), शुक्रवार, शक ४८५, रुधिरोद्गारी संवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० १ ए ]

४७६

प्रिन्स आफ़ वेल्स म्युजियम, बम्बई

शक १४८२ = सन् १५६३, शिलालेख क्र० B B. ३०७, कन्नड

[ यह लेख चैत्र शुक्ल १२, सोमवार, शक १४८५, दुन्दुभि संवत्सर, १३ दिन लिखा गया था । विट्टप्प नायक तथा हेम्मरसि नायकितिके पुत्र मालुव नायक-द्वारा गेरसोप्पेमें शान्तिनाथका मन्दिर बनवाये जानेका तथा इस मन्दिरको कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है । इसमें नगिरे, चिचवे, तुलु तथा कोकण इन पश्चिम समुद्रतटके प्रदेशोपर रानी चेल भैरावीके शासनका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० ( १९५०-५१ ) क्र० २४ ]

४८०

मूडबिदुरे ( मैसूर )

शक १४९३ = सन् १५७१, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें मीचारमागाणे विभागके मरकत ग्रामको कुछ जमीन बिदुरेकी वसतिमें आहारदानके लिए अर्पित करनेका उल्लेख है । यह दान चौट कुलकी अब्बक्कदेवीने उसकी बहन पट्टुमलदेवीकी पुण्यवृद्धिके लिए दिया था । पुत्तिगेके शासक इस दानका भग न करे ऐसी सूचना अन्तमें दी है । तिथि पौष शु० ८, रविवार, शक १४९३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर, इस प्रकार दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० ए ३ ]

४८१

महेश्वर ( मध्यप्रदेश )

सं० १६२७ = सन् १५७१, संस्कृत-नागरी

[ यह लेख सम्राट् अकबरके राज्यकालमें संवत् १६२७ में लिखा गया था । मालवामें उस समय ख्वाजा अजीझ बेग प्रान्तीय शासक नियुक्त था । इस समय मण्डलोई सुजानरायने महेश्वरस्थित आदिनाथ-मन्दिरका जीर्णोद्धार किया ।

अकबरके शासनकालके अन्य दो लेख यही प्राप्त हुए हैं । इनमें मण्डलोई देवदास ( सुजानरायके वन्धु ) द्वारा संवत् १६२२ में महेश्वर मन्दिरका तथा संवत् १६२६ में कालेश्वर मन्दिरका जीर्णोद्धार किये जानेका उल्लेख है । इस तरह जैन सज्जनो-द्वारा जैनेतर मन्दिरोंकी सहायताका यह उदाहरण है । ]

[ इ० हि० का० १९४७ पृ० ३९२ ]

४८२

कुच्चांगि ( तुंकूर, मैसूर )

सन् १५७३, कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें कहा है कि नाल्कुवागिलु निवासी बोम्मिसेट्टिके पुत्र दानप्पने यह मूर्ति तथा प्रभावलि सन् १५७३में स्थापित की । ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४ ]

४८३

चित्तामूर ( द० अर्काट, मद्रास )

शक १५०० = सन् १५७८, कन्नड-तमिल-संस्कृत

[ यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके मानस्तम्भपर है । इस स्तम्भकी

स्थापना जगतापिगुत्ति निवासी वायिसेट्टिके पुत्र बुशोेट्टिने शक १५००, ह्युघान्य सवत्सरमें की ऐसा इसमें उल्लेख है । स्तम्भके दूसरी ओर सस्कृत भाषा और कन्नड लिपिमें इसी वर्णनका लेख है । इसमें बुशोेट्टिको महा-गागकुलका कहा गया है । ]

[ रि० सा० ए १९३७-३८ क्र० ५१७-१८ पृ० ५७-५८ ]

४८४

कारकल ( द० कन्नडा, मैसूर )

शक १(५)०१ = सन् १५८०, कन्नड

[ इस लेखकी तिथि कार्तिक शु० १, शक १(५)०१ है । प्रारम्भ प्रीमत्परमगम्भोर.....आदि श्लोकसे है । अन्य विवरण लुप्त हुआ है । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३७ पृ० ५२ ]

४८५

सेतु ( शिमोगा, मैसूर )

शक १५०५ = सन् १५७३, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशक वरुष १५०५ चित्रमानु-  
संवत्सरद भाद्रपद सुद्ध १० शुक्रवारदंडु करुरु नाड चैपल्लिय  
तिम्म गौडरु यिवल्लिय नायक्क गौडरु जट्टिगौडर मग सेट्टि-  
गौडरु आ समस्त श्रावकरु सह मुंतागि सेतुविन वसदि श्री  
आदितीर्थेश्वररिंगे माडिस्त लोहद

२ प्रभावलिगे आ समस्त जनगलिगे मगल महा श्री श्री श्री  
विरपयनु माडिदुदु

[ यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इस मूर्तिकी स्थापना भाद्रपद शु० १० शक १५०५ के दिन हुई थी । स्थापक चैपल्लि ग्रामके तिम्मगौड तथा यिवल्लि ग्रामके सेट्टिगौड थे । ]

[ ए० रि० मै० १९४४ पृ० १६७ ]

४८६

येडेहल्लि ( मैसूर )

शक १५०६ = सन् १५८४, कन्नड

- १ शुभमस्तु नमस्तुगशिरश्चुविचंद्रचामर (चार)वे
- २ त्रैलोक्यनगरारंममू(ल) स्तंभाय शमवे ॥ स्वस्ति श्री-
- ३ विजयाभ्युदय सासिवाहसकवरुष १५०६ नेय सद वर्तमान ।
- ४ तारण सं । आश्विजा शु १० मि आदिवारदलु श्रीमनु ।  
दानिवा-
- ५ सद चेन्नरायवडेर । मक्कलु चिक्कवीरप्पवाडेरु मक्कलु चेन्नवि-
- ६ रवाडेरु गेरसोप्पे समंतमद्रदेवर सिण्यरु गुणमद्रदेवरु सिण्य-
- ७ रु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेन्तेन्द्रे  
मालेपा(ल)
- ८ वन्दप्पन मग लिगण्णनु । नष्टसन्तनवा(गि)होद सम्मद ।  
आतन भू-
- ९ मि नागलपुरद ग्रामद वलगे तेंगिनहितलग्गे ख ६ कंडुग  
वंभ-
- १० तु वीजवरि । आ भूमि नम्म आरमनिगे हरवरियागि वन्द
- ११ सम्मद । यी वीरसेनदेवरिगे क्रैयावागि कोट्टेवागि आ भूमि-
- १२ गे सलुव क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरि-  
कल्पित उ-
- १३ भयवादिसप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्कं सलुव पियसाहेनिजग-
- १४ हि वरह ग ३२ अक्षरदलु मूवत्तु थेरहु वरहनु । तरविस उलि-
- १५ यद्रे । सले-साकल्यवागि सल्लिसि कोण्डेवागि । आ भूमिगे  
सलुव चत्तु-
- १६ सीमेय विवर । मूडलु । ई गद्देय नीरर्परकल आगलिंदं पडुलु

१७ तेकलु केरेपरियिदं ब(ड)गलु ॥ पडुवलु गुरुवप्प हेबरुवन तो-  
 १८ टटिदं मूडलु । बडगलु हानम्बियिदं तेंकलु । यिंती चतुस्सि-  
 १९ मेव्रलगुल्ल । निधि । निक्षेपजल । पासण अक्षीणि । आगमि ।  
 सिद्धसा-

२० ध्यंगलेंव । अष्टाभोग तेजसाम्यवन्नु नीउ निम्म शिष्यरु पा-  
 २१ र्म्पर्यवागि सुखटिं वोगिसि बहिरि यन्दं वरसि कोट क्रय शा-  
 २२ सन पटे यिट्ठे अबिलासे विटवरु देवलोक मर्त्यलोकके विर-  
 २३ हितरु । श्रीहत्य । गोहत्यक्क वजिनरहरु । विरपव-  
 २४ डेरु श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

[ यह लेख आश्विन शु० १०, रविवार, शक १५०६, तारण संवत्सरके दिन लिखा है । इसमें दानिवासके शासक चेन्नरायके पौत्र तथा चिक्क-  
 वीरप्पके पुत्र चेंनवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी  
 जानेका उल्लेख है । वीरसेनके गुरु गुणभद्र तथा प्रगुरु समंतभद्र थे ।  
 उन्होंने ३२ वराह मूल्य देकर यह भूमि खरीदी थी जो पहले भालेपाल  
 वन्दप्पके पुत्र लिंगणकी थी और उसके सन्तानरहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे  
 राजाधीन हुई थी । यह भूमि नागलापुर गाँवके क्षेत्रमें थी । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०४ ]

४८७

येडेहल्लि ( मैसूर )

शक १५०७ = सन् १५८५, कन्नड

- १ सुभमस्तु । नमस्तुंगशिरश्चुविचद्रचामरचा-
- २ रवे त्रैलोक्यनगरारंभमूलस्तमाय शभवे (१) म्व-
- ३ स्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुप १५०७
- ४ संदं वर्तमान पार्थिवरावत्सरद चयित्र व ७ मि आदि-

- ५ वारदलु श्रीमत्तु । दानिवासद चेन्नरायवोडेयर म-  
 ६ कलु । चिक्कवीरप्पवोडेयर मक्कलु । चेन्नवीरप्पोडेयरु । गेरसो-  
 ७ प्पे समंतमद्रदेवर सिप्यरु । गुणमद्रदेवर सिप्य-  
 ८ वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेत्ते-  
 ९ दरे । वालेपाल तम्मयन मग नरसप्पनु नष्टसं-  
 १० तानवागि होद सम्मद आतन भूमि थीचलदाल ग्रामदलि ।  
 ११ एण्टु खण्डुग विजवरि भूमि नम्म अरमनिगे हरवरियागि  
 १२ वन्द सम्मंद आ भूमिनु दानिवासद चेन्नरायवोडेय-  
 १३ र मक्कलु । चिक्कवीरवोडेयर मक्कलु चेन्नवीरवोडेयरु ।  
 १४ गेरसोप्पेय समंतमद्रदेवर शिप्यरु गुणमद्रदेवर शिप्यरु  
 १५ वीरसेनदेवरिगे । क्रयवागि कोटवागि । आ भूमिगे । सलुव । क्र-  
 १६ यद्रय्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरिकल्पित उभे-  
 १७ यवाटिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव प्रिय-  
 १८ सूहे । निजगति वरह गद्याण ग ३० अक्षरदलु सू-  
 १९ वत्तु वरहंनु तारविस उलियदे सल्लिसि कोण्डेवागि । आ एण्टु  
 २० खण्डुग भूमिगे मलुव चतुसीमेय विवर मूडलु नन्दिगाव ।  
 २१ तिम्मरसैयन गट्टेयिंदलु पडुवलु । पडुवलु नरसोपुरदं-  
 २२ हलदिं वलु(?) मूडलु । वडगलु दरेयिंदलु । तेंकलु । तें-  
 २३ कलु अरमनेगट्टेयिंदलु वडगलु । यिति चतुमीमेयोलगु-  
 २४ ल निवि निक्षेप जल पापाण अक्षीणि आगमि सिध साध्यंगलेव  
 २५ अष्टमोग नेजसाम्यवनु भागुमाट्टिकोण्डु निवु निम्म शिप्य-  
 २६ र पारम्परैयागि आचट्टार्कस्तायियागि सुसदिं भोगिसि  
 २७ ग्रहिरि येंटुवरसि कोट क्रयस्यासनपटे यिदक्के अमिला-  
 २८ मे यटवरु देवलोक मर्त्यलोकक्के विरहितरु । श्रीहत्य  
 २९ गोहत्यक्के यजनरह्म चेन्नवीरवोडेयरु श्री  
 ३० श्री श्री श्री

[ यह लेख चैत्र व० ७, रविवार, शक १५०७, पार्थिव सवत्सरके दिन लिखा है। इसमें दानिवासके शासक चैन्नवीरप्प वोडेयर-द्वारा गेर-सोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है। इस भूमिके लिए ३० वराह कीमत दी गयी थी। यह पहले वालेपाल तम्मयके पुत्र नरसप्प-की थी जो पुत्ररहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाधीन हुई थी। भूमि योचल-दाल ग्रामके क्षेत्रमें थी। ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०८ ]

४८८

### चिक्कहनसोगे ( मैसूर )

सन् १५८५, कन्नड

[ यह लेख आदिनाथवसदिके गोमुखपर है। चारुकीर्ति पण्डितदेवके शिष्य तथा ब्राह्मणप्रमुख चिवकणय्यके पुत्र पण्डितय्य द्वारा आदीश्वर, चन्द्र-नाथ तथा शान्तीश्वरकी मूर्तियोंकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। समय सन् १५८५ है। ]

[ ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५१ ]

४८९

### येडेहस्ति ( मैसूर )

शक १५०९ = सन् १५८७, कन्नड

- १ सुभमस्तु । नमस्तुगशिरश्चुविचंद्रचामर-
- २ चारवे त्रैलोक्यनगरारभमू(ल)स्तंभाय शंभवे ।
- ३ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहन शक वरुष १५०९
- ४ नेय संद वतमान । सर्वजित्तु स । वयिशाक शु ५ मि
- ५ यु आदिवारदल्लु श्रीमत्तु । दानिवासद चेन्नरा-



६ यवडेर मकलु । विक्कवीरप्पवाडेर मक्कलु चेन्नविरवा-

७ डेरु । गेरसोप्पे समंतमद्रदेवर शिष्यरु । गुणमद्रदेव-

८ र सिष्यरु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रम-

९ वेतेदरे नालपुरद ग्रामदोलगे सकण्णन मग मल-

१० यन ढोक्किन कोड्डुगे विजवरि ख १० हत्तु खण्डुग भूमि

११ यु । सलविट्टु नम्म आरमनिगे हरवरियागि भंद सं-

१२ मद्र । यी वीरसेनदेवरिगे त्रेयक्के कोटेवागि । आ भूमिगे सलु-

१३ व क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित । तत्कालोचितमध्यस्तपरिकल्पित

१४ उमयवाटिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव प्रियसू-

१५ हे । निजगटि वरह ग ४० अक्षरदलु नात्वत्तु वरहनु । तर

१६ विस उलियदे साक्कयवागि । सलिसि कोण्डेवागि आ भूमिगे

सलु-

१७ व चनुसिमेय विवर । मुडलु यिगडेय नीरेरकलगलि-

१८ द पडुवलु । वडगलु केरेयेरियिदं तेंकलु तेंकलू नं-

१९ म गहेरियिदं वडगलु । यिती चतुरसोमेयोलगुल नि-

२० धि निक्षेप जल पासण अक्षीणि आगमि सिध सांध्यंग-

२१ लेव आष्टभोग तेजसाम्यवंनु निटनिम्म शि-

२२ ष्यरु पारम्परियवागि सुखदिं वागिसि बहिरि

२३ येदु वरपि कोट क्रयशासनपटे । यिदक्के अविळा(पे) वटवरु दे-

२४ वलोक मत्थ्यलोकक्के विरहितरु श्रीहत्थ गोहत्थक्के वजनरह-

२५ रु । चेन्नवीरवडेर श्री श्री श्री श्री श्री

[ यह लेख वैशाख शु० ५, रविवार, शक १५०९ सर्वजित संवत्सर  
इम तिथिका है । दानिवासके शामक चेन्नवीरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके  
वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका इममें उल्लेख है । नालपुर ग्रामकी  
यह भूमि ४० बराह कीमत देकर खरीदी गयी थी । ]

[ ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११० ]

४६०

रत्नत्रयवसदि वीलिंगि, ( उत्तर कनडा, मैसूर )

१६वीं सदी ( सन् १५८७ )

[ इस लेखमें मूलसघ-देसिगण-पुस्तकगच्छके श्रवणवेलगुल मठके चारु-कीर्ति पण्डितका उल्लेख किया है। इन्हे रायराजगुरु, मण्डलाचार्य, वल्लाल-रायजीवरक्षापालक आदि उपाधियाँ प्राप्त थी। इनकी परम्परामे श्रुतकीर्ति पण्डित हुए। इनकी शिष्यपरम्परा इस प्रकार थी—श्रुतकीर्ति—विजयकीर्ति—श्रुतकीर्ति ( द्वितीय )—विजयकीर्ति ( द्वितीय ) अकलक—विजयकीर्ति ( तृतीय )—अकलक ( द्वितीय )—भट्टाकलक। भट्टाकलकदेवका समय शक १५१० = सन् १५८७ दिया है। सगीतपुरका लोकप्रयुक्त नाम हाडुवल्लि है। यहाँके राजा इन्द्रभूपालको विजयकीर्ति ( प्रथम ) की कृपासे सिंहासन प्राप्त हुआ ऐसा कहा गया है। विजयकीर्ति ( द्वितीय ) की प्रेरणासे पश्चिम समुद्र तटपर भट्टकल नगरकी स्थापना हुई थी। ]

[ ए० ड० २८ पृ० २९२ ]

४६१

जि० दक्षिण कनडा ( स्थान नाम अज्ञात )

शक १५१३ = सन् १५६१, कन्नड

[ यह ताम्रपत्र शक १५१३ खर मवत्सरमे किन्निरा भूपालने दिया था। इसमें एक जैन मन्दिरके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है। ]

( इ० म० दक्षिण कनडा २ )

४६२-४६३

रायवाग ( मैसूर )

शक १५१९ = सन् १५९७, संस्कृत-कन्नड

[ ये दो लेख स्थानीय आदिनाथमन्दिरके दो स्तम्भोपर हैं - एक कन्नडमें है तथा दूसरा उसीका संस्कृत रूपान्तर है । इसमें ज्येष्ठ व० १४, शक १५१९ के दिन मूलसघ-सेनगणके सोमसेन भट्टारक-द्वारा इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५२-५३ पृ० ३३ ]

४६४-४६५

मारूरु ( दक्षिण कन्नडा, मैसूर )

शक १५२० = सन् १५९८, कन्नड

[ ये दो लेख हैं । मारूरुके पार्श्वनाथवसतिमे स्थित तीर्थकरमूर्तियोंकी पूजाके लिए पार्श्वदेवो विन्नाणि-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका इनमें उल्लेख है । पहला लेख चैत्र शु० ३, सोमवार, शक १५२० का है तथा दूसरा लेख पौष शु० २ गुरुवार, शक १५२० का है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ७४-७५ ]

४९६-४९७

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

संस्कृत-ग्रन्थ, १६वीं सदी

[ यह लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है । पुष्पसेन योगीन्द्रके गुरु समन्त-भद्रकी अक्षय कीर्तिका इसमें वर्णन है ।

यहींके एक अन्य लेखमें मुनिभद्रस्वामीका नामोल्लेख किया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३४, १४५ ]

४६८

हुमच ( मैसूर )

१६वीं सदी, कन्नड

१ श्रीवोम्मरसनू रूपवतिदिदन्

[ यह लेख पार्श्वनाथवसदिमें स्थित क्षेत्रपालमूर्तिके पादपीठपर १६वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें मूर्तिके निर्माताका नाम वोम्मरस दिया है । ]

[ ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७ ]

४६९

सेतु ( शिमोगा, मैसूर )

१६वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीगुम्मैय सेट्टियर बस्तिय श्रीवर्धमानस्वामिय संनिधानटल्लि गणपणसेट्टियर मग संघय्यसेट्टियरु तमगे पुण्यार्त्वागि प्रतिष्ठे माडिसिद अभिनन्दनतीर्थेइवरनिगे मं-

२ गल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[ इस लेखमें सघय्य सेट्टि-द्वारा अभिनन्दन तीर्थकरकी इस प्रतिमा की स्थापनाका निर्देश है । इस समय गुम्मैयसेट्टिकी बसतिके वर्धमान-स्वामी उपस्थित थे । लिपि १६वीं सदीकी प्रतीत होती है । ]

[ ए० रि० मै० १९४४ पृ० १६६ ]

५००-५०१

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

१६वीं सदी, तमिल

[ इस लेखमें एक पद्यमें कोण्डैमलै निवासी गुणवद्विरमुनिवन् ( गुण-भद्रमुनि ) की प्रशंसा की गयी है, जो दक्षिणप्रदेशमें तमिल और सस्कृतके

सुप्रसिद्ध विद्वान् थे । लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है तथा चन्द्रनाथमन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है । मन्दिरके मण्डपकी दीवालपर खुदे एक अन्य लेखमें इन्ही आचार्यको वीरसघप्रतिष्ठाचार्य यह विगेषण दिया है ।

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र०, ३०२ पृ० ६५ ]

५०२

सौदा ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १५३० = सन् १६०७, कन्नड

पहली ओर

- १ श्री (१) स्वस्ति (१) श्रीजयाभ्युदय शालिवाह-
- २ नशकवरुष १५३० नेय प्लवंगसंवत्सर-
- ३ द कार्तिक शु १० बुधवारदलि श्रीमद् राय-

दूसरी ओर

- ४ (राजगुरुम्) डलाचार्य महावाद-
- ५ (त्रादीश्वर रा) यवादिपितामह सकलविद्वज्ज-
- ६ (नचक्रवर्ति व) ह्यलारायनीवरक्षापा-

तीसरी ओर

- ७ लक देशगणाग्रगण्य संगीतपुरसिंहा (सन)-
- ८ पट्टाचार्य श्रीमदकलंकदेवरुगलु
- ९ श्रीपंचगुरुचरणस्मरणियिद स्वर्गस्थरा-

चौथी ओर

- १० (दरु) (१) अवर निपिधिमंटपके मगल महाश्री (१)
- ११ मट्टाकलंकदेवेन स्याद्वादन्यायवादिना(१)

निपि-

- १२ धीमटपो दृध स्थेयादाचंद्रमा (स्क) रं (॥)

[ इस लेखमें देशिगणके प्रमुख सगीतपुरके पट्टाचार्य अकलकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शू० १० शक १५३० के दिन हुआ था । उनकी यह निपिबि उनके शिष्य भट्टाकलकदेव-द्वारा स्थापित की गयी थी । ]

[ ए० ड० २८ पृ० २९२ ]

५०३

करन्दे ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १५४१ = सन् १६१९

[ यह लेख विजयनगरके महामण्डलेश्वर रामदेव महारायके समय शक १५४१, कालयुक्ति, चैत्र ३ के दिन लिखा गया था । बाल नागम नायक और तलत्तार् लोगो-द्वारा कयिलायप्पुलवर् ( नामक जैन विद्वान् ) को कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३७ ]

५०४

मूडविदुरे ( मैसूर )

शक १५४४ = सन् १६२२, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें निर्देश है कि सेनगणके समन्तभद्रदेवने इक्केरिमें केलडि वेंकटप्प नायकसे मिलकर तथा उसके अधीन अधिकारी चिन्नभडार देवप्पसे साहाय्य पाकर विदुरे नगरकी त्रिभुवनतिलक बसतिका जीर्णोद्धार कराया । तिथि-वैशाख, शक १५४४, सधिमोद्गारी संवत्सर । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ४ ]

५०५

कलकत्ता ( नाहर म्युजियम )

शक १५४८ = सन् १६२६, कन्नड

१ सक १५४८ श्रीमूलसघ भट्टारक

२ श्रीधर्मचन्द्रोपदेशात् प्रणम

३ श्रीमतिवीर

[ यह लेख पीतलकी चौबीसतीर्थंकरमूर्तिके पादपीठ पर है । मूलसघके धर्मचन्द्र भट्टारकके उपदेशसे श्रीमतिवीर-द्वारा इस प्रतिमाकी स्थापना शक १५४८ मे की गयी थी । लिपिसे पता चलता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमे निर्मित है । ]

[ ए० रि० मै० १९४१ पृ० २४९ ]

५०६

कोलारस ( शिवपुरी, मध्यप्रदेश )

सवत् १६८४ = सन् १६२८, हिन्दी-नागरी

[ इस लेखमे शाहजहाँके अधीन शासक अमरसिंहके समयमें एक जैन चैत्यालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । तिथि आषाढ शु० ९, गुरुवार, सवत् १६०॥८४ इस प्रकार दी है । ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २४१ पृ० ४८ ]

५०७

मूडविदुरे ( मैसूर )

शक १५५४ = सन् १६३२, कन्नड

[ इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि विदुरेके दो विभाग वेदुकेरी तथा मारलंगडिकेरीमें रहनेवाले श्रावक पहले दीवालीका त्यौहार मनाते वक्त

एक दूसरोसे पत्थर, लाठी आदिसे लडते थे । सेनगणके समन्तभद्रदेवने उन्हे इस कार्यसे रोककर दीपाराधना और अन्य पूजाओसे यह त्यौहार मनानेका आदेश दिया । तदनुसार देवण तथा अन्य शिष्योके प्रभावसे उसका पालन भी कराया । तिथि-दीपावली, आगिरस सवत्सर, शक १५५४ । ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ ऋ० ए० ४ पृ० २३ ]

५०८

### मूडविदुरे ( मैसूर )

शक १५६२ = सन् १६४१, कन्नड

[ इस ताम्रपत्र-लेखकी तिथि शक १५६२ विक्रम, मार्गशिर कृ० २ शुक्रवार, ऐसी है । मगलूर तथा वारकूरके शासक केलडि वीरभद्र नायकके समयका यह लेख है । पुत्तिगे निवासी चौटवशके चिक्कराय ओडेयद्वारा अभिनव चारुकोति पण्डितदेव तथा मूडविदुरेके अन्य श्रेष्ठियोको संरक्षणका आश्वासन दिये जानेका इसमें निर्देश है । इसके पूर्व अधिकारियोद्वारा धार्मिक तथा वैयक्तिक सम्पत्तिका अपहरण किया गया था अत यह आश्वासन जरूरी हुआ था । ]

[ रि० मा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ८ ]

५०९-५१०

### शिवपुरी ( मध्यप्रदेश )

संवत् १७०२ = सन् १६४७, हिन्दी-नागरी

[ इस लेखमें महाराज संग्रामके पोतदार जैन मोहनदासद्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । यहीके एक अन्य लेखमें गगादास और गिरधर-



दास-द्वारा मालवदेशस्थित शिवपुरी ग्राममें एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। प्रथम लेखकी तिथि वैशाख शु० ३, शक १५६८, संवत् १७०३ ऐसी दी है। ]

[ रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २५०-५२ पृ० ४८-४९ ]

५११

सौदा ( उत्तर कनडा, मैसूर )

शक १५७७ = सन् १६५५, कन्नड

- १ स्वस्ति (१) श्रीजयाभ्यु(द)य शालिवाहनसकव(र्ष)
- २ १५७७ जय सं(वत्सर)द कार्तिक सुध दशमि
- ३ सू(यो)दयवाद यरडने वल्लिगेय-
- ४ विलि ड्रेसि श्रीमद् रायराजगुरु मंड-
- ५ लाचार्यरुं महावादवादीश्वर रा-
- ६ यवादिपितामह सकलविद्वज्जनच-
- ७ (क्र) वतिंग(लुं) वल्लालरायजीवरक्षापा-
- ८ लकरुमप्प श्रीमद् भट्टाकलंकजीय्य(दे)-
- ९ वरु
- १० (श्री)पंचगुरुचरणस्मर(जेयिंद)
- ११ चतुसघ(समक्ष) दल्लि स्व-
- १२ गंवनेदिदरु (१) इं-
- १३ ती श्री श्री श्री (ii)

[ इस लेखमें देमिगणके श्रीमद् भट्टाकलंकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक शु० १० शक १५७७ के दिन हुआ था। उनकी समाधि पर यह लेख है। ]

[ ए० इ० २८ पृ० २९२ ]

५१२

टोडा रायसिंह ( जयपुर, राजस्थान )

संवत् १७१८ = सन् १६६२, संस्कृत-नागरी

[ इस लेखमे अम्बावतीके कछवाह वंशके राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदाम-द्वारा विमलनाथ मन्दिरके निर्माणका वर्णन है। तिथि फाल्गुन व० १०, बुधवार, मवत् १७१८ ऐसी दी है। उस समय मुगल बादशाह शाहजहाँका राज्य चल रहा था। ]

[ रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१४ पृ० ६९ ]

५१३

श्रीरंगपट्टम् ( मैसूर )

सन् १६६६, कन्नड

[ यहाँके आदीश्वरमन्दिरमें सन् १६६६ का एक लेख है। इसमे चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य पायण्ण-द्वारा अष्टाह्निकामहोत्सवके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। ] -

[ ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५६ ]

५१४

मुल्लगुन्द ( वारवाड, मैसूर )

शक १५९७ = सन् १६७५, कन्नड

[ यह लेख भाद्रपद व० ५, रविवार, शक १५९७ राक्षस संवत्सर-का है। इसमें नागभूपकी पत्नी वनदाम्बिके द्वारा अर्हत् आदिनाथकी मूर्तिकी पुन स्थापनाका वर्णन है। यह मूर्ति मुसलमानो-द्वारा भ्रष्ट की गयी थी। ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९३ पृ० ८ ]

५१५

बेल्लूर ( मैसूर )

शक १६०२ = सन् १६८०, कन्नड

- १ ॥ शुभमस्तु ॥ नमस्तुगशिरश्चुम्बिचंद्रचामर-  
 २ चारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्तंभाय शम्भ-  
 ३ वे ॥ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुषंग-  
 ४ लु १६०२ ने खुद्रि स । भाद्रपद व १० ल्लु दिल्लीकोला-  
 पुरजि-  
 ५ नकचिपेनुगोंडेसिंहासनद समंतमद्रस्वामिगल शि-  
 ६ प्यराद वीरसेनभट्टारकरवर प्रियशिष्यराद लक्ष्मीसेनम-  
 ७ ट्टारकरवरिगे आत्रेयगात्रद आपस्तंभसूत्रद य-  
 ८ लु शारवाद्यायिगलाद श्रीमन्महाराजश्रीहरति सम्मेटरंग-  
 ९ प्पराजरवर पौत्रराद कृष्णप्पराजरवर पुत्रराद राय  
 १० प्पराजरवर रत्नगिरिवस्ति देवस्थानदल्लि यी जिनेश्वर-  
 स्वामिप्रतिष्ठा-  
 ११ कालदल्लि दारागृहीतवागि कोट्ट भूदानद दर्मशासनदान-  
 १२ पट्टे क्रम वेंतेंदरे  
 ( पक्ति ३ से १२ तकका पाठ पंक्ति २६ तक दो बार  
 दाहराया है । )  
 २७ क्रम वेंतेंदरे यी रत्नगिरि स्थलदल्लि अनादियागियिहंथाव-  
 २८ स्ति देवस्थानदल्लि जिनेश्वरस्वामिगे आराधने नडेयदे यिहं-

## पिछला भाग

- २६ थादरल्लि नीवु मत सरक्षण्यकर्तरागि बुद्भविसिदथा यो—  
 ३० गनिष्ठरादरिंद यी देवस्थानवनू पुनः जीर्णोद्धारव माडि  
 ३१ सप्रोक्षणे प्रतिष्ठेयन् माडि देवता नित्य चैभववु सार्व-  
 ३२ कालवु नडदु आ सुकृत नमगु वुंतागुव रीतिगे नडसिधिरागि  
 ३३ अदु निमित्य आ महोत्सवाकालदलि निगमे नम्म सिरैहद सीमे-  
 ३४ योलगण संते दोड्डेरि होवलि गूडिद वडुवन हल्लिस्थ-  
 ३५ लदोलगण आपिनहल्लियन् सहिरण्योदकदानधारा-  
 ३६ गृहीतवागि त्रिवाचवु त्रिकरणयुक्तवागि धारेयने-  
 ३७ रदु कोट्टेवागि आ ग्रामके सलुवंता यरेनेल कॅनेलका-  
 ३८ डारम्म नीरारम्म अणे अच्चुकट्टु यात कपिले गूडेगू-  
 ३९ यिलु केरे कुंटे कालुवे मोदलागि आ ग्रामके सलुवंता परिस्तरण-  
 ४० डोलगागि वुत्पत्ति आदता सकल सुवर्णाढाय सकलमत्ता-  
 ४१ दायवन् निम्म सिष्यपारम्पर्यवु अनुभविसि कोडुसु-  
 ४२ खदल्लि यिहुट्टेदु वरसि कोट्ट टानपट्टे । स्वदत्ताद्वि-  
 ४३ गुण पुण्य परदत्तानुपालन । परदत्तापहारण  
 ४४ स्वदत्त निष्फल भवेत् ॥ श्रीरामा

[ इस दानपत्रकी तिथि भाद्रपद कृ० १०, शक १६०२ रौद्रि सवत्सर, ऐसी है : इसमें रगप्पराजके पौत्र तथा कृष्णप्पराजके पुत्र रायप्पराज-द्वारा लक्ष्मीसेन भट्टारकको रत्नगिरिवस्तिके लिए आपिनहल्लि नामक ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । लक्ष्मीसेनको दिल्ली, कोल्लापुर, जिनकचि तथा पेनुगोडे के सिंहासनाधीश कहा है । वे समतभद्र स्वामीके प्रशिष्य तथा वीरसेन भट्टारकके शिष्य थे । दानदाता रायप्प राजा हरति नगरके प्रमुख थे । उन्हें आत्रेय गोत्रके आपस्तवसूत्रानुयायी कहा है ।

५१६

चेल्लूर ( मैसूर )

कन्नड ( सन् १६८० )

[ यह लेख विमलनाथमूर्तिके पादपीठपर है। पद्मकुलके शर्कर-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी। यह हूलिकल निवासी था तथा समन्तभद्रा-चार्य के शिष्य लक्ष्मीसेनाचार्यका शिष्य था। समय लगभग सन् १६८० का है। ]

[ ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८ ]

५१७-५१८

पोन्नूर ( उ० अर्काट, मद्रास )

शक १६५५ = सन् १७३३, तमिल

[ स्थानीय जिनमन्दिरके छतमे लगे स्तम्भपर यह लेख है। तिथि वैशाख २७, प्रमादी संवत्सर, शक १६५५, कलिवर्ष ४८३४ यह है। इसमें कहा है कि स्वर्णपुर-कनकगिरिके जैन हेलाचार्यकी साप्ताहिक पूजाके लिए प्रति रविवारको पार्श्वनाथ तथा ज्वालामालिनीकी मूर्तियाँ नीलगिरिपर्वतपर ले जाते हैं। यहीके अन्य लेखमे पार्श्वनाथकी स्तुतिमे कुछ मन्त्र लिखे हैं। ]

[ रि० मा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१६-१८ पृ० ४० ]

मूललेख

- १ स्वस्ति श्री शालिवाहनशकाब्द १६५५ कल्यब्दः ४८३४ ककु  
मेळ् चेल्ला निपरा प्रमवाडि ग ( श ) काब्द वरुषं ४६ ककु  
प्रमादिच वरुषं वैशाखिमासं १७ ( उ ) एलुदिय शामनमावट्टु ( १ )  
स्वस्ति श्रीस्व ( र्ण ) पु ( र ) कनकगिरि आदीश्वरस्वामिचैत्थालय  
सम्बन्दमान वायुमूलैयिलि-

२ रुक्कुं नीलगिरि हेलाचार्यपाठपूजै आदिवारत्तन् तोरुम् मेर्पाडि  
आलयत्तिन् श्रीपाश्वर्वाथस्वामियुं ज्वालामा (लि) निश्चम्मणैयुं  
मेर्पाडि स्वर्णपुरजैनगल् एडुत्तुकोण्डु पोय् पूजिप्पट्टु (१) इन्द  
शासनमनन्तसेनदेव (नाले ) लुम्पट्टु (११)

[ ए० इ० २९ पृ० २०२ ]

५१६

करन्दै ( उत्तर अर्काट, मद्रास )

शक १६६९ = सन् १७४८, तमिल

[ यह लेख ज्येष्ठ शु० ५, गुरुवार, शक १६६९ को लिखा गया था ।  
मुनिगिरि स्थित कुन्थुनाथस्वामीके मन्दिरके गोपुरका जीर्णोद्धार अगस्तियप्प  
नायिनार्ने किया ऐसा इसमें कहा गया है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३६ ]

५२०

मूडविदुरे ( मैसूर )

शक १६७६ = सन् १७५७, कन्नड

[ विद्यानगर ( विजयनगर ) के राजा विजय सदाशिव महारायके  
अधीन सोदे प्रदेशके शासक अरसप्पोडेयके पुत्र इम्मडि अरसप्पोडेयने  
वेण्णगावे ग्रामकी कुछ जमीन अपने गुरु चारुकीति पण्डितदेवको अर्पित की  
ऐसा इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है । तिथि-मार्गशिर शु १ शक १६७९, राक्षस  
सवत्सर । ]

[ रि सा ए १९४०-४१ पृ २४ क्र ए ६ ]

५२१

वालूर ( वारवाड, मँमूर )

शक १(६) ८२ = सन् १७६३, कन्नड

[ जैन मन्दिरके सन्मुख दीपमाला न्तम्भपर यह लेख है । देवण और उसके पुत्रोका इममे उल्लेख है । तिथि कार्तिक शु. १०, सोमवार, विक्रम, शक १६८५ ऐसी दी है । ]

[ रि इ ए १९४५-४६ क्र २१३ ]

५२२

तिलिवह्लि ( वारवाड, मँमूर )

१८वीं सदी, कन्नड

[ इस निसिधि लेखमें वैशाख शु ५ सोमवार, स्वर्भानु मंत्रत्सरके दिन पुजारी पेवयके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि इ ए. १९४५-४६ क्र २५३ ]

५२३

काकन ( जि० मोघीर, विहार )

संवत् १८२२ = सन् १७६६, संस्कृत - नागरी

जैन मन्दिरमें चरणपादुकाओंके चारों ओर

[ इस लेखमे काकन्दीके जैन मघ-द्वारा संवत् १८२२ वैशाख शु० ६ को जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा सुविधिनाथके चरणोकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ३ ]

५२४

मैसूर

कन्नड

शान्तीश्वर वसतिमें दीपस्तम्भोंपर

[ इस लेखमें चामराजकी रानी देवीरम्मणि-द्वारा उक्त दीपस्तम्भ शान्तीश्वर वसतिको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । ये चामराज मैसूरके राजा चामराज वोडेयर ( नवम ) ( सन् १७७६-९६ ) होंगे । ]

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२ ]

५२५

मैसूर

कन्नड

उपर्युक्त वसतिमें चार कलशोंपर

[ इस लेखमें उपर्युक्त रानी देवीरम्मणि-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेकके लिए इन चार कलशोंके दानका निर्देश है । ]

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२ ]

५२६-५२७

नरसिंहराजपुर ( मैसूर )

- सन् १७७८-७९, कन्नड

[ यहाँके दो लेख सन् १७७८ तथा १७७९ के हैं । पहलेमें वियग वरमैयके पुत्र नागप्प-जो काम्बोदि वैश्य था तथा निर्घण्डेवृक्षसघका था -



द्वारा एक मण्डपकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमे इसी व्यक्ति-द्वारा मूर्तिका पादपीठ अर्पित करनेका उल्लेख है। रविवारव्रतकी समाप्तिपर यह दान दिये गये थे। ]

[ ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४ ]

५२८

मैसूर

शक १७३६ = सन् १८१४, कन्नड

शान्तीश्वर वसति-गर्मगृहके द्वारके पीतलके आवरणपर

[ इस लेखमे दानिकार पद्मैयके पुत्र नागैय-द्वारा ३९ $\frac{१}{२}$  ( सेर ) वजनके इस पीतलके गन्धकुटी ( द्वार ) के आवरण दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान आश्विन शु० १, शक १७३६, भाव संवत्सरके दिन दिया गया था। ]

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२ ]

५२९

मैसूर

( शक १७३६ = सन् १८१४ ) संस्कृत-कन्नड

शान्तीश्वर वसति-सुखनासि द्वारके आवरणपर

श्रीमच्छातिजिनेन्द्रस्य पञ्चकल्याणसपद ।

श्रिया मेरुजिनागारं हसतश्चैक्यवेश्मनः ॥१॥

पराधर्यरचनोपेतं कवाटमिदमद्भुतं ।

कारयामास सद्मक्त्या श्रावको जैनमार्गतः ॥२॥

नागनामा पितु स्वस्य मरिनागाह्वयस्य च ।

धनिकारपदाढ्यस्य स्वमोक्षसुखलब्धये ॥३॥

[ इन लेखमें निर्देश किया है कि प्रस्तुत द्वारका निर्माण घनिकार मरिनागके पुत्र नाग-द्वारा किया गया । इस लेखमें समयनिर्देश नहीं है किन्तु पिछले लेखका ही समय इसका भी होगा ऐसा अनुमान होता है । ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०३ ]

५३०

मैसूर

शक १७५४ = सन् १८३२, संस्कृत-कन्नड

अनन्ततीर्थकरकी मूर्ति - शान्तीश्वर वसति

- १ श्रीमत्कश्यपगोत्रजो जिनपदामोजं लसं षट्पद. क्षात्रीयोत्तम-  
देवराजनृपति सद्धर्म-
- २ पत्न्या सह ( । ) केषम्मण्यभिधानया व्रतयुजा स्वर्गापवर्गप्रदं  
कृत्वानतव्रतं तदा-
- ३ रचितवान् विवं मुदैतच्छुभ ॥ अत्रुर्धोन्द्रियशैलेंदु-प्रमितेस्मिन्  
शकाब्दके ।
- ४ नन्दने वत्सरे भाद्रमासे शुक्लाष्टमीतिथौ । अनतनाथविंशस्य  
प्रतिष्ठां जग-
- ५ दुत्तरां ( । ) कारयामास पूर्वोक्तदेवराजनृपोत्तमः ॥

[ इस लेखमें कश्यप गोत्रके उत्तम क्षत्रिय राजा देवराज तथा उनकी धर्मपत्नी केषम्मणि-द्वारा अनन्तव्रतकी पूर्णताका उल्लेख है । उक्त दम्पतिने इस अवसरपर भाद्र शुक्ल अष्टमी, शक १७५४, नन्दन सवत्सर,के दिन अनन्तनाथकी यह मूर्ति स्थापित की । इस समय मैसूरमें कृष्णराज वडेयर ( तृतीय ) का राज्य चल रहा था । अतः लेखोक्त देवराज नृपति मैसूरकी अरसु जातिके प्रमुखोंमें-से एक थे ऐसा अनुमान होता है । ]

( ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०१ )

५३१

हले हुव्वलि ( जि० धारवाड, मैसूर )

शक १७८४ = सन् १८६२, कन्नड

[ यह लेख शक १७८४ का है । कहा गया है कि इस वर्ष एक नया जगट बनवाया गया । यह उस पुराने जगटसे बनवाया था जो यहाँके अनन्तनाथवसदिमे पिछले ११०० वर्षोंसे था । ]

[ रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३५ पृ० २५७ ]

५३२

चित्तामूर ( द० अर्काट, मद्रास )

शक १७८७ = सन् १८६५, सस्कृत-ग्रन्थ

[ यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके गोपुरकी दीवालपर है । इस गोपुरका निर्माण अभिनव आदिसेन भट्टारकने सार्वजनिक सहायतासे किया ऐसा उल्लेख है । तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, शुक्रवार, शक १७८७ क्रोधन संवत्सर ऐमी दी है । इसी दीवालपर एक अन्य लेखमे जिनालयनिर्माणसे प्राप्त पुण्यकी प्राप्त पुण्यकी प्रशंसाके कुछ श्लोक हैं । ]

[ रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५१९-२० पृ० ५८ ]

५३३

मैसूर

१६वीं सदी, कन्नड

शान्तीश्वर वसतिमें सर्वाण्ह यक्षकी मूर्तिके पादपीठपर

इस लेखमे मरिनागैय नामक व्यक्ति-द्वारा महिसूरके शान्तीश्वर वसतिमें सर्वाण्हयक्षकी मूर्तिके पादपीठपर पीतलका आवरण लगानेका

उल्लेख किया है। मरिनागैय दनिकार पद्मैयका पुत्र था। लिपि १९वीं सदीकी है।

[ मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित ]

[ ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०० ]

५३४

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें घण्टापर

[ इस लेखमें शिरसैयके छोटे भाई पुट्टैय-द्वारा इस घण्टेके दानका उल्लेख है। लिपि १९वीं सदीकी है।

( मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित )

[ उपर्युक्त पृ० १०० ]

५३५

मत्तावार ( मैसूर )

१९ वीं सदी, कन्नड

मत्तवूर बस्ति पार्श्वनाथस्वामिचैत्यालयक्के

ऐवर अबणनुव

[ यह लेख एक घण्टेपर खुदा है। ऐवर अबण-द्वारा यह घण्टा मत्तवूरके पार्श्वनाथस्वामी चैत्यालयमें अर्पण किया गया था। लिपि १९वीं सदीकी है। ]

[ ए० रि० मै० १९३२ पृ० १७५ ]

५३६

कञ्जुपतिपाडु ( नेलोर, आन्ध्र )

तमिल

[ इस लेखमें करिकालचोल जिनमन्दिरके लिए मतिसागरदेवके उपदेशसे प्रमलदेवी-द्वारा सीढियां बनवानेका निर्देश है । यह लेख सम्राट् राजराजदेवके ३७वें वर्षका है ।

नोट—चोल राजराज नामक किसी भी राजाका राज्य ३७ वर्षकी दीर्घ सीमा तक नहीं पाया जाता । अतः इस लेखकी तिथि गलत प्रतीत होती है । ]

( इ० म० नेलोर ५०२ )

५३७

तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

तमिल

[ यह लेख पल्लव राजा नकल भुवनचक्रवर्ति पेरुजिगदेवके तीसरे राज्यवर्षका है । इसमें इस देव-मन्दिरकी प्रदक्षिणामालिकाका निर्माण पार्थिवूर निवामी" शिगन्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । लेख चन्द्रनाथ-मन्दिरके प्राकारके पश्चिमी दीवारपर खुदा है । ]

[ रि० ना० ए० १९३९-४० क्र० ३१४ पृ० ६६ ]

५३८

गैरसोप्ये ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड

१ बनश्रीमत्पत्नीमंजुलदेव्यांगणालितकीर्तिसुनिसूनोः (१) श्रीशंभु-  
चन्द्रमूर्तिप्रदेशालेखिनिनिषिग्यं ॥

२ श्लोकः ॥ ओजणश्रेष्ठिपुत्रोसौ कल्लपश्रेष्ठिपुगव (I) अकारयत्  
सुतो यस्य मावाम्बागर्मजोजणः ॥

[ यह नेमिनाथ मूर्ति ओजणश्रेष्ठिके प्रपौत्र तथा कल्लपश्रेष्ठि एव  
मावाम्बाके पुत्र अजणश्रेष्ठिने देशीगण-घनशोकवलीके आचार्य ललितकीर्तिके  
शिष्य देवचन्द्रसूरिके उपदेशसे स्थापित की । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५ ]

५३६

### गेरसोपे ( मैसूर )

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाछनं (I) जीयात् त्रैलोक्यनाथ-  
स्य शासनं जिनशासनं (II)
- २ श्रोजिनराजराजितपदाम्बुजराजमराल नगिरिय राजशिरो-
- ३ मणि प्रचुरकीर्तिदिशावलयप्रकाशनुं तेजभुजप्रतापरिपुराजमुखां-
- ४ वुजं हस्तवीरनुं भूजनवन्द्य होन्नृपनर्धिजनावन कल्पवृक्षनुं  
होन्-
- ५ नमहीशनात्मजेयु मालियव्वरसिगे कामराजगं सन्नृतमूर्ति होन्न-  
नृपनात्मसवान्-
- ६ धव मगराजनुं मन्मथरूप हरिहरनृपालकनातन पुत्र हैवणरसगे  
मन प्रियान्-
- ७ गनेयु सान्तलदेवि समाधिकालदोलु आकेय गुरुगलु लोकख्याति-  
यनार्तिद् अनन्-
- ८ तवीर्यरु रतिसकाशसोवगेनिसि सन्दिर्दा कान्तेगे हैवणरस  
वल्लमनादं । स्मररूपं
- ९ सूद्रकंगी पुरदोलु कीर्तिवैत्त वोम्मणसेट्टिय वरवनिते वोम्मकगं  
वरसुगु-

- ६० णि सान्तलरसि पुट्टिदलागल् । अरसप्पोडेयर तनूजे वरगुणि  
वोम्मकनाकेयात्मजे सान्तकरसि-
- ११ यु परमन पदम स्मरियिसि सुरलोकवेय्दि सुखदिन्दिदल्लु  
अहन्तन पादाम्बुजमं
- १२ स्मरयिसुत नम्बि(?) पदम नालगेयोलु उच्चरिसुत्त सान्तकरसि  
शरीरम पत्तेण्टुदिन-
- १३ ढोलु सन्दल्लु वरवत्सर तारणढोलु सुरुचिर-फाल्गुणद शुद्ध  
पाडिवतिथियोलु हरिदइव-
- १४ दिनदि सान्तकरसियु स्वर्गस्थलादल् भाकेनिमित्त माडिसिद  
निपिधिय कल्लिगे मंगल महाश्री-

[ यह निषिधि-लेख रानी सान्तलदेवीके समाधिमरणका स्मारक है । इसकी तिथि फाल्गुन शु० १, रविवार, तारण सवत्सर ऐसी थी । यह देवी वोम्मणसेट्टिकी कन्या तथा हैवणरसकी पत्नी थी । हैवणरसका पिता मगराज था जो कामराज और मालियव्वरसिका पुत्र था । मालियव्वरसिके पिता गेरसोप्पेके राजा होन्न थे । उसका एक और पुत्र हरिहर नृपाल था । सान्तलदेवीकी माता वोम्मक्का अरसोप्पोडेयकी कन्या थी । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९९ ]

५४०

सालूर ( मैसूर )

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-  
२ मोघलांछनं ।\*\*  
३ \*\*\*शासनं जिनशा\*\*\*  
४ मन श्री\*\* चन्द्रनाथदेव-

- ५ र गुड्डि नादोव्वेय...  
 ६ .. नागय्यंगलु निलि-  
 ७ सिट्ट कल्लु...सालियूर  
 ८ महाजनं .

[ इस निपिधिलेखमें चन्द्रनाथदेवकी शिष्या नादोव्वेके समाधिमरण तथा नागय्य-द्वारा इस निपिधिकी स्थापनाका उल्लेख किया है । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० १२९ ]

५४१

### सक्करेपट्टण ( मैसूर )

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्जनं । जीया-  
 २ त् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । श्रीमद् राजगुरु  
 ३ मौनपाचार्य श्री होसूर शिष्य नूलवागि-  
 ४ सेट्टिय मग नूलवन्दिसेट्टिय निषिधि  
 ५ शार्वरि सवत्सरद ६ आषाढ सुध १४ आदि

[ यह निपिधिलेख होसूरके राजगुरु मौनपाचार्यके शिष्य नूलवागि-सेट्टिके पुत्र नूलवन्दिसेट्टिका स्मारक है । तिथि आषाढ शु० १४, रविवार, शार्वरी संवत्सर, इस प्रकार बतलायी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६३ ]

५४२

### तिरुनिडंकोण्डै ( मद्रास )

तमिल

[ इस लेखमें अप्पाण्डार ( चन्द्रप्रभ ) मन्दिरके इस गोपुरका निर्माण परमजिनदेवजीयर्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । लेखकी तिथि पगुणि



द्वितीया, रेवती नक्षत्र, रविवार, युव संवत्सर इस प्रकार दी है। लिपि आधुनिक है।

[ रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१५ पृ० ६७ ]

५४३

मुत्तगदहोसूर ( मैसूर )

कन्नड

- १ सिद्धजिनालय
- २ सान्तेऔवेय वसदि
- ३ वगे माडिसिदनु

[ इस छोटे-से लेखमें सान्तेऔवे नामक महिला-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है। ]

[ ए० रि० मै० १९२४ पृ० २३ ]

५४४

उम्मत्तूर ( मैसूर )

- |                       |                             |
|-----------------------|-----------------------------|
| १ स्वस्ति श्री " राज- | २ भटाररु"नोन्तु             |
| ३ सन्यसनं नेट्टु मुडि | ४ पिदरु कल्ल निलिसिंद ज्ञा- |
| ५ न"पण्डित "          |                             |

[ इस लेखमें "राज भटाररुके ममाधिमरण तथा ज्ञान"पण्डित-द्वारा इस निषिधिकी स्थापनाका उल्लेख है। ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ४७ ]

५४५

## कम्मनहल्लि ( मैसूर )

कन्नड

- १ श्रीमत्परभगंभीरस्याद्वाढामोघलांछन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य  
शासनं जि . .
- २ . श्रीमति मूलसघ संघोद्भवे . . शुभे देशीगणे
- ३ . . स्याद्वाढारिनगाशनि . . कैवल्यजन्मावनिः
- ४ . . भयचन्द्रकरुणा . . कलियुगे . .
- ५ . वुल्लप . शोभते .
- ६ . जिनपदसेवेयोलुचितदानदोलु यिन्तु सुख . .
- ७ जिनेश्वरनाम मनटोलु . . वुल्लपं
- ८ . प्रभवसंवत्सर . . देवाल .
- ९ माडिसि . (१) हारदानक्कं

[ यह लेख बहुत घिस गया है । प्रभवसंवत्सरमें वुल्लप-द्वारा किसी मन्दिर-निर्माणका तथा उसमें आहारदानके लिए कुछ व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है । मूलमंघ-देशीगणके अभयचन्द्र आचार्यका भी उल्लेख हुआ है । ]

[ ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८७ ]

५४६

## गोणिवीड ( मैसूर )

कन्नड

- |                 |            |
|-----------------|------------|
| १ त्वस्ति श्री- | २ मतु भ-   |
| ३ नन्तन उ-      | ४ द्यापनेय |

५ चउवीस तीर्थक

६ र प्रति-

७ मे मगल

[ यह चौबीसतीर्थकरमूर्ति अनन्तव्रतके उद्यापनके समय स्थापित की गयी थी । इस समय वन्नि महाकाली मन्दिरमें सुनारो-द्वारा इसकी पूजा की जाती है । ]

[ ए० रि० मै० १९२७ पृ० ७४ ]

५४७

कलहल्लि ( मैसूर )

कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंग देसिगण पुस्तकगत्स कुण्डकुन्दान्ववार्य श्रीजयदेवम-

२ ट्टारकदेवर प्रियसिस्यरु श्रीअनन्तवीर्यदेवर प्रियगुड्डुगलु जीय-

३ गौड मल्लिगौडन मग मुद्दिगौडन मग राय-

४ गौड माडिसिद आदिपरमेस्वरप्रतिमेश्वररु मगल म-

५ द्वाश्री श्री श्री रूवारि वृपोजन मग रूवारि नागोज माडिद

[ इस लेखमें देसिगणके जयदेवभट्टारकके शिष्य अनन्तवीर्यदेवके शिष्य रायगौड-द्वारा आदितीर्थकरकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । यह मूर्ति रूवारि वृपोजके पुत्र रूवारि नागोजने उत्कीर्ण की थी । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३ ]

५४८-५५६

तंगले ( मैसूर )

कन्नड

[ यहाँ एक शिलालेखपर कुछ मुनियोकी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं तथा उनके नीचे इस प्रकार नाम दिये हैं - १ नमोर्हते अजितकीर्तिगलु २

देवनन्दिव्रतिगलु ३ गुणसागरभटारकरु ४ कीर्तिसागरभटाररु ५ अजितसेन-  
भटारकरु ६ प्रभाचन्द्रदेवरु ७ विमलगुणव्रतिगलु ८ अजितसेनभटाररु ९  
शुभचन्द्ररु । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ५१ ]

५५७

कनकरायनगुड्ड ( मैसूर )

कन्नड

- १ श्रीकोण्डय्यसेट्टियर् २ मूलस्थानत्रसद्विय स्था-
- ३ नक्के कन्तियर मगल् ४ विजयक्कं कोट्ट मण्णु
- ५ मू-

[ इस लेखमें कोण्डय्य सेट्टि-द्वारा निर्मित मूलस्थान जिनालयके लिए  
विजयक्का-द्वारा कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ३८ ]

५५८

हुत्तदेनहल्लि ( मैसूर )

कन्नड

- १ परमेश्वर पृथ्वीराज्य--
- २ रसारपुर वूरवेल्लिय--
- ३ योल्कट्टि किलगणकेरे--
- ४ नन्दियडिगल् पडेदराताद--
- ५ रु साक्षि सिडिलवड्डु तोरेदे--
- ६ पालु अरुगोल केरेय केलग--
- ७ ण देसे एलु मने तार इट्टके सा--

८ वत्तरु तेकल्नाड एल्पत्तारु द--

[ इस लेखका ऊपरका और दाहिना भाग टूटा है । नन्दियडिगल् आचार्यको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९२६ पृ० ८३ ]

५५६

तोल्लु ( मैसूर )

कन्नड

१ श्रोमत्परमगंभीरस्याद्वादा-

२ मोघलांछनं जीयात् त्रैलोक्यना-

३ थस्य शासन जिनशासनं । स्वस्ति यमनि-

४ यमस्वाध्यायगुणसम्पन्नरप्प अमयच-

५ न्द्रदेवरु सर्गगाभिगलाद् परोक्ष-

६ यममागल् पद्मावतियक्क माडिसिद् सास-

७ नं ॥ अरेवेसनागिरद् वसदियं माडि-

८ सिदरु देवर मनेय परिसूत्रद गट्टुं कट्टि-

९ चिसिदरु मनेयं माडि नडुम्मरनुमं नट-

१० रु इनिसक्क यिक्कि पूजिसिद् गद्याणवेप्प-

११ तु । इन्तप्पुदक्के साक्षि मुद्दगवुण्डनु भास-

१२ गवुण्डनुं तम्मडिय रंरु । विट्टियणनुं ने-

१३ मणनु ईस्तानकोडेयरु ।

[ इस लेखमें कहा है कि आचार्य अभयचन्द्रकी मृत्यु होमेपर उनकी शिष्या पद्मावतियक्काने एक अधूरे जिनमन्दिरको पूर्ण किया । इस कार्यमें ७० गद्याण खर्च हुए । इस मन्दिरके व्यवस्थापक विट्टियण तथा नेमण थे । मुद्दगवुण्ड तथा भासगवुण्ड इसके साक्षी थे । ]

[ ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४२ ]

५६०-५६१

यलवट्टि ( जि० धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यहाँ दो लेख हैं । एकमें मूलसंघ-देशीयगणके सकलचन्द्रदेवके गृहस्थ शिष्य सेनवोव केतय्यकी मृत्युका उल्लेख है । इसकी तिथि मार्ग-शिर शु० ८ शुक्रवार, आनन्द सवत्सर ऐसी दी है ।

दूसरे लेखमें मूलसंघ-देशीयगण-पोस्तक गच्छ - कोण्डकुन्दान्वयके देव-कीर्ति भट्टारकके एक शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है । इसकी तिथि श्रावण कृ० ९ रविवार, साधारण सवत्सर ऐसी है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ६०-६१ )

५६२

शावल ( जि० धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें देशीयगणके बालचन्द्र त्रैविद्यदेवके एक गृहस्थ शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है । मार्गशिर कृ० ३, व्यय संवत्सर ऐसी तिथि दी है । ]

( रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ५४ )

५६३

दानबुलपाडु ( जि० कडप्पा, आन्ध्र )

कन्नड

[ इस लेखमें कनककीर्तिदेवके शिष्यकी - जो पेनुगोण्डका एक व्यापारी था - निसिधिका उल्लेख है । ]

( इ० म० कडप्पा १४९ )

५६४

मुल्कि ( दक्षिण कनडा, मैसूर )

कन्नड

[ जैन बसदिके आगे मानस्तम्भकी दक्षिण वाजूपर । इसमें तीर्थंकरोंकी प्रशंसामे पाँच श्लोक लिखे गये हैं । ]

( इ० म० दक्षिण कनडा ९३ )

५६५

मद्रास ( म्यूजियम )

कन्नड

[ यह लेख शान्तिनाथकी मूर्तिके पादपीठपर है । महाप्रधान ब्रह्मदेवणद्वारा स्थापित किये हुए येरग जिनालयमे यह मूर्ति थी । मूलसंघ, कुण्ड-कुन्दान्वय, काणूरगण, तिन्त्रिणि गच्छके महामण्डलाचार्य सकलभद्र भट्टारक ब्रह्मदेवणके गुरु थे । ]

( इ० म० मद्रास ३२४ )

५६६

मद्रास ( म्यूजियम )

कन्नड व संस्कृत

[ इस लेखमे साहित्यप्रिय साल्व-राजा द्वारा शास्त्रोक्त रीतिसे शान्तिनाथकी मूर्तिके निर्माणका तथा स्थापनाका निर्देश है । ]

( इ० म० मद्रास ३२५ )

५६७

कोगलि ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

जैन मन्दिरमें एक मूर्तिके पादपीठपर

[ चैत्र शु० १४, रविवार, परिधावि सवत्सरमे अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओवेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इस लेखमें निर्देश है । ]

( इ० म० वेल्लारी १९० )

५६८

कीलक्कुडि ( मदुरा, मद्रास )

तमिल

[ गुहामे जैन मूर्तिके पादपीठपर ।

गुणसेनदेवके शिष्य वर्धमानव पण्डितके शिष्य गुणसेनपेरियडिगल-द्वारा यह मूर्ति खुदवायी गयी ऐसा इस लेखमें निर्देश है । यहाँकी अन्य दो मूर्तियोंके लेखोंमें भी गुणसेनदेवका उल्लेख है । ]

[ इ० म० मदुरा ३९ ]

५६९

कुण्डघाट ( जि० मोघीर, बिहार )

संस्कृत-गौडीय

जैन मन्दिरमें महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[ इस लेखमे वीरेश्वरक-द्वारा इस मूर्तिके दिये जानेका निर्देश है । ]

[ रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ९ ]



५७०

पेनुकोण्ड ( जि० अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

पाश्र्वनाथमन्दिरके समीप एक कुँएके पास शिलापर

[ यह जिनभूषणभट्टारकदेवके शिष्य नागय्यका समाधि लेख है । ]

[ इ० म० अनन्तपुर १६७ ]

५७१

कायास्पट्टि ( मद्रास )

तमिल

[ यह लेख शमणर् तिडल् नामक भग्न जिनमन्दिरके पास है । जयवीर पेरिलमैयान्-द्वारा तिरुवेण्गायिल् स्थित ऐन्नूरुवपेरुम्पल्लि ( जिनमन्दिर) के आगे फर्ग वनवानेका इसमें उल्लेख है । ]

[ इ० पु० क्र० १०८३ पृ० १५१ ]

५७२-५७३

मलैयकोचिल् ( मद्रास )

तमिल

[ इस लेखमें जैन आचार्य गुणसेनका नाम दिया है । साथमें परवादिनिदा यह उपाधि है । स्थानीय गुहामन्दिरके पास पापाणपर यह लेख उत्कीर्ण है । ऐसा ही लेख तिरुमय्यम्के सत्यगिरीश्वरमन्दिरके एक पापाणपर भी है । ]

[ इ० पु० क्र० ४-५ पृ० १ ]

५७४

तेणिमलै ( मद्रास )

तमिल

[ यह लेख एक पापाणपर उत्कीर्ण जिनमूर्तिके नीचे है। यह मूर्ति ( तिरुमेणि ) श्रिवल्ल उदण सेखोद्वि-द्वारा उत्कीर्ण थी ऐसा लेखमें कहा है। ]

[ इ० पु० क्र० १० पृ० १ ]

५७५

पूण्डि ( जि० उत्तर अर्काट, मद्रास )

तमिल

पोन्निनाथ जैन मन्दिरके पश्चिमी दीवालपर

[ इस लेखमें शम्बुवरायका उल्लेख है। वीरवीरजिनालय नामक मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे एक गाँव दान देनेका उल्लेख इस लेखमें है। ]

[ इ० म० उत्तर अर्काट २१० ]

५७६

मूडविदुरे ( मैसूर )

कन्नड

[ इस ताम्रपत्रके तीन भाग हैं। पहला भाग वृषभ २२, गुरुवार, तारण सवत्सरके दिनका है। इसमें चन्द्रकीर्तिदेव-द्वारा २४ तीर्थंकरोंको पूजाके लिए २०० होन्नु अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह रकम विष्णु कलुम्बरुको कर्जा दी गयी थी। उसने अपनी कुछ ज़मीन गिरवी रखकर इस रकमके व्याजके रूपमें १६ मन चावल देना स्वीकार किया था। दूसरा भाग कर्क ९, बुधवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिनका है। इसमें श्रीघर पडि-

कोदि-द्वारा जमीन गिरवी रखकर २१०० वीररायफण कर्ज प्राप्त करनेका उल्लेख है। इसके व्याजके रूपमें २८ मुडे चावल देना स्वीकार किया था। इसका उपयोग गेरुसोपेकी ललितादेवी-द्वारा स्थापित वसदिमे पूजाके लिए होना था। तीसरा भाग मेप १, रविवार, नन्दन संवत्सरके दिनका है। इसमें तीन बन्वुओ-द्वारा पार्श्वनाथवस्तिसे कुछ कर्ज लेनेका तथा उस-पर कुछ निश्चित रकम व्याज देनेका उल्लेख है। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ९ ]

५७७

मूडविदुरे ( मैसूर )

कन्नड

[ इस ताम्रपत्र-लेखमें चारुकीर्ति पण्डितदेव-द्वारा निर्मित चण्डोग्र पार्श्वनाथवसदिके लिए कर्वरवलिके वर्मनन्द तथा उनके बन्वु कुंगिय वर्मिसेट्टि-द्वारा ७०१ गद्याण दान दिये जानेका निर्देश है। लेखकी तिथि वृषभ १५, रविवार, दुर्मुखि संवत्सर ऐसी दी है। ]

[ रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ७ ]

५७८

निट्टूर ( मैसूर )

कन्नड

१ चित्रभानु	२ संवत्सर	३ द फाल्गुण
४ द शुद्ध ८	५ शु सोम	६ वार बोम्मण्ण
७ गल्लु स्वर्गस्त	८ राद निषिधि	

[ इस निषिधिलेखमें फाल्गुन शु० ८, चित्रभानु संवत्सरके दिन बोम्मण्णके समाधिमरणका उल्लेख है। ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० २५७ ]

५७६

तल्लूर ( मंसूर )

कन्नड

- |                      |                        |
|----------------------|------------------------|
| १ भावसंवत्सरद श्राव- | २ ण शुद्ध त्रयोदसि भा- |
| ३ दिवारदंडु स्वस्ति  | ४ श्रीमद् " अजितेश्व-  |
| ५ रदेवर महाजनं...    | ६ "वागि..."            |
| ७ " केशवदेवर वम्म-   | ८ व्वे तोटडिं...       |
| ९ "वागि क्कमर..."    | १० कोण्डु "            |
| ११ " येनुल्ल         |                        |

[ यह लेख काफी अस्पष्ट हुआ है। श्रावण शु० १३, रविवार, भावसवत्सरके दिन किसी ग्रामके महाजनो द्वारा अजितेश्वर देवके मन्दिरके लिए कुछ भूमि दान दी गयी ऐसा इसमें उल्लेख है। केशवदेवकी कन्या वम्मव्वेके उद्यानके समीपकी २ कम्म जमीन भी इस दानमें सम्मिलित थी। ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० ११३ ]

५८०

अंबले ( मंसूर )

कन्नड

- |                |                |
|----------------|----------------|
| १ जिनचंद्रदेवक | २ " मुडि(पि) " |
|----------------|----------------|

[ इस छोटे-से लेखमें जिनचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। ]

[ ए० रि० मै० १९३० पृ० १३३ ]

५८१-५८४

हैदराबाद ( म्युजियम ) ( आन्ध्र )

संस्कृत-कन्नड

[ ये चार मूर्तिलेख हैं जो घिसनेसे अस्पष्ट हुए हैं । एकमें मूलसंघके किसी व्यक्तिका उल्लेख है । दूसरेमें एक मूर्तिकी स्थापना फाल्गुन शु० १५, बुधवार, शर्वरी संवत्सरके दिन किये जानेका उल्लेख है । तीसरेमें पण्डित मल्लिसेनका उल्लेख है । चौथेमें नेमिचन्द्रदेवके शिष्य कुमार मायिदेव महामण्डलेश्वर-द्वारा पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । इन लेखोका समय निश्चित नहीं है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १४९, १५०, १५२, १५४ ]

५८५

भोसे ( सातारा, महाराष्ट्र )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगणके वामनन्दि व्रतीश्वरका उल्लेख है । लेख बहुत घिस गया है । समय निश्चित नहीं है । ]

[ रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २४३ ]

५८६

वेल्लगामे ( मैसूर )

संस्कृत-कन्नड

१ गणप्राच्यमहीभृदकः श्री-

२ मन्व्याद्विधवर्धिष्णुशर्गांकमूर्तिः

[ यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है और इसका आधा भाग अस्पष्ट हो जानेसे अधूरा हुआ है । इसमें किसी भागके एक आचार्यका उल्लेख रहा है । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२६ ]

५८७

कारकल ( मैसूर )

संस्कृत

[ यह लेख गोम्मट मूर्तिके सम्मुख ब्रह्मस्तम्भके समीप उत्कीर्ण पादुकाओंके पास है । लिपि आधुनिक है -

( मूल- ) श्रीगणधरपादम् । ]

[ रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३८ पृ० ५२ ]

५८८

कोप्पल ( रायचूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें चावय्य-द्वारा जटार्सिगनन्दि आचार्यकी पादुकाओकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० इ०-ए० १९५४-५५ क्र० १६१ पृ० ४१ ]

५८९

बादंगट्टि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख वोम्मिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६९ पृ० २२ ]

५६०

वालेहल्लि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मार्गशिर व० १०, शुक्रवार, शुभकृत् संवत्सरके दिन माघवचन्द्रदेवके शिष्य नागगौडकी पत्नी सायिगवुडिके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १९१ पृ० २३ ]

५६१

गुडुगुडि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख सरस्त ( सूरस्त ) गणके किसी आचार्यकी शिष्या नागवेके समाधिमरणका स्मारक है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०० पृ० २४ ]

५६२

मन्तगि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख टूटा है । हरिकेसरिदेव, हरिकान्तदेव तथा तोयिमरस द्वारा विभिन्न वसदियोको दिये गये भूमिदानोका इसमे उल्लेख है । इनमें वकापुरकी उम्पटाचण वसदि तथा कोन्तिमहादेविय वसदिका भी समावेश है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०८ पृ० २५ ]

५९३

मन्तगि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें फाल्गुन - ? - बडुवार, सर्वधारि सवत्सरके दिन सूरस्तगणके सहस्रकीर्तिदेवके शिष्य तथा मल्लिगुण्डके महाप्रभु विठगौडके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २१० पृ० २५ ]

५९४

येलवर्गि ( रायचूर, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें मूलसध, सूरस्तगण तथा कन्निसेट्टिका उल्लेख है । ]

[ रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० २२५ पृ० ३९ ]

५९५

तिरुप्परंकुण्डम् ( मदुरै, मद्रास )

तमिल ( ? ) - ब्राह्मी

[ यहाँ पहाडीपर दो गुहाओमे निम्न पक्तियाँ खुदी हैं । ये गुहाएँ जैन श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थी -

( १ ) न य ( २ ) मा ता ये व

( ३ ) अ न तु वा ण को टु पि ता वा ण ]

[ रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १४०-४२ पृ० २२ ]



५९६

देवचूर ( मद्रुरा, मद्रुरस )

वट्टेलुत्तु

[ यह लेख बहुत अस्पष्ट है । इसमें किसी पल्लि ( जैन वसति ) तथा तुग पल्लवरैयन्का उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० ५९ पृ० १२ ]

५९७

अक्कूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख वीरभद्र मन्दिरकी एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें शान्तिनाथ, सोमदेव तथा वसुधाकरदेवकी स्तुति की है । सातोज-रामोज-द्वारा इस वसदिके निर्माणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ७ पृ० ९२ ]

५९८

हावेरी ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मादरस-द्वारा जिनमन्दिरकी सीढियाँ बनवाये जानेका उल्लेख है । इस समय यह लेख वीरभद्र मन्दिरमें लगा है । ]

[ रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ९६ पृ० १०१ ]

५९९-६०२

इंगलेश्वर ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ ये चार समाधिलेख हैं । पहलेकी तिथि तारण, अमावास्या, शुक्रवार यह है । यह सत्यण्णकी समाधि है । दूसरा लेख अगलसेट्टिके पुत्र शान्ति-

सेट्टिकी समाधिपर है । तिथि आगिर संवत्सर, चैत्र १, सोमवार यह है । तीसरी समाधि शान्तिदेव मुनिकी है । तिथि प्रमादि सवत्सर, ... मास व ६, शुक्रवार यह है । चौथी समाधि माघनन्दि मुनिपकी है । तिथि श्रावण शु० ११, शुक्रवार, युव संवत्सर है । ]

[ रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १५-१८ पृ० ८५ ]

६०३

कागिनोल्लि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख एक स्तम्भपर है । इसमें दानविनोद वैरिनारायण लॅक-मसण आदित्यवर्माकी स्तुति की है तथा उसके द्वारा काणूरगण, मेपपाषाण-गच्छकी वसदिमें एक स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २८ पृ० १२१ ]

६०४

माकनूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें खर सवत्सर, कार्तिक शु० ( ? ), शुक्रवारके दिन मूल सघ-सूरस्थगणके नन्दिभट्टारकके शिष्य बोप्पगौडके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५० पृ० १५१ ]

६०५

लक्कुण्डि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख एक भग्न जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इसकी स्थापना त्रैविद्य नरेन्द्रसेनके शिष्य वैश्य जेमिसेट्टिकी कन्या राजव्वेने की थी । ]

[ रि० सा० इ० १९३४-३५ क्र० ई ७५ पृ० १५४ ]

६०६

देवूर ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ-देसिगण-इंगलेश्वर वलिके नेमिदेव आचार्यके शिष्य सिंगिसेट्टि, देविसेट्टि, पदुमव्वे तथा सिंगेयके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई २२ पृ० १८३ ]

६०७

शिरूर ( जमखंडी, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें यापनीय सघ-वृक्षमूलगणके कुसुमजिनालयमें कालिसेट्टि-द्वारा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है । ]

[ रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ई ९८ पृ० २१९ ]

६०८

इडैयालम् ( द० अर्काट, मद्रास )

तमिल

[ यहाँ जैन मन्दिरके समीप पाषाणोपर चरणपाडुकाएँ उत्कीर्ण हैं तथा निम्न नाम खुदे हैं -

- ( १ ) मल्लिपेणमुनीश्वर      ( २ ) विमलजिनदेव  
( ३ ) अप्पाण्डार् नायिनार्      ( ४ ) इडैयालम्के जिनदेवर् ]

[ रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ३११-१४ पृ० ४२ ]

६०६

तोरनगल्लु ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख अकलकदेवके शिष्य वयिचिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है । ]

[ रि० सा० ए० १९२२-२३ क्र० ७२९ पृ० ५१ ]

६१०

[ लोकिकेरे ( वेल्लारी, मैसूर ) ]

कन्नड

[ यह लेख श्री रत्नभूषण भट्टारकके प्रिय शिष्य लोकेयकेरे निवासी मरगोण्डके समाधिमरणका स्मारक है । ]

[ रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० २९९ पृ० ४९ ]

६११-६१२

गरग ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख यापनीय सघ-कुमुदिगणके शान्तिवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है । तिथि श्रावण व० ४, गुस्वार, विकृति सवत्सर ऐसी दी है । यहीके एक अन्य लेखमें भी यापनीय सघ-कुमुदिगणका उल्लेख है । अन्य विवरण लुप्त हुआ है । ]

[ रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४१-४४२ पृ० ७६ ]

६१३

कुमठ ( उत्तर कनडा, मैसूर )

कन्नड

[ स्थानीय जैन बसदिमे पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर यह लेख है । मूलसंघ, सूरस्तगण, चित्रकूट गच्छके मुकुन्ददेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना की गयी थी । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३७ पृ० २७ ]

६१४

कुमठ ( उत्तर कनडा, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमे पुष्य शु० ( ? ) क्रोधन संवत्सरके दिन क्राणूरगणके गजिय मलघारिदेवकी शिष्या कचलदेवीके समाधिमरणका उल्लेख है । इसके पतिका नाम त्रिभुवनवीर था तथा कदम्ब राजाओकी उपाधियाँ उसे दी गयी है । ]

[ रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४२ पृ० २८ ]

६१५

रायद्रुग ( बेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ यहाँके निसिधि लेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं — मूलसंघके चन्द्रभूति, आपनीय संघके चन्द्रेन्द्र, वादय्य तथा तम्मण्ण । एक लेखपर माघ शु० १ सोमवार, प्रमाथि संवत्सर-यह तिथि दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १०९ पृ० १२ ]

६१६-६१७

कोगलि ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ इस मूर्तिलेखमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओडेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । यहाँके एक स्तम्भपर जिनमूर्तियोंके अभि-  
पेकके लिए कई व्यक्तियों-द्वारा दिये गये दानोका उल्लेख है । प्रथम लेख-  
की तिथि चैत्र शु० १४ रविवार, परिधावि सवत्सर ऐसी दी है । ]

[ रि० सा० ए० १९१४-१५ क्र० ५२०-२१ पृ० ५३ ]

६१८

मुलगुन्द ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें देसिगण-हनसोगे अन्वयके ललितकीर्ति भट्टारकके शिष्य  
सहस्रकीर्तिकी मृत्युका उल्लेख है । मुस्लिमो-द्वारा पार्श्वनाथवसदिपर  
आक्रमणके समय उनकी मृत्यु हुई थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९२ पृ० ८ ]

६१९

कलकेरि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगण-तिन्निणी गच्छके भानुकीर्ति सिद्धान्त-  
देवके शिष्य हलिगावुण्ड-द्वारा कलकेरेके अकलकचन्द्रभट्टारकके लिए एक  
वसदिके निर्माण तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ५१ पृ० २४ ]

६२०

कम्मरचोडु ( वेल्लारी, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें पद्मप्रभमलघारिदेवके प्रियशिष्य महावड्डुव्यवहारि रायर-सेट्टिकी पत्नी चन्दव्वे-द्वारा इस जिनमूर्तिके जीर्णोद्धारका वर्णन है । इस समय यह मूर्ति हिन्दू देवताके रूपमें पूजी जाती है । ]

[ रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६० पृ० ५५ ]

६२१-६२२

कोट्टशीवरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ यह लेख एक स्तम्भपर है । काणूर गणके पुष्पनन्दि मलघारिदेवके शिष्य दावणन्दि आचार्य-द्वारा एक वसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है । यहींके एक अन्य लेखमें काणूरगणके (?) आचार्यकी शिष्या इरुगोल राजाकी रानी आलपदेवी-द्वारा इस वसदिकी रक्षाका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० २०-२१ पृ० ७२ ]

६२३-६२६

अमरापुरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ यहाँके निसिधिलेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं—(१) प्रभाचन्द्र-देवके शिष्य कोम्मसेट्टि (२) पोतोज तथा उसका पुत्र सयवि मारय (३) मूलसंघ-देसियगणके वालेन्दु मलघारिदेवके शिष्य विरूपय तथा मारय (४) मूलसंघ-सेनगणके प्रसिद्ध वादि भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्ति (५) इगलेश्वरके प्रभाचन्द्र भट्टारकके शिष्य वोम्मिसेट्टियर वाचय्य (६) वेरिसेट्टिके पुत्र सम्बिसेट्टि । यहाँके एक अन्य लेखमें इगलेश्वरके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य देशियगणके वालेन्दु मलघारिदेव-द्वारा एक वसदिके निर्माणका उल्लेख है । ] [ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४१-४७ पृ० ७४ ]

६३०

तम्मदहलि ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसध-देसियगणके चारुकीर्ति भट्टारकके शिष्य चन्द्राक भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४८ पृ० ७४ ]

६३१

रामपुरम् ( अनन्तपुर, आन्ध्र )

कन्नड

[ इस लेखमें मूलसध-देसियगणके देवचन्द्रदेवके शिष्य वेद्विसेट्टिके पुत्र कृष्णसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ७१४ पृ० ७४ ]

६३२

रामतीर्थम् ( विजगापटम्, आन्ध्र )

तेलुगु

[ यह लेख एक भगनजिनमूर्तिके पादपीठपर है । ओगेरुमार्गस्थित चनुद (वो) लु निवासी प्र (मि) सेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी । ]

[ रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ८३२ पृ० ८५ ]

६३३

वेलूर ( द० अर्काट, मद्रास )

तमिळ

[ इस लेखमें जयसेन-द्वारा इस जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि उत्तरकालीन है । ]

[ रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० १२४ पृ० ५९ ]



६३४

निडुगल ( मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें वेल्लुम्बट्टेके भव्यो-द्वारा—जो मूलसंघदेसिगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य थे—पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । ]

[ ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५ ]

६३५-६३६

नेल्लिकर ( द० कनडा, मैसूर )

संस्कृत-कन्नड

[ यह लेख स्थानीय अनन्तनाथवसदिमें है । इसके मण्डपका निर्माण मंजण कोन्नभूप-द्वारा किया गया ऐसा कहा है । यहीके दूसरे लेखमें इस मन्दिरका निर्माण ललितकीर्ति भट्टारकदेवके शिष्य कल्याणकीर्तिदेवकी सम्पत्तिसे देवचन्द्र-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२०-५२१ पृ० ४८-४९ ]

६३७

मुनुगोडु ( गुण्टूर, आन्ध्र )

तेलुगु

[ इस लेखमें विल्लम नायक-द्वारा पृथिवीतिलकवसदिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १९ पृ० ६ ]

६३८-६३९

लक्कुण्डि ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ ये दो लेख हैं । एकमें मूलसंघ—देवगणके शखदेव-द्वारा एक जिन-

मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । दूसरेमे वसुधैकवान्धवजिनालयके त्रिभुवन-तिलक शान्तिनाथदेवके लिए एक दानशालाके समर्पणका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ३१, ३४ पृ० ३ ]

६४०

जावूर ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें वीचिसेट्टि-द्वारा सकलचन्द्र भट्टारकको जावूर ग्रामके पुनः दानका उल्लेख है । नविलगुन्दमे जयकीर्तिदेव-द्वारा निर्मित ज्वालामालिनीवसदिके लिए मल्लिदेवने पहले यह गांव अर्पण किया था । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २२८ पृ० ५५ ]

६४१

कोमरगोप ( धारवाड, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमें त्रिभुनतिलक जिनालयमें आहारदानादिके लिए बालचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य पेगडे वासियण्णकी पत्नी चामिकब्बे-द्वारा सुवर्णदानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २३० पृ० ५५ ]

६४२-६५०

गुण्डकेर्जिगि ( विजापूर मैसूर )

कन्नड

[ यहाँ भग्न मूर्ति-पाषाणोपर निम्न नाम खुदे हैं । (१) देशियगण-इगलेश्वर ( बलि ) के चन्द्रकीर्तिदेव तथा जयकीर्तिदेव (२) अपराजिता देवी (३) वृषभयक्ष (४) पातालयक्ष (५) कुबेरयक्ष (६) महानसीयक्षी (७) अनन्तमती (८) चक्रेश्वरी (९) (शा) न्तनाथस्वामी ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई १६-१७ पृ० ६६ ]

६५१

हुलूर ( विजापूर )

कन्नड

[ इस लेखमे कण्डूर गणकी एक वसदिके लिए पुलुवरणिके महाजनो-  
द्वारा भूमिदानका उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० पृ० ६७ क्र० ई २९ ]

६५२

तम्मदहद्दि ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस निसिधि लेखमें इगलेश्वरतीर्थकी वसदिके आचार्य देवचन्द्र  
भट्टारकके शिष्य वोगगावुण्डके समाधिमरणका उल्लेख है ।

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ७० पृ० ६९ ]

६५३

तुम्बिगि ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ यह लेख पुष्य शु० १०, सोमवार, ईश्वरसवत्सर, राज्यवर्ष ८ का  
है । राजाका नाम लुप्त हुआ है । इस समय वोचुवनायककी निसिधिकी  
स्थापना की गयी थी तथा तदर्थ पार्श्वदेवको कुछ भूमि अर्पित की गयी थी । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई० ७४ पृ० ६९ ]

६५४

ह्विन हिप्पगि ( विजापूर, मैसूर )

कन्नड

[ इस लेखमे हवु रेमरस तथा रेचरस-द्वारा ऋषियोंके आहारदानके  
लिए देवचन्द्र भट्टारकको कुछ भूमि दान देनेका उल्लेख है । इंगलेश्वरके  
देवकीर्ति भट्टारकका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ९१ पृ० ७१ ]

## परिशिष्ट १

### श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना

[ पहले संग्रहकी पद्धतिके अनुसार हम यहाँ श्वेताम्बर सम्प्रदायसे सम्बद्ध लेखोंकी सूचना दे रहे हैं। इस सूचीमें सरकारी प्रकाशनो-  
में प्रकाशित लेखोका अन्तर्भाव है। श्री० पूरणचन्द नाहरका  
प्राचीन जैनलेखसंग्रह, श्री० अजरचन्द नाहटाका वीकानेर जैन-  
लेखसंग्रह, आदि ग्रन्थोमें प्रायः श्वेताम्बर सम्प्रदायके ही लेख हैं।  
इन लेखोंकी सख्या ३५००से ऊपर है। इनका प्रस्तुत सूचीमें  
उल्लेख आवश्यक नहीं समझा गया। ]

१ अक्रोटा ( वडोदा, गुजरात ) - द्वाँ सदी

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० १६-१९

२ अक्रोटा - ६ वीं-१०वीं सदी

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० २०-३५ तथा ३९-४८

३ वडोदा ( गुजरात )-सं० १०६३ = सन् १०३७

रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६९-७१

४ भरतपुर ( राजस्थान )-सं० ११०६ = सन् १०५३

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३८८, ३९४

५ आवू ( राजस्थान )-सं० १११९ = सन् १०६३

ए० इ० ९ पृ० १४८

६ सिरोही ( राजस्थान ) सं० ११३५ = सन् १०७६

रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११९

७ लाडोल ( गुजरात )-सं० ११४० = सन् १०८४

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ए २

८ लाडोल—सं० ११५६ = सन् ११००

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ए ३

९ उदयपुर ( राजस्थान )—सं० ११७६ = सन् ११२०

रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २३७

१० नाडोल ( राजस्थान )—स० १२१३ = सन् ११५७

इ० ए० ४१ पृ० २०२

११ लखनऊ ( उत्तरप्रदेश )—सं० १२१६ = सन् ११६०

रि० आ० स० १९१३-१४ पृ० २९

१२ जालोर ( राजस्थान )—सं० १२२१ = सन् ११६५

ए० इं० ११ पृ० ५४

१३ मथुरा ( उत्तरप्रदेश ) सं० १२३४ = सन् ११७८

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२६

१४ भद्रेश्वर ( गुजरात )—सं० १३१५ = सन् १२५९

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १६९

१५ भद्रेश्वर—सं० १३२३ = सन् १२६७

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १७०

१६ जालोर ( राजस्थान )—सं० १३३१ = सन् १२७५

ए० इं० ३३ पृ० ४६

१७ आमरण ( राजस्थान )—सं० १३३३ = सन् १२७७

पूना ओरिएण्टलिस्ट ३ पृ० २५

१८ चित्तौड़ ( राजस्थान )—सं० १३३४ = सन् १२७८

रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २३२-२३३

१९ उदयपुर ( राजस्थान )—सं० १३३५ = सन् १२७९

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४८५

२० बम्बई—सं० १३५६ = सन् १३००

रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २०१-३

२१ उदयपुर—१३वीं सदी

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५०७

२२ खंभात ( गुजरात )-सं० १४२०से सं० १४६८ = सन् १३६४से  
सन् १४१२

रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५९-१९५

२३ आंतरी ( राजस्थान ) सं० १४६८ = सन् १४१२

रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १८७

२४ मेढता ( राजस्थान )-सं० १५०७से १६८७

= सन् १४५१से १६३१

रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३३

२५ ब्रिटिश म्यूजियम-सं० १५१५से १५८३

= सन् १४५६से सन् १५२७

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५३०-५३८

२६ सिरोही ( राजस्थान )-सं० १५२४ = सन् १४६८

रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११९

२७ वम्बई—सं० १५२५ = सन् १४६९

रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४९

२८ उदयपुर—सं० १५५६ = सन् १५००

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४८६

२९ मौगामा ( राजस्थान )-सं० १५७१ = सन् १५१५

रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १८८

३० अलवर ( राजस्थान )-सं० १५७३ = सन् १५१७

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३८६

३१ अलवर—सं० १६२६ = सन् १५७०

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७८

३२ धैराट ( राजस्थान )—शक १५०६ = सन् १५८७

रि० आ० स० १९०९-१० पृ० १३२

३३ अलवर—सं० १६४५ = सन् १५८९

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७६

३४ लखनऊ—सं० १६५२ = सन् १५९६

रि० आ० स० १९१३-१४ पृ० २९

३५ भद्रेशर ( गुजरात )—सं० १६५९ = सन् १६०३

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १७०

३६ उदयपुर—सं० १६६२ = सन् १६०६

रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २३७

३७ भद्रेशर—सं० १९०५-१९३४ = सन् १८४६-१८७८

रि० इ० ए० १९५४-५५ पृ० ४२



## परिशिष्ट २

जैनेतर लेखोंमें जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख ।

( १ ) बेलगामे

कन्नड

सन् १२९४

[ इस लेखमें यादव राजा रामचन्द्रके समय बल्लिगावेके भेरुण्डस्वामी-मन्दिरका उल्लेख है । इस मन्दिरके हेगडे पदपर वैद्य दासण्णकी स्थापना कर उसे कुछ भूमि अर्पित की गयी थी । इस भूमिमें प्रथमसेनबसदि ( जिनमन्दिर ) की कुछ भूमि भी शामिल कर दी गयी थी । ]

[ ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२४ ]

( २-६ ) देवगेरी-तथा कोलूर ( जि० धारवाड, मैसूर )

( ११वीं-१३वीं सदी )—कन्नड

पहला लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल ( सोमेश्वर प्रथम ) के राज्यकालका है । इनके अधीन वासवूर १४० प्रदेशमें जीमूतवाहन अन्वयमे उत्पन्न हुआ कलियम्मरस शासन कर रहा था । इसे सम्यक्त्व-चूडामणि तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं । इसने कोलूरके कलिदेवेश्वरके मन्दिरमें दीपदानके लिए कुछ दान दिया था । इस दानकी तिथि पौष शु० ५, शक ९६७, उत्तरायण सक्रान्ति थी ।

दूसरे लेखकी तिथि शक ९९७, पौष शु० १४, उत्तरायण सक्रान्ति थी । इस समय चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर द्वितीयका राज्य चल रहा था । इसमें भी कलियम्मरसके शासनका उल्लेख है तथा देवगेरी-के काकलेश्वर मन्दिरके लिए दण्डनायक वण्णमय्य-द्वारा कुछ दान दिये



जानेका निर्देश है। इसी लेखके दूसरे भागमें उसी कुलके एक दूसरे कलियम्मरसका उल्लेख है जो चालुक्य सम्राट् भूलोकमल्ल सोमेश्वर तृतीयका सामन्त था। इसने सम्राट्के राज्यके ९वें वर्ष अर्थात् शक १०५६ में उक्त मन्दिरको कुछ दान दिया था। इस कलियम्मरसने माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

तीसरे लेखमें उक्त कलियम्मरस ( द्वितीय ) का उल्लेख सम्राट् विक्रमादित्य ( षष्ठ ) के राज्यके दसवे वर्ष ( सन् १०८५ ) में किया है जब उसने कोलूरमें कुछ धार्मिक दान दिया था।

चौथा लेख सम्राट् विक्रमादित्य ( षष्ठ ) के राज्यके ४६वे वर्ष ( स० ११२१ ) का है। इसका सामन्त हेर्माडियरस था जो उक्त कलियम्मरस ( द्वितीय ) का पुत्र था। इसने कोलूरमें त्रिभुवनेश्वर तथा भैरवके मन्दिरोंको कुछ दान दिया था। तथा माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

पाँचवाँ लेख यादव राजा सिंघण ( तेरहवीं सदीका पूर्वार्ध ) के राज्यकालका है। इसका सामन्त मल्लिदेवरस था जो उक्त जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ था। इसने कोलूरके क्षेत्रपाल मन्दिरको कुछ दान दिया था।

यहाँ द्रष्टव्य है कि कलियम्मरस ( द्वितीय ), हेर्माडियरस तथा मल्लिदेवरस शैव थे फिर भी उन्हें पद्मावतीलज्ज्वरप्रसाद यह पुराना विशेषण दिया है।

छठा लेख विक्रमादित्य ( षष्ठ ) के राज्यके ४थे वर्ष ( सन् १०७९ ) का है। इसके अधीन नोलम्बवाडि तथा सान्तलिंगे प्रदेशपर त्रैलाक्यमल्ल ( जयसिंह तृतीय ) शासन कर रहा था तथा वनवासि प्रदेशपर बलदेवय्यका शासन था। बलदेवय्यको जिनचरणकमलभृंग यह विशेषण दिया है। इसके अधीन कुछ करोका उत्पन्न कोलूरके ग्रामेश्वर मन्दिरके लिए किसी कन्नडाचार्यको दान दिया था। ]

( ७ ) शिवमन्दिर, नीडूर ( जि० तजोर, मद्रास )

तमिल - सन् १११६

[ यह लेख कुलोत्तुग चोलके राज्यके ४६वे वर्षमें लिखा गया था । इसमें कण्डन् माधवन्-द्वारा शोण्णवाररिवार ( गणपति ) देवका मन्दिर बनवानेका निर्देश है । यह माधवन् कुलत्तूर स्थानका शासक था जहाँ अमिदसागर ( अमृतसागर ) मुनिने कारिगै ( याप्परुगलक्कारिगै ) नामक छन्द शास्त्र तमिल भाषामें लिखा था । इस रचनाके लिए जिनने प्रेरणा की वे सज्जन माधवन्के चाचा ( अथवा ससुर ) थे ।

इस छन्दःशास्त्रमे ४४ कारिकाएँ हैं तथा उरुप्पियल्, शैय्युलियल् एव ओलिवियल् ये तीन प्रकरण हैं । इसपर गुणसागरने टोका लिखी है । ]

[ ए० इ० १८ पृ० ६४ ]

( ८ ) कमलापुर और हंपीके बीच

कृष्णमन्दिरके समीप एक मण्डपमें

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[ यह लेख मधुर नामक जैन कविने लिखा है जो वाजि कुलमें उत्पन्न हुआ था । लेखमें देवरायके मन्त्री लक्ष्मीधर-द्वारा महागणनाथ ( शिव ) की स्थापनाका वर्णन है । मधुरने धर्मनाथपुराण तथा गुम्मटाष्टक लिखा है । यह हरिहररायके मन्त्री मुद्दण्डेश्वरका आश्रित था । इस लेखमें लक्ष्मीधर-द्वारा मधुरको हाथी, घोड़े, रत्न, ज़मीन आदि दान देनेका उल्लेख है । ]

[ इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७७ ]

( ९ ) गोकर्ण ( उत्तर कनडा )

१५वीं सदी, कन्नड

[ इस लेखमे महावलेश्वर मन्दिरमें अन्नसत्र तथा अन्यपूजाके लिए कुछ

दान दिये जानेका उल्लेख है । दानकी रक्षाके लिए कहे गये शापात्मक वर्णनमें गेरसोप्येकी हिरियवस्तिके चण्डोग्र पार्श्वनाथका भी उल्लेख है । ]

[ रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० १०८ पृ० २३७ ]

### (१०) वीराम्बुधि ताम्रपत्र ( मैसूर )

शक १४८६ = सन् १५६७, कन्नड

[ जिनशासनकी प्रशंसासे इस ताम्रपत्रका प्रारम्भ होता है । कुलोत्तुंग विक्रमरायके पुत्र चंगालराय-द्वारा भारद्वाजगोत्रके ब्राह्मण नरसीभट्टको वीराम्बुधि नामक ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । दानकी तिथि भाव शु० १०, शक १४८९, सर्वजित् सवत्सर ऐसी दी है । ]

[ ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३ ]



## परिशिष्ट ३

### नागपुर-प्रतिमा लेखसंग्रह

इस परिशिष्टमें हम नागपुरके समस्त प्रतिमालेखोका संकलन दे रहे हैं। इन लेखोका संग्रह श्री शान्तिकुमारजी ठवली (वर्तमान निवास—देवलगाँव राजा, जि० वुलडाणा, महाराष्ट्र) ने कोई २७ वर्ष पहले सन् १९३५ में किया था। आपने यह संग्रह नागपुरके लोकप्रिय जैन श्रीमान् स्व० सवाई सिगई श्री० नेमलालजी पासूभावजीकी स्मृतिमें अर्पित किया था। इस संग्रहके लिए स्व० पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजोने भूमिका लिखी थी जो इस प्रकार थी — “जैनधर्मके इतिहासके निर्माणके लिए इस बातकी परम आवश्यकता है कि सर्व जैन स्मारकोके लेख संग्रहीत किये जावे — इन स्मारकोमें प्रतिमाओके लेख, यन्त्रोंके लेख, अन्य शिलालेख तथा शास्त्रोकी प्रशस्तियाँ आवश्यक हैं — श्री शान्तिकुमार ठवली नागपुरने नागपुरके सर्व दिगम्बर जैन मन्दिर व चैत्यालयोंके लेखोको लिखकर पुस्तकाकार सम्पादन करनेमें जो परिश्रम उठाया है वह सराहनोय है। अच्छा हो यदि इन मूर्तियोके लेखोंके साथ यन्त्रोंके लेख और शास्त्रकी प्रशस्तियोका विवरण प्रकट किया जावे। एक संक्षिप्त तालिका ऐसी दी जावे कि लेखरहित प्रतिमाएँ इतनी व अमुक सबत्की इतनी — जिससे पाठको प्राचीनता व अर्वाचीनताका पता तुरत लग जावे। ऐसी पुस्तकोसे भविष्यमें बहुत काम निकलेगा — आशा है ठवली महोदय मध्यप्रान्त व वरारके सर्व स्थानोंके लेखोंके संग्रहका प्रयत्न करेंगे। अन्य उत्साही युवकोको अपने-अपने प्रान्तोंके लेखोंको प्रकट करना चाहिए जिससे किसी समय भारतीय दि० जैन लेख संग्रह पुस्तक निर्माण हो सके।

ब्र० शीतल

९-३-१९३६ नागपुर”

इस पुस्तिकाका प्रकाशन अन्यान्य कारणोंसे अवतक नहीं हो सका था। अतः हमने इस परिशिष्टमें इसका पुनः संपादन किया है। संग्राहकने मूल लेख मन्दिरोंके क्रमसे अलग-अलग संग्रहीत किये थे तथा यन्त्रोंके लेखोंके परिशिष्ट अन्तमें दिये थे। हमने मन्दिरों तथा मूर्तियोंका विवरण अलग दिया है तथा लेख समयक्रमसे अलग दिये हैं। इन लेखोंके विशेष नामोंका समावेश सूचीमें कर दिया है तथा वहाँ लेखोंके साथ ( ना० ) यह संकेत दिया है।

नागपुर नगरका अस्तित्व यद्यपि राष्ट्रकूट साम्राज्यके समयसे ज्ञात होता है तथापि इसे भोसला राजा रघूजी१ के समयसे — सन् १७३४ से प्रधान स्थान प्राप्त हुआ है। तबसे १९५६ तक यह मध्यप्रदेशकी राजधानी रही है। नागपुरके सभी मन्दिर प्रायः भोसला राजाओंके राज्यमें ही बने हैं किन्तु इनमें कई प्रतिमाएँ अन्य स्थानोंसे भी लायी गयी हैं। इस नगरमें कुल ९ मन्दिर हैं। विदर्भकी रीतिके अनुसार यहाँके प्रमुख जैन व्यक्तियोंके घरोंमें भी छोटे छोटे चैत्यालय हैं। ऐसे गृहचैत्यालयोंकी संख्या ३७ है। इन सब स्थानोंमें कुल मिलाकर ६४६ मूर्तियाँ आदि हैं जिनमें धातुकी ४४० तथा पाषाणकी २०६ हैं। इन मूर्तियों आदिके ४१ प्रकार हैं जिनकी संख्या इस प्रकार है — (१) आदिनाथ ४३ (२) अजितनाथ १३ (३) सम्भवनाथ १ (४) सुमतिनाथ २ (५) पद्मप्रभ ७ (६) सुपार्श्वनाथ १२ (७) चन्द्रप्रभ ४३ (८) पुष्पदन्त ३ (९) शीतलनाथ ५ (१०) श्रेयास ३ (११) वासुपूज्य ६ (१२) अनन्तनाथ २ (१३) धर्मनाथ ३ (१४) शान्तिनाथ १० (१५) अरनाथ ६ (१६) मुनिसुव्रत १३ (१७) नेमिनाथ १४ (१८) पार्श्वनाथ १३३ (१९) महावीर १० (२०) चौवीसी ३४ (२१) पंचमेरु ९ (२२) नन्दीश्वर ७ (२३) सिद्ध ४ (२४) बाहुबली ६ (२५) रत्नत्रयमूर्ति ३ (२६) पंचपरमेष्ठि १ (२७) यक्षिणी २७ (२८) सरस्वती ३ (२९) क्षेत्रपाल १ (३०) सप्त ऋषि १ (३१) चौसठ ऋषि १ (३२) गुरुपादुका २ (३३) रत्नत्रय यन्त्र ५ (३४) सम्यग्दर्शन यन्त्र ४ (३५) सम्यक्चारित्र

यन्त्र ६ (३६) दशलक्षण यन्त्र ६ (३७) षोडशकारण यन्त्र २ (३८) कलि-  
कुण्ड यन्त्र १ (३९) सिद्ध यन्त्र १ (४०) नवग्रह यन्त्र १ (४१) जलयात्रा  
यन्त्र १ । इन मूर्तियों आदिमे ५२९ के पादपीठो अथवा किनारोपर लेख  
हैं । ऐसे लेखोंकी संख्या ३२४ है ( जहाँ दो अथवा अधिक मूर्तियोंपर एक  
ही लेख है वहाँ हमने उस लेखको एक लेखके रूपमे ही गिना है । )

समयकी दृष्टिमे ये लेख आठ सदियोंमे इस प्रकार विभक्त हैं - विक्रम  
तेरहवी सदी ४, पन्द्रहवी सदी ३, सोलहवी सदी २२, सत्रहवी सदी  
५१, अठारहवी सदी ७२, उन्नीसवी सदी ६९ तथा बीसवी सदा १०० ।

इन सब लेखोंकी भाषा अशुद्ध संस्कृत है । कुछ लेखोंमें नागपुरकी  
स्थानीय भाषाओ-हिन्दी तथा मराठीका अंशतः प्रयोग हुआ है ( लेख क्र०  
२०६, २६३, २६७, २६९, २७८, २८५ ) किन्तु शुद्ध हिन्दी या मराठीमें  
कोई लेख नहीं है । एक लेख ( क्र० ७३ ) कन्नडमे तथा एक ( क्र० ३१९ )  
उर्दूमें है किन्तु इनका वाचन प्राप्त नहीं हो सका ।

मूर्तिप्रतिष्ठाके स्थानोंके सोलह नाम उल्लिखित हैं - नागपुर ( क्र०  
१५२, १९०-२, २१२, २१५, २१६, २२०-१, २२७, २२९, २३१, २३३, २३५,  
२४२, २४७, २४९, २५०, २५५-७, २५९, २६१, २७९, २८२, २९५ ) कारजा  
( क्र० ८१, १२५, १५७-८, २१० ), सिरसग्राम ( क्र० २०२, २०४ ),  
रामटेक ( क्र० ७३, २५३ ) भीसी ( क्र० १४३ ), तजेगाव ( क्र० १०६ )  
उमरावती ( क्र० १९९ ), इगोली ( क्र० २३२ ), सजालपुर ( क्र० ७० )  
बहादुरपुर ( क्र० ६५ ), अवडनगर ( क्र० १३० ) सिवनी ( क्र० २८० )  
छपारा ( क्र० २८४ ), कामठी ( क्र० १५४ ), सावरगाँव ( क्र० २९३ ),  
सवाई जयनगर ( क्र० १९३ ) ।

प्रतिष्ठाकर्ता व्यक्तियोंकी पन्द्रह जातियोंका उल्लेख मिलता है -  
राइकवाल ( क्र० ९ ), अगरवाल ( क्र० ५३ ), गगराडा ( क्र० १० ),  
गालसिंधारा ( क्र० ७३ ), पल्लीवाल ( क्र० ५१ ), गुजरपल्लीवाल  
( क्र० २१ ), पद्मावती पल्लीवाल ( क्र० ११४ ), उज्जैनीपल्लीवाल

( क्र० १०८, १२०, १४३ ), श्रीश्रीमाल ( क्र० ४९-५० ) हुवड ( क्र० ८, २०, ३०, ३९, ८६ ), गोलापूर्व ( क्र० ६८, २९१ ), परवार ( क्र० ६९, १८८, १९१-९२, २५०, २५४, २६३, २७२, २८५ ), खडेलवाल ( क्र० १०७, २८२ ) सैतवाल ( क्र० ९५, २७९, २८६, २८७ ), बवेरवाल ( क्र० १४, २९, ३८, ४४, ४६, ५५-६, ६६, ८०-८२, ८८-९०, ९२, ९४, ९६, १२२, १२५, १३०-१, १३५, १५७, १८२, १९८, २०१, २०२, २०४, २२७ ) ।

प्रतिष्ठापक आचार्य अधिकाश मूलसंघके सेनगण तथा बलात्कारगणके थे, काष्ठासंघके नन्दीतटगच्छके कुछ आचार्योंके उल्लेख भी है । इन उल्लेखोका उपयोग हमारे ग्रन्थ 'भट्टारक सम्प्रदाय' में किया गया है । उससे इन भट्टारकोके बारेमें अन्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

संवत् १५४८ के दो लेख ( क्र० १८, १९ ) विशेष रूपसे उल्लेखनीय है । इनमें पहला लेख कोई ७७ मूर्तियोपर है । ये मूर्तियाँ मुडासा शहरमें शिवसिंहके राज्यकालमें सेठ जीवराज पापडीवालने प्रतिष्ठित करवायी थी । इस समारोहके प्रमुख भट्टारक जिनचन्द्र थे । इस समारोहमें प्रतिष्ठित मूर्तियाँ प्रायः प्रत्येक दिग्मन्त्रर जैन मन्दिरमें पायी जाती हैं ।



## मूल लेख

- १ संमत १२०१ वैशाख वदी तीन । ( विवरण क्र० १४० )
- २ सं० १२३४ स तु हा ले (?) । ( विवरण क्र० १६६ )
- ३ संमत १२६२ साल\*\*\*\* । ( विवरण क्र० ११५ )
- ४ समत १२६९ वर्ष आषाढ सुदी ३ । ( विवरण क्र० ११४ )
- ५ समत १४५७ वर्ष वैशाख सुदी ६ श्रीमूलसंघ म० श्रीजिन-  
देव साह माणिकचंद्र । ( विवरण क्र० २३१, २३२ )
- ६ मूलसंघ म० धर्मभूषणोपदेशात् समत १४६५ वर्षे ।  
( विवरण क्र० ३०२ )
- ७ संवत् १४८२\*\*\*\* । ( विवरण क्र० ४० )
- ८ संवत् १५१० वर्षे माहमासे शुक्लपक्षे ५ रवौ श्रीमूलसंघे  
सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये म० पद्मनदि  
त्पट्टे म० श्रीसकलकीर्ति तत्शिष्य ब्र० जिनदास हुंबदज्ञातिय  
सा० तेजु मा० मलाई सुत हरिचंद्र मा० नागाई सुत गोविंद  
भा० वजाई । ( विवरण क्र० १६७ )
- ९ सं० १५२१ वर्षे वैशाख वदि २ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे  
बलात्कारगणे श्रीविद्यानंदिगुरूपदेशात् श्रीराहकवालज्ञातिय ...  
भार्या अहिवदे सुत वेणा भार्या वनादे कारितं आचंद्रप्रभचतुर्विं-  
शति नित्यं प्रणमात ॥ श्रीशुभं ॥ ( विवरण क्र० १५७ )
- १० समत १५२४ मूलसंग सेनगणो माणकसेनगुरु गगराडा माल-  
सेटा भार्या तानाई । ( विवरण क्र० ८० )
- ११ समत १५३१ फागुण वदी ५ मू० । ( विवरण क्र० १८८ )
- १२ संमत १५३५ श्रीमू० म० भूवनकारिस्तत्पट्टे म० ज्ञानभूषणस्त-  
दुपदेशात् स० दि० ममाज । ( विवरण क्र० ११३ )



- १३ सं० १५३५ वर्षे पौस वदी ३ श्रीमूलसंघे म० सकलकीर्तिस्त०  
म० श्रीभुवनकीर्तिस्त० म० श्रीज्ञानभूषणगुरुपदेशात् चांगा  
मार्या भूसनदे वदासा मा० तानो... जी वासपूज्य ।  
( विवरण क्र० १६० )
- १४ [ सक ] १४०२ व० श्रीक " श " ज्ञात वधेरवाल गोत्र सं०  
पासधन... सं० जेनराज मातापुत्र प्रणमंति (विवरण क्र० ४१३)
- १५ स० १५४३ श्रीमूलसंग म० श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे श्रीज्ञान-  
भूषणगुरूपदेशात्...दिवसी मा० गुणा सुत... मा० नामलाई ।  
( विवरण क्र० ३८० )
- १६ सं. १५४३ " पदमसी...दन... ( विवरण क्र० ४३३ )
- १७ संमत १५४५ का ज्येष्ठ... । ( विवरण क्र० ३४३ )
- १८ सवत १५४८ वर्षे वैसाख सुदी ३ श्रीमूलसंघे मट्टारक श्रीजिन-  
चंद्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्यं प्रणमंति शहर मुडासा  
राजा स्योसिंघ । ( विवरण क्र० १-३, १०-२६, ४६-४८, ८७, ९१-  
१०२, १४६-१५६, २३८-२६४, ३६७-६९ )
- १९ संमत १५४८ वरषे वैसाखसुदी ३ श्रीमूलसंघे मट्टारकजी  
श्रीमानुचंद्रदेव साह जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमति  
सहर मुडासा श्रीराजा सोसिंघ । ( विवरण क्र० २१८, २१९ )
- २० ॐ नम स० १५५२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुके श्रीमूलसंघे म०  
भुवनकीर्तिस्त० म० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् हुं० श्रे० पर्वत  
मा० देऊ सु० राजा मा० शलदे सुत कर्मसी प्रणमंति श्रीसुम-  
तिनाथ प्रणमति । ( विवरण क्र० १६५ )
- २१ सके १४२४ मूलसंघे सेनगणे म० माणिकसेन उपदेशात् गुजर-  
पल्लिवालज्ञाति संघत्री नेमा... । ( विवरण क्र० १३७ )
- २२ सं० १५६१ वर्षे वैसाख सुदि १० बुधो श्रीमूलसंघे म० श्री-  
ज्ञानभूषण त० म० श्रीविजयकीर्तिगुरूदेशात् व० लाडण स०

- क० राजा मा० माणिकी सु० कान्हा मा० रूपी आ० गोईया  
मा० मरगदिआ०... श्रीरत्नत्रय नमंति । ( विवरण क्र० १६८ )
- २३ संमत १५६१ वर्ष फागुण सुदी... । ( विवरण क्र० ११७ )
- २४ सं० १५७८ मू० म० धर्मभूषण । ( विवरण क्र० ३८३ )
- २५ संमत १५८२ । ( विवरण क्र० ४८२ )
- २६ सं० १५८३ " । ( विवरण क्र० १२१ )
- २७ सं० १५८३ ती १३ " । ( विवरण क्र० ४५३ )
- २८ संमत १५८४ श्री मू. स भ. विजयकीर्ति तत्पट्टे भ.  
शुभचन्द्रव्वापदेशात् ब्रह्म श्रीशांता बेलीबाई-ति प्रणमंति ।  
( विवरण क्र २०५ )
- २९ संमत ६०० वर्षे फागुण वदी ५ शुक्रे श्रीमूलसंगे भट्टारक  
श्रीरामकीर्ति प्रतिष्ठित सेनगणे बघेरवाल ज्ञातिय चवरियागोत्रे  
सा. धाऊजा भार्या वोपाई सुत सा. माणिक भार्या पदमाई  
आता रतन भार्या पसाई पुत्र धाऊजी एते श्रासुपार्श्वनाथं  
नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र ३०९ )
- ३० संवत् १६०७ वर्षे बैसाख वदी ३ गुरु श्रीमूलसंघे म श्रीशुभ-  
चन्द्रगुरुपदेशात् हूँ सखेस्वरा गोत्रे सा जीना मा. भाली सु  
नाका भा नाकदे आ जगा भा. ललितादे आ -नार एते सर्वे  
नित्यं प्रणमति । ( विवरण क्र ४२६ )
- ३१ [ सं. ] १६०८-उषा- । ( विवरण क्र. ४८४ )
- ३२ संमत १६०९ फालगुण २ दिन- । ( विवरण क्र १३९ )
- ३३ संवत् १६११ ते रागविदे (?) प्रणमंति । ( विवरण क्र ४६० )
- ३४ संमत १६१४ सेनगण धरमाई वोपाई चांगामा ।  
( विवरण क्र २००, ३६६ )
- ३५ सं० १६१५ मा० १३ । ( विवरण क्र ४६० )
- ३६ सं० १६१६ । ( विवरण क्र ४६१ )

- ३७ लके १४८५ मू० स- । ( विवरण क्र. २२५ )
- ३८ सक १४८७ प्रजापतसंवत्सरे श्रीमू. मरस्वती वलात्कार. म. धर्मचंद्राणाम् उपदेशात् ज्ञाति बघेरवाल भुरा गोत्रे सा रतन सं भार्या पुनली लसमाई-प्रणमंति । ( विवरण क्र ४३४ )
- ३९ सं. १६२५ आषाढ शुद्धि ५ श्रीमूलसधे ब्रह्म श्रीहस ब्रह्म श्रीराज-पालोपदेशात् हुंवड ज्ञातौ सा, समराज भा. लोकोई स. आसर्जा मा वाकाई । ( विवरण क्र २६८ )
- ४० श्रीमूलसंध संमत १६३१ वर्षे फाग सुदी १० सोमे म. श्रीगुणकीर्तिगुरुपदेशात् सं. कर भार्या लहागदेई सं. वीरदास मा तोकमई श्रीभजितनाथ जिन प्रणमंति ।  
( विवरण क्र. ३०७ )
- ४१ संमत १६३६ मरानोजी पु ( ? ) । ( विवरण क्र ३०६ )
- ४२ संवत् १६३६ श्रीकाष्ठामंधे भ० विद्याभूषण प्रतिष्ठितं झुंवड सा. जयवंतभार्या तसमादे सु-जीवराजसा धनराजसा प्रणपालसा नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र ४०८ )
- ४३ शक १५०१ मा. तिथी ८ काष्ठासधे म. श्रीश्रीभूषणसद्गुपदेशात् प० जयवंत ( विवरण क्र ४३६ )
- ४४ सके १५०३ वृषा नाम संवत्सरे फागुण सुदि ७ श्रीमूलसंध व. म. धर्मसूषणोपदेशात् बघेरवालज्ञाति ठवलागोत्रे सं. पासुसा भार्या सं० रूपाई तयो पुत्रौ आपुसा भार्या लिंवाई रामासा भार्या बोपाई पते प्रणमंति । ( विवरण क्र ४२१ )
- ४५ सके १५०६ माघ वदी १ गोत्र चवरिया गुणासा ।  
( विवरण क्र. ३९१ )
- ४६ संमत १६४५ वैशाख सुदी ७ सोमवार श्रीकाष्ठासंधे लाडबाग-दगणे पुष्करगच्छे भट्टारकश्रीप्रतापकीर्ति तस्य आम्नाये बघेर-

वालज्ञातिये बोरखंडियागोत्रे संगई पुंजासा स० धवाई प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० ४५० )

४७ संमत १६४६ वर्षे श्रीमूलसग मट्टारक श्री\*\*\*वीर तत्पट्टे म.  
श्री सेन तस्य शिष्य पंडित श्रीगजा उपदेशात् साह बावजी  
भार्या दामाई तयो पुत्र गकुरसाह तस्य भार्या पेमाई तयो सुत  
तुवाजीसाह भार्या लखमाई तेषा नित्यं प्रणमति साव फागुण  
शुदी १० गुरुवासरे श्रीचितामणो पार्श्वनाथचैत्यालये प्रतिष्ठित ॥  
शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ जे पूजता ते भवंतु ॥ जयस्तु ॥  
( विवरण क्र० ३११ )

४८ सं. १६४९ फा. शु. १३ मू बलात्कार. म पद्मकीर्ति उप-  
देशात् . १ ( विवरण क्र० ४३० )

४९ [ स० ] १६५२ बैसाख सुद १४ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे  
पद्मकीर्ति विद्याभूषण हेमकीर्ति सदुपदेशात् श्रीश्रीमाल\*\*\*  
( विवरण क्र० २६६, २६९ )

५० समत १६५३ बैसाख शुद्ध १४ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे मट्टा-  
रक हेमकीर्ति उपदेशात् श्री श्रीमालज्ञातौ महासा नित्य प्रणमनु  
( विवरण क्र० ४७५ )

५१ शके १५१९ मन्मथनामसंवत्सरे बैसाख सुदि त्रयोदशीदिने  
घटापित श्रीमूलसघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचा-  
र्यान्वये म० श्रीधर्मभूषणोपदेशात् पल्लीवालज्ञातीय स. वायासा  
तस्य भार्या गंगाई तयो पुत्र स लखमसी तस्य भार्या द्वौ  
गोमाई लालाई तेषा पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र सं मोतासा द्वितीय  
नेमा प्रणमति । ( विवरण क्र० १२४ )

५२ श्रीमूलसघे सेनगणे वृषभसेनगणधरान्वये श्रीसम्मतमद्र लक्ष्मी-  
सेनमट्टारकउपदेशात् सके १५२१ फागुण सुद पा रवौ सन्नवी  
सोमसेठी श्रीमगल । ( विवरण क्र० १३० )

- ५३ संवत् १६५८ वर्षे श्रापाद वटी.....अगरवालजा० । ( विवरण क्र० ४८३ ) ।
- ५४ शके १५०५ वर्षे शुभकृत नाम सवत्सरे ज्येष्ठशुक्लपक्षे १३ तिथौ प्रतिष्ठिता । ( विवरण क्र० २७१ )
- ५५ संमत १६६० वर्षे फालगुण शुद्धि १० श्रीकाष्टासंघे लाडवाग-डगच्छे म० श्रीप्रतापकीर्ति नंदिसंघे वधेरवालजातिय-सा भारया वीरूना परिनवाई तयो पुत्र सा० नोगु मा परिहाई श्रीपशा-वति प्रणमंति श्रीकाष्टासंघे नंदितटगच्छे मटारक श्री श्री श्रीभूपण प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ४१४ )
- ५६ शक १५०५ वर्षे श्रीमूलसंघे मेदगगे श्रीमनवृषमसेनगणान्वये म० श्रीसोमसेन तत्पट्टे म० श्रीमाणिकसेन तत्पट्टे म० श्रीगुण-मद्र तत्पट्टे म० श्रीगुणसेन उपदेशात् वधेरवालजातीय खट्वड-गात्रे म० श्रीहरकसा भार्या गोजाई तयो सुत सं० गणासा भार्या कडताई येते श्रीरत्नत्रयचतुर्विंशति प्रणमंति । ( विवरण क्र० १९० )
- ५७ समत १६६० वर्षे फाग सुद ॥ गु० श्री पुतत्-वा- मुन्नावाई श्रीशीतलनाथविवका म०-१ ( विवरण क्र० २७८ )
- ५८ सक १५२६ माहो सुद १३ मटारक हेमकीर्ति उपदेशात् प्रति-ष्ठित मितलसिंघवी-ताजी सवाल तुरासु (१) रूपा नित्यं प्रण-मंति । ( विवरण क्र० ४३९ )
- ५९ संवत् १६६३ वर्षे.....श्रीमूलसंघे म० जगतकीर्ति सदुपदेशात्-स्वेरान्वये-प्रतिष्ठितं ( विवरण क्र० ४८६ )
- ६० संमत १६६४ ...महाराजाविराज ...श्रीचन्द्रकीर्ति-तत्पट्टे मटारक देवेन्द्रकीर्तिजी आम्नाय सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुंदकुंदाचा-र्यान्वय प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २७ )
- ६१ समत १६६९ चैत्रसुद १५ रवौ मूलसंघे कुं० म० यशोकीर्ति

- तत्पट्टे म० ललितकीर्ति तत्पट्टे म० धर्मकीर्ति उपदेशात्-पदे-।  
( विवरण क्र० २१३ )
- ६२ ॐ नम समत १६७१ वर्षे वैसाख सुद ५ मूलसधे बलात्कार-  
रणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये म० यशकीर्ति तत्पट्टे म०  
धर्मकीर्ति तद्रुपदेशात् पौरपहे सा उदयचद भार्या-अचित्रारा मूले  
गोहिलगोत्रे-उदयगौरेंद्र प्रतिष्ठा प्रसिद्धं सोनी दामोदर निर्मापित  
समवानि समाहित प्रतिष्ठामध्ये प्रतिष्ठितं नदिश्वरजिनविव ।  
( विवरण क्र० २१५ )
- ६३ संवत् १६७२ वर्षे फागुण सित २ तिथौ सेढतानगरे लोढागोत्रे  
स० चारपात भार्या सकतादेवीभ्यां श्रीधर्मनाथविवं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्रीजिनचद्रसूरिमि. । ( विवरण क्र० १५८ )
- ६४ सके १५३७ । ( विवरण क्र० ४४१ )
- ६५ संमत १६७६ वर्षे माघवदी ८ श्रीकाष्टासधे लाडवागडगच्छे  
मट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवालज्ञातौ बोरखड्यागोत्रे  
वर्मतीसा भार्या अवाई तयो पुत्र लखमणसा प्रमुख पचपुत्र  
समार्या सपुत्र श्रीचन्द्रप्रभु प्रणमति । श्रीकाष्टासधे नंदितट-  
गच्छे म० श्रीभूगण प्रतिष्ठित बहादरपुरे । (विवरण क्र० २९८)
- ६६ समत १६७६ वर्षे माघवदी काष्टासगे लाडवागडगच्छे श्रीप्रता-  
पकीर्ति उपदेशात् बघेरवाल ज्ञातिय गोवालगोत्रे स० बापु  
भार्या जमुना ( विवरण क्र० १४३ )
- ६७ [ स० ] १६८१ पार्श्वनाथ मानिक । ( विवरण क्र० ४३८ )
- ६८ सवत १६८१ वर्षे चैत्र सुदी ५ रवळ श्रीमूलसधे मट्टारकश्री-  
ललितकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीरत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे  
आचार्यश्रीचद्रकीर्तिस्तद्रुपदेशात् गोलापूर्वान्वये खाग नाम गोत्रे  
सेठि मानु भार्या चदनसिरी तत्पुत्र सेठि कतुरु भार्या किसवा  
तस्य पुत्री जादी नित्यं प्रणमंति ( विवरण क्र० २६५ )

- ६९ संमत १६८१ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ म० धर्मकीर्ति उपदेशात्  
परवारज्ञातो" । ( विवरण क्र० २२३ )
- ७० संमत १६८१ वै० सु० १ दिने सजालपुरवास्तव्य सं० चद्रा  
श्रीपाश्वर्नाथविव कारितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयदेवसू [ रिमि. ] ।  
( विवरण क्र० २०१ )
- ७१ संवत् १६८१ माघ सुदी १ दिन " । ( विवरणक्र० १०८ )
- ७२ संवत् १६८१ माघ सुदी १ दिन " । ( विवरण क्र० १४४ )
- ७३ संवत् १६८६ श्रीमूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदा-  
चार्यान्वये म० श्रीधर्मचंद्र तदाम्नीय श्री( चार्य )पासकीर्ति  
तदुपदेशात् संघवि वरहरसाह गोलसिधारा रामटेक सातिनाथ  
प्रसादेनू ज्येष्ठ वद्य ५ शमि तिलक मंगलं शुभ भवतु ॥ छ ॥  
( विवरण क्र० २७४ )
- ७४ सं० १६९१ मा० रत्नकीर्ति । ( विवरण क्र० ३८२ )
- ७५ संमत १६९२ मिति बैसाख वदी ११ सोमवासरे म० धर्मचंद्र-  
जी । ( विवरण क्र० १२० )
- ७६ शके १५६१ प्रभवनामसंवत्सरे फालगुण सुदी द्वितीया मूलसधे  
पुष्करगच्छे सेनगणे मट्टारक श्रीसोमसेनउपदेशात् प्रतिष्ठितं" ।  
( विवरण क्र० १११ )
- ७७ शके १५६१ फालगुण सुदी २ गुरु श्रीमूलसधे पुष्करगच्छे  
सेनगणे हुंवड" । ( विवरण क्र० १३४ )
- ७८ शक १५६१ फालगुण "श्रीमूलसंघ सेनगण म० श्रीसोमसेन  
तुक्साव गुणासाव "बोपासा नित्यं प्रणमंति । ( विवरण  
क्र० २११ )
- ७९ शके १५६१ फाग वदी १० शनैश्वरे काष्ठासधे लाडवागड वच्हा-  
डगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये श्रीनरेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे तमो० "

उ० सा० पामादि पु० देवासा नि० प्रतिष्ठितं श्रीलक्ष्मीसेन  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २३५ )

८० शके १५६१ पार्थीवनामसंवत्सरे श्रीमू० व० स० म० धर्म-  
चंद्रोपदेशात् वधेरवालज्ञातीय खंडारियागोत्रे श्रावण मा० गगाई  
तयोपुत्र भाणिकसा भार्या गोपाई प्रतिष्ठितं । ( विवरण  
क्र० ३८९ )

८१ संमत १७०३ वर्षे ज्येष्ठ वदी १० शके श्रीकाष्टासघे लाडबागढ-  
गच्छे लोहाचार्यान्वये वराडप्रदेशे कारंजीनगरे प्रतापकीर्तिआ-  
म्नाय वधेरवाल ज्ञातीय कावला गोत्र सा श्रीपाससा भार्या  
पद्माई तयो सुत सा वण भार्या मणकाई तयो पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र  
स० श्रीरामा भार्या अंवाई द्वितीय पुत्र सा पतसा एते समस्तै  
श्रीकाष्टासघे नदितटगच्छे म० श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण म०  
श्रीविश्वसेन तत्पट्टे श्रीविद्याभूषण तत्पट्टे म० श्रीश्रीभूषण तत्पट्टे  
श्रीचंद्रकीर्ति तत्पट्टे म० श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे म० श्रीलक्ष्मी  
सेनजी प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० १३५ )

८२ मूलसगे बलात्कारगणे म० धर्मभूषणगुरूपदेशात् वधेरवाल  
पुत्र सा ( मित्र अक्षरमें ) संमत १७०६ वर्षे मी माह सु०  
५ मो पुजासा । ( विवरण क्र० ३१० )

८३ शके १५७२ । ( विवरण क्र० ११८ )

८४ संमत १७११ म० सकलकीर्ति सा० लाले पुत्रवते प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० ३३६ )

८५ ॐ नमः सिद्धेभ्य सा म० संवत् १७११ श्रीमट्टारक ।  
( विवरण क्र० ४७६ )

८६ संवत् १७१३ वर्षे माघ सुदि ११ गुरौ श्रीमूलसघे ब्रह्म श्रीशांति-  
दास तत्पट्टे ब्रह्मश्रीवाडिराज गुरूपदेशात् हुं वड ज्ञातीय चाई



- लावाई इति सिद्धयत्रं नित्यं प्रणमंति । शुभं भूयात् ।  
( विवरण क्र० २७५ )
- ८७ शक १५७८—सुखनाम मू० स० म० श्रीधर्मभूषण उपदेशात्  
तिमासा भार्या वखाई तयो पुत्र भूतसा त० देवाई ।  
( विवरण क्र० १८४ )
- ८८ शके १५८० माघ सुदी ५ सोमे कारंजानगरे काष्ठासधे नंदितट-  
गच्छे म० इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं वधेरवालज्ञाति गोवलगोत्रे...भा०  
दुलणवाई...प्रणमंति । ( विवरण क्र० १४१ )
- ८९ संवत् १७१५ वर्षे माघ सुदी ५ काष्ठासधे नंदितटगच्छे विद्या-  
गणे ..वधेरवाल जातीय बोरखंड्यागोत्रे स० खांमा भार्या  
पुतलाई तयो पुत्र स० धनजी भार्या पदाई येन सुपार्श्वनाथ  
प्रणमति । ( विवरण क्र० १४२ )
- ९० शके १५८० माघ सुदी ५ सोमवार काष्ठासधे नंदितटगच्छे  
महारक श्री इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं वधेरवालज्ञातौ बोरखंडियागोत्रे  
तेऊजीसा भार्या जसाई तयो पुत्र पौत्र नाथुसा सा० चिंतामणसा  
पुते अंबिका नित्यं [ प्रणमंति ] ( विवरण क्र० ४४७ )
- ९१ संवत् १७१५ माघ सुदी ५ सोमवार काष्ठासधे नंदितटगच्छे  
विद्यागणे महारकरामसेनान्वये राजकीर्ति तत्पट्टे महारक लक्ष्मी-  
सेन तत्पट्टे म० इंद्रभूषण प्रतिष्ठितं संघवी खांमा भार्या पुतलाई  
तयो पुत्र सं० धनजी भार्या पदाई अंबिका प्रणमंति काष्ठासधे  
लोहाचार्यान्वये प्रतापकीर्ति संघवी खांमा भार्या पुतलाई सं०  
धनजी । ( विवरण क्र० ४४८ )
- ९२ संवत् १७१५ माघ सुदी ५ सोमे काष्ठासधे लाहवागढगच्छे म०  
प्रतापकीर्ति तटाभ्नाये वधेरवालज्ञातौ कावरी ।  
( विवरण क्र० ५ )

- ९३ शके १५८१ सौ० फा० व० ३ मू० स० म० पद्मकीर्ति सो० ज्ञा०  
बुनसेट भाग्या भ्राता । ( विवरण क्र० २०२ )
- ९४ श० १५८१ क० व० पद्म० म० जे० का० ज्ञा० वधेरवाल  
लुगाई दा पु ता सा मा वा सा त (?) ग गु... ।  
( विवरण क्र० ४०६, ४०६ )
- ९५ सक १५८२ स्यार्वरी नाम संवत्सरे तीथ फालगुण शुद्ध दसमी  
१०॥ श्रीशांतीनाथचैत्यालय श्रीबलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे  
श्रीकुंदकुदाचार्यान् मट्टारक श्रीपद्मकीर्ति उपदेशात् रामटेक नग्र  
ज्ञाती सद्गतवाल... रायाजी जाई । ( विवरण क्र० २७३ )
- ९६ सके १५८२ फालगुण शुद्ध ७ तिलक सेन मट्टारक श्रीजिनसेन  
वधेरवालज्ञातौ चवरियागोत्रे सा०... भार्या... नित्यं प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० ४४५ )
- ९७ समत १७१८ । ( विवरण क्र० १२३ )
- ९८ शके १५८३ प्रसवनामसंवत्सरे ज्येष्ठवदी प्रथम व० कु०  
म० ... । ( विवरण क्र० २२९ )
- ९९ शके १५८६ वर्षे क्रोभनामसंवत्सरे तिथी फागुण शुद्ध ५ श्रीमूल-  
संधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे म० धर्मचंद्र तत्पट्टे म० धर्म-  
भूषण महाराज प० नेमाजी भार्या राजाई पुत्र सोयराजी तां  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २०८ )
- १०० शक १५८६ ... । ( विवरण क्र० ३८८ )
- १०१ शके १५८९ । ( विवरण क्र० ७ )
- १०२ शके १५९२ वैसाख 'मुलसद्य सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे  
कुंदकुदाचार्यान्वये मट्टारक कुमुदचंद्र तत्पट्टे म० अजितकीर्ति  
त० म० विशालकीर्ति उपदेशात्' सोनोपडित रोडे ।  
( विवरण क्र० १८० )
- १०३ समत १७३१ । ( विवरण क्र० १२२ )

- १०४ सके १५९६ फा० शु ॥ ३ म० . कीर्ति तत्पट्टे दयाभूषण श्रीमू०  
स० व० । ( विवरण क्र० २२१ )
- १०५ शके १५९७ मुलसंघ बलात्कारगण म० धर्मभूषण ॐ हरीसाव  
पुत्र फकीचंद प्रणमति । ( विवरण क्र० २२८ )
- १०६ श० १५९७ मू० सेनगणे म० जि० तजेगामग्रामे गु० गनसेठ  
भा० सिशवाई पु० कृस्नाजी भा० मेगाई पु० जोगाजी प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० ४५७ )
- १०७ संमत १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्रीमूलसंघे मट्टारक श्रीसुरेद्र-  
कीर्तिस्तदाम्नाये खंडेरवालान्वये गृध्रवालगोत्रे सा देवसी पुत्र  
संगहान प्रतिष्ठा कारिता... । ( विवरण क्र० ३७७ )
- १०८ शके १५९७ मू ॥ व ॥ म० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् ऊजानीपल्ली-  
वालज्ञातीय माणिकसा तत्पुत्र नारसा सुत शतसा प्रणमंति ।  
( विवरण क्र० १५९ )
- १०९ [ श० ] १५६७ सु० जीनसेन उ० लखसेठ माहोरकर प्रण-  
मंति । ( विवरण क्र० १६२ )
- ११० शके १५६६पिंगलू श्रीमू० । ( विवरण क्र० ४९७ )
- १११ सक १६०१ समत १७३६ . । ( विवरण क्र० ३५९ )
- ११२ सक १६०१ मार्गशिर्ष । ( विवरण क्र० २२० )
- ११३ १६०६ स० श्रीमू० । ( विवरण क्र० ४९१ )
- ११४ सके १६०१ फालगुण सुदि ११ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे  
मट्टारकश्रीपद्मकीर्तिसदुपदेशात्श्रीपद्मावतीपल्लीवालज्ञातौ अडनाव  
कुस्तानी पानसा भार्या मगनाई तयोपुत्र बाहुजी प्रणमति ।  
( विवरण क्र० २७२ )
- ११५ सातिनाथ सके १६०४ श्री. । ( विवरण क्र० ३७५ )
- ११६ रा० अरजुनसा सके १६०७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी ५  
श्रीमूलसंघे खंडारियागोत्रे स पी० । ( विवरण क्र० १२९ )

- ११७ सातनाथ सके १६०७ '४ माघेर '। ( विवरण क्र० ४६२ )
- ११८ सके १६०७ '। ( विवरण क्र० ४७४ )
- ११९ सके १७०७ संमत १७४२ । ( विवरण क्र० ४५२ )
- १२० शके १६०७ प्रमवनामसंवत्सरे फालगुण वदी १० भ० धर्मचंद्र उपदेशात् सु० नगरे ज्ञाते उज्जेनीपल्लीवार गोदसा भार्या सेमाई व० साह '। भार्या नागाई प्रणमति । (विवरण क्र० १८७)
- १२१ सके १६०८ फागण वदि १० श्रीमूलसधे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये मट्टारक श्रीविशालकीर्तिस्तत्पट्टे म० श्रीपद्मकीर्तिस्तत्पट्टे म० श्रीविद्याभूषण स्वकर्मक्षयार्थ । ( विवरण क्र० २६७ )
- १२२ सवत १७४४ सके १६०९ फालगुण सुद १३ श्रीमत्काष्टासधे लाडवागडगच्छे म० प्रतापकीर्ति आम्नाये वघेरवालज्ञातौ गोवाल-गोत्रे सधवी पदाजी भार्या तानाई तयो पुत्र संववी जमनाजी भार्या हासुवाई तयो पुत्रा तुर्य स० पुतलावा भार्या गगाई स० पुजावा मा० देवकु स० शीतलावा मा० सकाई इ० पदाजी एते सह नित्य प्रणमति श्रीकाष्टासधे नदितटगच्छे म० इद्रभूषण म० सुरेंद्रकीर्ति । ( विवरण क्र० १७२, १७४, ४४६ )
- १२३ सके १६०९ फा० सु० १३ काष्टासंधे लाडवागडगच्छे प्रतापकीर्त्या-म्नाय म० सुरेंद्रकीर्ति सं० पदाजी मा० तानाई पु० राजवा मा० सोनाई पु० अनतोबा मा० पामाई जी प्रतिष्ठितं (विवरण क्र० १७५)
- १२४ सके १६०९ 'वलात्कार । ( विवरण क्र० ४७८ )
- १२५ सवत १७४५ ज्येष्ठ सुदी २ सोमवार श्रीकारजानगरे काष्टासधे प्रतापकीर्तिआम्नाये वघेरवालज्ञातौ वोरखंडियागोत्रे सा० मनासा भार्या शकाई तयो पुत्रा श्रव सा अर्जुन मा० रगाई शितलसा भार्या सायरा लक्ष्मणसा मा० जीवाई येसोवा पुतलोधा' नित्यं प्रणमति । ( विवरण क्र० ४४९ )

- १२६ मिती चैसाख सुदी ३ संमत १७४५ \*\*। ( विवरण क्र० ६६ )
- १२७ संमत १७४६ । ( विवरण क्र० ३२६ )
- १२८ शके १६११ श्री\*\*\*। ( विवरण क्र० ३६१ )
- १२९ सं० १७४६ । ( विवरण क्र० ३८४ )
- १३० समत १७४७ सके १६१२ ज्येष्ठ वदी ७ म० श्रीइंद्रभूषण त० म० सुरेन्द्रकीर्ति प्रतिष्ठितं श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये म० श्रीनरेन्द्रकीर्ति प० म० श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये वघेरवालज्ञाति गोवालगोत्रे स० बापु पुत्र स० भोज सघवी पदाजी भार्या तानाई पुत्र सं० बापु स० जमनाजी सं० राजवा अथ संघवी जमनाजी भार्या हसाई समस्त कुटुम्बपरिवार नित्यं प्रणमंति दर्शनयत्र श्रीअवढनगर प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० १७६ )
- १३१ शके १६१२ ज्येष्ठ वदि ७ श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे म० श्रीकुदकुंदाचार्यान्वय म० धर्मभूषण त० म० विशाळकीर्ति त० म० धर्मचंद्रोपदेशात् वघेरवालज्ञाति खडासो गोत्रे सा० राघुसा सुत ळपुसा अंबिका नित्यं प्रणमंति । ( विवरण क्र० ४३२ )
- १३२ समत १७५० सवधारी नाम सवत्सरे आषाढ कृष्ण तिथि भार्या श्री\*\*\* । ( विवरण क्र० ७३ )
- १३३ शके १६१७ फा० ५ \*\*। ( विवरण क्र० ३७८ )
- १३४ सं० १७५२ माघ वदी ८ श्रीमूलसघ म० श्रीहेमकीर्ति गु० त० न न जा सवजी (?) । विवरण क्र० ४११ )
- १३५ संवत् १७५३ वर्षे चैसाख सुदि ६ सनीं श्रीकाष्टासघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति तदाम्नाये वघेरवालज्ञातौ गोवालगोत्रे संघवी भोज भार्या पदमाई नयोपुत्र अरजुन भार्या सकाई तासो पुत्र सं० तवना भार्या

सिता पुत्र सं० मामा भार्या देगई संघवी धर्मा भार्या फालाई  
तयो पुत्र सं० सितल भार्या देनकु भार्या हिराई तयो पुत्र भोज  
द्वितीयभार्या इत्यादि सपरिवारे नित्यं प्रणमंति । श्रीकाष्टासंघे  
नंदीतटगच्छे म० रामसेनान्वये तदनुक्रमेण म० इंद्रभूषण तत्पट्टे  
म० सु ( रेंद्रकीर्ति ) । ( विवरण क्र० १६९ )

१३६ संमत १७५३ वरषे मिती वैसाख सुदी ३...पापडीवाल प्रति-  
ष्ठितं । ( विवरण क्र० ५८, ६३, ६४, ८८ )

१३७ शके १६१६ वै० सु० ३ श्रीमूलसव सेनगण । ( विवरण क्र०  
१६४, २१६ )

१३८ सवत १७५४ मूलसघे सेनगणे पुष्करगच्छे म० छत्रसेनोपदे-  
शात्... । ( विवरण क्र० ८ )

१३९ [ सं० ] १७५६ श्रोसु० बा० सं० श्रीदेवद्रकीर्ति म० प्रतिष्ठित  
मिती माघ सुद ५ । ( विवरण क्र० २०४, ४६९ )

१४० सके १६२२... म० श्री चंद्रगुरुपदेशात् । ( विवरण क्र०  
३३० )

१४१ शके १६२४ विभवनामसंवत्सरे माघ ।

१४२ सं० १६२६ म० हेमकीर्ति उपदेशात् प्रतिष्ठितं सी० सं० ।  
( विवरण क्र० ४१२ )

१४३ शक १६२६ तारणनामसवत्सरे माहो सुद १३ शुक्रे मूलसंव  
वलात्कारगण कुदकुंदाचार्यान्वये म० पद्मकीर्ति तत्पट्टे म० विद्या-  
भूषण त० म० हेमकीर्ति उपदेशात् उज्जैनीपल्लीवालज्ञातीय  
सिगवी लखमप्रसादजी भार्या गोमाई तस्य पुत्र नेमासिगवी  
मितलसिगवी सितलसिगवीप्रतिष्ठितं भीसीनगरे चंद्रनाथ-  
चैत्यालये गुमासा चिंतामणिसा नित्य प्रणमतु ( विवरण क्र०  
२१० )

१४४ शक १६२६ तारण सवत्सरे माह सुद १३ मूलसंव व० म०

- हेमकीर्ति उपदेशात् सितलसंगई प्रतिष्ठितं शुभं भूयात् । ( विवरण क्र० १८६ )
- १४५ शके १६२८-विभवनामसंवत्सरे माघ ... । ( विवरण क्र० ३०५, ३३८, ४०१ )
- १४६ सक १६३६ जय० फा० दत्ताजी । ( विवरण क्र० ४३५ )
- १४७ संमत १७७२ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुद ( कुंदाचार्यान्वये ) । ( विवरण क्र० ५७ )
- १४८ संमत १७७८ चैत्र सुदी ६ श्रीमू० स० । ( विवरण क्र० २९ )
- १४९ सं० १७८३ । ( विवरण क्र० ४६३ )
- १५० संमत १७९१ मूलसंघ । ( विवरण क्र० ११९ )
- १५१ संमत १७९३ प्र० श्रीमू० स० व० म० श्रीधर्मचंद्रना उपदेशात् ज्ञान वा० मोजसा मा नावाई त० पु० फडआ (?) नित्यं प्रणमति । ( विवरण क्र० ४०५ )
- १५२ संवत् १८०० वैसाख शु॥ ३ मौमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कार-गणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये... नागपुरमे' प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ५१, ५६ )
- १५३ संमत १८०० वैसाख सुदी ३ । ( विवरण क्र० ५६ )
- १५४ संमत १८१० माघ सुद २ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती-गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये गोपाचलपट्टे मट्टारक श्रीचारुचंद्रभूषण तदोपदेशात् नगरे प्रतिष्ठा करार्षिता कामठी सदर... । ( विवरण क्र० २०९ )
- १५५ शके १६७६ । ( विवरण क्र० ३३५ )
- १५६ श्रीमूलसंघे सके १६७६ । ( विवरण क्र० ४४३ )
- १५७ शके १६७७ क्रौवनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी १० बुधे सुलसव पुष्करगच्छे सेनगणेम्नाये मट्टारकजी सोमसेनदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्रीजिनसेनगुरूपदेशात् कारंजाग्रामवास्तव्य बधेरवालज्ञात

सावलागोत्रे वीरासाह भार्या हिराई तयोपुत्र जिनासाह भार्या  
गोपाई तयो पुत्र द्वौ प्रथम पुत्र तवनासा भार्या अंबाई द्वितीयपुत्र  
शितलसाह भार्या पदाई नित्य प्रणमति । ( विवरण क्र० १७७ )

१५८ शक १६७८ माघ सुद १४ मूलसंघ म० शांतिसेनोपदेशात्  
प्रतिष्ठित कारजाग्रामवास्तव्येन नेवाज्ञाति फु० गोत्र पु०  
चिंतामणसा नित्यं प्रणमति । ( विवरण क्र० २१२ )

१५९ समत १८१४ शके १६७९ । ( विवरण क्र० ४४४ )

१६० शक १६८१ फा० व ॥ ६ मू० स० व० कु० म० धर्मचंदे ..  
पार्श्वनाथविव । ( विवरण क्र० १३८ )

१६१ शक १६८६ स० म० व० म० धर्मचंद्र । ( विवरण क्र० २०३ )

१६२ शके १६८७ फा० ५ अ० । ( विवरण क्र० ४३१ )

१६३ सके १६८७ मन्मथ अजितकीर्तिउपदेशात् स० छ रे म टा कं (?)  
फा० सु० २ । ( विवरण क्र० ४७० )

१६४ सवत १८२३ चैत्र वदी ८ । ( विवरण क्र० ३१६ )

१६५ संमत १८२७ सके १६९२ वैसाख सुदी १२ "उपदेशात् " ।  
( विवरण क्र० २९९ )

१६६ सके १६९२ मिति वैसाख वद ११ श्रीमूलसंघे स० व० म०  
धर्मचंद्र प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ६ )

१६७ शके १६९५ । ( विवरण क्र० ४६७ )

१६८ सके १६९५ मन्मथनामसवत्सरे । ( विवरण क्र० २३६ )

१६९ सके १६९७ फा ॥ ५ अ० बावजि । ( विवरण क्र० ४५९ )

१७० सके १६९७ स० म० स० म० अजितकीर्ति... । ( विवरण  
क्र० ४६५ )

१७१ सके १६९७ म० फा० सु० ५ म० अ० मना । ( विवरण क्र०  
४७३ )

१७२ सके १६९७ फा० ५ अ० अय ति० । विवरण क्र० ४७७ )



- १७३ (सके) १६६७ फा० ५ अ० ज० ल० । ( विवरण क्र० ४७६ )
- १७४ शके १६९७ मन्मथनामसंवत्सरे अजितकीर्ति उपदेशात् परवार हिरामन फाल० शु० द्वितीया २ । ( विवरण क्र० ४८० )
- १७५ सके १६६७ मनाजी सेठ भ० अ० । ( विवरण क्र० ४२३ )
- १७६ शके १६९७ मि० फा० २ ...नथु । ( विवरण क्र० ३१५ )
- १७७ समत १८३२ मन्मथनामसंवत्सरे मृ० व० म० कुं० भ० पद्मकीर्ति म० विद्याभूषण म० हेमकीर्ति तत्पट्टे अजितकीर्ति फालगुण मासे शुद्ध २ पक्षपरमेष्ठी । ( विवरण क्र० २२७ )
- १७८ शक १६६७ ...नाम सवत्सर म० अजितकीर्ति उपदेशात् फा० शु० २ । ( विवरण क्र० २०६ )
- १७९ शके १६९८ मु० ( विवरण क्र० ३२४ )
- १८० श्रीमूलसंधी सके १७०५ । ( विवरण क्र० ४४० )
- १८१ सक १७०७ चैत्र वद १३ आ मूलसंधे सरस्वतीगच्छ वलात्कार-गण । ( विवरण क्र० ७६ )
- १८२ समत १८४५ सके १७१० श्रीमत्काष्टासंधे लाडवागड नदितट-गच्छे म० सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे म० सकलकीर्ति तत्पट्टे म० लक्ष्मी सेनजी श्रीवघेलवालजाति जुगिया गोत्रे...काष्टासंध गादी" । ( विवरण क्र० १३३ )
- १८३ सके १७१० शै कीलनामसंवत्सरे मित्ती श्रावण शुद्ध १२ श्री-मूलसंध चिमनाजी सरावणे तय पुत्र सुरारजी । ( विवरण क्र० १२८ )
- १८४ सा० १७१० काष्टासंधी वर्षासा जोगी । ( विवरण क्र० १७३ )
- १८५ समत १८४६ आर्तिक सुदी ४ काष्टासंधे नदितटगच्छे ...श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्ठित... । ( विवरण क्र० १३२ )
- १८६ समत १८५२ भट्टारक ...उपदेशात् रामलालेन प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ४६८ )

- १८७ सके १७१८ सवत १८५३ मार्गेश्वर । ( विवरण क्र० ४६२, ४६६ )
- १८८ ॐ नमः सिद्धेभ्य समत १८५७ शके १७२२ मादवा सुदी १० सोमवासरे कुंदकुंदाचार्याम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे म० श्री श्री श्री अजितकीर्ति तस्य उपदेशात् गोहिल परवार जाते मगलं भूयात् । ( विवरण क्र० ३१ )
- १८९ साल १७२३ सवत १८५८ फागवदी २ । (विवरण क्र० ४२५)
- १९० संमत १८५९ शके १७२४ ला नागपूरमध्ये म० रत्नकीर्ति उपदेशात् । ( विवरण क्र० ३०, ४४, ४५ )
- १९१ संमत १८५६ तुंदुभिनामसंवत्सरे नागपूरनगरे रघुवरराज्ये भ० श्रीरत्नकीर्तिउपदेशात् श्रीपरवार वशे । ( विवरण क्र० ३२ )
- १९२ समत १८५६ शके १७२४ श्री मूलसंघ बलात्कारगणे सरस्वती-गच्छे म० रत्नकीर्ति उपदेशात् नागपूरनगरे रघुवरराज्ये परवारा-न्वये सेतगागर गोहिल्लगोत्र भाया प्रतिष्ठा करापित । ( विवरण क्र० ३३, ४३ )
- १९३ संमत १८६१ वैसाख सुदी ५ सोमवासरे मवाहुंजयनगरे श्री-सुरेंद्रकीर्तिउपदेशात् हिरा प्रतिष्ठा कारिता । ( विवरण क्र० ३४६ )
- १९४ सवत १८६६ फालगुण कृष्ण ५ शुक्रवारे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ३७०, ३७२ )
- १९५ संमत १८६८ फागुण सुदी ७ बुध श्रीमूलसंघ बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ११० )
- १९६ शके १७४३ श्रीमूल " । ( विवरण क्र० ४८१ )
- १९७ शके १७४४ श्रीमूलसंघ । ( विवरण क्र० ९०, १७१ )
- १९८ संवत १८८१ वर्षे माघ मासे शुद्ध ५ सोम श्रीकाष्टासंघे म०

- सुरेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य भ० देवेन्द्रकीर्ति राजोमान ज्ञाति बघेरवाल ।  
( विवरण क्र० १७० )
- १६६ संमत १८८१ म० स० व० आचार्य श्रीरामकीर्ति उपदेशात्...  
प्रतिष्ठित श्रीउमरावतीनगरे । ( विवरण क्र० १६२ )
- २०० संवत् १८८५ श्रीमूलसघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-  
चार्यान्वय मट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्ति उपदेशात्... प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ५२ )
- २०१ संवत् १८८५ मार्गशिर्ष वद १२ गुरुदिने श्रीमत्काष्टासघे लाड-  
बागडगच्छे म० प्रतापकीर्ति आम्नाय नदितटगच्छे म० सुरेन्द्रकीर्ति  
तस्य भ० देवेन्द्रकीर्ति राज्यमान ज्ञाति बघेरवाल गोत्र बोरखंड्या  
सा० खेमासा पु० पूनासा यंत्र प्रणाम्यति । (विवरण क्र० ३९२)
- २०२ संमत १८८७ श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-  
चार्याम्नाये श्रीमत्मट्टारक धर्मचंद्रदेवात् तत्पट्टे मट्टारक देवेन्द्र-  
कीर्तिदेवात् तत्पट्टे म० पद्मनदिदेवात् तत्पट्टे म० देवेन्द्रकीर्ति-  
देवात् उपदेशात् बघेरवाल पाससा भवसा सरसग्राममध्ये प्रतिष्ठा  
करापितं । ( विवरण क्र० ४२८ )
- २०३ संमत १८८७ शके १७५२ श्रावणमासे शुक्लपक्षे ती० ५  
आदितवासरे बालात्कारगणे कारंजापुरपट्टाधिकारी श्रीमत म०  
देवेन्द्रकीर्तिस्वामीजी मीदं विव प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ४७१ )
- २०४ शक १७५२ संमत १८८७ वैसाख सुदी ७ गुरुवार स्वस्ति श्री-  
मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये म०  
धर्मचंद्रदेवात् तत्पट्टे म० देवेन्द्रकीर्तिदेवात् त० म० पद्मनदि-  
देवात् कार्यरजकपुरपट्टाधिकारी श्रीमत् देवेन्द्रकीर्तिउपदेशात्  
वैरामक्षेत्रे सिरसग्रामे माणिकसा बघेरवाल तत्पुत्र पामा गोत्र  
चवरे प्रतिष्ठा करावित । ( विवरण क्र० १९१ )

- २०५ संमत १८८७ का ज्येष्ठ सुदी ९ विंशतिनामसंवत्सरे श्रीमू० स० व० कु० म० पद्मनदिदेवात् तत्पट्टे म० देवेन्द्रकीर्ति...प्रतिष्ठा करान्वितं । ( विवरण क्र० २८ )
- २०६ संवत् १८८८ वैसाख कृष्ण ५ रविवासरे श्रीमूलसंघे व० स० श्रीकु० इदं प्रतिमा कारयेत् श्रीसकलपचक्रमेटिके स्वकर्मक्षयार्थं प्रतिमा प्रतिष्ठिनिये । ( विवरण क्र० ५५ )
- २०७ संमत १८८८... । ( विवरण क्र० १०६ )
- २०८ समत १८८९ वैसाख शुक्ल ११ गुरुवासरे मूलसंघ व० स० कुंदकुंदाचार्यान्वय । ( विवरण क्र० ८५ )
- २०९ संमत १८८९ वृषभायणे... । ( विवरण क्र० १०३ )
- २१० संमत १८९१ शके १७५६ जयनामसंवत्सरे श्रावणमासे कृष्ण-पक्षे पराकी मूलसंघे स० व० कारंजानगरे इदं पद्मादेवि श्री-मद्देवेन्द्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठितम् । ( विवरण क्र० २३७ )
- २११ समत १८९३ वर्षे माघ सुद १० बुधदिनी मूलसंघ कुंदकुंदा-चार्याम्नाय व० स० महारकपद्मनदिदेवात् तत्शिष्य म० देवेन्द्र-कीर्तिदेवात् तत् उपदेशात् भार्या हिता पुत्र नेमुराम भ्राता दामजी भार्या लाडव प्रतिष्ठितं प्रणमंति । ( विवरण क्र० १८६ )
- २१२ स० १८९३ श्रीमू० नागपूर श्रीपाशू चं० । ( विवरण क्र० ३९६ )
- २१३ श्रीमूलसंघ सक १७५९ । ( विवरण क्र० ४५४, ४५८ )
- २१४ श्रीसंवत् १८९४ साल आषाढ व॥ ६ श्रीमहावीर स्वामीजीका मुख । ( विवरण क्र० ४६, ५० )
- २१५ समत १८९७ शके १७६२ भगवतिनामसंवत्सरे वैसाख सुदी ३ बुधवासरे इदं श्रीपाश्वर्नाथस्वामी श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये महारक श्रीमद्देवेन्द्रकीर्तिस्वामी

नागपुरे प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २१४ )

२१६ संवत् १८९८ मिति श्रावण सुदि ८ सोमदिने नागपुरे श्रीपार्श्व-  
नाथचैत्यालये इदं जलयात्रायंत्रं प्रतिष्ठितं ( विवरण क्र० २७० )

२१७ संमत १८६६ फागुण सुदी ७ बुधवासरे श्रीमूलसंग बालात्कार  
गण सरस्वतीगच्छ कुटकुंदाग्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारं प्रतिमा  
प्रतिष्ठितं गोपीसाह । ( विवरण क्र० ३३२ )

२१८ श्रीमूलसंघे शके १७६४ । ( विवरण क्र० ११२ )

२१९ श्रीपारसनाथजी सक १७६५ र...नाम संवत्सरे । ( विवरण  
क्र० ७७ )

२२० संमत १९०० शके १७६५ सोमवार नाम संवत्सरे चैत्र सुदी ३  
सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नागपुर  
पार्श्वनाथचैत्यालये अयं मेरु देवेद्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० १८१ )

२२१ संवत् १६०० शके १७६५ सोमवार नाम संवत्सरे चैत्र सुदि  
३ सोमवार मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीनागपुरे  
श्रीमत् चिंतामणिपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीशांतिनाथस्वामी देवेद्र-  
कीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० १७८,१७९ )

२२२ संमत १६०२ माघ शु॥ १३ ( विवरण क्र० २८३,३०० )

२२३ संमत १९०२ माघ सुदी तेरसी म० देवेद्रकीर्ति हस्तेन सुखा-  
लाल प्यारेलाल...प्रतिष्ठा करार्षिता । ( विवरण क्र० ३४२ )

२२४ शके १७६७ । ( विवरण क्र० ३६५ )

२२५ संमत १६०२ शके १७६७ तेरसीदिवसे प्रतिष्ठितं । ( विवरण  
क्र० ३६ )

२२६ संवत् १६०५ शके १७६६ मिति वैशाख सुदी १३ बुधवासरे  
इदं श्रीचन्द्रनाथस्वामी प्रतिष्ठा श्रीमत्देवेद्रकीर्तिस्वामी तेन  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ६०,६१ )

- २२७ संमत १६०४ शके १७६६ प्लवंगनामसंवत्सरे मिती वैसाख सुदी १३ बुधवासरे इदं मुनिसुव्रत स्वामी श्रीमूलसघ बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुंदाचार्यान्वये म० श्रीमद् देवेंद्रकीर्ति उपदेशात् वधेरवालवश चवरियागोत्रे रतनसावजी श्रीनागपुरे प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २२४ )
- २२८ संमत १६०४ मिती वैसाख सुदी १३ । ( विवरण क्र० २८२ )
- २२९ सवत् १९०७ शके १७७२ मिती श्रावणसुदी ५ सोमवार नागपूरनगरे श्रीमूलसघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण श्रीपार्श्वनाथस्वामिचैत्यालये इदं पञ्चावतिदेवि प्रतिष्ठित ।  
(विवरण क्र० २३४)
- २३० सवत् १९०७ शके १७७२ मिती श्रावण सुदी ५ सोमवासरे नागपूरनगर मुलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीपार्श्वनाथस्वामिचैत्यालये अथ पार्श्वनाथप्रतिमा म० देवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० १९६ )
- २३१ संमत १६०७ मिती श्रावण सुद ५ म० स० व० नागपुरे पार्श्वनाथदेवालये प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० १८५, ३८५ )
- २३२ अयं मेरू इगोलीग्रामे शांतीनाथस्वामिचैत्यालये स्थापित सवत् १६०८ शक १७७३ वर्षे विरोधकृतनामसंवत्सरे श्रावणमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे मुलसघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागपूरनगरे पार्श्वनाथस्वामिचैत्यालये अयं मेरू जिनान् श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठाप्य इगोलीग्रामे स्थापित ( विवरण क्र० १६५ )
- २३३ संमत १९०८ शक १७७३ श्रावण सुद १० बुधवार मुलसग सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुदकुंदाचार्यान्वये नागपुरनगरे श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये अयं श्रीनेमिजिन देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठित ।  
( विवरण क्र० २१७, २३० )

- २३४ शके १७७५ पार्थिवनामसंवत्सरे ज्येष्ठ सुदी ११ तिलक श्री-  
मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे गुणभद्रदेवात् तत्पट्टे श्रुतवीरदेवात्  
तत्पट्टे भ० माणिकसेनदेवात् त० नेमसेनउपदेशात् वधनोरा  
ज्ञाति माणिकशेटी भार्या सोनाई तस्य पुत्र धायसेटी भार्या  
गुणाई तस्य पुत्र आयसेटी भार्या रत्नाई लखमणसेटी भार्या  
धरवाई रंगसेटी भार्या मालाई इदं प्रतिष्ठा केली द्वितीय साखा  
भ० गुणभद्रदेवा तत्पट्टे भ० लक्ष्मीसेनश्री प्रतिष्ठितं श्री आयाजी  
लखमजी रंगो ( विवरण क्र० २२६ )
- २३५ समत १६१३ शके १७७८ मिती फाग सुदी २ मुलसघ  
सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुदान्वय अनंतनाथस्वामी  
नागपूरं प्रतिष्ठित ( विवरण क्र० १८३ )
- २३६ संमत १९१५ शके १७८० माघ सुदी ३ म० स० व० कुं०  
प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० १६८ )
- २३७ मा ये धा म न (?) संवत् १९१५ । ( विवरण क्र० ४१६ )
- २३८ संमत १९१६ मि० फाग सुद ११ श्री म० स० व० कुं०  
हिरालालसा ठाकूर । ( विवरण क्र० ३४, ५३ )
- २३९ संमत १६१६ मि० फाग सुद ११ श्री म० स० व० कुं०  
लुखुमा चोणसाव । ( विवरण क्र० ३५, ३६, ३२८, ३२९ )
- २४० संमत १६१६ फागुण सुद ११ समतीवृतं (?) कुंदकुंदाभनाय  
गणहु गंगाराम । ( विवरण क्र० ३७ )
- २४१ संवत् १९१६ मि० फागुण सुदी ११ श० श्रीम० स० व० कुं०  
अयं श्रीभजितनाथस्वामी सुखीसाव परवार तेन प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ४१, २८६, २८८-२९०, २९३, ३०३, ३०८, ३३१ )
- २४२ समत १६१६ मिती माघ सुदी १० श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे  
बलात्कारगणे कुंदकुदाचार्यान्वये अय श्रीमहावीरस्वामीजी  
भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी उपदेशात् संतुरामजी तस्य

पुत्र भागचंडजी अजमेरा खंडेरवाल श्रावकेन प्रतिष्ठितं गुरु-  
वासरे नागपुर शुक्रवारीपेठ श्रीजिनचैत्यालय । ( विवरण क्र०  
६५, ६६, ७२, ७५, ७६ )

२४३ संमत १९१६ मिति माघ सुदी १० गुरुवार । ( विवरण क्र०  
६७, ६८, ८२ )

२४४ संमत १९१६ मिति माघ सुदी १० सरूपचंद्र अजमेरा तेन  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ७१ )

२४५ समत १९१६ माघ सुदी १० मूलसंवे प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ७८ )

२४६ संमत १९१६ माघ सुदी १० गुरुवार श्रीमू० स० व० कु०  
नेमिनाथस्वामीजिन । ( विवरण क्र० ८१, १६९ )

२४७ समत १९१६ मिति माघ सुदी १० गुरुवासरे श्रीमू० स० व०  
भट्टारकदेवेंद्रकीर्तिस्वामीजी हस्तेन प्रतिष्ठितं नागपूरमध्ये ।  
( विवरण क्र० ८६ )

२४८ समत १९१६ मि० फा० सुदी ११ शनिवार श्रीमू० स० व०  
कुंद० अयं श्रीभादिनाथ श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीना प्रातिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० २८७ )

२४९ समत १९१६ मिति फागुण सुदी ११ शनिवासरे नागपूरनगरे  
श्रीमहावीरस्वामीचैत्यालये श्रीमूलसंवे स० व० कु० अयं  
श्रीपार्श्वनाथस्वामीजी श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी स्वहस्तेन  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २९१ )

२५० समत १९१६ मिति फागुण सुदी ११ शनिवासरे श्रीमू० स० व०  
कु० नागपूरनगरे श्रीजिनचैत्यालये अयं श्रीभादिनाथस्वामी  
मूलनायक म० श्रीदेवेंद्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् गकुरदास  
तत्पुत्र मनीलाल परवार वोछल मुर कोछल गोत्र ते प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ३६६ )



- २५१ संवत् १६१६ मिति माघ ११ ( विवरण क्र० ८६, ४२७ )
- २५२ संमत १६२५ मार्गशिर्ष सुदी ५ गुरु श्रीमू० म० हेमकीर्ति  
तत्पट्टे म० करा १११ ( विवरण क्र० २८० )
- २५३ संमत १९२५ का माघ सुदी ५ सोमवारे श्रीमूलसंघे बलात्कार-  
गणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे म० हेम-  
कीर्ति उपदेशात् रामटेकमध्ये संघवी मनालालेन प्रतिष्ठित ।  
( विवरण क्र० २८४ )
- २५४ संवत् १९२५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये  
नागौरपट्टे म० श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे मट्टारक श्रीहेम-  
कीर्तिजी तदाम्नाय परवालान्वये कोछलगोत्रे संघवी भुरसीदास  
तत्पुत्र मनालालेन प्रतिष्ठा करान्वितं । ( विवरण क्र० ४ )
- २५५ संवत् १९२५ शके १७६० विभवनाम सावत्सरं शुक्लपक्षे तीथी  
७ बुधवासरे श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-  
चार्याम्नाये इदं प्रतिमा देवेंद्रकीर्ति स्वामीन हस्ते नागपुरमध्ये  
चोखालाल तस्य भार्या वीरावाई ने प्रतिष्ठा करान्वितं ।
- २५६ श्रीजिनो जयति ॥ श्रीपार्श्वनाथजिनेद्रेभ्यो नम । संमत  
१९२५ का शके १७६० का विभवनामसंवत्सरे सिसरऋतौ  
मासात्मासोत्तममासे मार्गशिर्षमासे शुभे शुक्लपक्षे तियो ५  
पंचमी गुरुवासरे उत्तराषाढ नक्षत्रे राजनामयोगे श्रीनागपुरवा-  
स्तव्यमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये  
कुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीनागौरपट्टे मट्टारकश्री हरषकातिर्तिजी  
तत्पट्टे म० श्रीविद्याभूषणजी तराडेण (?) इक्ष्वाकुवंशे धुरामोरी  
गोत्रे सघवी कृपारामजी तत्पुत्र कलुषाऊजी भार्या हीरावाई  
तत्पुत्र वृयपाल सावजी छोटेलाल तेन सपरिवारेण संघवी  
कलुषाऊ श्रीप्रतिष्ठा करापितं ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रयामस्तु ॥ रक्षित-  
मस्तु ॥ ( विवरण क्र० २८५ )

२५७ श्रीसंमत १६२५ शक १७९० विभवनामसंवत्सरे मित्ती वैसाख-  
मासे शुक्लपक्षे तीथी ७ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बालात्कारगणे  
श्रीमरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीचन्द्रप्रभस्वामीन  
प्रतिमाया श्रीमद् देवेन्द्रकीर्तिस्वामीहस्ते श्रीनागपूरमध्ये प्यारे-  
सावजी मार्या पुनावाई परवार तेने प्रतिष्ठा करार्षितं ।

( विवरण क्र० २९४ )

२५८ संमत १९२५ वै० शु ॥७ सु० कुं० दे० नागपूरमध्ये गुमान-  
साव तस्य पुत्र लुडामणसा तस्य पुत्र मोजराज परवार तेन  
प्रतिष्ठा करान्वित । ( विवरण क्र० २९६ )

२५९ संमत १९२५ वैसाख शुद्ध ७ बुध० श्रीमू० स० व० कु०  
श्रीपाश्र्वनाथस्वामीना देवेन्द्रकीर्तिस्वामीनहस्ते नागपूरमध्ये  
प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ३१२-१४ )

२६० संमत १९२५ वैसाख सुदी ७ प्रतिष्ठितं मनबोध जिन मुंगा-  
वाई । ( विवरण क्र० ३२७ )

२६१ संमत १९२५ मित्ती श्रवण सुदी ५ प्रतिष्ठा नागपूरमध्ये आदि-  
नाथजी । ( विवरण क्र० ३३६ )

२६२ संमत १९२५ शक १७९० आदिनाथस्वामी ।

( विवरण क्र० ३४४ )

२६३ समत १६२५ का मित्ती माघ सुदी ५ सोमवासरे श्री मूलसंघ  
ब० स० कुदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी  
तत्पट्टे म० हेमकीर्तिना तदाम्नायवरती पंडित सवाईरामोपदेशात्  
परवारान्वये कोछल्लगोत्रे संघई तुलसीदास तत्पुत्र म० 'लाल  
कुंजलाल विहारीलालेन प्रतिष्ठा की । ( विवरण क्र० ३५५ )

२६४ संमत १६२५ वैसाख सुदी ७ बुधवारे श्रीमूलसंघे बालात्कारगणे  
सरस्वतीगच्छे कुदकुंदाचार्याम्नाये महारकश्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति  
प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० ३७१ )

- २६५ संमत १६२५ माव सुदी ५ सोमे प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ३७३-४ )
- २६६ श्रीमूलसंगचे'...संमत १६२६ प्रभवनाम संवत्सरे श्रावण व ॥५॥  
( विवरण क्र० ४५१ )
- २६७ समत १९२८ प्रभवनाससंवत्सरेॐ माव शुक्ल द्वादशीतिथौ  
बुधवासरे प्रतिष्ठाचार्य श्रीमत् देवेंद्रकीर्तिमट्टारक प्रतिष्ठा करणार  
प्यारेसाव मनासाव । ( विवरण क्र० ३६३ )
- २६८ श्रीपारसनाथजी संमत १६२८ । ( विवरण क्र० २६२ )
- २६९ संवत् १९२८ प्रजापतिनामसंवत्सरे माघशुक्ले द्वादशीतिथौ बुध-  
वासरे प्रतिष्ठाचार्यश्रीमत् देवेंद्रकीर्ति मट्टारक प्रतिष्ठा करविणार  
मनालाल सवाईसंघवी । ( विवरण क्र० ४२ )
- २७० संवत् १६२८ ( विवरण क्र० ३८ )
- २७१ ॐ चंद्रनाथ येन संमत १९३३ । ( विवरण क्र० ७० )
- २७२ संमत १६३६ शके १८०४'' प्रतिष्ठाचार्य विगालकिर्ति मट्टारक  
प्रतिष्ठा करविणार सुतीयावाइ परवारीन । ( विवरण क्र० २७९ )
- २७३ श्रीपारमनाथजी सं० १९४८ ( विवरण क्र० ३०४ )
- २७४ संमत १९५२ वैशाख सुदि १३ सोमवासर प्रतिष्ठितं ।  
( विवरण क्र० ८४ )
- २७५ सं० १९५८ व० सु० १२ पदासा भोजासाव ।  
( विवरण क्र० ४०२ )
- २७६ संमत १६५८ वैशाख शुद्ध १५ मूलसंवे कुदकुंदाम्नाये मट्टारक  
देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ३७६ )
- २७७ मा० शी० ७ श्री० रा० व० स्व० वा० झी० अ० प्र० ना०  
सं० १९६१ । ( विवरण क्र० ४१८ )

\* यह संवत्सर नाम गलत प्रतीत होता है ।

२७८ समत १९६१ मिति ज्येष्ठ शु ॥ १० श्रीवीरसेन स्वामी उपदेशात्  
चांगासाव गंगासावजी चवरे याहानी प्रतिष्ठा करविली ।

( विवरण क्र० १४५ )

२७९ नागपूर शेतवाल मन्दिर प० रवि० समत १९६१ मार्गशिर्ष व ॥  
सप्तम्यां पण्डितवर्य रामचंद्र ब्रह्मचारिणां पंच शेतवाल अनुराया  
प्रतिष्ठितं इदं प्रतिमा । ( विवरण क्र० १०७ )

२८० संमत १९६६...कुं०म्नाय सिवनीनग्र प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ३२५ )

२८१ वीरसंमत २४३६ मि० मा० शु ॥ ५ सु० वा० ग० प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ४३७ )

२८२ संमत १९६८ ज्येष्ठ सुद ८ शुक्रवासरे मुलसंधे बलात्कारगणे  
सरस्वतीगच्छे कारजापुरे पट्टाधिकारी म० देवेंद्रकीर्तिस्वामी उप-  
देशात् शिखरजीकी पादुका खंडेलवालज्ञातिय पाटणीगोत्र  
हजारीलाल गोंदालाल येन प्रतिष्ठा करापित नागपूरनगरे ।

( विवरण क्र० १६७, २३३ )

२८३ संमत १९७६ पण्डित रामभाऊना प्रतिष्ठितं कन्हैयालालजी  
गरीबे यांचे आईचे नन्दिश्वर व्रतोद्यापनार्थ ।

( विवरण क्र० २२२ )

२८४ स्वस्ति श्री २४५८ श्रीवीरसावत्सरे १९८८ विक्रम माघमासे  
शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ बुधवासरे श्रीमूलसंधे बलात्कारगणे सर-  
स्वतीगच्छे कुदकुदाचार्याम्नाये फणित्पुरनिवासी परवारज्ञातिय  
स्नेलामूर गोइल्लगोत्रोत्पन्न परमानंदीप्रजात्मज परवारभूषण  
फत्तेचंददिपचंदाभ्यां छपारानगरे प्रतिष्ठित ।

( विवरण क्र० ३२०-२३ )

२८५ श्रीमहावीरनिर्वाणसमत २४६० विक्रम समत १९९० शके  
१८५५ फालगुण शुद्ध १२ सोमवार श्रीमूलसंध सरस्वतीगच्छ

बलात्कारगण श्रीकुंदकुंदाचार्याम्नायातील वासल गोत्रांतील परवारज्ञाति नागपूरनिवासी शेठ कनईलाल नेमिचंदजी यांनी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथ येथील श्री ब्र० जीवराज गौतमचड सोलापूर याचे प्रतिष्ठामध्ये श्रीमहावीर तीर्थंकराचे विव प्रतिष्ठित केले असे ॥ ( विवरण क्र० ६२ )

२२६ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान शांतिनाथ तीर्थंकर जिनविव प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ म० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात् नागपूरस्थ दि० जैन सैतवाल समाज वारसंवत् २४६१ मिती मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कृतेति शम् । ( विवरण क्र० १०४-५ )

२२७ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान आदिनाथ तीर्थंकर जिनविव प्राणप्रतिष्ठा स्वस्ति श्री १०८ म० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर पट्टाचार्य सदुपदेशात् नागपूरस्थ दिगम्बर जैन सैतवाल समाज व श्री० राजाराम हुब्बीमाव काटोलकरेणप्रतिमा आणिता प्रतिष्ठाचार्य श्री० पंडितवर्य रामभाऊ महामहोपाध्याय पंडित श्री० अखिल सैतवाल जैन राजगुरुपीठ संस्थान तक्त लातूर गादी नागपूर वीरसंवत् २४६१ मिती मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् कृतेति शम् ।

( विवरण क्र० १०६ )

२८८ स्वस्ति श्री १०८ श्रीमहारकविशालकीर्ति उपदेशात् सं० २४६१ मार्गशिर्ष कृष्ण १२ श्याम् बुधौ प्रतिष्ठितं ।

( विवरण क्र० ३८६-७, ३६३-४, ४१५-७ )

[ अनिश्चित समयके लेख ]

२२९ सवत् १५४ - संव र नी गी पुत्रा न र नो ( ? )

( विवरण क्र० ४१० )

- २९० सं० १५...सुद १३ सकला पुत्र मनसुख भार्या महना ।  
( विवरण क्र० ४२२ )
- २९१ संवत् १५ - ६ वर्षे वैसाख सुदि ३ मंगलदिने मट्टारकजिन-  
चंद्राम्नाये गोलापूर्व संघे इलाम... । ( विवरण क्र० १६३ )
- २९२ समत १-६१ वर्षे वैसाख सुदी को जीवराज... ।  
( विवरण क्र० ७४ )
- २९३ सके १-७६ शुभकृत नाम सवत्सरे कार्तिक शुद्ध प्रतिपदा १  
बुधवार सावरगावग्राम श्रीभादिनाथचैत्यालये श्रीमहिचंद्र  
मट्टारकउपदेशात् तस्य श्रावक तिमाजी पळसापुरे तस्य भार्या  
वचाई व गगाई तस्य पुत्र येकुजि कोनेरवा तस्य यंत्रं ।  
( विवरण क्र० २७६-२७७ )
- २९४ ७८ वैसाख सुदी ३ पुत्र मोती भार्या म... ।  
( विवरण क्र० ३९७ )

[ अज्ञात समयके लेख ]

- २९५ संवत् वैसाख मासे शुद्ध ३ मौमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे  
सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्याम्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिष्ठितं  
नागपूरमध्ये । ( विवरण क्र० ५४ )
- २९६ मीकाजी । ( विवरण क्र० ११६ )
- २९७ मूलसंघ बलात्कारगण पितल्यागोत्रे रामासा भार्या नेमाई पुत्र  
रतनसा भार्या पदमाई द्वितीय पुत्र हिरासा भार्या पुंजाई तृतीय  
पुत्र तवनासा चतुर्थ पुत्र पदाजी श्रीचंद्रप्रभ प्रतिष्ठा .  
संवत् । ( विवरण क्र० १३१ )
- २९८ श्रीकाष्टासंघ नंदितटगच्छ म० श्रीरामसेनान्वये म० श्रीलक्ष्मी-  
सेनजी प्रतिष्ठित । ( विवरण क्र० १३६ )
- २९९ श्रीवासुपूज्य जिनवर । ( विवरण क्र० १८२ )

- ३०० ....महाराजाविराज....देवेंद्रकीर्ति 'वलात्कारगण सरस्वती  
[ गच्छ ]' । ( विवरण क्र० १९३ )
- ३०१ भ० हेमकीर्ति उपदेशात् स० प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० २०७ )
- ३०२ हेमराज तस्य पुत्र हंसराज भार्या तमाबाई प्रतिष्ठा माघ सुदी ।  
( विवरण क्र० २८१ )
- ३०३ सातनाथ । ( विवरण क्र० ३५३ )
- ३०४ श्री आदिसर । ( विवरण क्र० ३५८ )
- ३०५ श्रीमू० स० भ० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् रामसेन ।  
( विवरण क्र० ३७९ )
- ३०६ श्रीमू० म० जि० का प सेठ प्र (?) ( विवरण क्र० ३८१ )
- ३०७ श्रीमूलसाधे म० श्रीभुवनकीर्ति । ( विवरण क्र० ३९०-४६३ )
- ३०८ श्रीमूलसंग । ( विवरण क्र० ३९१, ४०३, ४५६, ४८६ )
- ३०९ श्रीमू० स० व० । ( विवरण क्र० ४०० )
- ३१० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् कपरसेठ । ( विवरण क्र० ४०४ )
- ३११ लखमनसा रूपा । ( विवरण क्र० ४०७ )
- ३१२ ब्र० प० नेमीचंद्रजी । ( विवरण क्र० ४२० )
- ३१३ सेनगण भ० श्रीलक्ष्मीसेन च्यास्त्रिमति सेवक देवीचे चद्रा-  
इत्ये । ( विवरण क्र० १६४ )
- ३१४ मू० व० स० धर्मचंद्र हेमसेठ नित्यं ता ।  
( विवरण क्र० ४४२ )
- ३१५ मूलसंवे भ० सुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । ( विवरण क्र० ४५५ )
- ३१६ मू० म० जि० पार वा गट (?) ( विवरण क्र० ४६४ )
- ३१७ श्रीआदिनाथ सा० श्रीवत । ( विवरण क्र० ४६६ )
- ३१८ मू० संव तानसेठ वमनौसा । ( विवरण क्र० ४७० )
- ३१९ श्रीमूलसंव ब्रह्म, मल्लिदास सा भार्या सखाई ।  
( विवरण क्र० ४८८ )

- ३२० श्रीमूलसंघ संकराजी पुजारी ना । ( विवरण क्र० १२५-६ )
- ३२१ रुखवसा ठवली । ( विवरण क्र० १२७ )
- ३२२ वावाजी बडलकार । ( विवरण क्र० ४६४ )
- ३२३ मू० भ० जि० गदसेठ स्वहित । ( विवरण क्र० ४६५ )
- ३२४ श्रीमूलसंघे भ० श्रीमल्लिभूषण सा० लखा भार्या अजी सुता सोनाई । ( विवरण क्र० १६१ )



## मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण

[ १ ] अजितनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, केलीवाग, नागपुर ।

- १ अजितनाथ ( सफेद पाषाण १ $\frac{१}{२}$  फुट ) लेख क्र० १८  
 २ पार्श्वनाथ ( सफेद पाषाण १ फु० २ इं० ) लेख क्र० १८  
 ३ " " " लेख क्र० १८

४ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इं० ) लेख क्र० २५४

५ चौबीसी ( धातु ४ इं० ) लेख क्र० ९२

६ पार्श्वनाथ ( धातु ४ $\frac{१}{२}$  इं० ) लेख क्र० १६६

७ धर्मनाथ ( धातु ४ इं० ) लेख क्र० १०१

८ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इं० ) लेख क्र० १३८

लेखरहित प्रतिमाएँ - शान्तिनाथ ( धातु ७ इं० ), चौबीसी  
 ( काला पाषाण १ $\frac{१}{२}$  फुट ), पार्श्वनाथ ( धातु ३ $\frac{१}{२}$  इं० ),  
 चन्द्रप्रभ ( काला पाषाण ९ इं० ) पार्श्वनाथ ( काला-  
 पाषाण ६ इं० )

पार्श्वनाथ ( काला पाषाण ८ इं० ) यक्षिणी ( कृष्ण पाषाण  
 १० इं० ) ।

[ २ ] दिगम्बर जैन मन्दिर, मस्कासाथ, नागपुर

- ९ आदिनाथ ( सफेद पाषाण २ $\frac{१}{२}$  फु० ) लेख क्र० १८  
 १० पद्मप्रभ ( सफेद पाषाण १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ११ आदिनाथ ( सफेद पाषाण १० इं० ) लेख क्र० १८  
 १२ पार्श्वनाथ ( सफेद पाषाण १ फु० ) लेख क्र० १८  
 १३ अजितनाथ ( सफेद पाषाण १० इं० ) लेख क्र० १८

- १४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पाषाण १० इंच ) लेख क्र० १८  
 १५ आदिनाथ ( सफेद पाषाण १० इंच ) लेख क्र० १८  
 १६ सुपार्श्वनाथ ( ,, ) लेख क्र० १८  
 १७ पार्श्वनाथ ( सफेद पाषाण १ फु० ) लेख क्र० १८  
 १८ वासुपूज्य ( सफेद पाषाण ११ इंच ) लेख क्र० १८  
 १९ पार्श्वनाथ ( काला पाषाण १ फु० २ इंच ) लेख क्र० १८  
 २० पार्श्वनाथ ( सफेद पाषाण १ फु० ) लेख क्र० १८  
 २१ चन्द्रप्रभ ( सफेद पाषाण १० इंच ) लेख क्र० १८  
 २२ अजितनाथ ( ,, ) लेख क्र० १८  
 २३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इंच ) लेख क्र० १८  
 २४ आदिनाथ ( सफेद पा० ७ इंच ) लेख क्र० १८  
 २५ नेमिनाथ ( सफेद पा० ८ इंच ) लेख क्र० १८  
 २६ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इंच ) लेख क्र० १८  
 २७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इंच ) लेख क्र० ६०  
 २८ पार्श्वनाथ ( काला पा० ११ इंच ) लेख क्र० २०५  
 २९ पार्श्वनाथ ( काला पा० १० इंच ) लेख क्र० १४८  
 ३० पार्श्वनाथ ( धातु १ फु० ) लेख क्र० १६०  
 ३१ पार्श्वनाथ ( धातु १० इंच ) लेख क्र० १८८  
 ३२ पार्श्वनाथ ( धातु ९ इंच ) लेख क्र० १९१  
 ३३ पद्मप्रभ ( धातु ११ इंच ) लेख क्र० १९२  
 ३४ चौबीसी ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० २३८  
 ३५ चौबीसी ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० २३९  
 ३६ चौबीसी ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० २३९  
 ३७ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० २४०  
 ३८ आदिनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० २७०  
 ३९ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ११ इंच ) लेख क्र० २२५

- ४० मुनिसुव्रत ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ७  
 ४१ अजितनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ४२ धर्मनाथ ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २६६  
 ४३ चौबीसी ( धातु १० इ० ) लेख क्र० १६२  
 ४४ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १९०  
 ४५ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० १९०। लेखरहित प्रतिमाएँ—  
 पार्श्वनाथ ( धातु १ से ४ इ० की दस प्रतिमाएँ )

[ ३ ] दिगम्बर जैन मन्दिर, किराणा बाजार, नागपुर

- ४६ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ४७ पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ४८ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 ४९ महावीर ( काला पा० ४ $\frac{३}{४}$  फु० ) लेख क्र० २१४  
 ५० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २१४  
 ५१ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० १ फुट ) लेख क्र० १५२  
 ५२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फुट ) लेख क्र० २००  
 ५३ चौबीसी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २३८  
 ५४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ $\frac{३}{४}$  फुट ) लेख क्र० २९५  
 ५५ पार्श्वनाथ ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २०६  
 ५६ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० २ फु० २ प्रतिमाएँ ) लेख १५२  
 ५७ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १४७  
 ५८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६  
 ५९ सुपार्श्व ( पीला पा० ७ इ० ) लेख क्र० १५३  
 ६० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० २२६  
 ६१ पार्श्वनाथ ( पीला पा० १ फु० ) लेख क्र० २२६  
 ६२ महावीर ( धातु १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २८५

६३ चन्द्रप्रभ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६

६४ नेमिनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६

लेखरहित प्रतिमाएँ — पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ $\frac{१}{२}$  फु० ),  
पार्श्वनाथ ( धातु २ से ३ इंच ४ प्रतिमाएँ ), चन्द्रप्रभ ( काला  
पा० ११ इंच २ प्रतिमाएँ ), अज्ञातचिह्न मूर्ति ( स्फटिक,  
१ $\frac{१}{२}$  इ० ), यक्षिणी ( धातु ४ इ० )

[ ४ ] दिगम्बर जैन मन्दिर, जुनी शुक्रवारी पेठ, नागपुर

६५ महावीर ( धातु ८ इंच ) लेख क्र० २४२

६६ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इंच ) लेख क्र० १२६

६७ सिद्ध ( धातु ५ $\frac{१}{२}$  इंच ) लेख क्र० २४३

६८ नन्दीश्वर ( धातु ६ $\frac{१}{२}$  इंच ) लेख क्र० २४३

६९ पंचमेरु ( धातु १ $\frac{१}{२}$  फु० ) लेख क्र० २४२ ( दो प्रतिमाएँ )

७० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ६ इंच ) लेख क्र० २७१

७१ चौबीसी ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० २४४

७२ चौबीसी ( धातु १ फु० ) लेख क्र० २४२

७३ महावीर ( सफेद पा० ६ इंच ) लेख क्र० १३२

७४ आदिनाथ ( सफेद पा० ११ इंच ) लेख क्र० २३२

७५ शान्तिनाथ ( धातु ७ $\frac{१}{२}$  इंच ) लेख क्र० २४२

७६ आदिनाथ ( धातु १ फुट. २ इ० ) लेख क्र० २४२

७७ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २१६

७८ चन्द्रप्रभ ( धातु ४ इंच ) लेख क्र० २४५

७९ चौबीसी ( धातु ४ इंच ) लेख क्र० १८१

८० पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १०

८१ नेमिनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४६

८२ आदिनाथ ( काला पा० ७ इंच ) लेख क्र० २४३

- ८३ पार्श्वनाथ ( लाल पा० ७ इ० ) ( लेख क्र० २७४ )  
 ८४ पार्श्वनाथ ( धातु ३<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० २७४  
 ८५ चन्द्रप्रम ( धातु ५<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० २०८  
 ८६ वासुपूज्य ( काला पा० ७ इ० ) लेख क्र० २५१  
 ८७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ८८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १३६  
 ८९ चन्द्रप्रम ( सफेद पा० १ फु० १ इ० ) लेख क्र० २४७  
 ९० यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १९७

लेखरहित प्रतिमाएँ - पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ), आदि-  
 नाथ ( काला पा० ६ इ० ), आदिनाथ ( काला पा० ३<sup>३</sup> इ० ),  
 सिद्ध ( धातु ५<sup>३</sup> इ०, दो मूर्तियाँ ), यक्षिणी ( धातु ४ इ०  
 दो मूर्तियाँ )

[ ५ ] दिगम्बर जैन सैतवाल मन्दिर, इतवारी बाजार, नागपुर

- ९१ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 ९२ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 ९३ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० १८  
 ९४ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 ९५ चन्द्रप्रम ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 ९६ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 ९७ पार्श्वनाथ ( काला पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 ९८ चन्द्रप्रम ( काला पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 ९९ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १०० अजितनाथ ( लाल पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १०१ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 १०२ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८

- १०३ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० २०६  
 १०४ शांतिनाथ ( धातु ११ इं० ) लेख क्र० २८६  
 १०५ बाहुबली ( धातु १० इं० ) लेख क्र० २८६  
 १०६ पार्श्वनाथ ( काला पा० ८ इं० ) लेख क्र० २०७  
 १०७ पार्श्वनाथ ( धातु ११ इं० ) लेख क्र० २७६  
 १०८ नन्दीश्वर ( धातु ४ इं० ) लेख क्र० ७१  
 १०९ आदिनाथ ( धातु ११ इं० ) लेख क्र० २८७  
 ११० नेमिनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १९५  
 १११ पार्श्वनाथ ( काला पा० १० इं० ) लेख क्र० ७६  
 ११२ चौबीसी ( धातु ५ इं० ) लेख क्र० २१८  
 ११३ शांतिनाथ ( धातु ४ इं० ) लेख क्र० १२  
 ११४ शांतिनाथ ( धातु ५ इं० ) लेख क्र० ४  
 ११५ पार्श्वनाथ ( धातु ४<sup>३</sup> इं० ) लेख क्र० ३  
 ११६ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इं० ) लेख क्र० २९६  
 ११७ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इं० ) लेख क्र० २३  
 ११८ पार्श्वनाथ ( धातु ४<sup>३</sup> इं० ) लेख क्र० ८३  
 ११९ पार्श्वनाथ ( ३<sup>३</sup> इं० धातु ) लेख क्र० १५०  
 १२० यक्षिणी ( धातु ४ इं० ) लेख क्र० ७५  
 १२१ यक्षिणी ( धातु ५ इं० ) लेख क्र० २६  
 १२२ यक्षिणी ( धातु ७ इं० ) लेख क्र० १०३  
 १२३ यक्षिणी ( धातु ८ इं० ) लेख क्र० ६७  
 १२४ रत्नत्रय यत्र ( धातु ९ इं० ) लेख क्र० ५१  
 १२५ सम्यग्दर्शन यत्र ( धातु ८ इं० ) लेख क्र० ३२०  
 १२६ दशलक्षण यंत्र ( धातु ८ इं० ) लेख क्र० ३२०  
 १२७ सम्यक्चारित्र यत्र ( धातु ८ इं० ) लेख क्र० ३२०  
 १२८ षोडशकारण यत्र ( धातु १२ इं० ) लेख क्र० १८३

१२६ अज्ञातवर्णन यंत्र ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ११६

लेखरहित प्रतिमाएँ - चन्द्रप्रभ ( काला पा० ६ इ० दो मूर्तियाँ ),  
चरणपाटुका ( धातु ३ इ०, दो पाटुका ), अजितनाथ ( काला  
पा० ४ इ० ), चौवीसी ( धातु ५ इ० दो मूर्तियाँ ) पार्श्व-  
नाथ ( धातु-छोटी छोटी ८ मूर्तियाँ ) चरणपाटुका ( धातु ३  
इ०, दो पाटुका ),

[ ६ ] दिगम्बर जैन सेनगण मन्दिर, लाडपुरा इतवारी, नागपुर

१३० पार्श्वनाथ ( धातु १० इ० ) लेख क्र० ५२

१३१ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० २६७

१३२ शीतलनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८५

१३३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८२

१३४ शांतिनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० ७७

१३५ वाहुवली ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० ८१ ( दो मूर्तियाँ )

१३६ वाहुवली ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २६८

१३७ अस्पष्ट चिह्न मूर्ति ( धातु ९ इ० ) लेख क्र० २१

१३८ पार्श्वनाथ ( धातु ३ $\frac{१}{३}$  इ० ) लेख क्र० १६०

१३९ चौवीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३२

१४० पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १

१४१ पार्श्वनाथ ( काला पा० ९ इ० ) लेख क्र० ८८

१४२ सुपार्श्वनाथ ( काला पा० १० इ० ) लेख क्र० ८९

१४३ पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० ६६

१४४ पार्श्वनाथ ( धातु १ इ० ) लेख क्र० ७२

१४५ आदिनाथ ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २७८

१४६ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८

१४७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० १८

- १४८ अरनाथ ( सफेद पा० १० इंच ) लेख क्र० १८  
 १४९ पद्मप्रभ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 १५० मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ११ इंच ) लेख क्र० १८  
 १५१ अजितनाथ ( सफेद पा० ११ इंच ) लेख क्र० १८  
 १५२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इंच ) लेख क्र० १८  
 १५३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इंच ) लेख क्र० १८

( दो मूर्तियाँ )

- १५४ अरनाथ ( सफेद पा० ८ इंच ) लेख क्र० १८  
 १५५ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ६ इंच ) लेख क्र० १८  
 १५६ आदिनाथ ( ४ इंच धातु ) लेख क्र० १८  
 १५७ चौबीसी ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० ९  
 १५८ धर्मनाथ ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० ६३  
 १५९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इंच ) लेख १०८  
 १६० वासुपूज्य ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० १३  
 १६१ आदिनाथ ( धातु ४ इंच ) लेख क्र० ३२४  
 १६२ चिह्नरहित मूर्ति ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १०६  
 १६३ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० २६१  
 १६४ श्रेयांसनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० ३१३  
 १६५ सुमतिनाथ ( धातु ७ इंच ) लेख क्र० २०  
 १६६ आदिनाथ ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० २  
 १६७ पंचपरमेष्ठी ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० ८  
 १६८ रत्नत्रय मूर्ति ( धातु ६ इंच ) लेख क्र० २२।  
 १६९ चौबीसी ( धातु ११ इंच ) लेख क्र० १३५  
 १७० सरस्वती ( धातु ५ इंच ) लेख क्र० १९८  
 १७१ यक्षिणी ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १६७  
 १७२ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इंच ) लेख क्र० १२२



- १७३ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १८४  
 १७४ दशलक्षण यंत्र ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १२२  
 १७५ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १२३  
 १७६ रत्नत्रय यंत्र ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १३०

लेखरहित प्रतिमाएँ — चौबीसी ( काला पा० १ फुट ), सिद्ध  
 ( धातु ६ इ०, दो मूर्तियाँ ), नन्दीश्वर ( धातु ५ इ० ),  
 पार्श्वनाथ ( काला पा० ३ $\frac{१}{२}$  फु० चौबीसी के मध्यस्थित ),  
 पद्मावती ( सफेद पा० २ फु० ), पद्मावती ( धातु ९ इ० ),  
 पद्मावती ( धातु ६ इ० ), पद्मावती ( धातु १० इ० ),

[ ७ ] पार्व्वप्रभु दिगम्बर जैन बडा मन्दिर, इतवारी, नागपुर

- १७७ पार्श्वनाथ ( धातु १ $\frac{१}{२}$  फु० ) लेख क्र० १५७  
 १७८ शांतिनाथ ( धातु १ फु० २ इ० ) लेख क्र० २२१  
 १७९ आदिनाथ ( धातु १ फु० २ इ० ) लेख क्र० २२१  
 १८० नन्दीश्वर ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १०२  
 १८१ पंचमेरु ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २२० ( चार मूर्तियाँ )  
 १८२ वासुपूज्य ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २६६  
 १८३ अनन्तनाथ ( धातु ९ इ० ) लेख क्र० २३५  
 १८४ पार्श्वनाथ ( धातु ४ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० ८७  
 १८५ चौबीसी ( धातु ३ $\frac{१}{२}$  इ० ) लेख क्र० २३१  
 १८६ चौबीसी ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० १४४  
 १८७ चौबीसी ( धातु ९ इ० ) लेख क्र० १२०  
 १८८ रत्नत्रय मूर्ति ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० ११  
 १८९ महावीर ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २११  
 १९० चौबीसी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० ५६  
 १९१ क्षेत्रपाल ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २०४

- १९२ सरस्वती ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १६६ ( दो मूर्तियाँ )  
 १९३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ) लेख क्र० ३००  
 १९४ यक्षिणी ( धातु ४<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० १२७  
 १९५ पंचमेरु ( धातु २ फुट ९ इ० ) लेख क्र० २३२  
 १९६ पार्श्वनाथ ( धातु १<sup>३</sup> फु० ) लेख क्र० २३० ( दो मूर्तियाँ )  
 १९७ आदिनाथ ( धातु १० इ० ) लेख क्र० २८२  
 १९८ बाहुवली ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २३६ ( दो मूर्तियाँ )  
 १९९ आदिनाथ ( धातु ७<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० २४६  
 २०० पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३४  
 २०१ पार्श्वनाथ ( धातु ३<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० ७०  
 २०२ पार्श्वनाथ ( धातु ३<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० ६३  
 २०३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १६१  
 २०४ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १३६  
 २०५ चन्द्रप्रभ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २८  
 २०६ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १७८  
 २०७ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३०१  
 २०८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ९९  
 २०९ पंचमेरु ( धातु २ फु० ३ इ० ) लेख क्र० १५४ ( दो मूर्तियाँ )  
 २१० चौबीसी ( धातु १० इ० ) लेख क्र० १४३  
 २११ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ७८  
 २१२ पार्श्वनाथ ( धातु ४<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० १५८  
 २१३ चन्द्रप्रभ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ६१  
 २१४ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २१५  
 २१५ नन्दीश्वर ( धातु १ फु० ) लेख क्र० ६२  
 २१६ चौबीसी ( धातु ३<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० १३७  
 २१७ नेमिनाथ ( काला पा० १ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २३३

- २१८ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १६  
 २१९ पद्मप्रम ( सफेद पा० १० इं० ) लेख क्र० १६  
 २२० चौंसठ ऋद्धि ( धातु ५ इं० ) लेख क्र० ११२  
 २२१ पार्श्वनाथ ( धातु ३ $\frac{१}{२}$  इं० ) लेख क्र० १०४  
 २२२ चौबीसी ( धातु ३ $\frac{१}{२}$  इं० ) लेख क्र० २८३  
 २२३ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इं० ) लेख क्र० ६६  
 २२४ मुनिसुव्रत ( काला पा० १ फु० ३ इं० ) लेख क्र० २२७  
 २२५ पार्श्वनाथ ( धातु ५ $\frac{१}{२}$  इं० ) लेख क्र० ३७  
 २२६ चौबीसी ( धातु १० इं० ) लेख क्र० २३४  
 २२७ शांतिनाथ ( धातु ६ इं० ) लेख क्र० १७७  
 २२८ श्रेयांस ( काला पा० ७ इं० ) लेख क्र० १०५  
 २२९ चिन्ह रहित मूर्ति ( काला पा० १० इं० ) लेख क्र० ६८  
 २३० आदिनाथ ( सफेद पा० १० इं० ) लेख क्र० २३३  
 २३१ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ३ फु० ३ इं० ) लेख क्र० ५  
 २३२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ३ फु० ३ इं० ) लेख क्र० ५  
 २३३ शिखरजी पाटुका ( सफेद पा० १ $\frac{१}{२}$  फु० ) लेख क्र० २८२  
 २३४ पद्मावती ( धातु ११ इं० ) लेख क्र० २२९  
 २३५ यक्षिणी ( धातु ७ इं० ) लेख क्र० ७९  
 २३६ यक्षिणी ( धातु ६ इं० ) लेख क्र० १६८  
 २३७ पद्मावती ( धातु ११ इं० ) लेख क्र० २१०  
 २३८ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इं० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २३९ आदिनाथ ( सफेद पा० ९ इं० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४० शीतलनाथ ( सफेद पा० ९ इं० ) लेख क्र० १८  
 २४१ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १० इं० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ३ इं० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )

- २४३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४५ पद्मप्रभ ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 २४६ मुनिसुव्रत ( साँवला पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४७ चन्द्रप्रभ ( साँवला पा० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 २४८ आदिनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २४९ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 २५० सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ६ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५१ सुमतिनाथ ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५२ अरनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २५३ नेमिनाथ ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २५४ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ९ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५५ अजितनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 २५६ श्रयांसनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८  
 २५७ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २५८ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० २ फु० ४ इ० ) लेख क्र० १८  
 २५९ अजितनाथ ( लाल पा० १० इ ) लेख क्र० १८  
 २६० चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २६१ नेमिनाथ ( लाल पा० ११ इ० ) लेख क्र० १८  
 २६२ पार्श्वनाथ ( लाल पा० १० इ० ) लेख क्र० १८  
 २६३ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १८ ( दो मूर्तियाँ )  
 २६४ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ५ इ० ) लेख क्र० १८  
 २६५ सम्यक्चारित्रयंत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० ६८  
 २६६ दशलक्षण यंत्र ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ४६  
 २६७ सम्यक्चारित्र यंत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० १२१  
 २६८ सम्यग्दर्शन यंत्र ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ३६

- २६६ सम्यक्चारित्र्यत्र ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ४९  
 २७० जलयंत्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २१६  
 २७१ सम्यग्दर्शनयत्र ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ५४  
 २७२ सम्यग्दर्शनयत्र ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ११४  
 २७३ दशलक्षणयत्र ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० ६५  
 २७४ कलिकुण्डयंत्र ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ७३  
 २७५ सिद्धयंत्र ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० ८६  
 २७६ षोडशकारणयत्र ( धातु १४ इ० ) लेख क्र० २६३  
 २७७ दशलक्षणयंत्र ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २९३  
 लेखरहित मूर्तियाँ - सप्तऋषि ( धातु ५ से ८ इ० ),  
 पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० २ इ० ), आदिनाथ ( पीला  
 वालुकापाषाण २ फु० २ इ० )

[ ८ ] दिगम्बर जैन परवार मन्दिर, इतवारी, नागपुर

- २७८ शीतलनाथ ( धातु ४<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० ५७  
 २७९ नेमिनाथ ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २७२  
 २८० पुष्पदन्त ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २५२  
 २८१ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० ३०२  
 २८२ चन्द्रप्रम ( पीला पा० ६ इ० ) लेख क्र० २२८  
 २८३ पार्श्वनाथ ( काला पा० ६ इ० ) लेख क्र० २२२  
 २८४ चौव्रीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २५३  
 २८५ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ५<sup>३</sup> फु० ) लेख क्र० २५६  
 २८६ पार्श्वनाथ ( धातु ६<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० २४१ ( दो मूर्तियाँ )  
 २८७ आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४८  
 २८८ वासुपूज्य ( धातु ६<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० २४१  
 २८९ महावीर ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१

- २९० अजितनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४१  
 २९१ पार्श्वनाथ ( धातु १ $\frac{१}{३}$  फु० ) लेख क्र० २४६  
 २९२ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २६८  
 २९३ चौबीसी ( धातु ६ $\frac{१}{३}$  इ० ) लेख क्र० २४१  
 २९४ चन्द्रप्रम ( सफेद पा० ५ फु० ) लेख क्र० २५७  
 २९५ नेमिनाथ ( सफेद पा० २ फु० २ इ० ) लेख० क्र० २५७  
 २९६ नेमिनाथ ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २५८  
 २९७ पार्श्वनाथ ( धातु ८ $\frac{१}{३}$  इ० ) लेख क्र० २५७  
 २९८ चन्द्रप्रम ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ६५  
 २९९ अजितनाथ ( काला पा० ४ इ० ) लेख क्र० १६५  
 ३०० चिह्नरहितमूर्ति ( काला पा० ५ इ० ) लेख क्र० २२२  
 ३०१ आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३०२ चिह्नरहित मूर्ति ( सफेद पा० १० इ० ) लेख क्र० ६  
 ३०३ चौबीसी ( धातु ४ $\frac{१}{३}$  इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३०४ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २७३  
 ३०५ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १४५  
 ३०६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ४१  
 ३०७ अजितनाथ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० ४०  
 ३०८ अनन्तनाथ ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३०९ सुपार्श्वनाथ ( काला पा० ११ इ० ) लेख क्र० २६  
 ३१० चिह्नरहितमूर्ति ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० ८२  
 ३११ मुनिसुव्रत ( काला पा० ११ इ० ) लेख क्र० ४७  
 ३१२ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ९ इ० ) लेख क्र० २५६  
 ३१३ मुनिसुव्रत ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० २५६  
 ३१४ आदिनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० २५९  
 ३१५ पार्श्वनाथ ( धातु ३ $\frac{१}{३}$  इ० ) लेख क्र० १७६

- ३१६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १६४  
 ३१७ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० २ फु० ३ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३१८ पार्श्वनाथ ( काला पा० २ फु० ४ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३१९ नन्दीश्वर ( धातु ५ इ० ) उर्दू लिपिमें लेख०  
 ३२० आदिनाथ ( धातु ६<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२१ शीतलनाथ ( लाल पा० १ फु० ४ इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२२ महावीर ( धातु १ फु० ६ इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२३ पुष्पदंत ( धातु १ फु० ९ इ० ) लेख क्र० २८४  
 ३२४ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १७६  
 ३२५ महावीर ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २८०  
 ३२६ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १२७  
 ३२७ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २६०  
 ३२८ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २३९  
 ३२९ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २३९  
 ३३० यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १४०  
 ३३१ यक्षिणी ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २४१ ( दो मूर्तियाँ )  
 ३३२ चन्द्रप्रम ( धातु १ फु० २ इ० ) लेख क्र० २१७  
 ३३३ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३३४ रत्नत्रयमूर्ति ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३३५ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १५५  
 ३३६ पार्श्वनाथ ( धातु २<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० ८४  
 ३३७ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३३८ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १४५  
 ३३९ आदिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २६१  
 ३४० पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० २५७  
 ३४१ चन्द्रप्रम ( काला पा० ८ इ० ) लेख क्र० २५७

- ३४२ पार्श्वनाथ ( लाल पा० १ फु० ) लेख क्र० २२३ ( तीन मूर्तियाँ )  
 ३४३ नेमिनाथ ( सफेद पा० ११ इ० ) लेख क्र० १७  
 ३४४ आदिनाथ ( काला पा० ७ इ० ) लेख क्र० २६२  
 ३४५ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १३<sup>१</sup>/<sub>२</sub> फु० ) लेख क्र० २५७  
 ३४६ अरनाथ ( काला पा० ३ इ० ) लेख क्र० १६३  
 ३४७ चन्द्रप्रभ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३४८ आदिनाथ ( धातु ३<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इ० ) लेख क्र० २३९  
 ३४९ शीतलनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५० आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५१ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५२ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५३ पार्श्वनाथ ( धातु २<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इ० ) लेख क्र० ३०३  
 ३५४ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५५ चन्द्रप्रभ ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २६३  
 ३५६ अजितनाथ ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० २६३  
 ३५७ आदिनाथ ( धातु ७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३५८ आदिनाथ ( धातु ४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इ० ) लेख क्र० ३०४  
 ३५९ नन्दीश्वर ( धातु ३<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इ० ) लेख क्र० १११  
 ३६० सुपार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३६१ पार्श्वनाथ ( धातु २<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इ० ) लेख क्र० १२८  
 ३६२ महावीर ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३६३ आदिनाथ ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २६७  
 ३६४ आदिनाथ ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३६५ महावीर ( धातु ७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इ० ) लेख क्र० २४१  
 ३६६ आदिनाथ ( धातु १ फु० ) लेख क्र० २५०  
 ३६७ पुष्पदन्त ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० १८



- ३६८ अरनाथ ( सफेद पा० ७ इ० ) लेख क्र० १८  
 ३६९ चन्द्रनाथ ( सफेद पा० ८ इ० ) लेख क्र० १८  
 लेखरहित मूर्तियाँ - वासुपूज्य ( काला पा० ५ इ० ),  
 पार्श्वनाथ ( सफेद पा० १ फु० २ इ० ), पार्श्वनाथ ( काला  
 पा० १० इ० ), शान्तिनाथ ( धातु ४ इ० ), १५ मूर्तियाँ  
 लेख तथा चिह्नके बिना छोटी-छोटी हैं ।

[९] दिगम्बर जैन मन्दिर, सदर बाजार, नागपुर

- ३७० पार्श्वनाथ ( काला पा० १३ फु० ) लेख क्र० १६४  
 ३७१ चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० १ फु० ) लेख क्र० २६४  
 ३७२ पार्श्वनाथ ( काला पा० १ फु० ) लेख क्र० १९४  
 ३७३ शान्तिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २६५  
 ३७४ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २६५  
 ३७५ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ११५  
 ३७६ चौबीसी ( धातु ११ इ० ) लेख क्र० २७६  
 ३७७ दशलक्षण यत्र ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १०७  
 लेखरहित - पद्मप्रभ ( सफेद पा० १ फु० )

[१०] गृहचैत्यालय-श्री० सुन्दरसा हिरासा जोहरापुरकर,  
 इतवारी, नागपुर

- ३७८ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १३३  
 ३७९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३०५  
 ३८० रत्नत्रय ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० १५  
 ३८१ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०६  
 ३८२ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ७४  
 ३८३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २४

३८४ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १२९  
लेखरहित - छोटी-छोटी धातुकी १० प्रतिमाएँ

[११] गृहचैत्यालय-श्री० अबादास गुलाबसा गहाणकरी, इतवारी

३८५ चौवीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २३१

३८६ आदिनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २८८

३८७ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २८८

३८८ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १००

[१२] गृहचैत्यालय-श्री० माणिकसा चिन्तामणसा दर्यापुरकर,  
इतवारी

३८९ चौवीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ८०

३९० पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३०७

३९१ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ४५

३९२ नवग्रह यंत्र ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २०१

[१३] गृहचैत्यालय-श्री० रतनसा गणपतसा देवलसी, इतवारी

३९३ पार्श्वनाथ ( सफेद पा० ४ इ० ) लेख क्र० २८८

३९४ आदिनाथ ( काला पा० ४ इ० ) लेख क्र० २८८

३९५ चन्द्रप्रभ ( काला पा० ४ इ० ) लेख क्र० २२४

३९६ चौवीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २१२

३७७ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २६४

३९८ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०८

लेखरहित-पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ), आदिनाथ ( धातु २ इ० )

- [१४] गृहचैत्यालय-श्री० कन्ह्यालाल सुन्दरसा गरिवे, इतवारी  
 ३६९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ३४  
 यक्षिणी ( धातु ६ इ० )-लेखरहित
- [१५] गृहचैत्यालय-श्री० सवाईसर्गई मोतीलाल गुलावसा, इतवारी  
 ४०० पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०९  
 ४०१ यक्षिणी ( धातु ५ ० ) लेख क्र० १४५  
 लेखरहिते-पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ), चन्द्रप्रभ ( स्फटिक, ३ इ० )
- [१६] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा पदासा खोरणे, इतवारी  
 ४०२ आदिनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २७५  
 ४०३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३०८  
 ४०४ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१०  
 ४०५ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १५१
- [१७] गृहचैत्यालय-श्री० दादा गुलावसा मिश्रीकोटकर, इतवारी  
 ४०६ चौवीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ९४
- [१८] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा खेमासा जोहरापुरकर, इतवारी  
 ४०७ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३११
- [१९] गृहचैत्यालय-श्री जयकुमार प्रभुसा किल्लेदार, इतवारी  
 ४०८ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ४२
- [२०] गृहचैत्यालय-श्री तिलोकचद येसूसा खेडकर, इतवारी  
 ४०९ चौवीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ९४  
 ४१० पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० २८६  
 ४११ आदिनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १३४

४१२ चरणपादुका ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १४२  
लेखरहित - शान्तिनाथ ( धातु २ इ० ), पार्श्वनाथ  
( धातु २ इ० )

[२१] गृहचैत्यालय-श्री विष्णुकुमार हिरासा जोगी, इतवारी

४१३ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १४

४१४ यक्षिणी ( धातु ५<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० ५५  
लेखरहित -- (चौबीसी धातु ३ इ०), महावीर (धातु २<sup>३</sup> इ०)

[२२] गृहचैत्यालय-श्री नागोराव गुजाबा श्रावणे, इतवारी

४१५ सिद्ध ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २८८

४१६ आदिनाथ ( चांदी ३ इ० ) लेख क्र० २८८ ( दो मूर्तियाँ )

४१७ आदिनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २८८ ( दो मूर्तियाँ )

४१८ पार्श्वनाथ ( सोना २ इ० ) लेख क्र० २७७

४१९ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २३७

४२० चरणपादुका ( चाँदी १ इ० ) लेख क्र० ३१२

लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) ( दो मूर्तियाँ ),  
बाहुबली ( धातु ३ इ० ), सरस्वती ( धातु २ इ० )

[२३] गृहचैत्यालय-श्री गुलाबसा व्यकुसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४२१ चन्द्रप्रभ ( धातु ३<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० ४४

४२२ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २९०

४२३ यक्षिणी ( धातु ३<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० १७५

लेखरहित-पार्श्वनाथ ( लाल पा० ३ इ० )

[२४] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा जिनदास चवड़े, इतवारी

४२४ सिद्ध ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २८८

४२५ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १८६

- [२५] गृहचैत्यालय-श्री०नेमासा पासुसा जोहरापुरकर, इतवारी  
 ४२६ पंचपरमेष्ठी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० २०  
 ४२७ पार्श्वनाथ ( धातु २<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० २५१  
 ४२८ कलिकृण्ड यन्त्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २०२  
 ४२९ षोडशकारण यन्त्र ( धातु ८ इ० ) लेख क्र० २०३
- [२६] गृहचैत्यालय-श्री०माणिकचंद बालाजी आगरकर, इतवारी  
 ४३० पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ४८  
 ४३१ पार्श्वनाथ ( धातु २<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० १६२  
 ४३२ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १३१
- [२७] गृहचैत्यालय-श्री०सुंदरसा गंगासा खेडकर, इतवारी  
 ४३३ पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १६  
 ४३४ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ३८  
 लेखरहित-पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) चौबीसी ( धातु ५ इ० )
- [२८] गृहचैत्यालय-श्री०लक्ष्मणराव सेवाराम पिंजरकार, इतवारी  
 ४३५ आदिनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १४६  
 ४३६ पार्श्वनाथ ( धातु ३<sup>३</sup> इंच ) लेख क्र० ४३  
 लेखरहित-यक्षिणी ( धातु ६ इ० )
- [२९] गृहचैत्यालय-श्री०पुरणलाल बापुसा खेडकर, इतवारी  
 ४३७ चौबीसी ( धातु ३<sup>३</sup> इ० ) लेख क्र० २८१  
 ४३८ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ६०
- [३०] गृहचैत्यालय-श्री०महादेवराव तानवा पिंजरकर, इतवारी  
 ४३९ चौबीसी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ५८  
 ४४० पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १८०

४४१ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० ६४

४४२ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० ३१४

४४३ यक्षिणी ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० १५६

[३१] गृहचैत्यालय-श्री०वर्धासा सकुसा महाजन, इतवारी

४४४ चौबीसी ( धातु ३३ इ० ) लेख क्र० १५६

४४५ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ६६

४४६ षोडशकारण यंत्र ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १२२

४४७ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ६०

४४८ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ६१

४४९ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १२५

४५० यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० ४६

लेखरहित-पार्श्वनाथ ( धातु ५ इ० )

[३२] गृहचैत्यालय-श्री०नत्थुसा पैकाजी चवरे, इतवारी

४५१ सुपार्श्वनाथ ( सफेद पा० ५ इ० ) लेख क्र० २६६

४५२ चन्द्रप्रभ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ११६

४५३ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० २७

४५४ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० २१३ ( दो मूर्तियाँ )

४५५ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१५

४५६ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३०८ ( दो मूर्तियाँ )

४५७ यक्षिणी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १०६

लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० )

[३३] गृहचैत्यालय-श्री रुखव्रसा पिजरकर, इतवारी

४५८ पार्श्वनाथ ( धातु २३ इ० ) लेख क्र० २१३

[३४] गृहचैत्यालय-श्री लक्ष्मणराव देवमनसा बोवडे, इतवारी

४५९ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १६६

- ४६० पार्श्वनाथ ( धातु २<sup>१</sup> इ० ) लेख क्र० ३५  
 ४६१ पार्श्वनाथ ( धातु २<sup>१</sup> इ० ) लेख क्र० ३६  
 ४६२ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ११७  
 ४६३ चिह्नरहित मूर्ति ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १४६  
 ४६४ पार्श्वनाथ ( काला पा० ३ इ० ) लेख क्र० ३१६

[३५] गृहचैत्यालय-श्री वापुजी विश्रामजी गिल्लरकर, मस्कासाथ

- ४६५ आदिनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १७०  
 ४६६ आदिनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१७  
 ४६७ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० १६७  
 ४६८ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० १८६  
 लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु १<sup>१</sup> इ० )

[३६] गृहचैत्यालय-श्री गोविंदराव शिवराम नाकाडे, इतवारी

- ४६९ चौबीसी ( धातु ५ इ० ) लेख क्र० १३६  
 ४७० चिह्नरहित मूर्ति ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १६३  
 ४७१ पार्श्वनाथ ( धातु ६ इ० ) लेख क्र० २०३  
 ४७२ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१८  
 ४७३ यक्षिणी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १७१  
 ४७४ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ११८  
 ४७५ दशलक्षणचंद्र ( धातु ४<sup>१</sup> इ० ) लेख क्र० ५०

[३७] गृहचैत्यालय-श्रीमती तानाबाई वापुजी गाधी, इतवारी

- ४७६ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ८५  
 ४७७ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १७२  
 ४७८ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १२४  
 ४७९ चन्द्रप्रभ ( धातु १<sup>१</sup> इ० ) लेख क्र० १७३

लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) यक्षिणी ( धातु ६ इ० )

- [३८] गृहचैत्यालय-श्री राजावापू लच्छावापू ठवली, इतवारी  
 ४८० चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १७४  
 ४८१ यक्षिणी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० १९६,  
 ४८२ यक्षिणी ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० २५
- [३९] गृहचैत्यालय-श्री जयकृष्णपत सावलकर, इतवारी  
 ४८३ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ५३  
 ४८४ यक्षिणी ( धातु ७ इ० ) लेख क्र० ३१
- [४०] गृहचैत्यालय-श्री कृष्णाजी भागवतकर, इतवारी  
 ४८५ सिद्ध ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २८८  
 ४८६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०८  
 लेखरहित - यक्षिणी ( धातु ३ इ० )
- [४१] गृहचैत्यालय-श्री राजाराम डुब्बीसाव काटोलकर, इतवारी  
 ४८७ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० २४३  
 ४८८ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३१९  
 लेखरहित - चन्द्रप्रभ ( सफेद पा० ४ इ० )
- [४२] गृहचैत्यालय-श्री हिरासा नत्थुसा मुठमारे, इतवारी  
 ४८९ पार्श्वनाथ ( धातु ४ इ० ) लेख क्र० ५६  
 ४९० आदिनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३३  
 ४९१ चौबीसी ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ११३  
 ४९२ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० १८७  
 ४९३ पार्श्वनाथ ( धातु २ इ० ) लेख क्र० ३०७  
 लेखरहित - यक्षिणी ( धातु ३ इ० )
- [४३] गृहचैत्यालय-श्री रुखवसा विनायकसा, इतवारी  
 ४९४ पार्श्वनाथ ( धातु ३ इ० ) लेख क्र० ३२२



- [४४] गृहचैत्यालय-श्री पाडुरंग वापूजी उदापूरकर, इतवारी  
 ४९५ पार्श्वनाथ ( धातु २<sup>१</sup> इं० ) लेख क्र० ३२३
- [४५] गृहचैत्यालय-श्री गणपतराव पलसापुरे, इतवारी  
 ४९६ पार्श्वनाथ ( धातु २ इं० ) लेख क्र० १८७
- [४६] गृहचैत्यालय-श्री सुरेन्द्र गंगासा जोहरापुरकर, इतवारी  
 ४९७ चन्द्रप्रम ( धातु २ इं० ) लेख क्र० १९०  
 लेखरहित - पार्श्वनाथ ( धातु २ इं० )





# नामसूची

उल्लिखित अंक पृष्ठों के हैं ।

अकवर ३२८	अजितकोति ३६०, ४०७, ४१३-
अकलक ५८, ६०, १७५, २००,	४१५
२१४, २१६, ३३५, ३३८,	अजितचंद्र २२१, २२३
३३९, ३७७, ३७९	अजितसेन ९२, ९३, १७५, २१४,
अकालवर्ष ३१, ४४, ५३	२१६, २२७, ३६१
अकोटा ३८५	अज्ज ३०४-५
अक्कम्म ३१४	अज्जणदि २१, २२, ४२
अक्कलकोट ११३	अज्जरय्य ५६
अक्कसालकामोज १६६	अणहिल्लपुर २२१-२
अक्कादेवी ८४, ८५	अण्णन् २५५
अक्कूर ३७४	अण्णमय्य १६४
अगरवाल ३९५, ४०२	अण्णिगेरे २५, ८५, १०४, १०७,
अगस्तियप्प ३४७	१०९, १११, २५९
अगिख ४	अत्तिमब्बे १४९
अगोकेमोगे ४०	अत्तियब्बे ७३
अगलदेव ९१, ९३, १०२	अथनी २३२
अगलसेट्ठि ३७४	अदरगुचि २६६
अगोति २७	अनत्तवन् २२
अच्युतदेव ३१७	अनमकोड १४१, १४३, १४५
अजण ३५५	अनुपमकवि ६१-२
अजयमेरु १९१	अनतकसेट्ठिति २९७

अनंतकीर्ति २५०, २९६	अम्मरस ३८
अनंतवीर्य १७५, १७७, ३५५-६, ३६०, ३६५, ३७९	अम्मराज ६४, ६५, ६८, ६९
अपराजित ३५-६	अम्मिनभावि २२९
अप्पण २३८-९, २४४	अय्यवल्लि १३४
अप्पाण्डार २७९, ३५७, ३७६	अय्यप्प २६
अवडनगर ३९५, ४१०	अय्यवोले १६४
अवेयमाचर २९२	अय्यतोक्कलु २६३
अव्वक्कदेवी ३२७	अय्यसामि ७१
अभयचंद्र ९६, ३५९, ३६२	अरताल १४८
अभयनंदि १०५, ११०-१, २५८, २७१	अरत्तुलान् देवन् ८३
अभिनंदन २२	अरमंडमेगलु ४०
अमरकोर्ति २७८, २८८, ३११	अरयन् उड्डयान् ९९
अमरमुदलगुरु ४२	अरसुप्पोडेय ३४७, ३५६
अमरसिंह ३४०	अरसरवसदि ११२
अमरापुरम् २६०, ३८०	अरसय्य १२०-१
अमिदसागर ३९१	अरसीवीडि ८३, १२१, १७३, १८३
अमृतपाल १६०	अरिक्कुठार ३१४
अमृतव्वे ५५-६	अरिकेसरी १३९
अमृतैय २६०	अरिन्दमंगलम् ५६
अमोघवर्ष ३३-४, ३६-७	अरिमंडल २२
अम्व ३०४-५	अरिवन् कोयिल् ३९
अम्वले ३६९	अरिर्विगोज ६२
अम्बावती ३४३	अरिष्टेनेमि १६, ५२
अम्बोराम ३०३-५	अरुगर् देवर् ९९
	अरुमोलिदेव १६०

अरुमोलिदेवपुरम् १६७, १७६	आकल्पे २५९
अरुवन्दे आण्डाल् २८९	आकाशिका ९६
अस्वाहि १	आकियमगिसेट्टि ३०८
अरुहणदि ११२, २५८	आगुप्तायिक १५-१६
अरुगलान्वय १२८, २१४, २१६, २३३, २६७, २६९	आचगौढ १८६
अरेयन्वे ८८, ६९	आचण १८६
अरैयगाविदि २२	आचन चामुण्डर ६९
अर्णोराज १८९	आचलदेवी १७१
अर्हणदि ७३, १३४, २५२-३, २७१	आच्चन् २२
अलगरमलै ४२	आट्कोण्डान् १६७
अलनावर ११४	आणदेव २२८
अलवर ३८७-८	आण्डारमडम् ५६
अलियमरम ३८	आदगे १३८
अवनिपशेखर ३६	आदवनी ३१२, ३२६
अवनिमहेन्द्र १८, २०	आदित्यवर्मा ३७५
अविनीत १२, १७, २०	आदिनाथ १२०-१
अष्टोपत्रासी २२, ७७, ९३, २५८, २७१	आदिराज ३०३
असवव्वरसि १२२	आदिसेट्टि २९७, ३१६
असुण्डि ४४	आदिसेन ३५२
अहिच्छत्र १८९	आनंदमगलम् २५१
अंक १५३	आनेसेज्जवसदि ११३
अकनाथपुर ७०-१, १३४	आपिनहल्लि ३४५
अंकुलगे १३८, १४०	आधू ३८५
अकेगेडु ८९	आमरण ३८६
	आम्बट १९१, १९६
	आयतवर्मा ५६, ७७

- आय्चगानुण्ड ७६  
 आय्चप्पय्य ११२  
 आय्चिमय्य ९८  
 आय्चोज ८८-९  
 आरम्बनंदि १५८  
 आरान्दमंगलम् ७५  
 आरियदेव २२७  
 आरुलगपेरुमान् ४१  
 आर्यणंदि १५, १६, ४३  
 आर्यपंडित ११२  
 आर्यसंघ ५७  
 आलपदेवी ३८०  
 आलप्पिरन्दान् मोगन् १६६, २७४  
 आलाक १३२  
 आलुप १५४  
 आगिका १९०  
 आशिरियन् ३९  
 आहड १९६  
 आहवमल्ल ७३, ७८, ८१, ८२  
 आंतरी ३८७  
 इक्केरि ३३९  
 इट्टगे १०४, १०९  
 इड्यारन् १६७  
 इड्यालम् ३७६  
 इदम्पट्टव १२  
 इन्द्रप १२०-१  
 इन्द्रपिट्टम्म ४०  
 इन्दौर १९७, २६१, २८४  
 इन्द्रकीर्ति ९४, १५८  
 इन्द्रणंद १५-१६  
 इन्द्रनंदि ७३, १२६, २३४  
 इन्द्रराज ३१, ३४, ३६, ५५, ६१-६३  
 इन्द्रभूपाल ३३५  
 इन्द्रभूषण ४०६, ४०९-११  
 इम्मडि १७६  
 इम्मडि अरसप्पोदेय ३४७  
 इम्मडिदेवराय ३१५-६  
 इम्मडिवुक्क २८८  
 इम्मडिभैरवरस ३१५  
 हरुग २८८  
 हरुगोण २६०  
 हरुवुन्दूर ३०४-५  
 हरुगोल ३८०  
 इलपेरुमानडिगल् ७५  
 इलंगौतमन् ३९  
 इंगणेश्वर-इंगलेश्वर २१७, २२४, २३२, २६६-७, २७२, २७४, ३७४, ३७६, ३८०, ३८३-४  
 इंगरस ३०८  
 इंगोली ३९५, ४१९  
 इंचवाडि ५८

ईश्वर १२०-१	उरिगर्पसिडि २०
उक्काल ७४	ऊन १२७
उक्कसेट्टि २७३	ऊरुक्काडु १७८
उगरगोल १४९	ऋषिदास ६
उगुरु २६३	ऋषिशृंगी १४९
उग्रवाडि १४४-५	एकव्वे २७३
उच्छगि २०४, २६६	एकसंधि १७५
उज्जत ३२५	एकसंबि १८५
उज्जेनीपल्लीवाल ३९५, ४०८-९, ४११	एकसम्बुगे १८६
उज्वल १९२, १९७	एक्कोटिजिनालय २१९-२०
उडिपि ३०५	एचलदेवी २०२-३, २१२
उडैयार १२७	एचिकव्वे १२०-१
उदय २३८, २४४	एचिसेट्टि २०५
उदयगिरेन्द्र ४०३	एटा २६१
उदयचन्द्र १०७, ११०, २५८, २७१	एडेनाडु २८
उदयपुर ७५, ३८६-८८	एणक्कुनल्लनायकर् २५५
उदयादित्य १२७, १५४, २०२, २११, २१७, २२४	एरक ७६
उहृरि २९३	एरणदि १६७
उद्योतकेसरी ५६-७	एरेकप ११७, १२०
उमरावती ३९५, ४१६	एरेग ११६-७, १२०, १२४
उम्पटाय्चण वसदि ३७२	एरेय ४३-४४
उम्बरवाणि २४६, २४९	एरेयप ५८, ६०
उम्मत्तूर ७०, ३५८	एरेयमय्य ११६, १२०
	एरेयग ५८, ६०, १२२-५, १५४, १७६, २०२, २११, २७०
	एलवाचार्य २८, ३०



एलाचार्य ४४, ५४, २८८

ऐन्नुखवपेरुम्पल्लि ३६६

ऐवर अंबण ३५३

ऐवरमलै ३७

ऐहोले १४५

ओखरिक ५, ६

ओजण ३५५

ओडेयमसेट्टि ३७९

ओड्डिपाणि ४०

ओवेयमसेट्टि ३६५

ओरकल्वायगर् १९, २०

ओगेरु ३८१

कक्करगोंड १०५, ११०

कच्चिनायकर् २७४

कच्चिनायनार् १६६

कच्चियरायर् २७४

कच्छवेर्गडे २३०-१

कच्छवाह ३४३

कडकोल २६१

कडलेहल्लि २१५-६

कडितले २६८

कणवियसेट्टि १०८

कणित्तमाणिकसेट्टि ८३

कण्डन् पोर्पट्टन् २२

कण्डन् माधवन् ३९१

कण्डूर, कण्डूर गण ११६, १२०,

१५०, १५२, २७५, ३८४

कण्णम्मन् १८-२०

कण्णसेट्टि २१४

कण्णूर १३४

कत्तम १८५

कदम्ब १३, १५, २६, ३८, ७१,

८२, ११४, १२३, १२४-५,

१३६, १४८, १५७, १७१-२,

२०८-९, २५०-१, ३१३,

३७८

कदलालयवसदि १४३, १४५

कनककीर्ति ३६३

कनकगिरि ३४६

कनकचन्द्र १४८, २५८, २७१

कनकचिन्नगिरि २७३

कनकनन्दि २२, ७७, ९५, १०२

कनकरायनगुडु ३६१

कनकवीर २२, ५६, १६७

कनकशक्ति ९५

कनकसेन ३९, ९२-३, १७५

कन्नडिगे १८२

कन्नडिवसदि ३०९

कन्नप १२०-१, १६४

कन्नर ( कन्वर, कन्हर ) देव ४५,

१५१, २५६-७, २६३

कन्निसेट्टि ३७३

कन्नपतिपाडु ३५४	कलचुर्य १७९, १८२, १८६-७,
कमलदेव १२८, २९१	१९८, २०१
कमलभद्र ७०, २९४-५	कलशनगर २२५
कमलश्री १९३, १९७	कलसापुर २०१
कमलसेन २५०, २५४	कलिगब्बे ६९
कमलापुरम् ७३, ३९१	कलिगावुण्ड २२६
कम्बदहल्लि १५६, १६९	कलिदेव ८१, १०९-१०, १२०-१,
कम्भराज २८-३०	१४९, १८६
कम्भनहल्लि ३५९	कलिमानम् ७८
कम्भरचोडु ३८०	कलियत्तिगंड ६४
कयिलायप्पुलवर् ३३९	कलियम्म २५, ३८९-९०
करगुदरि १७२	कलिविण्णुवर्धन ६४
करडकल १७९	कलिसेट्टि १०८, १७२
करन्दै ९९, १४०, १७८, २८९,	कलिग २
३१३, ३३६, ३३९, ३४७	कल्कलेश्वर ८६
करसिदेव २५६	कल्नेलेदेव ४३-४, ५४
करिकालचोलजिनमंदिर ३५४	कल्याण ८५, ८६, २१४
करिमानी २६	कल्याणकीर्ति ७४, ३८२
करिविडि ७६, ८५	कल्याणवसत २४
कर्कराज ३१, ३४-६	कल्लप ३५५
कणादेवी १६६	कल्लब्बे ५४
कर्म ३	कल्लरस ३०४-५
कलकत्ता ४०, २३४, ३४०	कल्लहल्लि ३६०
कलक्केरि २५४, २५६, २६३, ३७९	कल्लारुप्पल्लि २७
कलचुम्बुरु ६८	कल्वबिका ११७
कलचुरि १५९, १७८	कवडेगोल्ल १६३-५

- कवडेमय्य २०४-५  
 कमपगावुण्ड २४९  
 कंचरस ९१-३  
 कचलदेवी ३७८  
 कचिक्ववे ७६  
 कति २३४  
 कंदगल २५१  
 काकतीवेत १४२, १४५  
 काकन (काकन्दी) ३४८  
 काकुत्स्थ १३  
 कागिनेल्लि ७७, ३७५  
 काटरस १०६, ११०  
 काटिमय्य ११२  
 काडूरगण २६६  
 काणूर (क्राणूर) गण ५८-६०,  
 १४८, १५५-८, १७३, २२४,  
 २३३-४, २५०-१, २६८,  
 २९६, ३२१, ३२३, ३२६,  
 ३६४, ३७०, ३७५, ३७८-८०  
 काण्वायन ९, १७  
 कादलूरु ५४  
 कान्तराजपुर २१७  
 काप ३२१-३, ३२६  
 कामठी ३९५, ४१२  
 कामण्ण २८२, २८६  
 कामदेव ७७  
 कामनूपाल २९७  
 कामराज ३५५-६  
 कामैय ३१४  
 काम्बोदि ३४९  
 कायस्थ १९५  
 कायाम्पट्टि ३६६  
 कारकल ३१९-२०, ३२९, ३७१  
 कारंजा ३९५, ४०५-६, ४०९,  
 ४१२-३, ४१६-७, ४२५  
 कारिजे ३२०  
 कारेयगण १५३  
 कार्तवीर्य १२८, १८५-६, २३५-९  
 २४२-६, २४८-९  
 कालडिय ७८, ८१  
 कालण १८६  
 कालहल्लि ३१९  
 कालिदास १३४, १७८  
 कालिमय्य ९९  
 कालियूर ९९  
 कालिसेट्टि ३७६  
 कावण्ण २६७  
 कावदेवरस २०८-९  
 कावनहल्लि १३३-४  
 कावय्य २५७  
 कावला गोत्र ४०५  
 काशिक ७-९

काशिवल ७३	कुदेषश्री २
काष्ठासघ ३९६, ४००, ४०२-६,	कुन्तलनाडु ३०४-५
४०९-११, ४१४-६, ४२७	कुन्दकुन्दान्वय, कुन्दकुन्दाचार्यान्वय
कासिमय्य १९८	१२६, २७८, ३१७, ३९७,
कांचन ९८	४०१-४, ४०७, ४०९-१२,
काचेलादेवी २१७	४१५-२७
किन्निगभूपाल ३३५	कुन्दकुन्द २२१-२, २२५
किरुसंपगाडि १५३	कुन्दनत्रोलु २८८
किमुबल्लि २३०-१	कुन्दरगे ८५
किमुबोलल २५	कुन्दाति १३९-४०
कीरप्पाक्कम् ४२	कुपण ३८
कीयरवुर ३१७	कुप्पटूर २२४
कीर्ति १५१-२	कुब्ज विष्णुवर्धन ६३, ६८
कीर्तिवर्मन् २५	कुमठ २०८, २७८, ३७८
कीर्तिसागर ३६१	कुमरन् देवन् ४१
कीलवकुडि २२, ७२, २२७, ३६५	कुमरय्य १४७
कुक्कुटासन १६७	कुमारकीर्ति १८६
कुच्चगि २०७, ३२८	कुमारनन्दि २८-३०
कुडलूर २६, ५४	कुमारपर्वत ५७
कुडुगिनवयलु ३२०	कुमारवीडु १४६, २२३
कुण्टनहोसल्लि १७१	कुमारसेन १७५, २९४-५
कुण्डकुन्दान्वय ११४, १५५-६	कुमिलिगण ४२
२३३-४, ३६०, ३६४	कुमुदचन्द्र २५८-९, २७१-२, ४०७
कुण्डघाट ३०७, ३६५	कुमुदिगण ८२, ३७७
कुण्डमय्य ४०	कुम्वनूर १४५
कुणत्तूर ३०७	कुरजन १३७

कुरट्टिगल १६	कृष्णसेट्टि ३८१
कुरण्डि २२, ६३	केतगावुड १०७, २२७
कुरुगोडु ३१९	केतय्य ३६३
कुखडिमिदि ३१८	केतिसेट्टि १०८, १८२, २०५
कुलगाण १७	केतोज ८८-९
कुलचन्द्र ५७-८, १५७-८, २५७	केम्पम्मणि ३५१
कुलत्तूर ३९१	केरवंसे २९९
कुलशेखर १५४	केरेसन्ते १७९
कुलोत्तुग १२१, १२७, १४०, १४५-६, १६६, २५१, २७३ ३९१-२	केलगरे २७०
कुलोत्तुगशोलकाडवरायन् १६६	केलडिवीरभद्र ३४१
कुसुम ४	केलडिवेंकटप्प ३३९
कुसुमजिनालय ३७६	केलेयव्वरसि ९५, २०२
कुकुमदेवी २५	केल्लिपूसूर १८-२०
कुंगियवर्मिसेट्टि ३६८	केशणदि २६६
कूण्डि ७९, ८१, १२८, १३७, १५३, १६४, २३५, २४१, २४३, २४६, २४९	केशव १९५, १९७, २६५, ३०२- ५, ३६९
कूष्माण्डीविषय १५	केशवदेवी २८३
कृष्णदेव २७६	केशवय्य १४६
कृष्णदेवराय ३१३-४	केशवरस ७६
कृष्णप्पराज ३४४-५	केशवसूरि ५१-५२
कृष्णराज ३१, ४४, ५३, १०९, १५२, २३६, ३५१	केशवादित्य ८०, १५१
कृष्णवर्मा १७	केशिराज ९१
	केसरिसेट्टि २०७
	केसिसेट्टि २२६
	कैतडुप्पूर १४१
	कोकलिपुर ९४

कोकिवाड ५४	कोन्न ३१७, ३८२
कोक्कल १३६	कोप्पण (कोप्पल) ३८, ४५, ७४, १३०, २५०, ३२५-६, ३७१
कोक्कलि ६४	
कोगलि २६५, ३६५, ३७९	कोमरगोप ३८३
कोछल गात्र ४२१-३	कोम्मणार्थ १४९
कोट्टगोरे १७४	कोम्मसेट्टि ३८०
कोट्टगीवरम् ३८०	कोरग २९९
कोट्टिय गण ६	कोरमग १२, १४, १५
कोडिहल्लि ७१	कोरवल्लि २४६, २४९
कोडुगूर १८, १९	कोरिकुन्द ११
कोणेरिन्मैकोण्डाम् २७, २५५	कोलारस ३४०
कोण्डकुन्दान्वय ५३, ९४, १२५, १३०, १३३-४, १५७-८, १६६, १७०, २०४, २०७, २४६, २४९, २५२-३, २५९, २६६, २७२, २८८, २९५-६ ३६३	कोलूर ३८९-९०
कोण्डकुन्देय अन्वय २८, ३०	कोल्लापुर (कोल्हापुर) १३५, १६२, १६४-६, ३४४-५
कोण्डकुन्देय तीर्थ ११४	कोल्लुगे ८५
कोण्डय्यसेट्टि ३६१	कोवल ६२
कोण्डैमल्लै ३३७	कोविलगुलम् १४५
कोनकोण्डल २०, ७२, ११४, २२६, २९३	कोशिक २६
कोनाट्टन् ८३	कोह नगोरी ३१५
कोन्तकुलि १४८	कोहल्लि ८५
कोन्तिमहादेविवसदि ३७२	कोकण ८२, १३७, ३२७
	कोगज १३६
	कोगणिवर्मा ९, १७, २०, ५४
	कोगणिवृद्धराज १७, २०
	कोगण्यधिराज ११, १२
	कोगरपुलियगुलम् २१

कोगरैयर् ६३	गण्डरादित्य ६२, १३७-९, १६२,
कोगल देश ५३	१६४-६, १८५-६, २३९
कोगु १५५, २०३, २६७, २८०	गण्डविमुक्त १०५, ११०-१२, १४९
कोठूह २४	१७०, २५८, २७१
कौहूरगच्छ ७३	गण्डिसेट्टि १०८
क्षेमपुर ३०३, ३१५	गयाकर्ण १५९
क्षेमकीर्ति २२१, २२३	गरग ३७७
क्षोणीपति १११	गंग १२, २०, २६, ४०, ४४,
खटवड गोत्र ४०२	५३-४, ५८-६०, ८९, ९४,
खण्डगिरि २-५, ५६-७	१०२, १०४, १२९, १५१-२
खण्डिल्लवाल १६१, ३००, ३१५	गणपय्य १४६-७, १६७
खण्डेलवाल ३१७, ३९६, ४०८,	गंगपेमीडि १०४, १०७, १०९, १३५
४२१, ४२५	गंगरवमिसेट्टि १४८
खप्परय्य १६४	गंगरसावन्त २५९
खर २	गंगराज १५६
खंडारिया गोत्र ४०५, ४०८, ४१०	गंगराडा ३९५, ३९७
खंभात ३८७	गंगरुल सुन्दरपेरुम्बल्लि १२२
खारवेल २	गंगवुर २३२
खाग गोत्र ४०३	गंगादास ३४१
खोट्टिग ५४	गगायि २८५
ख्वाजा अजीजवेग ३२८	गगेवे २२७
गजपथ ४२६	गजेनाड १८-२०
गजा ४०१	गावरवाड १०२, १०४, १०७,
गणपण ३२३, ३२५, ३३७	१०९, १११
गणपवरम् १६६	गिरधरदास ३४१
गणिगेमहाव्रति २४	गिरनार २२२, ३२६

गुजरपल्लीवाल ३९५, ३९८  
 गुडुगुडि ३७२  
 गुड्डिगेरे २५  
 गुणकीर्ति ५६, ७६, १०४, १०९,  
 ११०-१, ४००  
 गुणगविजयादित्य ६४  
 गुणचन्द्र ५३, ७३, १०५, ११०,  
 १९७, २३४, २५८  
 गुणदवेडगि ८४-५, १८७  
 गुणनन्दि ५८, ६०  
 गुणनेरिमंगलम् ७५  
 गुणन्दागि १६  
 गुणपाल १६१  
 गुणभद्र ७२, १९५, १९७, २९४-५  
 ३३०-२, ३३४, ३३७, ४०२,  
 ४२०  
 गुणमति २२  
 गुणवर्मा ६२  
 गुणवीर ३७-८, ६३, २७४  
 गुणसागर ३६१, ३९१  
 गुणसेन २२, १७७, २६४, ३६५,  
 ३६६, ४०२  
 गुप्त १८२  
 गुप्तवायि २८६  
 गुन्दुराज १८९  
 गुम्मटदेव ३०९

गुम्मणसेट्टि ३१२  
 गुम्मिसेट्टि २२६, ३०८  
 गुम्मुंगोल १०४, १०९  
 गुम्मैयसेट्टि ३३७  
 गुरुवयनकेरे ३०९, ३१४  
 गुर्जर १९७  
 गुलियपुर २६२  
 गुहनन्दि ७-९  
 गूटी २८८,  
 गूत्रक १८९  
 गूवल १३६  
 गृध्रवाल गोत्र ४०८  
 गेरसोप्ये २७९, २८२, २८४,  
 २८६-७, २९७-८, ३०१,  
 ३१५, ३२७, ३३०-४, ३५४-  
 ५, ३६८, ३९२  
 गोअलभिता ९  
 गोकवे २३३-४  
 गोकर्ण ३३५-६, ३९१  
 गोकक १५, ८४-५  
 गोमि १८३-५  
 गोमिगयबसदि १५८  
 गोज्जिका ९१-३, १०२  
 गोदृगडि १९८  
 गोणदवेडगि १२१  
 गोणिवीड ३५९



गोपनन्दि २०४, २०७	ग्रहकुल ५७
गोपरस २६६	ग्राम २२४
गोपाचल ४१२	घटैयंककार ७६
गोपेन्द्र १८९	घण्टोडेय ३२०
गोप्पण्ण २७९	घनविनीत १८
गोयिन्दम्म ४०	घनशोकवली ३५४-५
गोरविसेट्टि १०८, १६४	चच्चिग १८९
गोरूर २२६. २२९	चच्चुल १९१, १९६
गोर्म १५१-२	चटवेगन्ति २९२
गोललतक २६१	चट्टजिनालय ११४
गोलसिंधारा ३९५, ४०४	चट्टय्यदेव ८२
गोलिहल्लि १५३	चट्टरमि ८८-९
गोल्नाचार्य २३४	चण्डव्वे १०७
गोल्लापूर्व १५९, ३९६, ४०३, ४२७,	चण्डिगौडि २६१
गोल्हणदेव १५९	चण्डियण ३९
गोव १८०	चण्डिसेट्टि १०८
गोवर्धन २२७, २५०	चतुर्थज्ञाति १७२
गोवलदेव ११४	चतुर्थमुनोश्वर ३२६
गोत्रा २८७	चतुर्मुख देव २०४, २०७
गोवालगोत्र ४०३, ४०६, ४०९-१०	चतुर्मुखवसति ४१
गोपाटपुंजक ७-९	चनुद्वोलु ३८१
गोहिलगोत्र ४०३, ४१५, ४२५	चन्तलदेवी १३३-४
गोकथ्य २७	चन्दन १८९
गोकल १३६	चन्दलदेवी २३७, २४४, ३१९-२०
गौडसंघ ५३	चन्दव्वे ३८०
	चन्दियव्वे ४५

- चन्दिनेट्टि १०८  
 चन्द्र १३६, १८९  
 चन्द्रकराचार्याम्नाय १५९  
 चन्द्रकवाट अन्वय ९२-३  
 चन्द्रकीर्ति २०८, ३६७, ३८३,  
 ४०२, ४०३, ४०५  
 चन्द्रगिरि ३१३  
 चन्द्रनन्दि ४०, १०२, २२४  
 चन्द्रनाथ ३५६-७  
 चन्द्रपुर २८२  
 चन्द्रप्रभ ४४, ७२, २१७, ३१५-६  
 चन्द्रभूति ३७८  
 चन्द्रसेन १८-२०, ६७-८  
 चन्द्राक ३८१  
 चन्द्रिकावाट वंश ९८  
 चन्द्रिकादेवी २३७  
 चन्द्रेन्द्र ३७८  
 चल्लपिल्ले २६१  
 चवुडिसेट्टि १०८  
 चवुण्ड २६३  
 चवरिया ३९९-४००, ४०७,  
 चवरे ४१६, ४१९, ४२५  
 चगालराय ३९२  
 चंगात्व १२९  
 चाउण्डरस १७३  
 चान्दकवटे ९८  
 चान्द्रायणदेव १८०, २७१  
 चामकव्वे ७०, ३८३  
 चामराज १४७, ३४९  
 चामराजनगर २९६, ३१४  
 चामुण्डराज १८९  
 चारुकीर्ति १२२, २२१, २२३,  
 २९७-८, ३१२, ३२७, ३३३,  
 ३३५, ३४१, ३४३, ३४७,  
 ३६८, ३८१  
 चारुचन्द्रभूषण ४१२  
 चालुक्य २४-५, २७, ५३, ६३,  
 ६६, ६८, ७३-८२, ८४-६,  
 ८९, ९०, ९३-४, ९८-९,  
 १०२-३, ११०, ११२-५,  
 १२०-१, १२६, १३४, १३७,  
 १३९, १४१-५ १४८-५०,  
 १५२-३, १५७-८, १७०-३,  
 १७८, २०८, ३८९-९०  
 चालुक्यभोम ६४, ६७-८  
 चावय्य ३७१  
 चावुण्ड ८२  
 चावुण्डरस १८७  
 चावुण्डराय ८८-९, २७७  
 चाहमान १५९-६०, १६९, १७१,  
 १८९, १९६  
 चिकण ३७

चिकमगलूर १२९, १३१  
 चिकककन्नेयनहल्लि २७१-२  
 चिककणय्य ३३३  
 चिककमल्लण्ण १७९-८०  
 चिककमालिगेनाडु ३२०  
 चिककराय ३४१  
 चिककवीरप्प ३३०-२, ३३४  
 चिककहनसोगे ४३, १२९, ३३३  
 चिककहन्दिगोल २०१  
 चिकिकसेट्टि १०८  
 चिण्ण १२३-५  
 चितरल १६  
 चितलद्रुग ३०८-९  
 चितोड ३८६  
 चित्तामूर ३२८, ३५२  
 चित्तारि ८८-९  
 चित्रकूट २२१-२  
 चित्रकूटगच्छ १७२, ३७८  
 चित्रकूटान्वय १०२, ११२, १७२,  
 २६९  
 चिन्नभंडारदेव ३३९  
 चिप्पगिरि २६६, २९३, ३२६  
 चिचली २३५  
 चूलकम्म ३  
 चेकवा २५७  
 चेदि ६२

चेदिकुलमाणिकपेरुम्बल्लि १२२  
 चेन्न भैरादेवी ३२७  
 चेन्नराय ३३०-३  
 चेन्नवीरप्प ३३०-४  
 चैपल्लि ३२९  
 चोकिसेट्टि ३११  
 चोल ५२, ५६, ६२, ७४-५, ७८,  
 ८३, ९९, १०५-६, ११०,  
 १२१, १२७, १४०-१,  
 १४५-६, १५८, १६६-७,  
 १७८-९, २०८, २५१, २६०,  
 २७३, ३५४, ३९१  
 चोलपेरुम्पल्लि २७  
 चोलवाण्डपुरम् ६२  
 चौटकुल ३२७, ३४१  
 चौलुक्य ९८, २२२  
 छतरपुर १७४  
 छत्रसेन ४११  
 छपारा ४९५, ४२५  
 छन्वि ९५  
 छोतग १९५  
 जकवेहट्टि २९२  
 जकव्वे २३२, २५०  
 जकव्वरसि ३०२-३  
 जककय २५८  
 जककलदेवो ३०४-५

जक्कलि १३५  
 जक्कयक्क १५५  
 जक्कयव्वे ४३, २७२  
 जक्कसेट्टि २०५  
 जगतकीर्ति ४०२  
 जगतापिगुत्ति ३२९  
 जगदेकमल्ल ७५-७, ८०-१, ९३,  
 १७०-२  
 जगमणचारि १३२  
 जटारिसिहन्दि ३७१  
 जट्टिगोड ३२९  
 जतिग १३५-६  
 जननाथपुरम् १२२  
 जननाथमंगलम् १६६  
 जत्रलपुर ३१०  
 जम्बूखण्डगण १५-१६  
 जयकीर्ति ९५, १२९, ३८३  
 जयकेनि ११२, १५३, १७२, २५१  
 जयदेव १८९, ३६०  
 जयन्ताचार्य ६८  
 जयराज १८९  
 जयवीरपेस्लिमेयान् ३६६  
 जयसिंह २४, ६३, ७६, ११५,  
 १२०, १५१-२, ३४३, ३९०  
 जयसेन ६७, ६९, ३८१  
 जयंगोडशोलमंडलम् १७८

जसनन्दि ५७  
 जाकवे २६६  
 जाक्किमव्वे ९८  
 जातियक्क १४६  
 जावालिपुर १९०  
 जालोर ३८६  
 जावूर ३८३  
 जासट १९१, १९६  
 जाह्नवेयकुल ९, १७  
 जिड्डुलिगे २७७  
 जिनकांचि ३४४-५  
 जिनगिरिपल्लि २५१  
 जिनगिरिमल्लै २५५  
 जिनचन्द्र १९५, १९७, २०४, २०७  
 २५८, २७५, २८७, ३१०,  
 ३६९, ३९६, ३९८, ४०३,  
 ४२७  
 जिनदत्त २२५  
 जिनदास ३९७  
 जिनदेव १५३, ३७६, ३९७  
 जिनभूषण ३६६  
 जिनवल्लभ ४०-१  
 जिनसेन २९४-५, ४०७-८, ४१२  
 जिनेन्द्र मगलम् ३१८  
 जिन्नण १८६  
 जोमूतवाहान्वय १३७-८, १६२,

३८९-९०	तम्मदहल्लि ३८१, ३८४
जीयगौड ३६०	तम्मय्य ३३२-३
जीवराज ३९६, ३९८	तम्मरस ३०४-५
जुगियागोत्र ४१४	तलकाड १४६, १५५, २०३, २१४, २९१
जेवुलगेरि २५	तलक्कूडि ४१
जेमपार्य १४६	तलप्रहारि १८३, १८५
जेमिसेट्टि ३७५	तललूर ३६९
जोगीवडि ५६	तलवननगर २८-३०
जोन्नगिरि ८२	तलवलि २१४
जोयिमय्यरस ११४	तवनन्दी २६९, २९१
ज्ञानभूषण ३९७-८	तवनिधि २९०-१
टोडा रायसिंह ३४३	तंगले ३६०
टोक १३२, ३००	तंगलेदेवी ३०३-५
ठवला गोत्र ४००	ताडकोड २६३
ठवली, शान्तिकुमारजी ३९३	ताडपत्री २१७
डम्बल ९४, २६३	तायूर २६२
डिल्लिका १९०	तालराज ६४
तगडूर २६२, २९६	तिकमदेव २६५
तगरपुर १३८, १६२	तिक्क ११७
तगरे २६	तिन्त्रिणीगच्छ १५५-६, २२४, २५०, ३२१, ३२६, ३६४, ३७९
तजेगांव ३९५, ४०८	तिप्पगौड ९६
तट्टिकेरे ५९-६०	तिप्पय २६६
तडागपत्तन १९१, १९६	तिप्पिसेट्टि ११४
तण्डपुरम् १६७	तिम्मगौड ३२९
तमिलप्पलवरैयन् २५५	
तम्मण ३७८	

तिम्मप्प ३२०	तुलु (तुलुव) २८०, ३१४, ३२१-
तिरक्कोल १६७	२, ३२७
तिरुक्काट्टाम्पल्लि १४०	तुलुअडि २६
तिरुक्कामकोट्टपुरम् ९९	तुंगपल्लवरैयन् ३७४
तिरुगोकर्णम् २७	तेणिमलै ३६७
तिरुच्छाणत्तुमलै १६	तेरकणावि २९५
तिरुच्छोरुत्तुरै २८९	तेवारम् ६३
तिरुनिडंकोण्डै ४१, ७८, १२७,	तेकविणाडु २७
१६०, १६६, २७३-४, २७९,	तैल ७३, १७१-२
३३७, ३५४, ३७५	तैलप १४८-९, १८५
तिरुपरम्बूर १४०, १७३	तैलगेरे २६१
तिरुप्परकुण्डम् ३७३	तोगरकुट १४८
तिरुप्परुत्तिकुण्डम् १४०-१, १८५	तोयिमरस ३७२
तिरुप्पान्मलै ५२	तोरनगल्लु ३७७
तिरुमणजेरि ७८	तोरबगे १६४
तिरुमय्यम् ३६६	तोल्लु ९५-६, १२६-७, ३६२
तिरुमलरस ३१९, ३२२-३, ३२५	तोलहरवलि २९७
तिरुवयिरै ३७-८	तोल्लग्राम २६
तिरुवेण्णायिल् ३६६	तोडमडल ७४, २८०
तिलकरम २६०, ३०१	तोडूर ७५
तिलिवल्लि ३४८	तोलव ३१५
तिगकूरु ८३	त्रिकूटवसदि १४१
तीर्थवसदि १२९	त्रिणयनकुल ६६, ६८
तुंगलिकिलान् ९९	त्रिभुवनकीर्ति २६०, ३८०
तुम्बदेवनहल्लि १२२	त्रिभुवनचन्द्र १०६-७, ११०-१२
तुम्बिगि ३८४	त्रिभुवनमल्ल ११४-५, १२०, १२२,

१२६-७, १३३, १४१, १४३,	वासण ३८९
१४५, १४८-५०, १५२-३,	वासत्रोव १८७
२००, २०८	धादि १६१
त्रिभुवनवीर ३७८	दिनकर ११९, १२१
त्रैकीर्ति २७५	दिनकरजिनालय १६७
त्रैलाक्यमल्ल ८२, ८४-६, ८९,	दिल्ली ३४४-५
९०, ९३-४, ९८-९, १००,	दिवाकर २५०
१०५, ११०, ११५, १२०,	दुग्गमार ३९, ४०
१७३, १७८, ३८९-९०	दुद्दमल्ल १३३-४
दडग १५४	दुद्यक १९१, १९७
दडिगनकेरे १५५-६	दुर्गभट्ट ३६
दडिगसेट्टि ७०	दुर्लभ ( दुर्लमराज ) ४६, ५२,
दण्डब्रह्म १३७	१८९, १९२, १९७
दण्डिपल्लि ४४	दुर्विनीत १७, २०, ९४
दत्ता ५, ६	दूडम ११९-१२१
दत्तवसुत्रवृत्ति १०	दूमल १८९
दन्तिदुर्ग ३१	देकत्रे २०५
दमिन्न ५, ६	देज्जमहागज १५-१६
दयापाल २१४, २१६	देमलदेवी १७३
दयाभूषण ४०८	देमायप २३४
दयावसन्त २४	देल्हण १९६-७
दानप ३२८	देवकीर्ति ७६, ३२३, ३२६, ३६३,
दानवुलपाहु ५५, ६०, ३६३	३८४
दानिवास्त ३३१-४	देवगण ३८२
दारिमेष्टि १०८	देवगेरी ३८९
दावणदि १०२. ३८०	देवचन्द्र २२५, २५८, २७१, ३२३,

३२६, ३५४-५, ३८१-२	४१६-२५, ४२८
३८४	देवेन्द्रसेन २९४-५
देवणय्य ११०	देशवल्लभत्रिनालय ४२
देवण्ण २६०, ३१६-७, ३४१, ३४८	देशीय ( देशी, देसि, देसिग ) गण
देवत्तूर ३७४	४३, ५३, ७७, ९३-४, ११४,
देवदास ३२८	१२५-६, १२९, १३३-४,
देवघर १९२, १९७	१४०, १४८, १५६, १५९,
देवनन्दि २७०, ३६१	१६४-५, १६७, १७०, १७३,
देवपाल १६१	१७९, १८२, १९७, २०४,
देवप्प ३०८	२०७, २२५, २३२, २४६,
देवमाम्बे २९४	२४९, २५२-३, २५६, २६०,
देवरदामय्य ७०	२६५-८, २७२, २७४, २७८,
देवरस १४९	२९५, ३१५-६, ३३५, ३३८-
देवराज १९०, ३५१	९, ३४२, ३५४-५, ३५९,
देवराय ३००, ३०५-६, ३१४,	३६०, ३६३, ३७६, ३७९-८३
३९१	देसल १९१, १९६-७
देवस्पर्श १९१, १९७	दोडणसेट्टि ३१२
देवाद्री १९२	दोण ११७-८, १२०-१
देवागना १११	दोणि १२२
देवियन्बे ७०	दोरसमुद्र २५३, २५६, २७०-१
देविसेट्टि १०८, २०५, २०७, ३१२,	दोहद ५
३१६	द्रमिल सघ २१४
देवीरम्मणि ३४९	द्रविल सघ १७९-८०, २३३, २६७
देवूर ३७६	२६९, २९१
देवेन्द्र ६९, २०४, २०७	द्राविडसंघ १२८
देवेन्द्रकीर्ति ३१४, ४०२, ४११,	द्राविडान्वय २६४



द्रोहघरट्टाचारि १५६	नन्दवर ४५
द्वीपितटाक २९४	नन्दवाडिगे ८५
घन्यवसन्त २४	नन्दसेठि १
घरवृद्धि ६	नन्दापुर ८५
घर्मकीर्ति ४०३-४	नन्दिआम्नाय ४२२
घर्मचन्द्र ३१७, ३४०, ४००, ४०४- ५, ४०७-१०, ४१२-३, ४१६, ४२८	नन्दिगण (सघ) १०४, १०९, १२८ २१४, २२१-२, २३३, २५८ २६७, २६९, २९१, ४०२
घर्मपुर ३०३	नन्दिवेवूह ९३
घर्मपुरी ३८-९	नन्दिभट्टारक २५८-९, २९६, ३७५
घर्मभूषण २८८, ३११, ३९७, ३९९-४०१, ४०५-८, ४१०	नन्दिमुनि २३४
घर्मबोलल ९४, २६३	नन्दिगड संघ ७२
घर्मसेन २६९	नन्दियडिगल ३६१-२
धवल ४६, ४९, ५२	नन्दीतटगच्छ ३९६, ४०२-३, ४०५-६, ४०९, ४११, ४१४, ४१६, ४२७
धारवाड ५३	नन्धियगग ५९, ६०
धारावर्ष ३८, ३०	नमयर ५३
धुरामोरो गोत्र ४२२	नम्बिसेट्टि २८२-३
धृति २७	नयकीर्ति १७३, २०७, २१९-२० २३१-२, २५६, २५८-९, २७१-३
घोरजिनालय ४४, ९५, १८७	नयसेन ९१-३, ११८, १२१
ध्रुव ३०, ३२	नरतोग १६७
नकुलरस ८८-९	नरवर १९१, १९७
नगिरि २९७-८, ३०३, ३२७	नरवाहन ६६-८
नदिहरलहल्लि १८७, १९८	
नदूलडागिका १६०, १६८-९, १७०-१, १९०	

नरसम्प ३३२-३	नागकुमार ४३
नरसिंह ११४	नागगावुण्ड १९८, २६२
नरसिंह १६९, १७६-७, १७६, १८०, २०३, २११-२, २५६, २५८-६०, २६२, २७०-२, ३१३	नागगौड ३७२
नरसिंहवग ३०९	नागचन्द्र ९५, १२९, १७२, १८६, २७८
नरसिंहराजपुर २६, ३१२, ३४९	नागण्ण ३००
नरसीगेरे ३९, ४०	नागदेव ७३, १९२, १९७
नरसीभट्ट ३९२	नागनन्दि ३७, २९६
नरेगल ५३	नागपुर २०९, ३९३-५, ४१२, ४१५, ४१८-२३, ४२५-२७
नरेन्द्रकीर्ति ४०४, ४१०	नागप्प ३४९
नरेन्द्रसेन ९२-३, ११८-२१, ३७५	नागभूप ३४३
नल १२९	नागय्या ४४, २०९, ३५०, ३५७, ३६६
नलजनम्पाडु २३	नागरखण्ड ४४, २५०, २७७, २८९
नल्लूर २७३	नागरस ३०१
नविलगुन्द ३८३	नागरहाल १७६-७
नवल्लूर १२६-७, २२६	नागराज २९४
नविले ८५	नागलदेवी २६६
नगलि १५५	नागलपुर ३३०-१
नजेदेवरगुड्डु २१६	नागवर्मा २६, ८८-९
नाकण १४७, २६७	नागवे १८१, २३३-४, २८६, ३७२
नाकिग ९५	नागश्री १९२, १९७
नाकिमय्य ११२	नागसारिका ३५-६
नाकिया ४	
नाकिराज १६६	

नागसिगियव्वे २५१	नाहर ३८५
नागसेट्टि २८९-९०	नाहटा ३८५
नागसेन ७२, ८४-५	निगमान्वय २७६
नागह्लद १९४	निगुम्बवंश १३९
नागिसेट्टि १७१, २८६	निजिकव्वे २३०-१
नागुलपोलमव्वे ३७	निट्टूर २२५, ३६८
नागुलवमदि ३७	निडुगल ( निडुगल्लु ) २६०, ३८२
नागोयिसेट्टि २६३	नित्वकल्याणदेव १६०
नागोज ३६०	नित्यवर्ष ४४-५, ५५
नागौर ४२२-३	नित्वगोहाली ७-९
नाहलाई १५९, १६७, १६९, १७०	निधियण्ण ३९
नाडलि १००-१	निम्बदेव १६३, १६५-६, २३९
नाडोल ३८६	निरुपम ३०
नाथमर्मा ७-९	निर्घडेवृक्षसंघ ३४९
नाथसेन ६७-८	निलिम्पपुर २९८
नादीवे ३५७	नीहूर ३९१
नानिग १९६	नीरलगि १७१
नामिसेट्टि २७३	नीलगिरि ३४६-७
नायिम १३५, १३९-४०	नीलत्तनहल्ल ३१८
नाराणक १९१, १९६	नीलिव्वे १७२
नारायण ३६, ४०	नूतिसेट्टि १०८
नारिमप्पाळि ४१	नूलवन्दिसेट्टि ३५७
नालिसेट्टि १०८	नूलवागिसेट्टि ३५७
नाल्लूर ३३४	नेगलूर २५७
नाल्लुयागिन्दु ३२८	नेचटिमनायि १२९
नाविकव्वे ११४	नेमण ८१-२, २८६-७, ३६२

नेममेन ४२०	पदुमणसेट्टि ३१८
नेमिचन्द्र ४२-३, १२६-७, १५३, १७३, २१९-२०, २२६, २३२, २४५, २४९, २५८, २६५, २७१, ३७०, ३८२, ४२८	पदुमलदेवी ३२७
नेमिदेव २२७, ३७६	पदुमव्वे ३७६
नेमिसेट्टि १०८, ३१२	पद्मकीर्ति ४०१, ४०७-९, ४११, ४१४
नेरिलगे १७१	पद्मकुल ३४६
नेल्लिकर ३१७, ३८२	पद्मट १९१, १९६
नेवाज्ञाति ४१३	पद्मण्णरस ३०४-५
नेगम १९५	पद्मनन्दि ४५, ५५-६, १४९, २१७, २५०, २५८, २७७, ३००, ३१०, ३९७, ४१६-७
नोम्पियवसदि २०८	पद्मप्रभ २००, २०८, २६९, ३८०
नोलम्ब ३८९, ७६, ९३, ११६, १३९-४०	पद्मव्वरसि ५३
नोलम्बवाडि ( नोणम्बवाडि ) ७६, १५५, २१४, ३९०	पद्मलदेवी १७९, २४४
न्यायपरिपालपेहम्बल्लि २५५	पद्मसेन २५४, २६१
पटना ३१७	पद्मावती २३६, ३६२
पट्टिपोम्बुर्च ८६, ८९, १८३, १८५	पद्मावतीपल्लीवाल ३९५, ४०८
पडियरकाटि ८८-९	पद्मैय ३५०, ३५३
पडेवल ७३	पनसोगे ४३, २०७, २२५
पडेवीट्टु ३१३	पण्डिण १४८
पण्डित्तय्य ३३३	परकेसरिवर्मन् ५२, ७५, १४१, १५८, १६०, १६७, २५१
पदमूलिक ४	परमजिनदेवजीयर् ३५७
पदार्थसार २५६	परमार ८६
	परम्बूर ९९
	परवार ३९६, ४०४, ४१५, ४२३-६

परान्तक ५२	पायण ३४३
परिसय २६६	पायिम्म ७८, ८१
पर्णयूरनाडु १७९	पायिसेट्टि २५४
पर्वतमुनि २२४	पारिसदेव १७९
पलमिगे ८२	पारिससेट्टि २१९-२०
पल्लव ११-२, ३८, ९३, ३५४	पार्श्व १२०-१
पल्लवपेमनिडि ११५, १२०	पार्श्वदेव ३८४
पल्लवरैयन् १६७	पार्श्वदेवी ३३६
पल्लवादित्य २३	पालियड ९६
पल्लवेलरस १८, २०	पालैयूर ३५४
पल्लिका १९०	पाल्यकीर्ति २२७
पल्लिच्छन्दल् ३१७	पाल्हण १९६
पल्लोवाल ३९५, ४०१	पासकीर्ति ४०४
पसिडिगंग २६	पिट्टनूप १५१-२
पहाडपुर ६	पित्तल्यागोत्र ४२७
पचन्तूपनिकाय ७-९	पिरियमोसंगि ७६-७
पाटणी गोत्र ४२५	पुगलोकरनाथनल्लूर २५५
पाटणीवरम् २०८	पृष्टैय ३५३
पाण्ड्य २७, ३८-९, ७४, १०५, २५३, २५५, २६१, २६४, २९९	पुणिस १४७
पाण्ड्यदत्त ३१९-२०	पुण्ड्रवर्धन ७, ९
पाण्ड्यम १८३, १८५	पुत्तडिगल ६३
पानुमल १४८, २१४	पुत्तिगे ३२७, ३४१
पान्थियुग १८६	पुट्टुप्पट्ट १४१
पापटोयान्त ३९६, ३९८, ४११	पुन्नागवृक्षमूलगण ८०, ८१, १८६
	पुन्नाट १७, १८, २८, ५४
	पुरनूर ८५

- पुरिकर ११३, ११८, २५४, २६५  
 पुरिगेरे २५, ११२, १७२  
 पुलिगेरे ९०, ९३, १०३, ११०,  
 ११२, ११७, १२०, २५४  
 पुलुवरणि ३८४  
 पुल्लिऊर ११-२  
 पुष्करगण ( पुष्करगच्छ ) ४००,  
 ४०४, ४१०-१२, ४२०  
 पुष्पदन्त ९६, १७५, २१४, २१६  
 पुष्पनन्दि ३८०  
 पुष्पसेन ८८-९, १७५, २१०,  
 २१४, २१६, ३३६  
 पुस्तकगच्छ ११४, १२६, १२९,  
 १३३-४, १४८, १६४, १७०,  
 १७३, १७९, १८२, २२५,  
 २४६, २४९, २६६-७, २७२,  
 २९४-५, ३३५, ३६०, ३६३  
 पूणुससेट्टि २०५  
 पूण्ड ३६७  
 पूर्णतल्ल १८९  
 पूलि ७९-८२, १५०-२  
 पृथिवीकोंगणि १७, १८, २०  
 पृथिवीदेशरट्टुगुडि २४  
 पृथ्वीकोगाल्व १३३  
 पृथ्वीराज १८९, १९०, १९६  
 पृष्ठिमपोत्तक ७-९  
 पेण्डरवाचिमुत्तव्वे २१७  
 पेद्दगालिडिपर्ह ६७, ६९  
 पेनिकेल्पाडु २१  
 पेनुगोण्ड ३४४-५, ३६३, ३६६  
 पेरियनक्कनार् ४१  
 पेरियवडुगणार् ४१  
 पेरुनकिलि २७  
 पेर्त्तिजिगदेव ३५४  
 पेरूह ८५  
 पेरेर १२  
 पेर्गुमि १५२  
 पेर्म १५१-२  
 पेर्मण २३८, २४४  
 पेर्माडिबसदि ११२  
 पेर्मानिडि ९३, १०५  
 पेर्वयल ८९  
 पेवय्य ३४८  
 पोगरियगण ३९  
 पोत्तोज ३८०  
 पोत्तिनाथ ३६७  
 पोन्नुगुन्द ८५, ११२  
 पोन्नूर १६७, २६४, २८९, ३४६  
 पोम्बुच्च ३१५  
 पोय्सण ( पोय्सल ) ९५, १५४,  
 २११, २७०  
 पोलेग ७६

पोसवूर ७६	१२४, १४८, १५५, १५७,
प्रतापकीर्ति ४००, ४०२-३, ४०५-	१९८, २०४, २१४, २७६,
६, ४०९-१०, ४१६	२८१, २८९-९०, ३९०
प्रथमसेनवमदि ३८९	वन्दलिके ४४
प्रभाकरदेव २५४	वप्पयराज १८९
प्रभाकरसेन २९४-५	वमण ६९, २३२
प्रभाचन्द्र ५४, ५८, ६०, ७०,	वम्बई २०९, ३२७, ३८६-७
१३३-४, १४०, १५४, १५७-	वम्मगवुड २६४
८, ३००, ३६१, ३८०	वम्मट्य २८३
प्रमलदेवी ३५४	वम्मन्वे ३६९
प्रमिसेट्टि ३८१	वम्माचारि २१०
प्रवरकीर्ति २२२-३	वम्मिसेट्टि १०८, १५२, १६४,
प्राग्वाट १९१, १९६	१७०, २०७, २२६
प्रोल १४२-३, १४५	त्रयिचिसेट्टि ३७७
वधेरवाल ३९६, ३९८-४०३, ४०५-	वर्मदेवरस १२१
७, ४०९-१०, ४१२, ४१४,	वर्मनन्द ३६८
४१६, ४१९	वलगारगण १०४, १०९
वट्टकेरे १०८, ११०, १४८	वलगारवंश २९४-५
वढोदा ३८५	वलगेरि १७८
वण्डुवाल ३१५	वलदेव ७१, ९१, ९३, १०२,
वदनगुप्ते २८, ३०	१९९, २३९, २४५, ३९०
वदनोर ३०७	वलमद्र ५०-२
वहेग ५३	बलात्कारगण १०७, ११२, १५३,
बघनोरा ४२०	२२९, २५८, २७०, २७२,
बनदाग्निशके ३४३	२७८, २८८, २९९, ३०६,
बनयासि ८५, ११४, ११६, १२०,	३१०-१, ३१५, ३९६-७,

४००-५, ४०७-१२, ४१४-२३, ४२५-८	वादेगट्टि ३७१
वालिकुल ६१-२	वान्धवनगर २५०
वलेयवट्टण १६४	वावानगर १८२
वल्लय्य १९९, २००	वायिसेट्टि ३२९
वल्लाल १३१, १३७, १५४, १९८, १९९, २००, २०२-४, २०७, २०९-१८, २२०, २४९ ५०, २७०, २७३, २७६-७, ३३५	वारकूर २९९, ३२२, ३२६, ३४१
वल्लिग्रामे ( गाँवे ) २७६-७, ३८९	वारलो १
वमल्लर ३०६	वालचन्द्र ५८, ६०, ७०, ८०-१, १३४, १४८, २०४-५, २०७, २१९-२०, २२७, २४२-३, २४८, २६०, २६३, ३६३, ३८०, ३८३
वसवदेव २८१-२	वालप्रसाद ४७, ५२
वसवपट्टण २६६	यालूर २४९, २५७, ३४८
वसविमेट्टि १०८	वालेहल्लि १७०, २७९, ३७२
वस्तिहल्लि १६७, २५६	वासवे ७१
वहादरपुर ३९५, ४०३	वामवुर १२५, ३८९
वंकापुर ४४, ३७२	वासिसेट्टि १८१
वकेयरस ४४	वाहुत्रलि १२६, १२९, १५०, १५२, २१९-२०, २५२-३
वागियूर ५४	वाहुवलिकूट १५५-६
वाचण्ण ३०९	विजापुर ४५, २५५, २७६
वाचय्य ९४	विजोलिया १८८
वाचवे २३१	विज्जण १३६, १८२, १८६-७
वाचिगावुण्ड १४९	विज्जल १५१-२, १७८-९
वाचिसेट्टि २७५	विटिसेट्टि ३११
वाचेय २६०	विट्टय्य ४४
वादय्य ३७८	



विट्टरस १८७	बूचन्वे १२९
विट्टिदेव १५४, २११, २७०	बूत १२३, १२५
विट्टियण ३६२	बूतय्य ५३
विडवक ७१	बूतुग ५८, ६०, १०४, १०९
विण्णिहगनवले ५५	बूपोज ३६०
विदिहूर २६८, ३०९-१०	बूवनहल्लि ७०
विदुरे ३२०, ३३६-७, ३३९-४०	बंगूर ४२
विरणंतर ३२६	बेचारकबोमलापुर ७४
विल्लगौण्ड १२६-७	बेट्टुकेरि ३४०
विलपाणसेट्टि १६४	बेट्टिसेट्टिट ३८१
विलिगि ३२०, ३३५	बेत १४२-५
विलिगिरि रंगनबेट्ट २०९	बेन्नेवुर ९८
विलिचाग्राम २५३	बेरिसेट्टिट ३८०
विल्लमनायक ३८२	बेलगामि २१७, २७६, ३७०, ३८९
बोचगवुड ७४-५	बेलगाव ४२, २३६, २४३, २४९
बोचण ( बोचिराज ) २३८-९, २४३-६, २४८-९, २५४	बेलगुल २२७, २६७, ३२५ ६
बोनिसेट्टिट ३८३	बेलतंगडि ३१४
बोराग १३९-४०	बेलप्प २७९
बोग्ग ९४	बेलूर १३०, १४७, १७५, २०७, ३४४, ३४६
बोरम १८३, १८५	बेल्लगलि ८५
बुनागज २७८-९, २९०, २९५	बेल्लदेव ९१, ९३, १०२
बुधगुप्प ९	बेल्लेट्टिट ५६
बुट्टिसेट्टिट ३०१	बेल्लुम्बेट्टे ३८२
बुज्ज ३५९	बेल्लवत्ति १५२
बुम्बेट्टिट ३२९	

वैल्वल ७९, १०४-६, १०९-१०,  
११२, १७८, २१४  
वैल्वोल ९०, ९३, १०३, १२०,  
१७२

वैहार २२८

वैटूर ३७

वैचण २९७-९

वैचय २७८, २८८

वैचिसेट्टि २८५-६, २९९

वैन्दुरु ३०८

वैराट ३८८

वैरामक्षेत्र ४१६

वैहुरु ९३

वैगगावुण्ड ३८४

वैगाडि १९८

वैचुवनायक ३८४

वैष्णवीड ३७५

वैष्णव १५६, २५०

वैष्णय २९६

वैष्णसेट्टि १०८, १६४

वैष्णयन्त्रे १८३

वैष्णयवाड १३८, १४०

वैष्णवक ३५६

वैष्णवण ३६८

वैष्णवस ३३७

वैष्णवसेट्टि ३१६

वैष्णव २२९, २६६

वैष्णसेट्टि २६०, २६६, २७७,

२९९, ३१२, ३२८, ३७१,

३८०

वैष्णवट्ट २७

वैष्णवड्यागोत्र ४०१, ४०३, ४०६,

४०९, ४१६

वैष्णवडि ७८, ८१

वैष्णवनाग २९३

वैष्णसेट्टि १०८

वैष्णव २२६

वैष्णववण ३६४

वैष्णव २५०, २९०-१

वैष्णवकुल ११६

वैष्णवजिनालय १५२, १५७

वैष्णवधिगाज ९३

वैष्णवश म्यूजियम २७, ३८७

वैष्णवकल ३००, ३३५

वैष्णवकलंक ३१६, ३३५, ३३८-९,

३४२

वैष्णवदाम ६

वैष्णवबाहु ९६, १७५, २१४, २१६

वैष्णवरायि १५७-८

वैष्णवेशर ३८६, ३८८

वैष्णवत ७३, १५५-६, २७२

वैष्णवतपुर १७४, ३८५

भरतिमय्य १७०	भूलोकमल्ल १५३, १५७-८, ३९०
भरतिसेट्टि २१४	भैररम ३१३
भंवर गोत्र ४०४	भैरवदेव २६५
भागिणव्वे ७९, ८१	भैरवपुर ३१५
भागियव्वे ४०-१, ९५	भैरादेवी ३००
भानुकीर्ति १२९, २५०, २७२, ३७९	भोगदेव २०८
भानुचन्द्र ३९८	भोगराज २७८
भानुमनीश्वर ३२१, ३२६	भोगवदि १९९-२००
भालिपालवन्दप्प ३३०-१	भोगवे ११४
भावचन्द्र १९७	भोगादित्य ९८
भावनगन्धवारण ८५	भोज ८६, १३६-७
भावमेन ३८०	भोमले ३९४
भासगवुण्ड ३६२	भोसे ३७०
भास्करनन्दि ११३	मगर कारगरम १५७
भित्तम १३७, २१३	मणलकुल ११२
भीम ६७	मणलिमनेओडेयोन् २६
भीमदेव ९७-८, २२१-२	मणलेर १७२
भीमा ३९५, ४११	मणिचन्द्र ४२
भुजवलमल्ल १८६	मण्डून् २२९
भुग गोत्र ४००	मण्डलकर १९२, १९७
भुवनकीर्ति ३९७ ८, ४२८	मण्डालगेरे ८५
भुवनैश्वर १०२-३, ११०, ११२- ३, ३८९	मण्डलाई ३३८
भरदोजनायकपुर २६१	मण्णे ६९
भुगवदि १०५, २१४, २१६	मतिदीर ३४०
	मतिसेन ९९

मत्तिसागर ३५४  
 मत्तावार ९९, २९२, ३५३  
 मत्तिकट्टि ९९  
 मथुरा ५, ६, ७२, ३८६  
 मदनसेन २९४-५  
 मदनूर ६८  
 मदवणसेट्टि ३१८  
 मदविलगम् १३०  
 मदिरे ३९  
 मदिरेकोण्ड ५२, २५१  
 मदिसागर २५५  
 मदुवण १८६  
 मदुवरस ३०१  
 मद्देगडे ३२१-३, ३२५-६  
 मद्रास ३६४  
 मधुकण्ण २५६  
 मधुर ३९१  
 मनगुन्दि २५१  
 मनोली २२७  
 मनोविनोत १८  
 मन्तरवर्मण १२१  
 मन्तगि १८६, ३७२-३  
 मन्त्रचूडामणि ९५  
 मन्नेरमसलवाड २६५  
 मम्मट ४६, ५०-२  
 मयिलिसेट्टि १०८

मयूरवर्मा १५७  
 मरकत ३२७  
 मरगोड ३७७  
 मरवोलल ७६  
 मरसे २३३  
 मरिनाग ३५०-३  
 मरियाने १३१, १५५-६, १६९  
 मरुत्तुवक्कुटि १२१  
 मरुलजिन २९२  
 मरुलयरस २८०  
 मरोल ७५  
 मलघारिदेव १३०, १७०, १८२,  
 २२८, २४५, २४९  
 मलयकुल ६३  
 मलयन ३३४  
 मलवसेट्टि २२६  
 मल्लेय २२५  
 मल्लेयालपाण्ड्य २५८  
 मल्लेयन् कोविल ३६६  
 मल्लेयन् मल्लन् १६०  
 मल्ल २५४  
 मल्लगावुण्ड १७१-२  
 मल्लप ६४, २८७  
 मल्लटय १०७, ११०  
 मल्लवल्लि २६  
 मल्लवादि ३५-६

मल्लव्वे १०८

मल्लि २६८

मल्लिकामोद २१७, २७६-७

मल्लिकार्जुन २३७, २३९, २४३-४,  
२४६, ३०८

मल्लिगुण्ड ३७३

मल्लिगौड ३६०

मल्लिदेव ३८३, ३९०

मल्लिभूषण ४२९

मल्लिमय्य १६७

मल्लियवका २२६

मल्लियपण १५८, २१७, २७६-७

मल्लिराय ३००

मल्लिसेट्टि ८२, १०८, १५३, २६०,  
२८२, ३१६मल्लिसेन (मल्लिषेण) ९९, १२७,  
१७५, २१४, २१६, ३७०,  
३७६

मसुलिपट्टम् ६३

मम्की ७७

महाकीर्ति २८४

महादेव २५८-९

महादेवी ७६

महादेविसेट्टि २२६

महानागकुल ३२९

महाभोज १५९

महामद ४

महामेघवाहन २

महालक्ष्मी २९१

महावीर ४२

महोचन्द्र ४२७

महोघर १९२, १९७

महोशबुद्धिक ८६

महेन्द्र ३८-९, ४६, ५२-३

महेन्द्रकीर्ति ७१

महेश्वर ३२८

मंगभूष ३०२-५, ३५५-६

मंगराज २९८

मंगलिवेढ १८२

मंगलूर ३२२, ३२६, ३४१

मगियुवराज ६३

माकण २९४-५

माकनूर ३७५

माकव्वे ७४

मागुण्डि २५०

मावनन्दि २२, ५८, ६०, ९८,

१५०, १५२, १६६, २०४,

२०७, २२९, २५८, २७१-२,

२७४, २७८, ३७५

माच १७६

माचव्वे १२५

माचियण १७६-७	मानलदेवी १६०
माचिराज १८३, १९८, २००	मानसेन २९९
माचैर्ल २४	मावलरसि ३०३, ३०५
माणिकदेवी ३०५	मावाम्वा ३५५
माणिकसेट्टि १००-१, २८५-७	मामटा १९२, १९७
माणिकसेन २०९, ३९७-८, ४०२, ४२०	मायण २९४-५
माणिक्यतीर्थ १५२	मायदेव २६३, ३७०
माणिक्यनन्दि १०४, ११०	मायसेट्टि २९९
माणिक्यभट्टारक १८२	मार २९२
माण्डू ३०६	मारगौड १८५-६
माथुर संघ १९५, १९७	मारदेवी २८३
मादरम ३७४	मारब्बेकन्ति ६९
मादलदेवी २६६	मारमय्य ७०
मादलंगडिकेरि ३४०	मारय ३८०
मादवे २५८, २६३	मारवर्मन् २५५, २६४ <sup>४</sup>
मादैय २६३	मारसिंह ५३, ५४, ५९, ८९, १०९, १३६
माघव २८७	मारिसेट्टि १८१-२, २१४
माघवचन्द्र १५४, २३३-४, २४२-३, २६६, २६८, ३७२	मारुगोट्टेर् १९, २०
माघवनन्दि १५९	मारुह ३३६
माघवमहाविराज १०, १२, १७, २०	मारैय २१९-२०
माघववर्मा १०, १४४-५	मार्तण्डय्य ८२
माघवसेट्टि १०८	मालकोण्ड १
माध्यमिका १	मालवे २२५
	मालवेगडे २७७
	मालियव्वरसि ३५५-६

मालेयव्वे १३२	मुनिभद्र १५५-६, ३३६
मावलि २३३	मुनिवल्लि २२७
मात्रिनकेरे २२५, २९७	मुनुगोडु २७, ३८२
मावीरन् १६७	मुम्मडिचोल ६२
मासवाडि ७३	मुलगुन्द ८५, ९०-१, २६०, ३०१, ३४३, ३७९
मासाविवर्म १३१	मुत्कि ३६४
मासेनन् ५२	मुल्लभट्टारक १५३
मिरिजे १३८-९, १६४	मुण्कर १७, २०
मीचारमागाणे ३२७	मुंजराज ४६, ५२
मुकुन्ददेव ३७८	मुंजार्य ५४
मुक्कुडैयार् १४५	मूगूर २७२
मुगद ( मुगुन्द ) ८२	मूडगेरि १०४, १०९
मुच्छण्डि २१५-६	मूडविदुरे ३१३, ३२०, ३२६-७, ३३९-४१, ३४७, ३६७-८
मुढाना ३९६, ३९८	मूलवल्लि ३९
मुडिगोण्डम् १३३	मूलराज ४६, ५२, २२०
मुत्तइहोमूर २९९, ३५८	मूलवसतिक्रा २२१, २२३
मुत्तुप्पट्टि २२	मूलमघ ३५-६, ३९, ४३, ७२, ८४-५, ९२-३, ९६, ९८, १०४, १०९, ११२, ११८, १२०, १२६, १२९, १३३-४, १४०, १४८-९, १५३, १५७- ८, १६४-५, १६७, १७१, १७३, १७९, १८२, २०४, २०७, २२४, २२५, २२७,
मुत्तोयकूम् ३१८	
मुद्दगावुण्ड १००-१, ३६२	
मुद्दगीठ ९६, ३६०	
मुद्ददण्ण्येच्चर ३९१	
मुद्दमापन्त २५०	
मुनिगिरि ३४७	
मुनिचन्द्र ( मुनीन्दु ) ५९, ६०, १२२, १८६, १९१, १९७, २२७, २५०, ३२३-४, ३२६	

२२९, २३३-४, २४६, २४९-  
५३, २५६, २५८-६१, २६५-  
७०, २७२, २७६, २७८,  
२८८, २९५-६, ३००, ३०६,  
३१०-१, ३१५, ३१७, ३२१,  
३२६, ३३५-६, ३४०, ३५९-  
६०, ३६३-४, ३७०, ३७३,  
३७५-६, ३७८-८२, ३९६-  
४२९

मूलिगतिष्पय २६६

मृगेश १३-१५

मेघचन्द्र ५८, ६०, ९६, १३३-४,  
१४०, १५५-६, २४९

मेघनन्दि २५०

मेडता ३८७, ४०३

मेण्डाम्बा ६६, ६८

मेलपराज ६६, ६८

मेलपाडि ५३

मेलरस १४४-५

मेलव्वे २६०

मेलाम्बा ६४

मेलुसान्तलिंगे १८३, १८५

मेवपाषाणगच्छ १५७-८, ३७५

मैणदान्वय २६८

मैलम १४३, १४५

मैललदेवी ८५, १५१-३

मैलाप अन्वय १५३

मैलुगि १७८, १८२

मैसुनाड २१५-६, २८३

मैसूर ३४९-५३

मोटवेन्नूर ४०, ९८, २७५

मोदलियहल्लि १७०

मोनभट्टारक ४२

मोरक कुल ७६

मोरव ९५

मोराक्षरी १९०, १९६

मोसल १९१, १९७

मोसलेयकुषुवु ३१६

मोसलेवाड २६५

मोहनदास ३४१, ३४३

मोगामा ३८७

मौनपाचार्य ३५७

मौनिदेव १५०, १५२

यलवट्टि ३६३

यश कीर्ति २२१, २२३, ४०२-३

यशोनन्दि ५७

यशोराज १८९

यशोवर्मन् ८६

याकमव्वे १४२-३, १४६

यादव २५१, २५४, २५६-९,



२६३, २६५, ३८९-९०	रत्नकीर्ति २६१, ३१०, ४०३-४,
यापनीय सघ ४२, ८०, ८१, ९५,	४१५
१२२, १५०, १५२, १५३,	रत्नगिरि २१, ३४४-५
१८६, २२७, २६६, २७५,	रत्नचन्द्र १९७
३७६, ३७७-८	रत्ननन्दि २०४, २०७
याप्यलंगलवकारिणी ३९१	रत्नप्योडेय ३१४
यावनिक ११-२	रत्नभूषण ३७७
यिवल्लिग्राम ३२९	रत्नापुरि २६७
योचलदाल ३३२-३	रवि १३-१५
येत्रिसेट्टि १०८	रविचन्द्र ५४, १२५, २५८, २७१
येहेहल्लि ३३०-१, ३३३	रविनन्दि ५४
येरगजिनालय ३६४	रससिद्धुळुगुट्ट २०, ७२, २२६,
येलवर्गि ३७३	२९३
योजणसेट्टि २८२, २८४, २८६-७	रंगनवेट्ट २१०
रथकमगग ५९	रंगप्पराज ३४४-४५
रघु १३	रंगरम २५६
रघुवर, रघुजी ३९४, ४१५	राडकवाल ३९५, ३९७
रट्टगुडि २४	राचमल्ल ५८, ६०, १०९
रट्टजिनालय २४०, २४३, २४६,	राचय ७१
२४९	राजकीर्ति ४०५-६
रट्टवग १२८, १३२, १५३, १८५,	राजकेसरिवर्मन् ५६, ९९, १४०
२३५, २३७, २४३, २४५,	राजगावुण्ड १००-१
२४९	राजदेव १६८-७१
रणकि १२३, १२५	राजदेवी १८९
रणपाण्डरम २६	राजपाल ४००
रणायलोक २८, ३०	राजभीम ६४-५, ६८

राजमार्तण्ड ६४	रामसेट्टि २८५
राजराज ७४, १७८-९, २८०, ३५४	रामसेनान्वय ४०५-६, ४११, ४२७-८
राजलदेवी २५४	रामी ७-९
राजव्वे १७६, ३७५	रामोज ३७४
राजाधिराज ११०	रायगौड ३६०
राजि १२०-१	रायद्रुग २७८, ३७८
राजिमय्य ११९	रायपाल १५९-६०, १६८-७१
राजेन्द्र ७५, ७८	रायबाग ७७, २३५, ३३६
राजेन्द्रशोलचेदिराजन् १२७	रायरसेट्टि ३८०
राणिवेण्णूर ३७	रावदेवी १११
रामकीर्ति ३९९, ४१६	रावसेट्टि १६४
रामक्क २८२, २८४-७	राष्ट्रकूट १५-६, २८, ३०-२, ३६-७, ४२, ४४, ५०-१, ५३-५, ६४, १०९, १५९, १७२, २४३, ३९४
रामचन्द्र ८१-२, २६३, २६५, ३१५, ३८९, ४२५	रासलदेवी १८९
रामटेक ३९५, ४०४, ४०७, ४२२	राहक १९१, १९७
रामण १८६, २८२, २८६	रुद्रपाल १६०
रामतीर्थ ३८१	रुगि २३५
रामदेव २६५, ३३९	रूपनारायणबसदि १६४-५
रामनाथ २६५	रेचय्य ७१, २५०
रामनायक ३१०	रेचरस ३८४
रामपुरम् ३८१	रेचिदेव १०८, ११०
रामप्प ३१३	रेच्चूरु ९३
रामराज ३१९, ३२२, ३२६	
रामव्वे २८६	

रेवकनिर्मडि १०४, १०९, १५१-१	ललितकीर्ति २२२-३, २२५, २९५-
रेवकव्वरसि ७६	६, ३१९, ३५४-५, ३७९,
रेवणय्य ११२	३८२, ४०३
रेवणाग्राम १९०, १९६	ललिता १९३, १९७, ३६८
लक्ष्मवरपुकोट २८७	लाघक ६
लक्ष्मकुण्डि ७३, २०८, ३७५, ३८२	लाटीय मण्डल ३४
लक्ष्मट १९१, १९६-७	लाडवागडगच्छ ४००, ४०२-६,
लक्ष्मण १९२, १९४, १९७	४०९-१०, ४१४, ४१६
लक्ष्मप्परस ३१३	लाडोल ३८५-६
लक्ष्मरस ९८, १०३, १०५-६,	लातूर ४२६
११०-३, २३६-७, २४४	लालाक २
लक्ष्मादेवी १७८, २११	लिंगण ३३०-१
लक्ष्मी १९३, १९७	लोकटेयरस ४४
लक्ष्मीदेव १३२, २३६-७, २४४	लोकाचार्य २९१
लक्ष्मीघर ३९१	लोकाम्बा ६५
लक्ष्मीमाणिकदेवी ३०३	लोकिकेरे ३७७
लक्ष्मीसेन २९४-५, २९९, ३४४-५,	लोकिकगुण्डि ७३
४०१, ४०५-६, ४१४, ४२०,	लोढा गोत्र ४०३
४२७-८	लोलाक १९२-५, १९७
लक्ष्मेश्वर ५४, ११२-३, ११५,	लोहाचार्यान्विय ४०४-६, ४१०
१५८, २६५, ३००, ३१५,	वक्रग्रीव १७५, २१४, २१६, २८८
३१८	वज्र ९५
लखनऊ १७४, १८०, ३८६, ३८८,	वज्रदेव २५१
लच्छलदेवी } ७९-८२, १८६	वज्रनन्दि १७५, २१४-६
लच्छियन्वे }	वज्रसिंग ७५
	वटगोहाली ७, ९

वटेश्वर ९८	वाणकोवरैयर् ४१
वहुख ३	वादिघंघलभट्ट ५४
वण्णमय्य ३८९	वादिराज ५९, १२८, १७५-७, २१४, २१६, ४०५
वयिरिमलैयन् ७५	वादिराजुल २३
वरगुण १६, ३७-८	वादीमसिह १७६
वरलाइका तीर्थ १९३, १९७	वामनन्दि ३७०
वराग ३०६, ३१४-५	वायड ९७
वरुण ६९, २६९	वालनागम ३३९
वर्धमान २८, ३०, १०४, ११०, १२८, १३४, २०८, २५१, २५८, २७०-१, २८८, ३०६, ३३७, ३६५	वावणरस ७६, १७२
वलभी १९०	वासल गोत्र ४२६
वलयवाड १३८, १६२	वासियण्ण ३८३
वल्लुवामोलि ७५	वासुदेव ४६, ४८, ५२, २२४
वसन्तकीर्ति २९९	वासुपूज्य १५३, १७२, १७६-७, २१५-६, २५८, २६३, २७१
वसुधाकर ३७४	वाहिल ७५
वस्तुपाल १९०	विक्रमचोल ८३, १५८, १६०
वक्किातट ३५	विक्रमपाण्ड्य २६४
वाक्वतिराज १८९	विक्रमपुर ८४-५, १२१
वाग्देवी २३८, २४५	विक्रमराय ३९२
वाच २५४	विक्रमादित्य १६, ६४, ७४, ११३, ११५, १२०, १२२, १२६, १२७, १२९, १३४, १३६-७, १३९, १४५, १४८, १८२, २१२, ३९०
वाचय्य ३८०	
वाजसेन २०९	
वाजिकुल ७३, ३९१	

विग्रहराज १८९-९०	विद्यागण ४०६
विजयकोर्ति १८६, २९३, ३१६, ३३५, ३९८-९	विद्यानन्द १०४, ११०, २५८, २९३
विजयवका ३६१	विद्याभूषण ४००-१, ४०५, ४०९, ४११, ४१४, ४२२-३
विजयगण्डगोपाल २८९	विनयचन्द्र २६५
विजयण्ण ६९, २५६	विनयसेन ३९
विजयदेव ४०४	विनयादित्य ९५-६, १००-१, १५४, २०२, २११, २७०
विजयनगर २७८-९, २८७-८, ३००, ३०५, ३०८, ३१३-४, ३१७, ३१९, ३२६, ३३९, ३४७	विन्ध्यराज १८९
विजयनायकर् ३१७	विन्ध्यवल्लो १९२, १९७
विजयवाटिका ६७, ६९	वियगवरमैय ३४९
विजयशक्ति २६	विरिसेठि १
विजयादित्य २५, ६४-६, ६८, १५३, १८५-६	विरूपय ३८०
विजयानन्द १५-६	विलप्पकम् ५२
विजयालयमल्ल ७८	विलशार १५८
विजो ५७-८	विल्लवडरेयन् २७९
विट्टरस २६	विशालकीर्ति २७८, ३११, ३२६, ४०७, ४०९, ४१०, ४२४, ४२६
विट्टुप्पनायक ३२७	विशयनल्लूलान् ४१
विठगौड ३७३	विश्वमेन ४०५
विडालपरु २६४	विष्णुकलम्बुरु ३६७
विणैयाभशूर २५१	विष्णुगोप १०, १७, २०
विष्णकोवरैयन् ७५	विष्णुवर्धन २७, ६३-४, १३३-४,
विदग्धराज ४६, ४९-५२	

१४७, १५६, १७६, २००,	वृक्षमूलगण १२२, ३७६
२०२-३, २११	वृषभ २१
वीगडि १९१, १९७,	वृषभनन्दि २०४, २०७
वीन १९७	वृषभसेनगणधरान्वय ४०१-२
वीरकोगाल्व १३३-४, १४०	वेडल ५६
वीरगंग ९५, १३३, १४६, १५४,	वेणगि १२८
२००, २०४-५, २१४	वेणुग्राम ( वेणुपुर ) १३२, १३७,
वीरनन्दि ५३, ९३, २०८, २५२-३	२३९-४१, २४६
२५८, २७१	वेणुगाव ३४७
वीरनोलम्ब ११५-६, १२०	वेणुनाडु २२
वीरपेर्माडि १५३	वेमुलवाड ५३
वीरप्पोडेय ३२०	वेम्बुवलनाडु १४५
वीरवलंज १६३, १६५, २४०	वेरावल २२०
वीरभैरव २९९	वेलनाण्डु ६६, ६९
वीरम ११४, ३२०	वेलि ६३
वीरराजेन्द्र ९९	वेलूर ३८१
वीरसंघ ३३८	वेलूरवोम्मनायक ३१७
वीरसान्तर ८७-९	वेल्लप्रभाटिका १५९
वीरसेन २०९, २३५, २९३, २९५,	वेंगी ६३, ६५, ६८, ९०
३३०-४, ३४४-५, ४२५	वैस्तर ७२
वीराम्बुधि ३९२	वैज १४२, १४५, २३९, २४५
वीरेस्वर ३६५	वैजयन्ती १३
वीरैय ३१४	वैयप्प ३१७
वीर्यराम १८९	वैश्रवण १९१, १९६
वीसल १८९	

- वोजणसेट्टि २८६-७  
 व्याघ्रेरक १९१-६  
 शक १२९  
 गडियापारि २७  
 शण्वै ३१७  
 शमणर् तिडल् ३६६  
 शम्बुदेव २२९  
 शम्बुवराय ३६७  
 शर्कर ३४६  
 शशकपुर २०१  
 शकरगण २९  
 शंकरदेवी ३१७, ३२६  
 शंकरसेट्टि ३२६  
 शखजिनालय ५५, २०१, ३००,  
 ३१५-६  
 शखणाचार्य ३१८  
 शंखदेव ३८२  
 शाकम्भरा १८९  
 शान्तदेव २१४, २१६  
 शान्तर १३६, १८३  
 शान्ति १२०-१, १६१  
 शान्तिग्राम २२४  
 शान्तिदास ४०५  
 शान्तिदेव १७५, २१४, २१६,  
 ३७५  
 शान्तिनन्दि ९८  
 शान्तिनाथ ३७४  
 शान्तिभद्र ४८, ४९, ५२  
 शान्तिमुनि १२८  
 शान्तियवक १५३  
 शान्तिवर्मा १३, ९१, ९३  
 शान्तिवीर ३७-८, ३७७  
 शान्तिसेट्टि १६४, १८१, ३७८  
 शान्तिसेन ४१३  
 शावल ३६३  
 शावड २२८  
 शास्त्रसारसमुच्चय २५९  
 शाहजहां ३४०, ३४३  
 शिगांव २५  
 शिरसैय ३५३  
 शिखर ३७६  
 शिलाश्री १६१  
 शिलाहार १३५, १३८-९, १६२,  
 १६५-६, १८५  
 शिवकुमार १८, २०  
 शिवडूगर ३१०  
 शिवनहसेट्टि २२५  
 शिवपुरी ३४१-२  
 शिवमार २६  
 शिवराम ३१९

शिवरामय्य ३००	श्रीनन्दि ११३
शिवसिंह ३९६	श्रीपादरस ७६
शिगणार ४१	श्रीपाल २२, १६१, १७५-७, २१४, २१६, २६९
शिंगिकुलम् २५५	श्रीपुरुष २६
शीतलप्रमादजी ३९३	श्रीभूषण ४००, ४०३, ४०५
शुभकीर्ति ७२	श्रीमाल १९०, ३९६, ४०१
शुभचन्द्र ५७-८, १३१, १५०, १५२, १६७, २४०, २४३, २४६, २४९, २५८, २६८, २७१, ३१०, ३६१, ३९९	श्रीयम्म २६
शुभतुंग ३१	श्रीयादेवी १८०
शुभंकर १९१, १९६	श्रीरंगपट्टम् ३४३
शृंगेरी १७३, १८१, ३१६	श्रीवल्लउदण ३६७
शेडवाल १७४	श्रीवल्लभ १८, २०, ३९, १८५
शेरगढ १६१, २३५	श्रीविक्रम १७, २०
शेंगाट्टिक्कं १४५	श्रीविजय २९, ३०, ६१-२, १७५, २१४, २१६, २५४
शेंवादि २७९	श्रुतकीर्ति ५९, ६०, १६४-५- १७५, २५८, २६७, २७१, ३३५,
शेंवियन् शेंवोत्रिलाडणान् १६७	श्रुतवीर ४२०
शैनियम्मण कोयिल् ३१७	श्वेतपद ८६
श्रवणन अरे २१०	सकलकीर्ति ३९७-८, ४०५, ४१४
श्रवणनहल्लि १३३	सकलचन्द्र १०२, १०७, ११०-१, ११४, २५१-३, २५७, २६८, ३६३, ३८३
श्रवणवेलगोल ३३५	सकलभद्र ३६४
श्रावकाचारसार २५९	सकललोकाश्रय २४
श्रीकीर्ति १९७, २२१-२	
श्रीचन्द्र १५४	
श्रीघर ४३, २५८, २७०-१, ३६७	



सककरेपट्टण २९३, २९९, ३५७	सर्व ३३
सण्णमल्लीपुर २६२	सर्वदेव २५६
सत्तिग ७६	सर्वघर १५९
सत्यण्ण ३७४	सर्वलोकाश्रय २७
सत्यवाक्य ५४, १४०	सलनृप २०१
सत्यवेगहे २३०-३	सल्लक्षण ३
सत्यसेन ६	सवणू १५२, २२८
सत्याश्रय २५, ६३, ७३, ७६	सवाईजयनगर ३९५, ४१५
सदाशिवनायक ३२२, ३२६	सवाईराम ४२३
सदाशिवराय ३१९, ३२२, ३२६, ३४७	सवाईसिगई नेमलालजी ३९३
मप्पगस २६३	सहस्रकीर्ति ३७३, ३७९
मत्ति ९५, १४२, १४५	सहेटमहेट २५५
समणरमलें ७२	संकण्ण ३३४
ममन्तभद्र २६३, ३३०-२, ३३४, ३३६, ३३९, ३४१, ३४४- ६, ४०१	संकिसेट्टि १०८
मम्यवत्तवगत्ताकर ८२	संखेस्वग गोत्र ३९९
सद्यविमारय ३८०	संगनृप ३०३-५
मग्गू १०२, २६०	सगप २८६
स्राणमेट्टि २८६	संगमदेव २८७
मरुवभीगच्छ २५८, २८८, ३०६, ३१०, ३९७, ४००-४, ४०७, ४०९, ४१०-२, ४१४-२३, ४२५, ४२७	संगिराय ३००, ३०८
	सगीतपुर ३३५, ३३८-९
	संगू २५९, २८७
	संग्राम ३४१
	सघव्यसेट्टि ३३७
	संजालपुर ३९५, ४०४
	सविसेट्टि ३८०

संसारभीत २४	सिद्धवडवन् ६२
सागरकट्टे १२८	सिद्धान्तयोगीन्द्र २६४
सागरसेन २३५	सिद्धान्तसार २५९
सातथ्य ११४	सिन्दकुल ९३, १८७
सातानिकोट २४	सिन्दनाडु २६
सात्तिपेह् २०८	सिन्दनृप ९१
सातोज ३७४	सिन्दय ७०
सान्तर ८७, २९९	सिन्दरस ७६, १२१
सान्तलदेवी ३५५-६	सिन्दिगे ९८
सान्तलिंगे ८७, ११६, १२०, १५७, १८३, ३९०	सिरसग्राम ३९५, ४१६
सान्तेबीवे ३५८	सिरसंगि १४९
सामेन्तणवसदि २३२	सिरिणंदि १०२
साम्भर १९६	सिरियण्ण २१७, २७७
सायिगवुडि ३७२	सिरियम्मगौड २६१
सालिग्राम २२६	सिरियव्वे १८१-२
सालुव ( साल्व ) २६३, ३२७, ३६४	सिरियादेवी १५१-२, २२७
सालूर ( सालियूर ) १५७, ३५६	सिरोही ३८५, ३८७
सावन्तपर्णहत २६५	सिर्मलगौरु गण २८, ३०
सावरगाँव ३९५, ४२७	मिवनी ३९५, ४२५
सावला गोत्र ४१३	सिगनन्दि २०
साविकेरि २७९	सिगिसेट्टि ३७६
सिगलि २५४	मिगेय ३७६
सित्तन्नवासल ३९	सिघट १८९
सिदवसयदेव ३२०	मिघल १८६
	मिहण ( सिघण ) २५१, २५४, ३९०

सिहनन्दि ७४, १७५, २१४,	सेट्टिगौड ३२९
२१६, २८८	सेणिगकोत्तलि १७४
मिहराज १८९	सेणिसेट्टि २८९, ९०
मिहविष्णु ११-२	सेतु ३२९, ३३७
सिंहवूरगण ३७	सेन अन्वय ३९, ९२-३
सोम्पाल्वायगर् १९, २०	सेन गण ८४-५, १०७, ११८,
सीयक १९१-२, १९४, १९७	१२०, २९३, २९५, २९९,
सुजानराय ३२८	३३६, ३३९, ३४१, ३८०,
सुन्दरपाण्ड्य २७, २५५	३९६-९, ४०१-२, ४०४,
सुभद्र १५९	४०८, ४१२, ४२०, ४२८
सुभूति ४	सेनर्त्सिग १२८
सुमति ३५-६, १७५, २१४, २१६	सेनन्प ( सेनविभु ) २३६, २४३-४
सुरभिकुमुदचन्द्र २३२	सेनसघ ३५-६
सुरेन्द्रकीर्ति ४०८-११, ४१४-६,	सेन्द्रक १५ ६
४२८	सेम्बूर २५७
सुलोचना २७	सेवुण २१३-४, २१८
सुवर्णवर्ष ३५-६	सैगोट्ट ५८, ६०
सूरत ३०	सैतवाल ३९६, ४०७, ४२५-६
सूरसेन २९४-५	सैद्धान्तिदेव २८३
सूरस्थ गण ५४, ७३, ९८, १०२,	सोगि २००
११२-३, १७२, २२४, २६९,	सोडक ७५
३७२-३, ३७४, ३७८	सोत्तियूर ७०
सूर्याचार्य ४९, ५२	सोदे ३१५, ३४७
सूर्याश्रम १६१	सोन्द ३१६, ३३८, ३४२
सूलाकोमरन् २०	सोनोपाडित ४०७
सेट्टिमहादेवी २७५	सोमदेव ५३, २५९, ३७४

सोमय २६५, २७७	हनगल १८६
सोमलदेवी ७६, १८९	हनगुन्द ११२, १२६
सोमवे २८५-६	हनुमन्तगुडि ३१८
सोमसेन ३३६, ४०२, ४०४, ४१२	हन्दिगुल २८६
सोमापुर ११३, २११, २१६	हवुरेमरस ३८४
सोमिदेव २१७	हम्पी २३४, २८८, ३९१
सोमेय २५९-६०	हम्मिकव्वे ७९, ८१, १२०-१
सोमेश्वर ८१-२, ८५, ९०, ९३-४, १०२, ११०, ११२, १८२, १९०, १९६, २०८, २८२, ३८९, ३९०	हरति ३४४-५
सोरटूर १०२	हरसिग १९५
सोरव २९०-१	हरिकान्त ३७२
सोल्लण १८९	हरिकेसरी ३७२
मोव २५९	हरिचन्द्र २७४
सोवण १४६-७	हरिदत्त १४-५
सोवरस ८२, १७२	हरिद्वार १८०
सोविदेव १९८, २०१	हरिनन्दि १७२
स्थिरत्रिनीत १८	हरियनन्दन २९१
स्योसिष ३९८	हरियनन्दि २५८, २७१
स्वरटोर ३०१	हरिवर्मा १०, ४६, ५०-१
स्वर्णपुर ३४६	हरिसेट्टि २८६
हट्टण १३१	हरिसेन २९४-५
हडजण २८३	हरिहर २७८, २८७-८, ३५५-६, ३९१
हत्तिमत्तूर २५८	हर्षकीर्ति ४२२
हदिनाट्टु १३३	हलसगि १८७
	हलसिगे २१४
	हलहरवि ४५

हलिगावुण्ड ३७९	हुमच २६४, ३११, ३३७
हलुमिडि ३१६	हुलगूर १७२
हलेबोड १५६, २३२, २५२, २५८, २७३	हुलदेनहल्लि ३६१
हलेसोरव २९०	हुलिकल ( हुलेकल ) २९२, ३४६
हलेहुव्वलि २७५, ३५२	हुलिकेरे ( हुलिगेरे ) २१४, २५९ २८५-६, ३१६
हुव्वक्का २१०	हुलियव्व १०२
हस्तिकुण्डो ४६-७, ५०, ५२	हुलियार १८०
हस्तिसाहम २	हुलूर ३८४
हम ४००	हुंबड ३९६, ४००, ४०४-५
हाडुवल्लि ३०८, ३३५	हुलि ७८, १४९, २२६
हादरिवागिल्लु १४६-७	हुविनमिगगलि २५४
हानुगल १५५, १७२, १८६, २०४	हुविनहिप्पणि ३८४
हालियमेट्टि १६४	हुडुव १२३, १२५
हाल्लुगुड्डे १८३, १८५	हेण्णेगडल्लु १४०
हालोवे २६६	हेण्णेगडग १३४
हावेरि ३७४	हेव्वलगुप्पे ३९
हित्तिनसेनवोव २०१	हेव्वल्लु ८६
हिरण्ययोगा ३५-६	हेमकीर्ति ४०१-२, ४१०-२, ४१४, ४२२-३, ४२८
हिरियमादण्ण २८३	हेमणाचार्य ३१८
हरियमूद्दगोड १२६-७	हेमदेव १५८, ३००
हिरेचोटि २८९	हेमसूरि २२१
हिरेमन्नूर १८७	हेमसेन २१४, २१६, ३०१
हिरेसिगनगुत्ति १४८	हेम्मरसि ३२७
हीरगुप्पे २५६	हेम्माडिसेडि १८१-२
हुकेरी २७५	

नामसूची

५०५

हेरगु २७४  
 हेरियवासेवेगढे २३०-१  
 हेर्माडियरस ३९०  
 हेलाचार्य ३४६-७  
 हैदराबाद ७६, १११, ३७०  
 हैवण ३०३-५, ३५५-६  
 हैवेनूप ( भूगाल ) २८०-२, २८४,  
 २९८, ३००, ३०२, ३२७  
 होगरिगच्छ ८४-५  
 होनण २६७  
 होन्कुन्द २६०  
 होन्नबरसि ३०२, ३०५  
 होन्नभूप ( होन्नरस ) २९७-८, ३०३,  
 ३५५-६  
 होन्निसेट्टि २२४  
 होयसल ९६, १००-१, १२८,  
 १३१, १३३-४, १४६-७,

१५५-६, १६९, १७६-७,  
 १७९-८०, २००-१, २०४-७  
 २०९-१०, २१६-८, २२०,  
 २२३-४, २४९-५०, २५६,  
 २५८-६०, २६२, २६५,  
 २७१-२, २७७, २९५  
 होरिम १३९-४०  
 होलरस १८७  
 होलेनरसोपुर ७१, १४०  
 होल्लराज २९४  
 होल्लिगोड १८६  
 होसकोटे ९  
 होसनगर २१०  
 होसपट्टण २९५  
 होसाल २७८  
 होसूर ७६, १३२, ३५७  
 होंगनूर २६८



## MĀNIKACHANDRA D. J. GRANTHAMĀLĀ

\* The Serial Numbers marked with asterisk are out of print

\*1. **Laghīyastraya-ādi-samgrahah** : This vol. contains four small works: 1) *Laghīyastrayam* of Akalaṅkadeva (c 7th century A. D), a small Prakaraṇa dealing with *pramāṇa*, *naya* and *pravacana* Akalaṅka is an eminent logician who deserves to be remembered along with Dharmakīrti and others His works are very important for a student of Indian logic Here the text is presented with the Sk. commentary of Abhayacandrasūri 2) *Svarūpasambodhana* attributed to Akalaṅka, a short yet brilliant exposition of *ātman* in 25 verses 3-4) *Laghu-Sarvajña-siddhiḥ* and *Bṛhat-Sarvajña-siddhiḥ* of Anantakīrti These two texts discuss the Jaina doctrine of Sarvajñatā Edited with some introductory notes in Sk on Akalaṅka, Abhayacandra and Anantakīrti by Pt. KALLAPPA BHARAMAPPA NITAVE, Bombay Saṁvata 1972, Crown pp. 8-204, Price As 6/-

\*2 **Sāgāra-dharmāmṛtam** of Āśādhara Āśādhara is a voluminous writer of the 13th century A. D, with many Sanskrit works on different subjects to his credit This is the first part of his *Dharmāmṛta* with his own commentary in Sk dealing with the duties of a layman. Pt NATHURAM PĀREMI adds an introductory note on



Āśādhara and his works. Ed. by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp. 8-246, Price As. 8/-.

\*3 **Vikrāntakauravam** or **Sulocanānāṭakam** of Hastimalla (A.D. 13th century) : A Sanskrit drama in six acts. Ed with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp. 4-164, Price As. 6/-

\*4. **Pārśvanātha-caritam** of Vādirājasūri : Vādirāja was an eminent poet and logician of the 10th century A D This is a biography of the 23rd Tīrthaṅkara in Sanskrit extending over 12 cantos. Edited with an introductory note on Vādirāja and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 18-198, Price As 8/-.

\*5. **Maithilikalyāṇam** or **Sītānāṭakam** of Hastimalla : A Sk. drama in 5 acts, see No. 3 above. Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 4-96, Price As 4/-.

\*6 **Ārādhanāsāra** of Devasena . A Prākṛit work dealing with religio-didactic topics. Prākṛit text with the Sk commentary of Ratnakīrtideva, edited by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp. 128, Price As. 4/6.

\*7. **Jinadattacaritam** of Guṇabhadra A Sk poem in 9 cantos dealing with the life of Jinadatta, edited by Pt. MANOHARLAL, Bambah saṁvat 1973, Crown pp. 96, Price As. 5/-.

8. **Pradyumnacarita** of Mahāsenācārya : A Sk. poem in 14 cantos dealing with the life of Pradyumna. It is composed in a dignified style Edited by Pts. MANOHARLAL and RAMAPRASAD, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp 230, Price As. 8/-.

9. **Cāritrasāra** of Cāmuṇḍarāya It deals with the rules of conduct for a house-holder and a monk. Edited by Pt INDRALAL and UDAYALAL, Bombay Saṁvat 1974, Crown pp. 103, Price As. 6/-.

\*10. **Pramānanirṇaya** of Vādirāja : A manual of logic discussing specially the nature of Pramāṇas. Edited by Pts. INDRALAL and KHUBCHAND, Bombay Saṁvat 1974, Crown pp. 80, Price As 5/-.

\* 11. **Ācārasāra** of Vīranandi : A Sk text dealing with Darśana, Jñāna etc. Edited by Pts. INDRALAL and MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1974, Crown pp 2-98, Price As. 6/-.

\* 12. **Trilokasāra** of Nemichandra : An important Prākṛit text on Jaina cosmography published here with the Sk. commentary of Mādhavacandra. Pt PREMI has written a critical note on Nemichandra and Mādhavacandra in the Introduction Edited with an index of Gāthās by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1975, Crown pp. 10-405-20, Price Rs 1/12/-.

\* 13. **Tattvānusāsana-ādi-saṁgrahaḥ** : This vol. contains the following works 1) *Tattvānusāsana* of Nāgasena. 2) *Iṣṭopadeśa* of Pūjyapāda with the Sk.

commentary of Āśādhara. 3) *Nītisāra* of Indranandī. 4) *Mokṣapañcāśikā*. 5) *Śrutāvatāra* of Indranandī. 6) *Adhyātmatarāṅgiṇī* of Somadeva. 7) *Bṛhat-pañca-namaskāra* or *Pātrakesarī-stotra* of Pātrakesarī with a Sk. commentary 8) *Adhyātmāṣṭaka* of Vādirāja. 9) *Dvā-triṃśikā* of Amitagatī 10) *Varrāgyamaṇimālā* of Śrīcandra 11) *Tattvasāra* (in Prākṛit) of Devasena. 12) *Śrutaskandha* (in Prākṛit) of Brahma Hemacandra. 13) *Dhāḍasī-gāthā* in Prākṛit with Sk chāyā 14) *Jñā-nasāra* of Padmasimha, Prākṛit text and Sk. chāyā. Pt. PREMI has added short critical notes on these authors and their works Edited by Pt MANOHARLAL, Bombay Saṃvat 1975, Crown pp 4-176, Price As. 14/-.

\* 14 **Anagāra-dharmāmṛta** of Āśādhara : Second part of the *Dharmāmṛta* dealing with the rules about the life of a monk. Text and author's own commentary. Edited with verse and quotation Indices by Pts BANSIDHAR and MANOHARLAL, Bombay Saṃvat 1976, Crown pp 692-35, Price Rs 3/8/-.

\*15 **Yuktyanuśāsana** of Samantabhadra : A logical Stotra which has wielded great influence on later authors like Siddhasena, Hemacandra etc Text published with an equally important commentary of Vidyānanda There is an introductory note on Vidyānanda by Pt. PREMI Ed. by Pts INDRALAL and SHRILAL, Bombay Saṃvat 1977, Crown pp. 6-182, Price As. 13/-.

\*16. **Nayacakra-ādi-saṁgraha** This vol contains the following texts. 1) *Laghu-Nayacakra* of Devasena, Prākṛit text with Sk chāyā 2) *Nayacakra* of Devasena, Prākṛit text and Sk chāyā. 3) *Ālāpapaddhati* of Devasena. There is an introductory note in Hindī on Devasena and his *Nayacakra* by Pt PREMI Edited by Pt BANSIDHARA with Indices, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp 42-148. Price As 15/-

\*17 **Ṣatprābhṛtādi-saṁgraha** : This vol contains the following Prākṛit works of Kundakunda of venerable authority and antiquity. 1) *Darśana-prābhṛta*, 2) *Cāri-tra-prābhṛta*, 3) *Sūtra-prābhṛta*, 4) *Bodha-prābhṛta*, 5) *Bhāva-prābhṛta*, 6) *Mokṣa-prābhṛta*, 7) *Liṅga-prābhṛta*, 8) *Śīla-prābhṛta*, 9) *Rayanasāra* and 10) *Dvādaśānu-prekṣā* The first six are published with the Sk. commentary of Śrutasaṅgāra and the last four with the Sk. chāyā only. There is an introduction in Hindī by Pt PREMI who adds some critical information about Kundakunda, Śrutasaṅgāra and their works Edited with an Index of verses etc by Pt PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp 12-442-32 Price Rs 3/-.

\*18 **Prāyaścittādi-saṁgraha** : The following texts are included in this volume. 1) *Chedapīṇḍa* of Indranandi Yogīndra, Prākṛit text and Sk chāyā 2) *Cheda-śāstra* or *Chedanavati*, Prākṛit text and Sk chāyā and notes. 3) *Prāyaścitta-cūlikā* of Gurudāsa, Sk text with the commentary of Nandīguru 4) *Prāyaścittagrantha* in Sk. verses by Bhaṭṭākalaṅka There is a critical

introductory note in Hindī by Pt. PREMI. Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1978, Crown pp.16-172-12, Price Rs. 1/2/-.

19. **Mūlācāra** of Vattakera, part I : An ancient Prākṛit text in Jaina Śaurasenī, Published with Sk. chāyā and Vasunandi's Sk. commentary. A highly valuable text for students of Prākṛit and ancient Indian monastic life Edited by Pts PANNALAL, GAJADHARALAL and SHRILAL, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp. 516, Price Rs- 2/4/-.

20. **Bhāvasaṁgraha-ādih** : This vol. contains the following works. 1) *Bhāvasaṁgraha* of Devasena, Prākṛit text and Sk chāyā 2) *Bhāvasaṁgraha* in Sk. verse of Vāmadeva Paṇḍita 3) *Bhāva-tribhaṅgī* or *Bhāvasaṁgraha* of Śrutamuni, Prākṛit text and Sk. chāyā 4) *Āravatriḥaṅgī* of Śrutamuni, Prākṛit text and Sk chāyā. There is a Hindī Introduction with critical remarks on these texts by Pt. PREMI Edited with an Index of verses by Pt PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1978, Crown pp. 8-284-28, Price Rs 2/4/-

21. **Siddhāntasāra-ādi-Saṁgraha** : This vol. contains some twentyfive texts. 1) *Siddhāntasāra* of Jinacandra, Prākṛit text, Sk. chāyā and the commentary of Jñānabhūṣaṇa. 2) *Yogasāra* of Yogicandra, Apabhraṁśa text with Sk chāyā. 3) *Kallāṅāloyaṇā* of Ajitabrahma, Prākṛit text with Sk. chāyā, 4) *Amṛtāśīti* of Yegīndradeve, a didactic work in Sanskrit. 5) *Ratna-*

mālā of Śivakoṭi. 6) *Śāstrasārasamuccaya* of Māghanandī, a Sūtra work divided in four lessons 7) *Arhat-pravacanam* of Prabhācandra, a Sūtra work in five lessons. 8) *Āptasvarūpam*, a discourse on the nature of divinity. 9) *Jñānalocanastotra* of Vādirāja (Pomarājasuta). 10) *Samavasaranastotra* of Viṣṇusena 11) *Sarvajñastavana* of Jayānandasūri 12) *Pārśvanāthasamasyā-stotra*. 13) *Citrabandhastotra* of Guṇabhadra 14) *Maharṣi-stotra* (of Āśādhara) 15) *Pārśvanāthastotra* or *Lakṣmīstotra* with Sk. commentary 16) *Nemināthastotra* in which are used only two letters viz *n* & *m*. 17) *Śaṅkhadevāṣṭaka* of Bhānukīrti. 18) *Nijātmāṣṭaka* of Yogīndradeva in Prākṛit. 19) *Tattvabhāvana* or *Sāmāyika-pāṭha* of Amitagatī. 20) *Dharmasāyana* of Padmanandī, Prākṛit text and Sk. chāyā 21) *Sārasamuccaya* of Kulabhadra. 22) *Aṅgapaṇṇatti* of Śubhacandra, Prākṛit text and Sk chāyā. 23) *Śrutāvatāra* of Vibudha Śrīdhara 24) *Śalākānikṣepananiṣkāśana-vivaranam* 25) *Kalyāṇamālā* of Āśādhara Pt PREMI has added critical notes in the Introduction on some of these authors Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1979 Crown pp 32-324, Price Rs 1/8/-

\*22 **Nitivākyāmṛtam** of Somadeva . An important text on Indian Polity, next only to *Kauṭilya-Arthaśāstra*. The Sūtras are published here along with a Sanskrit commentary There is a critical Introduction by PREMI comparing this work with *Arthaśāstra* Edited by

Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1979, Crown pp. 34-426, Price Rs. 1/12/-

\* 23. **Mūlācāra** of Vattakera, part II : Prākṛit text, Sk. chāyā and the commentary of Vasunandī, see No 19 above Bombay Saṁvat 1980, Crown pp 332, Price Rs 1/8/-

24 **Ratnakarandaka-śrāvākācāra** of Samantabhadra With the Sanskrit commentary of Prabhācandra. There is an exhaustive Hindī Introduction by Pt JUGAL KISHORE MUKTHAR, extending over more than pp 300, dealing with the various topics about Samantabhadra and his works Bombay Saṁvat 1982, Crown pp. 2-84-252-114, Price Rs. 2/-

25 **Pañcasamgrahah** of Amitagatī : A good compendium in Sanskrit of the contents of *Gōmmaṭasāra*. Edited with a note on the author and his works by Pt. DARBARILAL, Bombay 1927, Crown pp 8-240, Price As. 13/- .

26. **Lātīsamhitā** of Rājamalla : It deals with the duties of a layman and its author was a contemporary of Akbar to whom references are found in his compositions There is an exhaustive Introduction in Hindī by Pt JUGALKISHORE Edited by Pt DARBARILAL, Bombay Saṁvat 1948, Crown pp 24-136, Price As 8/- .

27 **Purudevācampū** of Arhaddāsa : A Campū work in Sanskrit written in a high-flown style Edited with notes by Pt. JINADASA, Bombay Saṁvat 1985, Crown p 4-206, Price As 12/- .

28 **Jaina-Śilālekha-saṁgraha** : It is a handy volume giving the Devanāgarī version of *Epigraphia Carnatica* II (Revised ed.) with Introduction, Indices etc by Prof. HIRALAL JAIN, Bombay 1928, Crown pp 16-164-428-40, Price Rs. 2/8/-

29-30-31. **Padmacarita** of Raviṣeṇa : This is the Jaina recension of Rāma's story and as such indispensable to the students of Indian epic literature It was finished in A. D. 676, and it has close similarities with *Padmcarit* of Vimala (beginning of the Christian era). Edited by Pt DARBARILAL, Bombay Saṁvat 1985, vol 1, pp. 8-512 ; vol 11, pp 8-436 ; vol. 111, pp 8-446 Thus pp about 1400 in all Price Rs 4/8/- .

32-33. **Harivaṁśa-purāna** of Jinasena I This is the Jaina recension of the Kṛṣṇa legend These two volumes are very useful to those interested in Indian epics It was composed in A D 783 by Jinasena of the Punnāṭa-saṁgha There is a Hindī Introduction by Pt PREMIJI Edited by Pt DARBARILAL, Bombay 1930, vol. 1 and 11 pp 48-12-806, Price Rs 3/8/-.

34. **Nitivākyāmṛtam**, a supplement to No. 22 above This gives the missing portion of the Sanskrit commentary, Bombay Saṁvat 1989, Crown pp 4-76, Price As. 4/-

35. **Jambūsvāmi-caritam** and **Adhyātma-kamala-mārtanda** of Rājamalla See No 26 above. Edited with an Introduction in Hindī by Pt. JAGADISH-



CHANDRA, M. A , Bombay Saṁvat 1993, Crown pp-18-264-4, Price Rs 1/8/-.

36. **Triṣaṣṭi-smṛti-sāstra** of Āśādhara : Sanskrit text and Marāṭhī rendering. Edited by Pt. MOTILAL HIRACHANDA, Bombay 1937, Crown pp 2-8-166, Price As. 8/-.

37. **Mahāpurāṇa** of Puṣpadanta, Vol. I **Ādipurāṇa** (Saṁdhis 1-37) · A Jaina Epic in Apabhraṁśa of the 10th century A.D. Apabhraṁśa Text, Variants, explanatory Notes of Prabhācandra A model edition of an Apabhraṁśa text. Critically edited with an Introduction and Notes in English by Dr. P. L. VAIDYA, M. A., D.Litt., Bombay 1937, Royal 8vo pp. 42-672, Price Rs. 10/-.

37(a) Rāmāyaṇa portion separately issued. Price Rs. 2 50.

38. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra Vol I · This is an important Nyāya work, being an exhaustive commentary on Akalaṅka's *Laghīyastrayam* with Vivṛti (see No. 1 above). The text of the commentary is very ably edited with critical and comparative foot-notes by Pt. MAHENDRAKUMARA There is a learned Hindī Introduction exhaustively dealing with Akalaṅka, Prabhācandra, their dates and works etc written by Pt. KAILASCHANDRA. A model edition of a Nyāya text. Bombay 1938, Royal 8 vo., pp. 20-126-38-402-6, Price Rs. 8/-.

39. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra, Vol. II . See No 38 above. Edited by Pt. MAHENDRAKUMAR SHASTRI who has added an Introduction in Hindī dealing with the contents of the work and giving some details about the author. There is a Table of contents and twelve Appendices giving useful Indices. Bombay 1941. Royal 8vo pp 20 + 94 + 403-930. Price Rs. 8/8/-.

40. **Varāṅgacaritam** of Jaṭā-Sūbhanandī : A rare Sanskrit Kāvya brought to light and edited with an exhaustive critical Introduction and Notes in English by Prof. A. N. Upadhye, M. A , Bombay 1938, Crown pp 16+56+392, Price Rs. 3/-.

41. **Mahāpurāna** of Puṣpadanta, Vol. II (Saṁdhis 38-80) : See No 37 above. The Apabhraṁśa Text critically edited to the variant Readings and Glosses, along with an Introduction and five Appendices by Dr. P L VAIDYA, M A , D. Litt., Bombay 1940. Royal 8vo pp 24+570 Price Rs. 10/-

42 **Mahāpurāna** of Puṣpadanta, Vol. III (Saṁdhis 81-102) : See No 37 and 40 above The Apabhraṁśas Text critically edited with variant Readings and Glosses by Dr P. L VAIDYA, M. A , D. Litt. The Introduction covers a biography of Puṣpadanta, discussing all about his date, works, patrons and metropolis (Mānyakheta). Pt. PREMI'S essay 'Mahākavi Puṣpadanta' in Hindī is included here. Bombay 1941. Royal 8vo pp. 32+28+314. Price Rs. 6/-.

42(a). **Harivaṁśa** portion is separately issued. Price Rs. 2 50.

43. **Ajanāpavanamājaya-nātakam** and **Subhadrā-nātikā** of Hastimalla : Two Sanskrit Dramas of Hastimalla (see also No 3 above) Critically edited by Prof M. V. PATWARDHAN The Introduction in English is a well documented essay on Hastimalla and his four plays which are fully studied. There is an Index of stanzas from all the four plays. Bombay 1950 Crown pp. 8+68+120+128 Price Rs 3/-

44. **Syādvādasiddhi** of Vādibhasinīha : Edited by Pt DARBARILAL with Introductions etc. in Hindī shedding good deal of light on the author and contents of the work. Bombay 1950 Crown pp 26+32+34+80. Price Rs 1-50

45 **Jaina Śilālekha-saṁgraha**, Part II (see No. 28 above) . The texts of 302 Inscriptions (following A. Guérinot's order) are given in Devanāgarī with summary in Hindī. There is an Index of Proper Names at the end. Compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M A. Bombay 1952. Crown pp. 4+520. Price Rs 8/-.

46. **Jaina Śilālekha-saṁgraha**, Part III (see Nos 23 & 45 above) . The texts of 303-846 inscriptions (following Guérinot's list) is given in Devanāgarī with summary in Hindī compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M A. There is an Index of Proper Names at the end. The Introduction by Shri G.C. CHAUDHARI is an exhaustive

study of inscriptions. Bombay 1957. Crown pp. 8 + 178 + 592 + 42. Price Rs. 10/-.

47. **Pramāṇaprameyakalikā** of Narendrasena (A. D. 18th century) · A Nyāya text dealing with Pramāṇa and Prameya The Sanskrit text critically edited by Pt. DARBARILAL The Hindī Introduction deals with the author and a number of topics connected with the contents of this work Bhāratīya Jñānapīṭha Kashi, Varanasi 1961. Price Rs. 1.50.



*For copies please write to—*

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪṬHA  
Durgakunda Road,  
Varanasi—5 (India).

Or

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪṬHA  
3620/21 Netaji Subhash Marg,  
Delhi—6 (India).



